हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट

हिन्दोस्तां हमारा

हिन्दोस्तां हमारा

पहला भाग

सम्पादक

जां निसार अख़्तर

हिन्दी शब्दावली

मुग़नी अब्बासी

ज़ोया अब्बासी

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट

राजमहल, २५ वीर नरीमान रोड,

बम्बई ४०००२०

यह पुस्तक भारत सरकार के गृह-मन्त्रालय की आर्थिक सहायता से प्रकाशित हुई है।

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट (बम्बई) एक साहित्यिक संस्था है जिसका उद्देश्य व्यापार नहीं है और जिसके सब खर्चे निजी अनुदान से पूरे किये जाते हैं। उसके तत्त्वावधान में हिन्दी, उर्दू और फ़ारसी के उच्चकोटि के कवियों का काव्य उर्दू और देवनागरी लिपि में एक साथ प्रकाशित किया जाता है। आधुनिक साहित्य भी इस संस्था का एक आवश्यक विभाग है। हिन्दी और उर्दू पढ़ने और बोलने वालों के बीच भावनात्मक एकता पैदा करना और मुद्रण के स्तर को ऊँचा करना हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट के उद्देश्यों मे शामिल है।

सम्पादक

डा० मुल्कराज आनन्द
सरदार जाफ़री

मूल्य : रु० १०.००

एकमात्र वितरक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

८, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-११०००६

प्रकाशक

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट

बम्बई-४००२०

मुद्रक

शान प्रिंटर्स द्वारा,

अजय प्रिंटस, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

आवरण

नरेन्द्र श्रीवास्तव

पं० जवाहरलाल नेहरू की याद में
जिन्होंने हिन्दुस्तान को सिक्यूलरिज़्म
और जम्हूरियत प्रदान की

विषय-सूची

पहला अध्याय—हिन्दोस्तां की अज़मत

(भारत महिमा)

दूसरा अध्याय—हमारे क़ुदरती मनाज़िर

(हमारे प्राकृतिक दृश्य)

पहला भाग

हमारे क़ुदरती मनाज़िर

(प्राकृतिक दृश्य)

दूसरा भाग

तीसरा अध्याय—हमारे सुब्ह-ओ-शाम

चौथा अध्याय—हमारे मौसम

पांचवां अध्याय—हमारे त्योहार

छठा अध्याय—हमारे शहर और इलाक़े

सातवां अध्याय—हमारी तामीरात

आठवां अध्याय—हमारे फ़नूने-लतीफ़ा
(ललित कलाएं)

नवां अध्याय—हमारे धार्मिक नेता

दसवां अध्याय—हमारी हिकायात

(कथा-माला)

पहला भाग

हमारी हिकायात

(कथा-माला)

दूसरा भाग

ग्यारहवां अध्याय—हमारा अन्दाज़े-इश्क़

भूमिका

उर्दू शाइरी शुरू ही से मिलीजुली सभ्यता की अमानतदार रही है। यो तो हिन्दू और मुस्लिम सभ्यताएं उस समय से एक-दूसरे को प्रभावित करने लगी थी जब मुसलमानो ने सिंध मे अपने कदम जमाये। लेकिन वह प्रारम्भिक दौर कहा जा सकता है। शुरू मे इस आपसी मेलजोल का खास पहलू मुसलमान सूफियो के आन्दोलन है। हिन्दुस्तान का वातावरण पहले से इन सूफियो के ईरानी तसव्वुफ को स्वीकार करने के लिए तैयार था। हिन्दुस्तान ने प्राचीन काल मे उपनिषदो का जो फलसफा पैदा किया था और जिसे नवी शताब्दी मे शकराचार्य ने पुनर्जीवित किया, उसमे अद्वैत की कल्पना मौजूद थी। बाद मे विष्णु-भक्ति आन्दोलन ने भी अद्वितीय अस्तित्व की प्राप्ति के लिए सूफियो के मार्ग ही को अपनाया था। अतएव एक तरफ तसव्वुफ का असर भक्ति आन्दोलन पर पडा तो दूसरी तरफ तसव्वुफ भी हिन्दू दर्शन से प्रभावित हुआ। तसव्वुफ और भक्ति के इन आन्दोलनो के फलस्वरूप सभ्यता और धर्म के वैमनस्य निरर्थक समझे जाने लगे थे। राम और रहीम एक ही कल्पना के द्योतक नजर आने लगे थे। यही वह रहस्य था जो दोनो मज्हबो की रूह के लिए एक सगम का काम दे सका। मुसलमान सूफियो मे ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती (मृत्यु १२३६) ख्वाजा कुतबुद्दीन बख्तियार काकी, ख्वाजा फरीदुद्दीन गंजशकर और निज़ा-मुद्दीन औलिया वगैरा का खास तौर पर नाम लिया जा सकता है। बारहवी सदी मे दक्षिण मे भक्ति आन्दोलन का बडा ज़ोर था। रामानुज के प्रभाव से यह तहरीक दक्षिण मे बहुत लोकप्रिय हुई। तेरहवी सदी मे जब दिल्ली को एक केन्द्रीय हुकूमत की हैसियत प्राप्त होने लगी थी तो जहाँ तसव्वुफ को फूलने-फलने का मौका मिला, वहाँ भक्ति तहरीक भी परवान चढ़ती गयी।

उत्तर भारत में इस आन्दोलन को लोकप्रिय बनाने में रामानन्द और उनके अनुयायी भक्त कबीर, तुलसीदास और मीराबाई का बड़ा हिस्सा है। सम्राट् अकबर का दौर सही मानों में हिन्दू-मुस्लिम तहजीबों के मिलाप का जमाना था। उसकी कोशिशों ने मिलीजुली राष्ट्रीयता और मिलीजुली सभ्यता की रफ़्तार को तेज़ कर दिया। यह प्रभाव हर जगह दिखाई देने लगा। चित्रकला, संगीत, वास्तुकला आदि पर भी इस मेलजोल का असर पड़ा। तसव्वुफ और भक्ति आन्दोलनों के काल में एक और अहम चीज जो उभरी थी वह विभिन्न बोलियों की उन्नति थी जिनके द्वारा सूफ़ी और भक्त अपने विचार जन-साधारण तक पहुँचा रहे थे। मुसलमान सूफ़ियों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए जो रास्ता निकाला वह स्थानीय बोलियों में तुर्की, अरबी और फ़ारसी के शब्दो की मिलावट का था। वैसे तो यह मिलावट सिध के जमाने ही से शुरू हो चुकी थी, सूफ़ियों की कोशिश से इसे और बढ़ावा मिला। उस वक़्त यह मिली-जुली ज़बान 'रेख़्ता' कहलाई। अमीर ख़ुसरो (१२५३ से १३२५) के कलाम में इस रेख़्ते का स्पष्ट रूप हमारे सामने आता है। यह रेख़्ता खड़ी बोली मे फारसी के शब्दों की मिलावट है जिसमें उन्होंने गीत, पहेलियाँ और मुकरनियाँ लिखीं। स्थानीय बोलियों पर ज़ोर देने की यही वह प्रवृत्ति थी जिसने तुलसीदास में अवधी में 'रामचरित मानस' और सूरदास से ब्रजभाषा मे 'सूर सागर' लिखवाया। मुसलमानों ने भी स्थानीय बोलियों में बहुत से अदबी कारनामे पेश किये, खास-तौर पर मलिक मुहम्मद ज़ायसी की 'पद्मावत' जो अवधी भाषा की एक अमर कृति है।

खड़ी बोली मे अरबी, तुर्की और फ़ारसी के शब्दो की मिलावट का जो सिलसिला शुरू हुआ था और जो ख़ुसरो के ज़माने में रेख़्ता कहलाया, एक नयी हिन्दुस्तानी जबान को जन्म देने मे कामयाब हुआ जिसे शुरू में हिन्दी या हिन्दवी कहा गया और बाद मे जो उर्दू कहलाई।

अकबर के जमाने में यद्यपि हिन्दुओं और मुसलमानों की मिलीजुली सभ्यता ने, जिसे हिन्दुस्तानी सभ्यता कहना चाहिए, बड़ी तेज़ी के साथ तरक़्क़ी करना शुरू कर दी थी, लेकिन इस नयी हिन्दुस्तानी ज़बान की तरक़्क़ी की रफ़्तार बहुत सुस्त थी। अलबत्ता दक्षिण मे दकनी उर्दू ने बहुत उन्नति कर ली थी और सुल्तान क़ुली क़ुतबशाह के शासन काल में, जो अकबर का समकालीन था, उसे अदबी दर्जा प्राप्त हो गया था। यों तो दक्षिण में बहमनी सल्तनत ही के ज़माने से दकनी उर्दू की बुनियाद पड़ने लगी थी और सैयद मुहम्मद हुसैन गेसूदराज़ ने अनेक लेख और शेर दकनी उर्दू में कहे थे। लेकिन इस

सल्तनत की समाप्ति पर जब 'बिदर, बरार, अहमदनगर, बीजापुर और गोल-कुण्डा के स्वतन्त्र राज्य अस्तित्व मे आये तो भाषा और साहित्य की बडी सेवा हुई। खास तौर पर आदिलशाही और कुतबशाही दौर मे अगर एक तरफ दक्षिणी भाषा और साहित्य की उन्नति हुई तो दूसरी तरफ हिन्दू और मुसलमानो के सास्कृतिक मेलजोल मे नया समाज दिन-प्रतिदिन उन्नति करता गया। यह मिलीजुली संस्कृति जो एक ओर उत्तर भारत मे और दूसरी ओर दक्षिण मे उन्नति कर रही थी दकनी उर्दू और उत्तर भारत की उर्दू मे रचती चली गयी। अगर कुली कुतबशाह के दीवान मे हिन्दुस्तानी मौसमो, त्योहारो, रीति-रिवाजो और हिन्दू पौराणिक कथाओं के हवाले है तो उत्तर भारत के प्रारम्भिक शाइरो मे 'फाइज' देहलवी की 'पनघट' हिन्दुस्तान के असली दृश्य पेश करती है। शाह आयतुल्लाह 'जौहरी' की मस्नवी 'गौहरे-जौहरी' मे कवलदयी की जबानी जो बारहमासा लिखा गया है उसमे 'भाषा' की शाइरी का पूरा अक्स है। इतना जरूर है कि जो हिन्दुस्तानियत कुली कुतबशाह की गजलो मे मिलती है या 'वली' दकनी के कलाम मे जिस तरह प्रेमिका से सम्बोधन सजन और मोहन शब्दो मे नजर आता है और जिस प्रकार टीके और भभूत का जिक्र मिलता है वह उत्तर भारत के उस दौर के शाइरो मे कहीं-कहीं देखने को मिलता है। उत्तर भारत की गजल पर फारसी का प्रभाव था। उसे उन मुगल शासको का सरक्षण भी प्राप्त नही हुआ जो मिलीजुली सस्कृति के समर्थक थे।

औरगजेब के दक्षिण प्रवास मे उत्तर और दक्षिण का सम्बन्ध बढा और 'वली' दकनी सन् १७०० ई० मे देहली आये। 'वली' के इस सफर के बाद से उत्तर भारत मे उर्दू शाइरी तेजी से कदम बढाने लगी। अगर, उस दौर से लेकर आज तक उर्दू के काव्य-रूपो पर गहरी नजर डाले तो हम इस नतीजे पर आसानी से पहुँचेगे कि वह गजल हो या नज्म, मस्नवी हो या कसीदा यहाँ तक कि मर्सियो तक मे मिलीजुली हिन्दुस्तानी सभ्यता और सस्कृति समाई हुई है। गजल मे यह जरूर है कि जो उपमाएँ, रूपक या प्रतीक आम तौर पर इस्तेमाल हुए है वे फारसी अदब से आये है, लेकिन इससे इन्कार कैसे किया जा सकता है कि इन पर्दो के पीछे हर युग के हिन्दुस्तानी जीवन के सामाजिक, सास्कृतिक और राजनीतिक चित्र उजागर है। अगर मीर तकी 'मीर' कहता है—

दिल की बरबादी का क्या मज्कूर है
यह नगर सौ मर्तबा लूटा गया

तो यहाँ दिल का लफ्ज दिल्ली का पर्यायवाची बन जाता है जो भीतरी और

बाहरी हमलों से तहस-नहस होती रहती थी। या 'रिन्द' लखनवी का यह शेर—

खुली है कुंजे-क़फ़स में मिरी जबां सैयाद
मै माजरा-ए-चमन क्या करूँ बयां सैयाद

तो दरअसल यह रूपक हिन्दुस्तान की उस हालत की तरफ़ इशारा करता है जब दिल्ली और लखनऊ की सल्तनतें ख्वाबो-ख़याल हो चुकी थीं और हमारा देश ब्रिटिश सत्ता के शिकंजे में जकड़ गया था। आखिर में आनेवालों मे 'हाली' का यह शेर लीजिये—

'हाली' नशाते-नग्मा-ओ-मै ढूण्डते हो अब
आये हो वक़्ते-सुब्ह, रहे रात भर कहाँ

तो इस शेर के पीछे मुग़ल साम्राज्य की तबाही और बरबादी की पूरी दास्तान छिपी हुई मिलेगी। हमे यह न भूलना चाहिये कि गज़ल मे इशारो की ज़बान इस्तेमाल होती रही है। सरसरी तौर पर देखनेवालों को ऐसा लगता है कि ग़ज़ल में रस्मी विषय है और उसे हिन्दुस्तान या हिन्दुस्तानियत से कोई वास्ता नही है। मगर गज़ल वास्तव में अपने देश की हर युग की कहानी कहती आयी है। सूफ़ियों की तहरीकें हों या मुल्की और सियासी हालात और घटनाओं का बयान हो, ग़ज़ल ने अपने ढंग से सब-कुछ कहा है।

उर्दू शाइरी का दूसरा रूप मस्नवी लीजिए। मस्नवी का अन्दाज़ वर्णनात्मक है, इसलिए बात खुलकर सामने आती है। कितनी मस्नविया है जिनके विभिन्न भागो में हिन्दुस्तान की मिलीजुली सभ्यता रची-बसी है। 'फ़ाइज़' की मस्नवियाँ 'निहां' और 'जोगन'; शाह 'हातिम' की मस्नवी 'बज्मे-इश्रत'; 'मीर' की मस्नवी 'जश्ने-होली' और 'कदखुदाई' और 'सौदा' की मस्नवी 'मौसमे-गरमा' ही पर निर्भर नही, मीर हसन की 'सहरुलबयान' हिन्दुस्तान की सामाजिक और सांस्कृतिक रस्मों और परम्पराओं से भरी पड़ी है। 'मुस्हफी' ने गर्मी और जाड़े की कैफ़ियत बयान की है तो 'रंगीन' की 'दिल-पज़ीर' मे जो 'क़िस्स-ए-जबीनो-नाज़नीन : रानी श्रीनगर' के नाम से मशहूर है और दयाशंकर 'नसीम' के 'क़िस्स-ए-गुल बकावली' में हिन्दुस्तानी तत्त्वों की कितनी झलकियाँ मौजूद है। बाद के शाइरों की मस्नवियाँ जिनमें हिन्दुस्तानियत का तत्त्व है, उनमें 'इब्रत' की पद्मावत, मूलचन्द मुंशी की 'हीर-राझा', नवाब मुहब्बत खाँ 'मुहब्बत' की 'ससी-पुन्नू' और 'राहत' काकोरवी की 'नल-दमन' विशेषतः उल्लेखनीय है। वाजिदअली शाह के युग मे 'अमानत' के छन्दोबद्ध ड्रामे 'इन्द्र सभा' मे भी हिन्दुस्तानी झलक नज़र आती है।

मस्नवियों की तरह क़सीदों में भी हिन्दुस्तानियत के तत्त्व बिखरे हुए मिलते

है। दकनी उर्दू मे तो ईद, बकरीद और वसन्त या मौसमो पर कसीदे लिखे ही गए थे। 'वली' दकनी ने जो कसीदो की तशबीब (प्रारम्भिक भाग) लिखी है उसमे हिन्दुस्तानी ज्योतिप विद्या और सगीत का बयान भी लिखा है। 'सौदा' के कसीदे यद्यपि काल्पनिक उडान पर आधारित है लेकिन उनके अधिकाश कसीदो मे वसन्त ऋतु का जिक्र है। उनका मशहूर कसीदा 'शहर आशोब' उस जमाने के राजनीतिक पतन और सामाजिक दरिद्रता पर व्यंग की हैसियत रखता है। 'मीर' के यहाँ भी एक कसीदे मे जमाने की गर्दिश का जिक्र यथार्थ के रूप मे किया गया है। हम सिर्फ उन्ही कसीदो की तरफ इशारा करना चाहते है जिनका विषय या जिनका प्रारम्भिक भाग हिन्दुस्तानी सभ्यता का आईनादार है। 'इशा' के अधार्मिक कसीदो मे हिन्दी के शब्द बहुतायत से प्रयुक्त हुए है। और हिन्दुस्तानी इशारो और परम्पराओ का भी नियमित रूप मे उपयोग किया गया है। उनके कसीदो के किसी-किसी टुकडे मे हिन्दुस्तानी वातावरण पूर्ण रूप से साँस लेता है। 'दुल्हन जान' की प्रशसा मे जो कसीदा 'इशा' ने कहा है उसमे हिन्दुस्तानी सगीत की शब्दावली और हिन्दुस्तानी इशारे मौजूद है। 'मुस्हफी' के कसीदो मे वह कसीदा अहम है जिसमे हिन्दुस्तान के उस युग की दरिद्रता और अशान्ति का नक्शा खीचा गया है। 'जौक' के एक कसीदे के प्रारम्भिक भाग मे हमको ज्योतिप, खगोल विद्या, आयुर्वेद, इतिहास, मतलब यह कि पूर्वी विद्याओ और कलाओ का खजाना मिलता है, जिसकी वजह से एक ज्ञान का वातावरण पैदा हो गया है। हिन्दुस्तानी सगीत के बारे मे सुनिए—

इस कदर साजे-तरबसाज की आवाज बलन्द
छेडे गर तार खरज का तो हो पैदा धैवत
लेके अँगडाई कही हँसने लगी राम कली
उट्ठी मलती हुई आखो को कही अपनी ललत

गालिब ने उस कसीदे की तशबीब मे जो हजरत अली की स्तुति मे है; तसव्वुफ और वेदान्त के उस दृष्टिकोण को पेश किया है जो विश्व के प्रारम्भ के बारे मे है। एक कसीदे मे प्रात काल का दृश्य बहुत जानदार है। यो तो सैकडो कसीदे है लेकिन अरमान अली 'सहर' लखनवी के 'कसीदा-ए-बहारिया' पर हमारी नजर ठहरती है जिसका शेर है—

अय हवा जाके बनारस से उड़ा ला बादल
चाहिए हिन्दवी मौसन के लिए गंगाजल

'मुनीर' शिकोहाबादी के चन्द कसीदो मे १८५७ की क्रान्ति की घटनाएँ दर्ज हैं। 'तस्लीम' के कसीदो के प्रारम्भ मे आम तौर पर निजी गम मिलता है,

लेकिन एक कसीदे मे 'दिले-बरबाद की खानाखराबी' की आड में आम सामाजिक दशा की तरफ इशारा कर गये है—

घर किया खानाखराबी ने दिले-बरबाद मे
आजकल है अपना सीना ग़ैरते-हिन्दोस्ता

उर्दू के शाइर मिलीजुली हिन्दुस्तानी सभ्यता और संस्कृति मे कितने प्रभावित थे, इसका अन्दाजा मर्सियो के अध्ययन से भी आसानी से हो सकता है। कर्बला की घटनाओं की पृष्ठभूमि यद्यपि अरब देश है लेकिन मर्सिये हिन्दुस्तानी समाज का चित्र पेश करते है। हम अगर सिर्फ 'अनीस' के मर्सियो को उठाकर देखे तो काफी है। हद यह है कि 'अनीस' ने इमाम हुसैन की लड़की और भतीजे की शादी के मौके पर हिन्दुओ के संस्कार बयान किए है। मदल, मेहँदी, नथ, कगना, सेहरा खालिस हिन्दुस्तानी चीजे है। दूल्हा के सिर पर बहनो का आँचल डालना खालिस हिन्दुस्तानी रस्म है—

बहनें किधर है डालने आचल बने पे आएँ
अब देर क्या है हुजरे से बाहर दुल्हन को लाएँ

यहाँ तक तो हमने प्राचीन उर्दू शाइरी मे मिलीजुली हिन्दुस्तानी सभ्यता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। अब एक उचटती-सी नजर आधुनिक शाइरी पर भी डाली जाए जो 'आजाद' और 'हाली' के दौर से शुरू होती है।

'आजाद' और 'हाली' के दौर मे आधुनिक नज्म-निगारी शुरू होती है। यह बदलते हुए हालात का तकाजा था। अग्रेजी साहित्य का प्रभाव भी उर्दू साहित्य पर पडने लगा था। 'आजाद' की 'अब्रे-करम' और 'जमिस्ता' मे और 'हाली' की 'बरखा रुत' मे हिन्दुस्तानी मौसमो का चित्रण है। नेचरल शाइरी के इस दौर मे हिन्दुस्तान के दृश्यो और यहाँ के मौसमो पर काफी मसाला मिलता है जो अपने सम्पादन के लिए एक ग्रंथ की अपेक्षा करता है। उसका विस्तृत वर्णन हम उन अध्यायो के अन्तर्गत करेंगे जिनमे प्राकृतिक दृश्यो और मौसमो पर नज्मे दी गई है। अलबत्ता यह जान लेना जरूरी है कि यह युग केवल नज्म-निगारी तक ही सीमित न रहा था बल्कि इस दौर मे ही उर्दू शाइरी धीरे-धीरे देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण होने लगी थी। देशभक्ति की जो लहर 'हाली' 'आजाद' और इस्माईल, 'सुरूर' जहानाबादी और 'चकबस्त' मे चली उसके पीछे देश के सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव काम कर रहे थे। यह लहर जमाने के साथ-साथ बढती चली गई और हिन्दुस्तान के सारे राजनीतिक आन्दोलनो को अपने में समोती गई। हर सामाजिक और राजनीतिक घटना जैसे उर्दू शाइरी का अभिन्न अंग हो। कोई मंजिल और कोई मोड़ ऐसा नही है

जहाँ उसने साथ न दिया हो या उसे अपने दिल की आवाज़ में न ढाला हो। इंकिलाब ज़िन्दाबाद तक का नारा उर्दू ज़बान ही ने हमारी जंगे-आज़ादी को दिया। यह सच है कि जंगे-आज़ादी के इतिहास को उर्दू नज़्मों ने अपने दिल के ख़ून से लिखा है और इसे दोस्त-दुश्मन सभी मानते हैं। 'इक़बाल', 'जोश' और 'फिराक़' और उनके समकालीन सभी शाइर और उनके बाद आनेवाली प्रगतिशील शाइरों की नस्ल ने यह जंग अपने कलम से लड़ी है। उर्दू शाइरी ने मुल्की सियासत को किस तरह अपनाया और क्या सेवा की इसकी व्याख्या हम इस संकलन के दूसरे भाग में करेंगे जिसमें हिन्दुस्तान के राजनीतिक आन्दोलनों को सम्मिलित किया जायेगा। इस जगह हम उर्दू के मशहूर लेखक कैयूम 'खिज्र' का एक उद्धरण देना काफ़ी समझते हैं—"अगर हिन्दुस्तान की तमाम तारीखी किताबें (इतिहास) खत्म कर दी जाएँ, तमाम आन्दोलनों के वृत्तान्त गुम कर दिए जाएं और सिर्फ उर्दू साहित्य बाक़ी रह जाए तो आप हिन्दुस्तान की हर युग की ऐतिहासिक कड़ियों को जोड़ सकते हैं और आपको केवल उर्दू के द्वारा हिन्दुस्तान के सम्पूर्ण इतिहास का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।"

आइए, इस समय हम इस भाग के हर अध्याय पर एक नजर डालते चलें।

हिन्दुस्तान की महानता – हमने इस पहले अध्याय में वे चंद नज़्में दी हैं जो हमारे देश की विशेषता और महानता को उजागर करती हैं। इतिहास गवाह है कि हिन्दुस्तान ने सदियों दुनिया को ज्ञान का प्रकाश प्रदान किया है। यह धरती अगर एक तरफ़ दुनिया के कई बड़े धर्मों की जन्मभूमि है तो दूसरी तरफ़ कई विद्याओं और कलाओं का पहला पालना सिद्ध हुई है। एक तरफ़ इसने वेद, उपनिषद, महाभारत रामायण, गीता और धम्मपद जैसी पवित्र किताबें दुनिया को दीं तो दूसरी तरफ़ गणित, दशमलव प्रणाली, ज्योतिष विद्या, खगोल विद्या और आयुर्वेद में दूसरे देशों का मार्गदर्शन किया। आर्य भट्ट, ब्रह्मगुप्त, और वराह मिहिर ने अगर ज्योतिष शास्त्र और गणित शास्त्र को आगे किया तो वागभट्ट ने आयुर्वेद पर एक बड़ा ग्रंथ ज़माने के सामने रखा। यही नहीं चित्रकारी मूर्तिकला और वास्तुकला में अजन्ता, एलौरा, साँची और सारनाथ की बेमिसाल यादगारें क़ायम कीं। अपने मुल्क के महान् कारनामों पर गर्व करना और अपनी धरती के कण-कण से मुहब्बत करना एक कुदरती बात है। इन्सान जिस धरती पर रसता-बसता है उसके आर्थिक और सांस्कृतिक रिश्तों की जड़ें उस धरती में बहुत गहरी होती हैं। और यही वह बंधन है जो देशभक्ति की भावना की बुनियाद है। आर्यों से लेकर मुसलमानों तक जितनी भी क़ौमें आईं और यहाँ

रस-बस गई उनके लिए हिन्दुस्तान अपना वतन बन गया। यह भी सत्य है कि हिन्दुस्तान मे एक संयुक्त राष्ट्रीयता की बुनियाद शुरू ही से पडती रही है और हिन्दुस्तान की सारी कौमे वक्त के साथ इस उद्देश्य की तरफ कदम बढानी रही है। यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि धर्म, नस्ल और इतिहास का सह-योग यद्यपि अहम है लेकिन सयुक्त राष्ट्रीमता के लिए अनिवार्य शर्त की हैसियत नही रखता। डॉक्टर आबिद हुसैन ने भी अपनी किताब 'कौमी तहजीब का मसला' मे माना है कि केवल भौगोलिक एकत्व, आर्थिक एकत्व और आम सास्कृतिक एकत्व ही को हम कौमी राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्तें करार दे सकते है। मिलाजुला इतिहास निश्चय ही एक बडी शक्ति है जो एक देश मे बसनेवालो को एक करने मे मदद देती है। हिन्दुस्तान की कौमे हजारो साल से एक-दूसरे के साथ जिन्दगी गुजारती आई है। मुसलमान जो मक्के बाद म यहा आकर बसे उन्हे भी साढे सात सौ साल से ज्यादा हो गए है। अगर हम उस वक्त से मुसलमानो के आगमन का हिसाब करे जब उन्होने सिध मे पहले-पहल अपने कदम जमाए तो बारह सौ साल से भी ज्यादा का अरसा होता है। अठारहवी सदी के मध्य से उन्नीसवी सदी के मध्य तक के जमाने मे जो हिन्दुस्तानियो की राजनीतिक और आर्थिक दासता का दौर था, हिन्दुओ और मुसलमानो का इतिहास, जो दरअसल स्वतन्त्रता-युद्ध का इतिहास है, एक रहा है। हिन्दुओ और मुसलमानो के सास्कृतिक मेलजोल की तरफ हम पहले ही इशारा कर चुके है। उर्दू भाषा जो इस साझे का ही फल थी, हिन्दुओ और मुसलमानो की साझे की मीरास है। मौलवी अब्दुलहक ने अपने अभिभाषणो मे लिखा है कि "उर्दू के बनाने-सँवारने मे अगर हिन्दुओ को साझेदारी न होती तो यह अस्तित्व ही मे न आ सकती थी।" अतएव उर्दू ने जहाँ इस धरती की एक-एक चीज को गले लगाया वहाँ इस देश की महानता के भी गीत गाए।

जो नज्मे इस विषय पर चुनी गई है उनमे पहली नज्म डाक्टर इकबाल की है जो अखण्ड हिन्दुस्तान मे पैदा हुए और अखण्ड हिन्दुस्तान मे ही स्वर्ग सिधार गए। इकबाल की यह नज्म जगे-आजादी के दौरान तराने का रूप धारण कर गई थी और जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ तो आजादी की घोषणा के समारोह मे टैगोर के 'जन गण मन' के साथ जो आज हमारा राष्ट्रगीत है, इकबाल का यह तराना भी गाया गया था। 'चकबस्त' की 'खाके-हिन्द' मे हिन्दुस्तान की महानता का वर्णन है। एक ओर गौतम, सरमद, अकबर और राणा का जिक्र है तो दूसरी तरफ गंगा और कश्मीर की खूबसूरत घाटी का बयान है। दुर्गासहाय 'सुरूर' जहानाबादी के यहाँ देशभक्ति की आत्मा है। 'जोश' की नज्म

व्यक्तिगत अनुभूति लिये हुए है फिर भी करोड़ो दिलो की बात कहती है। 'फिराक' ने अपनी रुबाइयों मे हिन्दुस्तान की जो सर्वव्यापी और महान् तस्वीर दी है वह हमारे तारीखी, समाजी और इल्मी पहलुओ का ही जिक्र नही करती बल्कि हमारी नैतिक और आध्यात्मिक ऊंचाइयो को भी अपने मे समोये हुए है। महाराज बहादुर 'वर्क' हिन्दुस्तान के नैयरे-इकबाल के दुबारा चमकने का यकीन रखते है। इसी तरह 'सीमाब' की नज्म मे अनेक ऐतिहासिक हवाले मिलते है और वह हिन्दुस्तान की गुजरी हुई महानता की एक बार फिर आवाज देते नजर आते है। 'जमील' मज्हरी, आनन्द नारायण मुल्ला और 'नैश' सिद्दीकी ने हिन्दुस्तानी इतिहास और संस्कृति को सुन्दर ढग से पेश किया है। खास तौर पर मुल्ला और 'नैश' की नज्मो का कैन्वस काफी विस्तृत है। 'सागर' निजामी का 'तराना-ए-वतन' एक गीत का तास्सुर लिये हुए है। 'अफसर' मेरठी, निहाल स्योहारवी और 'एजाज' सिद्दीकी की कोशिशे भी निष्ठा से परिपूर्ण है। सरदार जाफरी की लम्बी मस्नवी का एक टुकड़ा भी शामिल किया गया है जिसमे वह बरतानवी कब्जे से हिन्दुस्तान के सौदर्य के सारे खजाने हमेशा के लिए छीन लेना चाहते है। गोपाल मित्तल की संक्षिप्त नज्म मे आज के हिन्दुस्तान मे विचार-स्वातन्त्र्य और व्यवहार-स्वातन्त्र्य को सराहा गया है। 'नाजिश' की कृति बहुत सुन्दर है। 'जानिसार' अख्तर के 'खाका-ए-वतन' मे हिन्दुस्तान के दृश्य, त्यौहार, रीतिरिवाज, ललित कलाओ आदि का प्रतिनिधित्व है। आखिर मे सिकन्दर अली 'वज्द' की 'नज्रे-वतन' है। यह नज्म उन भावनाओ का इज्हार है जो अपने देश की आजादी मे गले मिलता देखकर शायर के दिल मे मौजे मार रही है।

सियाह दौरे-गुलामी खयालो-ख्वाब है आज
बलन्द अज्मते-इन्सा का आफ्ताब है आज

ये सब रचनाएं इस बात का खुला हुआ सुबूत है कि हिन्दुस्तान की सदियो की महानता उर्दू शायरी की कला और चिन्तन का अंग बन गई है।

प्राकृतिक दृश्य—इस अध्याय को हमने दो भागो मे बांट दिया है। पहले भाग मे चन्द वे नज्मे है जो हमारे पहाड़ो और नदियो से सम्बन्धित है। हिमालय पर दो नज्मे है। एक डाक्टर इकबाल की और दूसरी 'मुनव्वर' लखनवी की। हिन्दू शास्त्रो मे पर्वत को शक्ति का प्रतीक समझा जाता है। सब पर्वतो मे हिमालय का स्थान सबसे ऊँचा है। इसकी विभिन्न चोटियो को विभिन्न देवी-देवताओ का निवास माना गया है। मसलन मेरु ब्रह्मा का निवास स्थान है, मंदराचल दुर्गा का निवास स्थान है, कैलाश शिवजी का निवास स्थान है। गंगा

और पार्वती को हिमालय की बेटियाँ माना गया है और एक किंवदंती के अनुसार हिमालय का नाम हेमावती से लिया गया है जो पार्वती के अनेक नामों में से एक है। हिमालय की पवित्रता का अन्दाज़ा इससे भी किया जा सकता है कि बड़े-बड़े ऋषि-मुनि साधना और आराधना के लिए हिमालय या उसकी तराई को अपना स्थान बनाते रहे हैं। इस धार्मिक श्रद्धा से अलग हिमालय की भौगोलिक स्थिति हमारे देश के लिए बड़ी अहम रही है। 'इक़बाल' की नज़्म हिमालय की महानता का राग गाती है और बड़े रोबीले शब्दों में। 'मुनव्वर' लखनवी की नज़्म दरअसल कालिदास के 'कुमारसम्भव' का एक टुकड़ा है। कालिदास ने जिस हुस्न और खूबी के साथ हिमालय का चित्र खींचा है, इसमें शक नहीं कि 'मुनव्वर' ने उसे उर्दू शाइरी के कालिब में उसी खूबसूरती से ढाल दिया है। गंगा पर उर्दू में अनेक नज़्में है उनमें से हमने सिर्फ पाँच नज़्मे दी है। गंगा हमारे देश की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। प्राचीन काल से लेकर आज तक इसको धार्मिक महत्त्व प्राप्त है। हिन्दू शास्त्रो में यह नदी गगा माई या गंगा माता कही जाती है और इसे देवी का स्थान दिया गया है। पुराणों के युग में कितनी ही कथाएँ गंगा के सम्बन्ध में अस्तित्व में आई जिनमें गगा को ब्रह्मा, विष्णु और शिव से एक-न-एक रूप में सम्बन्धित बनाया गया है। एक कथा यह भी है कि राजा सगर के बेटे जब एक ऋषि के शाप से भस्म हो गए तो भगीरथ ने उनकी आत्मा की शान्ति के लिए यही उपाय सोचा कि गंगा स्वर्ग से धरती पर उतरे और उसके पवित्र जल से उनकी मुक्ति हो। भगीरथ ने अपनी तपस्या से गंगा को राजी कर लिया लेकिन डर यह पैदा हुआ कि गंगा धरती पर सीधी गिरी तो धरती धँस न जाए। उस समय शिवजी ने यह बात मान ली कि गंगा उनकी जटाओं पर गिरे और वहां से धरती पर बहे। भगीरथ की तपस्या ही से मानो गगा धरती पर उतरी इसलिए गंगा को भागीरथी भी कहकर पुकारा जाता है। इस धार्मिक विशेषता के अलावा गगा का ऐतिहासिक महत्त्व भी बहुत बड़ा है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपने वसीयतनामे में गंगा के बारे में महत्त्वपूर्ण बातें कही है। वैसे भी गंगा हिन्दुस्तान जैसे कृषि-प्रधान देश मे अहम है जो हमारे देश की लाखो मील धरती को सींचती और तृप्त करती है। गंगा पर जो नज़्मे दी गई है वे उसके विभिन्न पहलुओं का चित्रण करती हैं। विशेषत: 'नज़ीर' बनारसी की नज़्म 'गंगा के तीन रूप' और 'राही' मासूम रजा की नज़्म का आखिरी टुकड़ा बहुत खूबसूरत है। 'साग़र' निज़ामी की नज़्म यमुना पर है। यमुना भी हमारे देश की महत्त्वपूर्ण नदी है। पौराणिक दृष्टि से जमुना या यमुना सूर्य देवता की पुत्री मानी गई

है। भाईदूज के मौक़े पर यमुना के किनारे मेला लगता रहा है जहाँ बहनें स्नान करके अपने भाइयों के लिए शुभ कामनाएँ करती हैं। यमुना की महानता और विशेषता में बड़ा हाथ कृष्ण और राधा की कथा का है। यमुना जिसके किनारे कृष्ण के पवित्र प्रेम के आज भी राग गाए जाते हैं और जहाँ सदियों के बाद एक और मुहब्बत की यादगार 'ताजमहल' के रूप में उभरी, उर्दू साहित्य में हमेशा के लिए प्रवाहित हो चुकी है। एक नज़्म संगम या त्रिवेणी पर है। यह हामिदुल्लाह 'अफ़सर' मेरठी की है। इलाहाबाद या प्रयाग में जहाँ गंगा-यमुना और सरस्वती का मिलाप होता है, उसी को संगम के नाम से याद करते है। सरस्वती नदी का उल्लेख हमें ऋग्वेद में मिलता है। उसके ठण्डे, निर्मल जल की माँ के दूध से तुलना की गई है। कहा जाता है सरस्वती गंगा-यमुना की सतह के नीचे शान्ति और सुकून से बहती रहती है। संगम हिन्दुओं का पवित्र स्थान है। एक पौराणिक कथा के अनुसार अमृतघट की बूंदें तीन-चार स्थानों पर टपक पड़ी थीं। उनमें प्रयाग, हरिद्वार, काशी आदि सम्मिलित हैं। कुम्भ का मेला यहीं पर लगता है। एक नज़्म रावी पर है। 'इक़बाल' ने इस नदी को जीवन के दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा है। आखिर में जगन्नाथ 'आज़ाद' की संक्षिप्त नज़्म 'चिनाब' है, जिससे हिन्दुस्तान की कई रूमानी कहानियाँ सम्बद्ध हैं।

इस अध्याय के दूसरे भाग में दृश्यों पर चन्द मोहक नज़्में हैं। उर्दू में दर-असल फ़ितरत-निगारी की शुरुआत १८५७ के बाद हुई। इस शेरी आन्दोलन के बारे में अगर निश्चयात्मकता से काम लिया जाए तो हम १८५७ का साल निश्चित कर सकते हैं। इस साल मुहम्मद हुसैन 'आजाद' ने आधुनिक उर्दू शाइरी का नजरिया पेश किया और मुहम्मद इस्माईल मेरठी ने अंग्रेजी नज्मों के अनुवाद किए। १८७४ में यह आन्दोलन लोकप्रिय हुआ और 'आजाद' के कंधे से कंधा मिलाकर 'हाली' भी इस मैदान में उतर आए। हिन्दुस्तान के प्राकृतिक दृश्य, यहाँ के सुब्हो-शाम और यहाँ के मौसमों पर नज़्में लिखी जाने लगीं। यद्यपि इससे पहले मस्नवियों और मर्सियों और क़सीदों में भी ये तत्त्व मिलते हैं जिनकी तरफ़ हम इशारा कर चुके हैं। प्राचीन शाइरी में केवल 'नज़ीर' अकबराबादी एक ऐसा शाइर है जिसने ऐसे विषयों पर अलग-अलग नज़्में कही हैं। फ़ितरत-निगारी हमें 'इक़बाल' और 'चकबस्त' के यहाँ भी मिलती है। 'जोश' मलीहाबादी ने इस प्रकार की बहुत सुन्दर और दिलकश नज़्में कही हैं। उन्हीं के प्रभाव से यह प्रवृत्ति आगे की नस्ल तक पहुँची। 'सागर' निज़ामी, एहसान 'दानिश', 'अख़्तर' शीरानी 'नदीम' क़ास्मी, विशेषकर रूमानी शाइरों ने इसे अपनाया। प्रगतिशील आन्दोलन के शाइरों के कलाम में इस प्रकार की नज़्में हैं लेकिन

बहुत कम। इस हिस्से मे जो नज्मे दी गई है, उनमे दो टुकड़े तो मीर हसन की मस्नवी 'सहरुलबयान' से लिये गए है। तीन नज्मे जोश की है और निस्सदेह लाजवाब है। जिन्दा दृश्यो मे इसानी जज्बात पर दृश्यो की जादूगरी को बडे खूबसूरत अंदाज मे पेश किया है। 'फ़ाख्ता की आवाज' उर्दू की हसीनतरीन नज्मो मे गिनी जाने के लायक है। अब्बास बेग 'महशर' की 'राजहंस', 'अख्तर' शीरानी की 'चरवाहे की बसी', 'जाँनिसार' अख्तर की 'एक वादी से गुजरते हुए', 'फैयाज' ग्वालियरी की 'धान के खेत' और 'शिहाब जाफरी' की नज्म 'जजीरो का ख्वाब' इस प्रकार की शाइरी का खूबसूरत सरमाया है।

इन नज्मो मे हिन्दुस्तान के प्राकृतिक दृश्यो की असली रूह है।

हमारे सुब्हो-शाम—जो नज्मे इस अध्याय मे शामिल है वे भी फितरत निगारी ही की प्रवृत्ति की पैदावार हे। यह वास्तविकता हे कि अगर हम ऐसे शाइरो की फेहरिस्त तैयार करे जिनके कलाम मे हमारे सुब्हो-शाम का हुस्न और जमाल रचा हे तो तादाद सैकडो से कम न होगी। जो नाम सहसा हमारे जिहन मे उभरते है वे 'आजाद' और 'हाली' के अलावा इस्माईल मेरठी 'चकबस्त', 'सुरूर', 'बेनजीर शाह, 'नादिर' काकोरवी, अब्दुल हलीम 'शरर', 'नज्म' तबातबाई, 'शौक' किदवाई, 'औज' गयावी, सैयद मुहम्मद हादी, 'जलाल' मुरादाबादी, कुन्दनलाल 'शरर' वगैरा है। 'इकबाल' और 'जोश' के बाद भी मजर निगारी की प्रवृत्ति उर्दू शाइरी मे रही जैसा हम ऊपर दिखा आए है। इस भाग मे जो पहली नज्म 'तुलू-ए-आफ्ताब' शामिल है वह गालिब के कसीदे से ली गई है। मर्सियो मे से हमने मिर्जा अनीस के यहाँ से 'नूर जुहूर का वक्त' और 'नफीस' के यहाँ से 'सुब्ह का समा' लिया है। 'जल्वा-ए-सुब्ह' के शीर्षक से ब्रजनारायण 'चकबस्त' की नज्म है जो मिर्जा अनीस ही के रग मे है। एक छोटी मगर खूबसूरत नज्म 'सुब्ह की बहार' 'उफुक' लखनवी की है। 'नुमूदे सुब्ह' 'बेनजीर' शाह की कृति है जो उनकी लम्बी मस्नवी 'अल्कलाम' का एक टुकडा है। 'बेनज़ीर' शाह पर मीर हसन का असर साफ दिखाई देता है। उनके यहाँ अवलोकन की बडी शक्ति है। इकबाल की नज्म 'आफताब' दरअसल गायत्री से अनूदित है। एक मौलिक नज्म 'नुमूदे-सुब्ह' भी शामिल है। इकबाल अपने आलाप से हर दृश्य को वैभवशाली बना देते है। सुब्ह पर एक नज्म 'जोश' की है। उसमे 'जोश' अपनी शाइराना लताफतो और जादूगराना उपमाओ के साथ जल्वागर हैं। दोपहर पर 'अख्तर' अंसारी की एक छोटी-सी नज्म है। आखिरी शेर मे वास्तव में दोपहर सनसनाती हुई अनुभव होती है। शाम

पर इक़बाल, 'जोश', 'मखदूम' और 'निदा' फ़ाज़्ली की नज़्में हैं। 'जोश' की नज़्म उनकी मशहूर नज़्म 'किसान' का प्रारम्भिक भाग है। इक़बाल की 'बज़्मे-अंजुम' मंज़र-निगारी की हद से गुज़रकर जीवन-दर्शन तक पहुँचती है और उनकी आवाज़ अलग से सुनाई देने लगती है। रात के विषय पर पहली नज़्म मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद' की है। दूसरी मुहम्मद इस्माईल मेरठी की। इस्माईल ने शफ़क़ पर भी एक ख़ूबसूरत नज़्म कही है लेकिन लम्बी होने के कारण उसे शामिल नहीं किया गया। 'बेनज़ीर' शाह की 'चाँदनी रात' उनके विशेष रंग की द्योतक है। एक ग़ज़लनुमा नज़्म 'औज' गयावी की है और आख़िर में 'शाज़' तमकनत की 'आख़िरे-शब' है जिसमें ख़ूबसूरत शब्दों और ख़ूबसूरत बन्दिशों की बहुतायत के बावजूद एक जज़्बाती कैफ़ियत रची हुई है।

हमारे मौसम—इस अध्याय में हिन्दुस्तानी ऋतुओं पर नज़्में हैं। उर्दू ज़बान जहाँ अपने विकास की विभिन्न मंज़िलों में स्थानीय भाषाओं से असर क़ुबूल करती रही वहीं स्थानीय साहित्यिक परम्परा और काव्य-रूपों को भी अपनाने में पीछे नहीं रही। अतएव इसमें 'बारहमासा' की शैली को भी अपनाया। बारहमासा की परम्परा के बारे में डॉ० मसूद हुसैन ख़ाँ का ख़याल है कि "इसका विकास संस्कृत और अपभ्रंश के प्रबन्धकाव्य के ऋतु वर्णन से हुआ है।" कालिदास की 'ऋतुसंहार' इसका श्रेष्ठ नमूना है और इस अध्याय का आरम्भ हमने उसी के अनुवाद से किया है जो सरदार जाफ़री का किया हुआ है। यही ऋतुओं का ज़िक्र अपने मासिक विवरण में जाकर बारहमासा बन गया। इसके प्रभाव से दूसरी स्थानीय भाषाओं में मौसमों का हाल बयान होने लगा। हिन्दी साहित्य में वीरगाथा काल के अधिकांश 'रासो' में ऋतु वर्णन का विधान मिलता है। उर्दू ने भी इस परम्परा का लाभ उठाया। अतएव उर्दू में बारहमासे का पहला नमूना मुहम्मद अफ़ज़ल 'अफ़ज़ल' (मृत्यु १६२५ ई०) का लिखा हुआ मिलता है जो 'विकट कहानी' के नाम से मशहूर है। इसकी भाषा बताती है कि इसके लिखनेवाले का सम्बन्ध खड़ी बोली या उससे लगे हुए क्षेत्र से है। 'अफ़ज़ल' के बाद आयतुल्ला 'जौहरी', काज़िम अली 'जवा', अब्दुल्ला अंसारी और न जाने कितने शाइरों ने बारहमासे लिखे। इन बारहमासों का यह महत्त्व कम नहीं कि यह मिलीजुली सभ्यता, भाषा और साहित्य का मार्ग निश्चित करने की ओर एक ख़ुशगवार पहल का पता देते हैं। हमने इस अध्याय में 'अफ़ज़ल' के बारहमासे के दो टुकड़े 'सावन और भादों' लिये हैं। हिन्दी शाइरी की परम्परा के अनुसार औरत आशिक़ की हैसियत रखती

है। वही हैसियत उर्दू के बारहमासों में उसको दी गई है।

बरसात हिन्दुस्तान का सबसे खूबसूरत मौसम माना जाता है। जहाँगीर ने अपनी 'तुज़ुक' में लिखा है कि बरसात ही हिन्दुस्तान का वसन्त है। दक्षिण में इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय ने अपनी किताब 'नौरस' के एक गीत में कहा है कि "हिन्दुस्तान की आदर्श औरत बरसात के समान है क्योंकि उसके दाँत दुनिया को रौशन करने वाली बिजली हैं। रंग-बिरंगे वस्त्र बादल मालूम होते हैं और पसीना घनघोर घटा है जो बरस रही है। शरीर के बाल पौधे हैं और जवानी फल की तरह है।' वह बरसात के आगमन पर जश्न मनाता था। यही हाल सुल्तान क़ुली क़ुतबशाह का था। इस मौसम पर उसकी कोई पन्द्रह नज़्में है। इसके अलावा 'वजही' के जमाने से अदबी मस्नवियों का जो सिलसिला शुरू हुआ उनमें 'मुक़ीमी' की 'चन्द्रबदन महियार', जुनैदी की 'माह पैकर', 'मिराज' की 'बोस्ताने-ख़याल', 'नुसरती' की 'फूलबन' और सैकड़ो मस्नवियों में दृश्यों और मौसम पर अशआर मिलते हैं लेकिन भाषा की कठिनाई के कारण उनके हिस्से नहीं लिये गए। उत्तर भारत की मस्नवियों से हमने एक-दो टुकड़े लिये है। मीर तक़ी 'मीर' ने लगभग बत्तीस मस्नवियाँ लिखी हैं जिनमें चार मस्नवियाँ बरसात के बारे में हैं। इनमें से हमने उद्धरण लिये है। प्राचीन काल में 'नज़ीर' अकबराबादी का वह एकमात्र व्यक्तित्व है जिसने हिन्दुस्तानी मौसमों, त्योहारों बल्कि हिन्दुस्तान के हर हुस्न को अपनी शाइरी का विषय बनाया। डॉक्टर 'सलाम' सन्देलवी ने ठीक ही कहा है कि "अमीर खुसरो के बाद अगर किसी शाइर के कलाम में हिन्दुस्तान का गहरा और हसीन अक्स मिलता है तो 'नज़ीर' अकबराबादी की नज़्मों में है।" एक उद्धरण हमने हाली की 'बरखा रुत' से लिया है। 'हाली' की इस नज़्म में सिर्फ़ बरसात की मंज़रकशी ही नहीं बल्कि इंसानों की भावनात्मक प्रतिक्रिया को भी प्रकट किया गया है। इसके अलावा 'सुरूर' जहानाबादी की 'फ़ज़ा-ए-बर्शगाल', 'बेनज़ीर' शाह की 'आमदे-अब्र', 'उफ़ुक़' लखनवी की 'बरसात की बहार' और 'हसरत' मुहानी की 'बरसात' शामिल की हैं। 'जोश' की नज़्म 'बरसात की पहली घटा' बहुत सुन्दर है। 'जोश' को सूक्ष्म-से-सूक्ष्म बातों के चित्रण में जो कुशलता प्राप्त है उसकी मिसाल 'नज़ीर' अकबराबादी के बाद कहीं और नहीं मिलती। एक छोटी-सी नज़्म 'अख़्तर' शीरानी की है। 'शम्स' अज़ीमाबादी की नज़्म 'बरसात' उनकी मस्नवी 'जल्वा-ए-सदरंग' से ली गई है जो दरअसल बारहमासे की नवीनता का हुक्म रखती है। इसकी पृष्ठभूमि गया, पटना और आरा के शहरों, विशेषकर उनके आसपास की देहाती ज़िन्दगी से गहरा सम्बन्ध रखती है। अतएव भाषा पर भी स्थानीय बोलचाल का खासा असर है। फिर

भी बारहमासे को जिन्दा करने की यह कोशिश श्रेष्ठ कही जा सकती है। आखिर में 'अख्तर' शीरानी की एक और नज्म 'ओ देस से आने वाले बता' के कुछ बन्द दिये है। इसकी पृष्ठभूमि भी बरसात का मौसम और देहाती जिन्दगी का नक्शा है और उर्दू की मशहूर नज्मो में इसका शुमार होता है।

जाडे पर जो नज्मे है उनमें 'सौदा' की एक मस्नवी 'बर्दिया' का एक टुकडा है। इसमें कल्पना के रग की मिलावट है, अलबत्ता 'नजीर' अकबराबादी की नज्म दिलचस्प और हल्का-सा व्यग का अन्दाज रखती है। एक टुकडा 'आजाद' की नज्म 'जमिस्ता' मे लिया गया है। 'बेनजीर' शाह की 'फस्ले-सरमा' उनकी विशेष शैली मे है। 'जोश' की नज्म 'जाडा और अगीठी' बहुत सुन्दर है और जाडे की पृष्ठभूमि मे हिन्दुस्तान की जागीरदाराना सभ्यता के एक खास पहलू की बडी दिलकश नुमाइन्दगी करती है। 'शम्स' अजीमाबादी की मस्नवी मे जाडे पर भी एक उद्धरण लिया है और कोई शक नही कि बहुत सुन्दर है।

गर्मी पर जो शेर 'अनीस' के एक मर्सिये मे लिये है या 'हाली' की गर्मी का मौसम और इस्माईल की गर्मी से सम्बन्धित नज्म, सब मे ग्रीष्म ऋतु की प्रचण्डता का जोरदार बयान है। अलबत्ता 'जोश' की नज्म 'गर्मी और देहाती बाजार' उनकी प्रेक्षण-क्षमता का एक और सुन्दर उदाहरण है। 'शम्स' की नज्म भी बैसाख और जेठ की मौसमी हालत को सविस्तार पेश करती है और लगता है उनमे मौसमो पर लिखने का खास सलीका है। इसके बाद हमने बहार के मौसम पर गिनती की चन्द नज्मे दी है जिनमे एक 'सौदा' के कसीदे के प्रारम्भिक भाग के कुछ शेर है। ये शेर वसन्त ऋतु को हमारी आंखो के सामने तो नही लाते, सिर्फ उनकी शैली की नुमाइन्दगी करते है। नजब का कतआ 'आमदे-बहार', 'अकबर' इलाहाबादी की नज्मनुमा गजल 'बहार आयी', 'बेनजीर' शाह की 'बहार', अहमद अली 'शौक' किदवाई की 'आमदे-बहार' इस मौसम पर चन्द चुनी हुई नज्मे है जो विभिन्न युगो की शाइरी मे बहार का समा दिखाती है। इस अध्याय के अन्त मे 'जोश' और 'शम्स' की दो खूबसूरत नज्मे और जोड़ दी गई है जो हर तरह प्रशसा के योग्य है।

हमारे त्योहार—त्योहारो की बुनियाद आम तौर पर मजहब पर होती है। लेकिन चूंकि भारत एक कृषि-प्रधान देश है इसलिए इसके त्योहार अगर एक ओर मजहब से ताल्लुक रखते है तो दूसरी तरफ़ फ़स्ल की तैयारी और पैदावार के संचय से। हिन्दुस्तानी त्योहार अधिकाश इसी प्रकार के है। कुछ त्योहार ऐसे अवश्य है जिनका कृषि से कोई सम्बन्ध नही। मस्लन रामलीला या

दुर्गा पूजा। इनके अलावा बहुत-से वे त्योहार जो जैन मत, बौद्ध मत, ईसाइयत और इस्लाम वग़ैरा से ताल्लुक़ रखते हैं विशुद्ध धार्मिक बुनियादों पर मनाए जाते हैं। हम मौसमों के बारे में नज़्में दे चुके हैं। त्योहारों पर भी उर्दू मे बहुत-सी नज़्में मिलती हैं। यह बात कम महत्त्वपूर्ण नहीं कि जहाँ मुसलमान शाइरों ने हिन्दुओं के त्योहार होली, दिवाली, वसन्त वग़ैरा पर नज़्में लिखीं वहाँ हिन्दू और सिख शाइरों ने इस्लामी त्योहारों पर नज़्में लिखीं। यह दरअसल उसी मिलीजुली सभ्यता का चमत्कार था जो हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी को प्यारी रही है। शाइर वह चाहे किसी ज़बान का हो यों भी धार्मिक कट्टरपन का शिकार नहीं होता। उसके लिए इंसानियत सबसे महत्त्वपूर्ण है। फिर उर्दू ज़बान जो इसी धरती की पैदावार है, उसके शाइर यहाँ के सभी त्योहारों को अपना त्योहार कैसे नहीं समझते। होली जिसे रंगों का त्योहार कहना चाहिए, पूरे भारत में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह धूमधाम आज से नहीं सदियों से चली आ रही है। दक्षिण के सुल्तानों के दौर में और उत्तर भारत में मुसलमानों के शासनकाल में हिन्दू और मुसलमान मिलकर इस त्योहार को मनाते थे। सुल्तान क़ुली क़ुतबशाह हर त्योहार को, चाहे ईद हो या वसन्त एक जश्न का रूप दे दिया करता था। दरअसल क़ुली क़ुतुबशाह हिन्दुस्तानियत का पुजारी था। वसन्त का त्योहार दक्षिण ही में नहीं उत्तर भारत में भी बड़ी आनबान से मनाया जाता था। वसन्त का आरम्भ इसी मौसमी त्योहार से होता है। जब रबी की फ़सल तैयार होने लगती है, एक ओर सरसों फूलती है तो दूसरी ओर आम के बौर महक उठते हैं। इस त्योहार को मुग़लों के युग में मुसलमान भी मनाते थे। शाही क़िले में उस दिन वसन्ती वस्त्र धारण किए जाते थे। आज तक वसन्त पंचमी के दिन अगर एक तरफ़ कालकाजी के मन्दिर पर मेला लगता है तो दूसरी ओर मुसलमान सूफ़ी सरसों के फूल हाथ में लिये हुए उस स्थान पर जाते हैं जहाँ पहले-पहल वसन्त पंचमी के अवसर पर खुसरो ने हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की सेवा में सरसों के फूल पेश किए थे। क़ुली क़ुतबशाह के दीवान में इस त्योहार पर नौ नज़्में मिलती हैं तो इस त्योहार से सम्बन्धित गीत खुद शाह आलम ने भी कहे हैं। वसन्त और दिवाली पर भी उसके शेर मिलते हैं। दिवाली का त्योहार भी जो सर्दी की शुरुआत का एलान है और जिसे हिन्दू धर्मग्रन्थों के अनुसार रामचन्द्रजी के चौदह वर्ष बनवास काटकर अयोध्या वापस आने का जश्न माना जाता है, उर्दू शाइरी का प्रिय विषय रहा है। इस त्योहार के अलावा दक्षिण और उत्तर भारत में शबेबरात और ईद भी प्रमुख ढंग से मनाई जाती

रही हैं। फ़िरोजशाह तुग़लक (१३५१ ई०) के ज़माने ही से शबेबरात के त्योहार में आतिशबाज़ी का रिवाज हो गया था और गाने-बजाने का भी। ज़ाहिर है जनसाधारण में यह रिवाज लोकप्रिय होता चला गया और आज भी शबेबरात के मौक़े पर आतिशबाजी का प्रदर्शन होता है।

हमने इस अध्याय में हर त्योहार पर कुछ नज़्में दी हैं। होली पर पहली नज़्म 'फ़ाइज़' देहलवी की है जो उत्तर भारत का पहला साहबे-दीवान शाइर था। 'मीर' की 'मस्नवी दरबयाने-होली' से और 'हातिम' की मस्नवी 'बज़्मे-इशरत' से होली पर कुछ शेर लिये गए है। दो 'नज़्में' 'नज़ीर' अकबराबादी की हैं जिनका वातावरण होली की रंगारंग कैफ़ियतों को हमारी आँखों के सामने ला देता है। सआदतयार ख़ाँ 'रंगीन' की होली पर एक नज़्म है। बाक़ी नज़्में इस युग के शाइरों की कही हुई है, जिनमे एक 'सीमाब' अकबराबादी की है और दूसरी मुशी द्वारकाप्रसाद 'उफ़ुक' की। वसन्त पर 'नज़ीर', 'इंशा', 'अमानत' और 'बेनजी:' शाह की नज्मे हैं। 'बसन्त बहार' शीर्षक से जो नज़्म 'मुनव्वर' लखनवी की है वह दरअसल जयदेव के गीत गोविन्द के एक टुकड़े का अनुवाद है और इसमे कोई शक नही कि बहुत सुन्दर अनुवाद है। तीन नज़्मे वसन्त पर और है जो 'नज़ीर' लुधियानवी, 'नुशूर' वाहिदी और 'फ़ैयाज़' ग्वालियरी की कही हुई है। एक नज़्म 'नजीर' अकबराबादी की राखी पर भी है। दिवाली पर हमने पाँच नज़्मे चुनी है जिनमे आलेअहमद 'सुरूर', हुर्मतुल इकराम, 'शमीम' करहानी और 'मख़्मूर' सईदी की नज़्मे बहुत सुन्दर है। 'ईदे-मीलादुन्नबी' पर 'हफ़ीज़' जालन्धरी की लम्बी नज़्म 'विलादते-रसूले-मक़बूल' से लम्बा उद्धरण दिया है। शबेबरात और ईद पर भी फिर 'नजीर' अकबराबादी ही की नज़्म है। 'बेनजीर' शाह की 'ईद की धूम' और 'अख़्तर' शीरानी की नज़्म 'ईद का चाँद देखकर' भी इस अध्याय मे सम्मिलित हैं।

इनके अलावा हमने जैनी त्योहार—'छमावनी' पर भी एक नज़्म दी है जो 'नजीर' बनारसी की कही हुई है। यह त्योहार धार्मिक से अधिक सामाजिक हैसियत रखता है। जैन सम्प्रदाय के लोग साल में एक दिन एकत्रित होकर एक-दूसरे से साल-भर की बातों के लिए माफ़ी माँगते हैं और गले मिलते हैं। इसीलिए इसका नाम छमावनी (क्षमावाणी) रखा गया है। एक नज़्म आख़िर में 'फूलवालों की सैर' है जो गोपीनाथ 'अम्न' लखनवी की लेखनी की आभारी है। यह मेला हिन्दू-मुस्लिम एकता का श्रेष्ठ द्योतक रहा है। बहादुरशाह 'ज़फ़र' के ज़माने में इसकी बड़ी धूम थी और आज उस शानो-शौकत से तो नहीं लेकिन मनाया ज़रूर जाता है। उर्दू शाइरी में हिन्दुस्तान के मेलों, प्रदर्शनियों, तैराकी

की प्रतिस्पर्धाओं आदि पर न जाने कितनी नज़्में है जो इस संकलन में शामिल नहीं की गई हैं। बहर हाल इन त्योहारों पर उर्दू शाइरों की रचनाओं से प्रतीत होता है कि हिन्दुस्तानी समाज के परस्पर मेल-जोल और मिलीजुली सभ्यता का प्रतिनिधित्व उर्दू शाइरी सदियों से करती आई है।

हमारे शहर और इलाक़े—इस अध्याय में हिन्दुस्तान के कुछ महत्त्वपूर्ण शहरों पर चुनी हुई नज़्में हैं। सबसे पहले ग़ालिब का एक क़ता है कलकत्ता पर। मौलाना आज़ाद मरहूम का ख़याल था कि ग़ालिब कलकत्ते की प्रशंसा सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि अंग्रेज़ों की पसन्द को अपनी पसन्द क़रार देना चाहते हैं, लेकिन यह सही नहीं। ग़ालिब सन् १८२८ ई० से सन् १८३० ई० तक इस शहर में रहे। उस वक़्त कलकत्ता सचमुच 'जन्नतुल्बलाद' (स्वर्ग की तरह सुन्दर शहर) का हुक्म रखता था। अबुल कलाम आज़ाद और कौसर चाँदपुरी ने जिन कृतियों का हवाला दिया है वे उस वक़्त की हैं जब कलकत्ता गुंजान आबादी के कारण बीमारियों का घर बनने लगा था। गारसाँ द् तासी ने अपने व्याख्यानों में लिखा है कि—"इस युग में हिन्दुस्तान के मुसलमान बंगाल को जन्नतुल्बलाद ही कहते थे।" बहर हाल ग़ालिब को शहर कलकत्ते से सचमुच लगाव पैदा हो गया था जिसकी पुष्टि उनके कुछ पत्रों से भी होती है। कलकत्ता पर एक उद्धरण हमने हुर्मतुल इकराम की लम्बी नज़्म 'कलकत्ता एक ख़्वाब' से भी लिया है। इसमें इस बड़े शहर के सामाजिक, सांस्कृतिक और कल्चरल जीवन के तारीक और रौशन दोनों पहलुओं की झलकियाँ मिलती है। इलाहाबाद, बनारस और जौनपुर पर 'सफ़ी' लखनवी की नज़्में है। 'सफ़ी' मरहूम ने ये तमाम नज़्में 'लख़्ते-जिगर' शीर्षक के अन्तर्गत कही थी। यद्यपि ये नज़्में आल इण्डिया शिया कांफ्रेंस के उद्देश्य से लिखी गई थी और विभिन्न जलसों में पढ़ी गई लेकिन इन शहरों पर उन्होंने गहरी नज़र डाली है और किसी नज़्म में उस स्थान का ऐतिहासिक महत्त्व और किसी में उसके प्राचीन खण्डहरों का विवरण दिया है। बनारस पर उर्दू में सैकड़ों नज़्में हैं। हमने 'सफ़ी' की नज़्म के अलावा 'रईस' अमरोहवी की भी एक छोटी-सी नज़्म बनारस पर दी है जो प्रभावशाली है। आगरा की ऐतिहासिक महानता पर मौलाना 'सीमाब' की नज़्म है। गुजरात (पंजाब) जिसकी धरती में सोनी-महिवाल के प्रेम की ख़ुशबू बसी है उस पर 'अख़्तर' शीरानी मरहूम की लिखी हुई छोटी मगर सुन्दर साहित्यिक रचना है। लखनऊ पर भी 'अख़्तर' ही के चन्द शेर हैं। अलीगढ़ पर 'मजाज़' की नज़्म है जो ख़ालिस रूमानी है लेकिन उसकी भावनात्मक तीव्रता से इन्कार

नहीं किया जा सकता। इस नज़्म को मुस्लिम यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों ने अपनी यूनियन का तराना बनाया हुआ है और विद्यार्थियों ही की आवाज़ में इस तराने का रेकार्ड तैयार हो चुका है। बम्बई पर सरदार जाफ़री की एक नज़्म का उद्धरण दिया गया है। यह नज़्म यद्यपि निजी अनुभव से प्रेरित है लेकिन इसके आइने मे बम्बई की जिन्दगी की बहुत-सी कटु सच्चाइयाँ बड़ी खूबी के साथ झलक उठी है—

तेरी सड़कों पे सोये
तेरी बारिश मे नहाये है

हैदराबाद का बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रहा है। यह शहर सदियों ज्ञान और साहित्य, सभ्यता और शिष्टता का पालना रहा है। दकनी उर्दू का पहला साहिबे-दीवान शाइर सुल्तान कुली कुतबशाह इसी धरती पर पैदा हुआ। 'वली' दकनी, जिन्हे उर्दू शाइरी का बाबा आदम कहा जाता है, एक मुद्दत तक इस शहर से वाबस्ता रहे। इस तारीखी शहर पर सिकन्दर अली 'वज्द' की छोटी-सी नज़्म है। औरंगाबाद को भी हमारे राजनीतिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास मे कम अहमियत नहीं। 'वज्द' और यूसुफ 'नाज़िम' की नज़्मो मे बहुत-से साहित्यिक और सांस्कृतिक हवाले मिलते है। खुल्दाबाद पर 'सैकश' हैदराबादी मरहूम की नज़्म है। जगन्नाथ 'आज़ाद' ने लाहौर पर नज़्म कही है और वहाँ के बहुत-से साहित्यकारो के हवाले दिए है। देहली पर जो सदियो से हिन्दुस्तान का दिल है, नरेशकुमार 'शाद' मरहूम की शास्त्रीय शैली मे छोटी-सी साहित्यिक सर्जना है। इस अध्याय मे जिन क्षेत्रों पर हमने नज़्मे शामिल की है उनमे 'नाज़िश' प्रतापगढ़ी की 'वादि-ए-कश्मीर' है। याकूब आज़मी की 'जन्नते-रंगो-बू' भी इसी हसीन और शादाब क्षेत्र का चित्रण करती है। एक नज़्म ब्रज के इलाके पर है जो मुंशी बनवारीलाल 'शोला' की रचना है। ब्रज को जो धार्मिक पवित्रता प्राप्त रही है उसकी पूरी झलक उनके मुसद्दस मे मौजूद है। आखिर मे सरदार जाफरी की 'अवध की खाके-हसीं' है जो उनकी एक लम्बी नज़्म से ली गई है। इसमे सरदार ने अवध की प्राकृतिक सुन्दरता, वहाँ के खेतों, किसानो और मजदूरो का चित्रण बड़ी कुशलतापूर्वक किया है।

हमारी इमारतें—इस अध्याय मे हमने हिन्दुस्तान की चन्द महत्त्वपूर्ण इमारतों पर नज़्में दी है। पहली नज़्म 'नालन्दा के खण्डहर' के शीर्षक से है। नालन्दा प्राचीन भारत में सबसे बड़े विश्वविद्यालय की हैसियत रखता था जो

मगध में स्थित था। उस समय तक मुद्रण कला का आविष्कार न हुआ था। किताबें हाथ से लिखी जाती थीं। चीनी पर्यटक ह्वेनसांग ने पाँच वर्ष तक इस विश्वविद्यालय में रहकर शिक्षा प्राप्त की। उसे गौतम बुद्ध की धरती देखने और बौद्ध मत के साहित्य का अध्ययन करने का शौक़ ही हिन्दुस्तान खींचकर लाया था। यह नज़्म उसी नालन्दा के खण्डहरों की आवाज़ बनकर हमारे सामने आती है। आज नालन्दा को दुबारा जीवित करने की कोशिश हो रही है लेकिन उर्दू शाइरी ने उस प्राचीन नालंदा की तस्वीर को अपने सीने में सुरक्षित कर रखा है। अजन्ता और एलौरा की गुफाएँ हमारी शानदार ऐतिहासिक यादगारें हैं और संगतराशी के आश्चर्यजनक चमत्कार की हैसियत रखती हैं। इन गुफाओं को बनाने या बनवाने का सिलसिला हमारे यहाँ पाँचवीं सदी के मध्य से आरम्भ हुआ था और दो सौ वर्षों तक रुक-रुककर काम होता रहा। एलौरा में प्रारम्भिक गुफाएँ बौद्ध मत से सम्बन्धित हैं। हिन्दू धर्म ने जब नया रूप धारण किया और बौद्ध मत के मुक़ाबले पर आया तो चट्टानों को काटकर गुफाएँ बनाने में भी प्रतिस्पर्धा हुई। सातवीं सदी के प्रारम्भ में बौद्ध भिक्षु एलौरा में अपना काम समाप्त कर चुके थे जबकि ब्राह्मणों और जैनियों ने अपना काम अभी आरम्भ ही किया था। एलौरा में हिन्दू धर्म और जैन मत से सम्बन्धित गुफाएँ भी निर्मित हुईं। इन सबमें कैलाश मंदिर संगतराशी का शानदार नमूना है। इन गुफाओं में मूर्तियों को एक विशेष क्रम दिया गया है और इसमें शक नहीं कि कला और धर्म यहाँ एक आत्मा और एक शरीर नज़र आते हैं। अजन्ता और एलौरा पर उर्दू में कई नज़्में हैं लेकिन सिकन्दर अली 'वज्द' की नज़्मों को प्रधानता प्राप्त है। इनमें एक ऐसी भावनात्मक गहराई और विस्तार मिलता है जो इन नज़्मों को अजन्ता और एलौरा ही की तरह अमर बना देता है। इसके बाद हमने ताजमहल पर कुछ नज़्में दी हैं। ताजमहल का निर्माण जिस युग में हुआ उससे बहुत पहले हिन्दू वास्तुकला और ईरानी वास्तुकला का सम्मिश्रण व्यवहार में आ चुका था। हम सरसरी तौर पर एक नज़र डालें तो देखेंगे कि अजमेर की जामा मस्जिद में आबू पर्वत के जैन मन्दिर का प्रतिबिम्ब है। रनपुर के मन्दिर में मस्जिद के खम्भों का प्रत्यंकन है। क़ुतबमीनार की सजावट जैन प्रणाली की सजावट की आभारी है। ग्वालियर में मानसिंह के महल हिन्दुओं और मुसलमानों की मिश्रित वास्तुकला का नमूना हैं। अकबर और जहाँगीर द्वारा निर्मित महल और बाग़ मिलीजुली सभ्यता का संगम हैं। फ़तेहपुर सीकरी की मस्जिद, खास तौर पर उसके गुम्बदों में हिन्दू वास्तुकला झलकती है। यह मिश्रित वास्तुकला, जिसे शाहजहाँ

के युग में मुग़ल निर्माण शैली-कहा जाता था, ऐसी विशेषताओं की द्योतक बन गई थी जो न शुद्ध हिन्दी वास्तुकला में पाई जाती हैं न शुद्ध ईरानी शैली में। ताजमहल इसी शैली का श्रेष्ठ नमूना है। यही नहीं बल्कि इसके निर्माण में अगर उस्ताद याहिया, अमानत खाँ तुग़रानवीस, मुहम्मद खाँ खुशनवीस का हाथ है तो मोहनलाल पच्चीकार, मनोहरसिंह और मन्नूलाल का भी उतना ही हाथ है। इन नज़्मों के अलावा हुमायूँ के मक़बरे पर 'जोश' की नज़्म और अकबर के मज़ार पर 'सीमाब' की नज़्म 'सिकन्दरा' शानदार नज़्में हैं। एक नज़्म ऐतमादुद्दौला पर भी है। यह भी उसी मिश्रित वास्तुकला की यादगार इमारतों में से है। जामा मस्जिद देहली और जामा मस्जिद आगरा पर भी नज़्में शामिल हैं। जोधाबाई के मन्दिर पर 'सीमाब' की एक छोटी-सी नज़्म है। जोधाबाई जहाँगीर की पत्नी और जोधपुर-नरेश राजा उदयसिंह की पुत्री थी और उसका असली नाम मानमती था। उसी के पेट से शाहजहाँ पैदा हुआ था। मौलाना शिबली की नज़्म जिसका यह शेर है—

दुल्हन की पालकी लाए थे जो खुद अपने काँधों पर
वो शाहंशाहे-अकबर और जहाँगीर इब्ने-अकबर था

जोधाबाई ही की विदाई के बारे में है। अकबर ने जो राष्ट्रीय एकता का स्वप्न देखा था वह बहुत क़ीमती था और आज की हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए एक सुन्दर उदाहरण की हैसियत रखता है। अन्त में एक नज़्म भाखड़ा नंगल बाँध पर है, जो आधुनिक वास्तुकला का एक शानदार कारनामा है और जिसका उद्घाटन करते हुए पण्डित नेहरू ने कहा था कि आज की दुनिया में इनका वही स्थान है जो आराधना-गृह का होता है। यह नज़्म दरअसल इस बात की पुष्टि है कि उर्दू शाइरी अगर अपने देश की प्राचीन धरोहर से मुहब्बत रखती है तो आज के हर उन्नतिशील मंसूबे से भी अनभिज्ञ नहीं और स्वयं को वर्तमान काल के हर संघर्ष में लीन रखती है।

हमारी ललित कलाएँ—यह मेल-जोल और एकता केवल वास्तुकला तक ही सीमित न थी। दूसरी कलाएँ जैसे संगीत या चित्रकला भी इस रंग से प्रभावित हो रही थीं। भारत में संगीत प्राचीन काल से एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। केवल सांस्कृतिक और सामाजिक समारोहों में ही नहीं बल्कि धार्मिक संस्कारों और पूजा-पाठ आदि में भी इसका अपना स्थान रहा है। तेरहवीं सदी ईसवी के बाद से दूसरी ललित कलाओं की तरह संगीत भी मिश्रित सौंदर्याभिरुचि का प्रतीक बनता गया। अमीर खुसरो की मिसाल तो मशहूर है।

उन्होंने विभिन्न राग-रागिनियाँ और वाद्य ईजाद किए। अधिकांश मुसलमान बादशाहों की भी इस कला से कम दिलचस्पी नहीं रही। फ़रिश्ताकृत इतिहास में तो बाबर तक को संगीत का प्रेमी बताया गया है। अकबर के युग में इस कला का संरक्षण किया गया। तानसेन के अलावा हरिदास और रामदास को देशव्यापी कीर्ति प्राप्त हुई। यह संरक्षण जहाँगीर और शाहजहाँ के दौर में भी जारी रहा। यह बात केवल देहली तक सीमित न थी बल्कि आदिलशाही हुकूमत में इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय स्वयं बहुत बड़ा संगीतकार था। उसकी रचना 'नौरस' में राग-रागिनियों को ध्यान में रखकर गीत कहे गए हैं। हिन्दू पौराणिक कथाओं का उसे पूर्ण ज्ञान था। शिव, पार्वती, सरस्वती, गणेश वग़ैरा पर 'नौरस' में गीत शामिल हैं। इब्राहीम आदिलशाह ने सरस्वती के बारे में जो गीत कहा है वह अपरिचित दकनी शब्दों से भरा हुआ है लेकिन उसका अनुवाद डॉ० नजीर अहमद के शब्दों में सुनिए—"ज्ञान का रास्ता दिखाई नहीं देता था इसलिए सरस्वती और गणेश चाँद और सूरज का प्रकाश बन गए।" यह सच है कि इब्राहीम आदिलशाह हिन्दुस्तानी अभिरुचि और सभ्यता को लोकप्रिय बनाने में उतना ही प्रयत्नशील था जितना महान् अकबर था। कुली क़ुतबशाह के दौर में भी संगीत का खामा जोर रहा। हर त्योहार चाहे वह नौरोज हो या वसन्त या जश्ने-ईदे-मीलादुन्नबी, गाने और नाच के बिना नहीं मनाया जाता था। देहली में शाहआलम द्वितीय ने राग और ताल के अनुसार अपने ख़याल कवितावद्ध किए हैं। मुहम्मदशाह रंगीले के दरबार में संगीतकारों की क़द्र थी। उसके दरबार का प्रसिद्ध संगीतकार सदारंग था जिसने ख़याल को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया। मालवा में बाजबहादुर और लखनऊ में लगभग सारे शासकों ने इस कला का संरक्षण किया। आसिफ़ुद्दौला के जमाने में संगीत पर एक महत्त्वपूर्ण रचना 'उसूलुन्नगमातुल-आसफ़िया' लिखी गई। वाजिद-अली शाह के दौर तक तो संगीत की लोकप्रियता अपनी चरम सीमा तक पहुँच गई थी। वाजिदअली शाह ने ख़ुद कई रागिनियाँ, जोगी, जुही वग़ैरा ईजाद की थीं और तानसेन के घराने के कुशल संगीतकारों को अपने दरबार में एकत्र कर लिया था। इसका कारण यह भी था कि अयोध्या और बनारस से, जो पहले ही से संगीत का केन्द्र थे, अवध सल्तनत का खास संबंध था। बहर हाल संगीत के मैदान में भी जो एकता और मेल-जोल नजर आता है वह छिपा हुआ नहीं। गुलाम नबी शऊरी ने टप्पा ईजाद किया तो खुसरो ने क़व्वाली की धुनें। तबला और सितार पर अमीर खुसरो के भजन आज भी गाए जाते हैं। बूअली सीना की आविष्कृत शहनाई आज भी बिस्मिल्लाह खाँ के होंठों से हिन्दू-

मुसलमान दोनों को मस्त बना देती है। इसी प्रकार अकबर के ज़माने से चित्र-कला भी मिश्रित हिन्दुस्तानी सभ्यता का द्योतक बनती गयी। भारतीय यथार्थ और ईरानी मृदुलता के सुन्दर सम्मिश्रण ने एक नई चित्रकला को जन्म दिया। अजन्ता और दिल्ली स्कूल की चित्रकला में कोई समानता नही मिलेगी लेकिन दिल्ली, जयपुर और कांगड़े के चित्रो मे समानता स्पष्ट दिखाई देती है। इस कला को मुगलों का सरक्षण भी प्राप्त रहा और राजपूताना और तंजौर के हिन्दू राजाओ की एकता और सद्भाव जो इस कला को अकबर के दौर में प्राप्त हो गया था वह बराबर इन शाहकारों मे पाया जाता है।

इस अध्याय मे हमने कुछ गिनती की नज्मे संगीत, नृत्य और चित्रकला पर दी है जिनमे से कुछ खास महत्त्व रखती है। आरम्भ मे नृत्य पर कुछ नज्मे है। नृत्यकला हिन्दुस्तान की प्राचीन कलाओ मे से है और हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय और आध्यात्मिक जीवन मे इसका उच्च स्थान रहा है। शास्त्रीय नृत्य मे भरत नाट्यम सबसे अहम माना जाता है। इसे दूसरे नृत्यो का उद्गम भी कहा जा सकता है। इस नृत्य मे नर्तक अगो के हाव-भाव से कोई-न-कोई कहानी कहता है। दूसरा मुख्य नृत्य कथकली है जो केरल का महत्त्वपूर्ण लोकनृत्य है। इस नृत्य मे आर्य और द्राविड प्रभाव मिले-जुले है। मणिपुरी नृत्य मणिपुर (असम) का अहमतरीन नृत्य है और यह शिव और पार्वती का नृत्य समझा जाता है। कत्थक का विषय राधा और कृष्ण का अमर प्रेम है। यह नृत्य उत्तर भारत, खास तौर पर अवध के इलाके मे बहुत लोकप्रिय हुआ। मीर हसन की मस्नवी 'सहरुलबयान' से मुजरे के जो दो टुकडे लिये गए है उनमे कत्थक नृत्य की ही झलक है। अवध मे नृत्य और सगीत की महफ़िलें आम हो चुकी थी और वेश्या समाज का एक अभिन्न अंग बन गई थी। ये वेश्याएँ नाच और गाने की कला मे निपुण होती थी और उनके पेशे के लिए यह महारत जरूरी भी थी क्योंकि समाज की मानसिक चेतना संगीत के क्षेत्र मे बहुत सजग हो गई थी। अतएव मुजरा स्वयं एक कला का रूप धारण कर गया था। मीर हसन की 'सहरुलबयान' से जो मुजरे के दृश्य दिए गए है उनसे पता चलता है कि स्वयं शाइर राग-रागिनियो और नृत्य के विभिन्न पहलुओ का सम्पूर्ण ज्ञान रखता है। रक़्स पर एक नज्म 'जोश' की और एक नज्म 'वज्द' की शामिल है जिसमें रक़्स की तकनीक से बहस न करते हुए उसके जमालियाती तास्सुर को उजागर किया गया है। उदयशंकर पर जो नज्म 'अख्तर' अंसारी की दी गई है उसे हम उदयशकर के कमाल का एतिराफ़ ही कह सकते हैं। उदयशंकर ने जिस प्रकार हिन्दुस्तानी शास्त्रीय नृत्य में खोज करके वर्तमान काल के विषयों और मांगों

को समोने का प्रयत्न किया है वह कम महत्त्व नहीं रखता। संगीत के सिल-सिले में इस दौर के दो मुख्य कलाकारों पर एक-दो नज्में है। रसूलनबाई और लता मंगेशकर की कला और आवाज़ संगीत की दुनिया में अमर कहे जाने योग्य हैं। संगीत-कला पर हमने चार नज्में मुख्तार सिद्दीक़ी की दी हैं। सरगम, ख़याल दरबारी, ख़याल एमन कल्याण और केदारा का एक रूप। शास्त्रीय संगीत दिन-रात की विभिन्न घड़ियों में विभिन्न बंदिशों और विभिन्न प्रभाव का क़ायल है। इसलिए हर राग-रागिनी अपने उचित समय पर ही वह असर पैदा करती है जिसके लिए उसकी रचना की गई है। यह तास्सुर रस कहलाता है। उसे इस राग-विशेष का बुनियादी भाव या ख़याल समझना चाहिए। मुख्तार सिद्दीक़ी ने अपनी इन नज्मो में ऐसे ही बोलों का सहारा लिया है जो राग के बुनियादी तास्सुर और उसकी विषयवस्तु की बेहतर-से-बेहतर तर्जुमानी कर सकें। ख़याल जिस तरह गाया जाता है और जिस तरकीब और क्रम का उसमें ध्यान में रखा जाता है यानी आलाप फिर अस्थायी, फिर अन्तरा, इसके बाद राग के समस्त विस्तार का निरीक्षण और फिर वापसी या अभोग का मरहला। मुख्तार सिद्दीक़ी ने इस क्रम को ध्यान में रखा है। हम कह सकते हैं कि हमारे शास्त्रीय संगीत की आत्मा और उसके शरीर, रस और वर्णन को पहली बार उर्दू शेर में इस तरह ढाला गया है। इन नज्मो के अलावा और भी कुछ नज्में हैं जैसे 'इकतारे का जादू' या 'ढोलक का गीत' जो तास्सुरानी रंग लिये हुए हैं। अन्त में इसमें हमने सिर्फ एक नज्म चित्रकला बल्कि आज के सुप्रसिद्ध कलाकार हुसैन पर शामिल की है। हुसैन हमारे राष्ट्रीय चित्रकारों की प्रथम श्रेणी में गिने जाते है। वह अपने कैनवस पर नग्न तत्त्वो की सर्जना बाह्य आकृतियों की सहायता से करते है। उनका कैनवस यथार्थ और काल्पनिक कृतियों का सुन्दर मिश्रण होता है। अनीस फ़ारूक़ी ने उनके आर्ट पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि—वह रहस्य, उपमा और रूपक को रूमानी अन्दाज़ में यथार्थ का रूप देने में पूरी कुशलता रखते हैं। हुसैन अपने कलात्मक प्रयोगों में सदैव व्यस्त रहते हैं। सन् १९४७ ई० में हुसैन ने हिन्दुस्तानी रीति-रिवाज, सभ्यता और संस्कृति, विशेषतः यहाँ के जीवन की झलकियों को तैल-चित्रों में नए ढंग से पेश किया था और अब सितम्बर में जो नुमाइश ब्राजील में होने जा रही है उसमें हुसैन विशुद्ध शास्त्रीय भारतीय विषय 'महाभारत' पर अपने शाहकार पेश करने वाले हैं जिसका ऐलान किया जा चुका है।

हमारे धार्मिक नेता—उर्दू शाइरी ने जहाँ हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक, सामा-

जिक और तहज़ीबी सरमाये को अपने में समोया और उसकी तर्जुमानी की, वहाँ उसने उन तमाम मजहबों को, जो हिन्दुस्तान मे पैदा हुए या जिन्हें हिन्दुस्तान में आकर बसने वाली जातियाँ अपने साथ लायीं, अपने सर-आँखों पर जगह दी है। इस अध्याय में हमने अवतारो, पैगम्बरों और धार्मिक नेताओं पर कुछ नज्मे दी है जिनके आगे आज भी हिन्दुस्तान के करोडों जनसाधारण श्रद्धा से सिर झुकाते हैं, जिनकी आराधना और पूजा करते है, जिनके बनाए हुए उसूलों को अपने लिए मार्ग-दर्शन जानते और मानते है। हिन्दुस्तानी जीवन का सामाजिक, आर्थिक और नैतिक ढाँचा सदियो मजहबी बुनियादों पर कायम रहा है और आज भी हिन्दुस्तानी समाज के लिए मजहब बुनियादी महत्त्व रखता है। आपस का मेलजोल और रवादारी या दूसरे अर्थों मे राष्ट्रीय एकता के पीछे मजहबी रवादारी और मजहबो की तालीमे-इंसानियत का बडा हाथ है। उर्दू अदब और उर्दू शाइरी कभी धर्मांध और तग-नजर नही रही। हर धर्म और हर धार्मिक मार्गदर्शक का सम्मान उर्दू शाइरी का शेवा रहा है। जो चन्द नज्मे इस संकलन मे दी गई है वे शिवजी, रामचन्द्रजी, कृष्ण, गौतम, महावीर स्वामी और गुरु नानक के अलावा ईसा मसीह और हजरत मुहम्मद के गुणों और विशेषताओ से सबधित है। रामचन्द्रजी अगर बदी के खिलाफ लडते है तो श्रीकृष्ण उपद्रव और हगामे के खातमे पर तुले नजर आते है ताकि एक स्वस्थ समाज जन्म ले सके जहाँ किसी के अधिकार न छिन सके। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी जग मे नफरत करना सिखाते है और अम्न, शांति और अहिंसा की शिक्षा देते है। हजरत ईसा अगर पीडित मानवता का सहारा बनते है तो हजरत मुहम्मद इसानी बिरादरी को बराबरी का सुनहरा [illegible] बताते है और गुलामी की लानत और रग और नस्ल के अन्तर को समाप्त करके मानवता की प्रतिष्ठा को बढाते है। गुरु नानक का पैगाम उस एकता और मेलजोल का द्योतक है जो बँटी हुई मानवता को एकत्व के रिश्ते मे पिरो देना चाहता है। वास्तविकता यह है कि विश्वास और रीति-रिवाज को छोडकर हर धर्म के संस्थापक का बुनियादी जज़्बा एक ही रहा है कि इंसान सहयोग करे और परस्पर प्रेम और रवादारी के रिश्ते मे बँध जाए। उर्दू शाइरी ने न केवल तमाम मजहबी मार्गदर्शको पर श्रद्धापूर्ण नज्मे लिखी है बल्कि तमाम इलहामी और मजहबी किताबों के छंदोबद्ध अनुवाद भी [illegible] किए है।

मुंशी शंकरदयाल 'फ़रहत', मुशी जगन्नाथ 'खुश्तर', मुंशी द्वारकाप्रसाद 'उफ़ुक', इक़बाल वर्मा 'सहर' हगामी, रामसहाय 'तमन्ना' के रामायण के अनुवाद; मुंशी तोताराम 'शायां' का महाभारत का अनुवाद; मुंशी लक्ष्मण प्रसाद

'सदर' लखनवी, 'सनोबर' अज़ीमाबादी, देवकी नन्दन 'मुन्तदी', जाफ़र अली खाँ 'असर', 'मुनव्वर' लखनवी के गीता के अनुवाद; ख्वाजा मुहम्मद 'दिल' का 'जपजी साहब' का अनुवाद; विशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' के 'इंजील', जैनी ग्रंथ और क़ुराने-पाक की विभिन्न आयतों के अनुवाद या 'सीमाब' की 'वही-ए-मंजूम' वग़ैरा उर्दू शाइरी का वह पवित्र सरमाया है जिसे वह गर्व के साथ पेश कर सकती है। इन नज़्मों का अध्ययन हमारा सर ऊँचा कर देता है। जब हम देखते हैं कि मुसलमान शाइरों ने राम, कृष्ण, गौतम, महावीर स्वामी और गुरु नानक पर नज़्में कही हैं, और हिन्दू और सिख शाइरों ने हज़रत मुहम्मद, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो को अपनी श्रद्धा का मंजूम नज़राना पेश किया है। ये रस्मी रचनाएँ नहीं हैं बल्कि जिस जज़्बे, निष्ठा और श्रद्धा की ओर ये इशारा करती हैं उनमें रूह और दिल की गहराइयाँ बसी हुई हैं। उर्दू शाइरी के सेक्यूलर मिज़ाज की इससे बढ़कर और क्या दलील हो सकती है। 'मोहसिन' काकोरवी ने जो कसीदा 'मदहे-खैरुल-मुरसलीन' हज़रत मुहम्मद की शान में कहा है उसकी तशबीब (प्रारंभिक भाग) की बुनियाद हिन्दुओं के पवित्र स्थानों और उनके धार्मिक संस्कारों पर रखी है। यह क़दम एक खास महत्त्व रखता है और इसे उस मिली-जुली सभ्यता की देन कहना चाहिए जो हर एक रूप मे उर्दू शाइरी सदियों से अपनाती चली आ रही है।

हमारी कथाएँ—इस अध्याय को हमने दो भागों में बाँट दिया है। पहले भाग में कुछ धार्मिक कथाएँ पेश की गई है जो उर्दू मस्नवियों या उर्दू नज्मो मे ली गई हैं और जिन्हें किताब के कलेवर को ध्यान में रखकर संक्षिप्त करके दिया गया है। इस भाग में 'नज़ीर' का कहा हुआ—'जनम कन्हैया जी' और 'हरु की तारीफ़ में' जो दरअसल 'नरसी की दास्तान' है—शामिल है। 'चकवस्त' की नज़्म 'रामायण का एक दृश्य' है, मुंशी बनवारीलाल 'शोला' का 'सीता-हरण' और 'मुनव्वर' लखनवी द्वारा अनूदित जयदेवकृत गीत गोविन्द से दो टुकड़े, 'राधा आलमे-फ़िराक़ में' और 'कृष्ण और राधा की मुलाक़ात' शामिल किए गए हैं। इन नज़्मों पर नज़र डालिए तो मालूम होगा कि 'नज़ीर' भारतीयता के रंग में पूर्ण रूप से रँगे हुए हैं। यह कहना कुछ बेजा न होगा कि उनकी शाइरी अपने युग की सबसे अधिक सेक्यूलर शाइरी थी। उन्होंने बिला तफ़रीक़ हर मज़हब और मिल्लत को अपने सीने से लगाया है। अगर उन्हें हज़रत मुहम्मद से अक़ीदत है तो शिवजी, राम और नानक से भी लगाव

है। भारतीयता के जो गहरे और सुन्दर चित्र उनके सारे कलाम में फैले हुए हैं वे हमारे बहुमूल्य विरसे की हैसियत रखते हैं। 'चकबस्त' ने रामायण का जो सीन नज़्म किया है वह उर्दू शाइरी में बहुत सुन्दर वृद्धि है। रामायण का महत्त्व भारतीय समाज में असीम है। वाल्मीकि की रामायण संस्कृत में थी, लेकिन तुलसीदास ने संस्कृत के बजाय अवधी भाषा को अपनाकर रामायण के सन्देश को करोड़ों दिलों तक पहुँचा दिया। यह बात कम महत्त्वपूर्ण नहीं कि तुलसीदास ने रामायण में अरबी और फ़ारसी शब्दों का निस्संकोच इस्तेमाल किया है—मस्लन गरीबनवाज (ग़रीबनवाज) मिस्कीन, जहान, दीवान, बरात, शहनाई, सरताज, रुख, दफ़ वगैरा। हकीकत यह है कि रामचरितमानस या रामायण का प्रभाव भारत की सब भाषाओं पर पड़ा है। हम ऊपर कह आए हैं कि रामायण के कितने अनुवाद गद्य और पद्य में उर्दू में हुए। इनके अलावा कितनी नज़्में रामायण की घटनाओं से प्रभावित होकर लिखी गईं उन्हीं में से 'चकबस्त' की यह नज़्म है। 'चकबस्त' के अलावा मुंशी दुर्गा सहाय 'सुरूर' जहानाबादी और त्रिलोकचन्द 'महरूम' और मुंशी बनवारीलाल 'शोला' ने भी रामायण के विभिन्न दृश्य कवितावद्ध किए जिनमें से 'शोला' की 'सीताहरण' इस संकलन में सम्मिलित है। 'मुनव्वर' लखनवी ने जो जयदेव के गीत गोविन्द का अनुवाद किया है उसमें से भी दो टुकड़े लिये गए हैं। जयदेव, जिसकी यह लम्बी नज़्म संस्कृत में है, बारहवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ था। इसमें राधा और कृष्ण की शारीरिक और आध्यात्मिक मुहब्बत का संगम जिस दैवी पवित्रता से बयान हुआ है उसने इस किताब को अमर प्रेम की दास्तान बना दिया है। उर्दू शाइरी में ऐसी सुन्दर नज़्मों का बाहुल्य है। इस अध्याय के दूसरे भाग में हमने केवल कालिदास के ड्रामों या नज़्मों से तीन उद्धरण पेश किए हैं जिनकी हैसियत क्लासिकी है। उर्दू शाइरी ने इन तमाम अदबी जवाहरों को अपने दामन में भर रखा है जिस पर भारतीय साहित्य ही नहीं सारी दुनिया का अदब नाज़ कर सकता है। यह नहीं कि केवल कालिदास ही की नज़्में उर्दू में परिवर्तित हुई हैं बल्कि हिन्दुस्तान की कथाओं पर आधारित कितनी ही अनूदित और कितनी ही मौलिक रचनाएं मौजूद हैं। मस्लन इक़बाल वर्मा 'सहर' की 'दुष्यन्त ओ-शकुन्तला' जो १६२५ ई० में प्रकाशित हुई; 'मुनव्वर' लखनवी और प्रेमपाल की 'शकुन्तला'; 'जिगर' बरेलवी की मस्नवी 'पयामे-सावित्री' जिसमें सावित्री और सत्यवान की दास्तान है; रंगलाल 'चमन' की 'सिंघासन बत्तीसी' जो सीधी संस्कृत से ली गई है और १८६४ ई० में छपकर सामने आई। इसी के साथ १८८६ में मक्खन लाल की 'सिंघासन बत्तीसी'

प्रकाशित हुई। 'नल-दमन' के भी कितने मंजूम एडीशन उर्दू में मौजूद हैं जिनमें 'राहत', अहमद अली 'अहमद', और कालीप्रसाद का नाम लिया जा सकता है। 'इब्रत' की 'पद्मावत' और मुहम्मद अली क़ासिम की 'पद्मावत' भी उर्दू, नज्म में मौजूद है। सन् १८७१ ई० में अरोड़ाराय ने 'सोनी-महिवाल' का मंजूम तर्जुमा लाहौर से प्रकाशित किया था। मूलचन्द मुंशी और मौलवी करम इलाही भोपाली के मंजूम 'हीर-रांझे' भी हमें मिलते हैं। यही नहीं बल्कि ईसाइयों की 'फ़िरदौसे-गुमशुदा', 'फ़िरदौसे-बाज़याफ़्ता' और 'शमजन महज़ू' का अनुवाद भी ईसाचरन 'सदा' ने उर्दू नज्म में किया हुआ है। बहर हाल ये तो चन्द नाम हैं वरना इस प्रकार का अदबी सरमाया उर्दू में बेहिसाब है। कालिदास के जो अनुवाद इस संकलन में शामिल हैं उनमें एक तो उनके मशहूर ड्रामे 'कुमारसम्भव' का एक टुकड़ा है जिसके अनुवादक 'मुनव्वर' लखनवी हैं। एक टुकड़ा उनके जगत्-प्रसिद्ध ड्रामे 'शकुन्तला' से लिया गया है। 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का अनुवाद लगभग हर सुसंस्कृत भाषा—अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, अरबी, फ़ारसी वग़ैरा में हो चुका है। 'मुनव्वर' लखनवी के अनुवाद का आधार यद्यपि असली ड्रामे पर है लेकिन उन्होंने राजा लक्ष्मणसिंह के अनुवाद से ख़ासा लाभ उठाया है। इस अनुवाद के बारे में डाक्टर जाकिर हुसैन ने कहा था—"कहीं यह महसूस नहीं हुआ कि यह एक बाकमाल उर्दू शाइर का कलाम नहीं है।" 'मेघदूत' का अनुवाद हाफ़िज ख़लील हसन 'ख़लील' का किया हुआ है जो १९१४ ई०में आगरा से प्रकाशित हुआ था। कोई शक नही कि ख़लील हसन ने मस्नवी के अन्दाज़ में कालिदास की इस हसीन व जमील नज़्म को मुन्तक़िल करने का हक़ अदा कर दिया है।

हमारा अन्दाज़े-इश्क़—इस पुस्तक का आख़िरी अध्याय हमारे अन्दाजे-इश्क़ के बारे में है। उर्दू शाइरी में इश्क़ का विषय हमेशा से लोकप्रिय रहा है। यह कहना ग़लत न होगा कि उर्दू शाइरी के प्रिय विषयों में भी इस विषय को प्रधानता प्राप्त है। उर्दू की इश्क़िया शाइरी पर तरह-तरह के आरोप लगाए जाते हैं लेकिन चन्द शाइरों के गिरे हुए चिन्तन-स्तर को पूरी उर्दू शाइरी पर नहीं थोपा जा सकता। इश्क़ की कल्पना उर्दू शाइरी में उच्चतम मानसिक सतह को छूती रही है। इससे इन्कार अन्याय होगा। इश्क़ दरअसल उस तीव्र अनुभूति का नाम है जो बुनियादी तौर पर जिन्सी होते हुए भी इंसानी ज़िन्दगी की उच्च नफ़्सियाती और नैतिक सतहों पर असरअंदाज होती है और जो स्वभाव, चरित्र और व्यक्तित्व को बनाने और सँवारने में अहम रोल अदा

करती है। यही आशिक़ाना अनुभूति जब-विश्वव्यापी कल्पना में हमआहंग होती है तो उसमें एक महानता आ जाती है। शाइरी की महानता और उच्चता का रहस्य भी इसी में छिपा हुआ है। इश्क की जलन जब ज़िन्दगी की जलन में ढलती है तो महान् शाइरी की बुनियाद बनती है। उर्दू अदब में इश्क़ या इश्क़िया शाइरी की कौन-सी सतहें हमारे सामने आती हैं इस पर एक नज़र डालना ज़रूरी है। शुरू मे दकनी उर्दू में जो ग़ज़ल कही गई उसमें मर्द और औरत की परस्पर मुहब्बत की खूबसूरत झलकियाँ मिलती हैं। क़ुली क़ुतबशाह की ग़ज़लें हों या 'वली' की प्रारम्भिक गज़लें, उनमें इश्क़ की एक सभ्य भावनात्मक सतह का एहसास होता है—

वली उस गौहरे-काने-हया की क्या कहूँ खूबी
मिरे घर इस तरह आता है ज्यूं सीने में राज आवे

दकनी ग़ज़ल मे हमें हिन्दी लहजा और हिन्दुस्तानी तत्त्व साफ़ दिखाई देते है। लेकिन यह बात याद रखनी चाहिए कि इश्क़िया ग़ज़ल की बुनियाद अगर कुछ है तो मुहब्बत की रूह है। इसीलिए प्रो० मसूद हसन रिज़वी ने श्रेष्ठ इश्क़िया शेरों को 'रूहे-मुहब्बत की तस्वीरें' कहा है। उर्दू की इश्क़िया ग़ज़ल का एक पहलू तो वह है जो हुस्न और इश्क के मामलात और कैफियात से सीधा सम्बन्ध रखता है। एक पहलू वह है जिसे फ़लसफ़ियाना (दार्शनिक) या आरिफ़ाना कह सकते हैं। और तीसरा पहलू वह है जो विजदानी सतह पर हयात और कायनात के ब्रह्मज्ञान की आईनादारी करता है। 'मीर' की ग़ज़ल मे इश्क फ़लसफ़ियाना या आशिक़ाना अन्दाज़ मे हमारे सामने नहीं आ.ा। यद्यपि अपनी मस्नवियों में कई जगह 'मीर' इश्क का हयात व कायनात ५। बुनियादी कारण बताते है जिसका एक उद्धरण भी हमने इस अध्याय में एक जगह दिया है लेकिन वास्तव में 'मीर' इश्क को आम इंसानी सतह पर देखते थे। यह ज़रूर था कि वह 'मजनूँ' गोरखपुरी के शब्दों में—"इश्क़ को हुस्न का परस्तार समझते हुए भी एक प्रमुख और अधिक सुसंस्कृत शक्ति मानते थे।" वह इश्क़ के नाम पर मर मिटने का जज़्बा रखते है। 'मीर' ने ग़मे-इश्क़ और गमे-ज़िन्दगी दोनों का मुक़ाबला करने का हौसला और मानसिक शक्ति दी है। उनके यहाँ आनन्द का पहलू नहीं है तो इसका कारण उनके ज़माने के प्रतिकूल हालात और खुद उनके इश्क़ की नाकामी है। हमने इस स..लन में 'मीर' की ग़ज़लें और कुछ शेर दिये हैं जिनसे 'मीर' के अन्दाज़े-इश्क़ पर रोशनी पड़ती है। उर्दू शाइरी में इश्क़िया शेरों की संख्या लाखों से भी अधिक है, इसलिए हर शाइर के कलाम को पेश करना मुम्किन न था। कुछ ग़ज़लों, कुछ नज़्मों और कुछ रुबाइयों पर

ही संतुष्टि कर ली गई है। 'मीर' के बाद ग़ालिब की महान् शाइरी हमारे सामने आती है। उनके यहाँ 'मीर' की नश्तरियत तो नहीं, अलबत्ता एक ऐसी सलीक़ामन्द नज़र मिलती है जो इश्क़ बल्कि पूरी हयात और कायनात से परिचित है। हुस्नो-इश्क़ के विषयगत वार्तालाप की मिसालें ग़ालिब के कलाम में हसीन से हसीनतर मिलती हैं—

नीन्द उसकी है, दिमाग उसका है, रातें उसकी है
तेरी ज़ुल्फ़ें जिसके बाज़ू पर परीशां हो गई

जो ग़ज़ल इस इन्तिख़ाब में शामिल है उसमें इश्क़ के लिए एक ऐसी तड़प का एहसास है जो शोक और हर्ष के पहलुओं को बड़े संतुलन और फ़नकारी के साथ अपने में समोये हुए है। यह न भूलना चाहिए कि गालिब की शाइरी हुस्नो-इश्क़ की नफ्सियात तक सीमित नही बल्कि बक़ौल आले अहमद सुरूर—"उर्दू शाइरी मे गालिब मे बडा जिन्दगी का आशिक़ और आरिफ शायद ही कोई मिले।" गालिब के विपरीत जब हम 'दाग' की शाइरी पर आते हैं तो हमें जो मिलता है वह 'खुली-खुली इश्किया शाइरी' है। 'दाग' पर विलासिता की भावना का इल्ज़ाम रखा जाता है लेकिन उनकी चुनी हुई आशिक़ाना ग़ज़लें या शेर उन्हें इश्क़िया शाइरी मे एक स्थान देते है। यह सच है कि उनके आम इश्क़िया शेरों में उस जागीरदाराना सभ्यता का एहसास होता है जो उर्दू की इश्किया मस्नवियो में भी रचा-बसा है। बहर हाल 'दाग' की शाइरी जिस पाये की भी मानी जाए, वह भी हर एक के बस की बात नही। 'हसरत' मुहानी ने आशिक़ाना शाइरी को 'दाग़' की अपेक्षा यक़ीनन शाइस्तातर बनाया है। वह भी इश्क़ को आस्मानी या उलूही चीज़ नही समझते। सिर्फ़ एक सच्चे और मुख्लिस आशिक़ के रूप मे हमारे सामने आते हैं। वह सादगी, विनम्रता और निष्ठा को इश्क का जौहर समझते है। हुस्नो-इश्क़ से सम्बन्धित वस्तुगत वार्तालाप में उनके यहाँ भी खूबसूरत तहज़ीबी झलकियाँ मिलती हैं। 'हसरत' के बाद हमने 'फ़िराक़' की गजलें और शेर दिए हैं। 'फ़िराक़' का तसव्वुरे-इश्क़ बुनियादी तौर पर ज़मीनी है लेकिन उनके जमालियाती और विजदानी एहसास ने उसे एक बलन्द सतह दे दी है। अतएव इश्क़ की कैफ़ियतें हयात और कायनात से हमआहंग नज़र आती हैं और हम ऐसा महसूस करते हैं कि इश्क़ मिलन और विरह की कैफ़ियतों से अलग ज़िन्दगी का पर्यायवाची बन गया है। उनके यहाँ जिंसी जज्बा एक ऐसी पवित्रता और स्वच्छता लिये हुए हमारे सामने आता है कि तल्लीनता और आश्चर्य की कैफ़ियत पैदा हो जाती है। उनके इश्क़िया शेरों में अक्सर महसूस होता है कि अछूती बलन्दियाँ और अन-

जानी वुसअतें सिमट आई हैं।

इश्क़िया नज्मों में हमने सबसे पहले 'इक़बाल' की नज्म 'मुहब्बत' दी है जिसमें मुहब्बत या इश्क़ का एक आस्मानी तसव्वुर मिलता है। 'इक़बाल' की शाइरी मे इश्क़ दरअसल एक दार्शनिक परिभाषा बन गया है और ऐसी रहस्य-मयी शक्ति के समान है जो कायनात की रचना और जीवन के विकास की मंज़िलें तय करने में सहयोगशील है—

सितारों से आगे जहाँ और भी है
अभी इश्क के इम्तिहाँ और भी है

'इकबाल' से जब हम 'जोश' पर आते है तो हम फिर ज़मीनी इश्क़ से दो-चार होते हैं। 'जोश' लाख 'शाइरे-इंक़िलाब' कहे जाएँ लेकिन जहाँ उनकी शाइरी अपनी चरम सीमा को छूती है वह मजग-निगारी या हुस्नो-इश्क़ की वारदातें हैं। इश्क़ का तसव्वुर उनके यहाँ शारीरिक आकर्षण और नफ़्सियाती बारीकियों के दायरे मे आगे नही बढ़ता। वह बुनियादी तौर पर रूमानियत के शाइर हैं। उनकी नज्मो मे बकौल 'फ़िराक़'—"रूमानियत छत्तीसों सिंगार के साथ अपनी छवि दिखाती हुई सामने आती है।" उनकी नज़्म 'अश्के-अव्वली' और उनके शेर 'हनोज़' से उनके आशिकाना तर्ज़ का पूरा अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। 'अख़्तर' शीरानी भी रूमानी शाइर है। उनकी प्रारम्भिक नज्मों में तो महबूबा से ज्यादा महबूबा का तसव्वुर प्रिय नज़र आता है। आगे चलकर भी 'अख़्तर' की शाइरी चाहने और चाहे जाने की लज्ज़त और ख्वाहिश से आगे नही बढ़ी लेकिन इश्क़ और इश्क़ की वारदातें जिस सरशारी और कैफ़ से उनके यहाँ बयान हुई ह उनमे एक ... ज़रूर पाया जाता है जो थोड़ी देर के लिए सब-कुछ भुला देता है। 'फ़ैज़' इश्क़ में भी गम्भीरता और गरिमा को ध्यान मे रखते है। उनके यहाँ इश्क़ का तसव्वुर विशाल होकर ग़मे-जहाँ को भी अपने दामन मे समेट लेता है। उनकी अक्सर नज्मों मे यह सम्मिश्रण बड़े कलात्मक ढंग से हमारे सामने आता है। 'मजाज़' की आशिकाना नज्मों में कोई चिन्तन या दर्शन के तत्त्व की मिलावट तो नहीं अलबत्ता इश्क़ की परिचयात्मक तर्जुमानी ज़रूर है। 'जाँनिसार' अख़्तर की नज्म 'महकती हुई रात' में वह पहलू सामने आता है जब दो चाहनेवाले दिलों ने एक-दूसरे की संगति में जिन्दगी का लम्बा समय गुज़ारा हो और जीवन-संघर्ष में लगातार शरीक रहे हों। यह नज्म इश्क़ की ज़िन्दगी का एक कामयाब और स्वस्थ नज़रिया पेश करती है। इसके प्रतिकूल 'मख़दूम' की नज्म 'चारागर' सामाजिक बन्धनों के वातावरण में इश्क की ग़मगीन कहानी

बयान करती है। 'कैफ़ी' की नज्म 'अंदेशे' भी हमारे समाज के उस निर्दयी रवैये से सम्बन्ध रखती है जो औरत को मुहब्बत की आजादी नहीं देता और जहाँ औरत अपनी मुहब्बत को सीने में दफ़्न करके ज़िन्दगी से समझौते पर मजबूर हो जाती है। इस नज्म में औरत की जज्बाती कैफ़ियात की ख़ूबसूरत अक्कासी की गई है। इसके अलावा 'मजरूह' की एक हर्षप्रद ग़ज़ल है और कुछ बन्द 'साहिर' की 'परछाइयाँ' से लिये गए हैं। इनमें चन्द रूमानी क्षणों की हसीन मुसव्विरी है। साथ ही जज्बाती फ़िज़ा का एहसास भी होता है।

आशिक़ाना रुबाइयात में कुछ रुबाइयाँ 'फ़िराक़' के कलाम से ली गई हैं। 'फ़िराक़' की ग़ज़लों में जिस तरह इश्क़ की व्यापकता का एहसास होता है उसी तरह उनकी रुबाइयों में हुस्न अपनी नक़ाब उलट देता है। ऐसा लगता है कि 'फ़िराक़' ने हुस्न को सिर्फ़ देखा ही नहीं अपने सारे अस्तित्व से अनुभव किया है। डॉक्टर गोपीचन्द नारंग ने सही लिखा है कि—" 'फ़िराक' हुस्नो-जमाल की बोलती हुई रूह के शाइर हैं।" उनकी रुबाइयों में जो हिन्दुस्तानी सभ्यता और उसकी जमालियाती क़द्रें मिलती हैं वे कहीं और नजर नहीं आतीं। 'जाँनिसार' अख़्तर की रुबाइयाँ 'फ़िराक़' की तरह शृंगार रस की रुबाइयाँ नहीं। उनका विषय दाम्पत्य जीवन का रूमान है। 'फ़िराक़' के शब्दों में "इन रुबाइयों में हिन्दुस्तान के लगभग पन्द्रह करोड़ घरों और घरेलू जीवन की नर्म-ओ-नाज़ुक झलकियाँ दिखाई गई हैं······ये विषय और उसके हज़ारों पहलू सूरदास के पदों में दिखाए गए हैं। 'जाँ निसार' अख़्तर ने यही नेमत हमें इन रुबाइयों में देकर हम सब पर बड़ा एहसान किया है।"

इस अध्याय का मक़सद दरअसल एक झलक पेश करना था उस इश्क़िया शाइरी की जो अपने चित्र-विचित्र और रंगारंग पहलुओं के साथ उर्दू में रची बसी है और जो हमारे मशरिक़ी या हिन्दुस्तानी मिज़ाज की ग़म्माज़ रही है।

•

हर्फ़े-आख़िर—यह पुस्तक उर्दू शाइरी के उस स्थूल सरमाये की एक झलक है जो हमारी मिलीजुली सभ्यता की आईनादार है। यह यथार्थ है कि इस किताब का हर अध्याय एक अलग ग्रन्थ की रचना चाहता है। इसके अलावा उर्दू शाइरी के कई ऐसे पहलू और भी हैं जिन्हें इस सिलसिले में पेश किया जा सकता था। मसलन उन नज्मों के चयन का भी एक अध्याय सम्पादित किया जा सकता था जिनमें हिन्दुस्तानी रीति-रिवाज, मजलिसी शिष्टाचार, शादी-ब्याह के तौर-तरीक़ों के विवरण मौजूद हैं। हिन्दुस्तान के सब धर्मों की

पवित्र पुस्तकों के मंजूम अनुवाद के उद्धरण भी शामिल किए जा सकते थे लेकिन फिलहाल प्रकाशन की मजबूरियो के कारण ऐसा करना मुमकिन नही हो सका। फिर भी यह किताब उर्दू शाइरी के बारे मे बहुत-सी बदगुमानियों और गलतफहमियो को दूर करने मे जरूर मदद करेगी। वे लोग जो उर्दू को लस्सानी तौर पर हिन्दी-उल-असल और हिन्दी-उल-नसल मानने के बावजूद उसके 'एक विशेष सास्कृतिक मिजाज' की बात करते है उनसे हम इस किताब को पेश करते हुए सिर्फ इतना ही कहना चाहते है कि बेशक जबान का एक सास्कृतिक स्वभाव होता है लेकिन हमे ऐतिहासिक सत्य को सामने रखने की जरूरत है। हम मानते है कि जब मुसलमान शासक के रूप में मौजूद थे और फारसी जबान सरकारी जबान थी तो उर्दू पर फारसी का प्रभाव पडा लेकिन यह प्रभाव पडना तारीखी तौर पर अनिवार्य था। सोलहवी और सत्तरहवी सदी के दकनी शाइरो मे जो हिन्दीयत असली तत्त्व के रूप मे शामिल थी वह सूरत उत्तर भारत मे न थी। अलबत्ता इससे इन्कार नही किया जा सकता कि यहाँ हिन्दीयत और ईरानियत का सम्मिश्रण मौजूद था। आगे चलकर एक समय फारसीयत का आधिपत्य भी हुआ, लेकिन क्या अंग्रेजो के शासनकाल मे उर्दू भाषा और उर्दू शाइरी पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव नही पडा? यह भी ऐतिहासिक तौर पर होना अनिवार्य था और आज जब हमारे ऐतिहासिक हालात बदल चुके है, फिरगी सियासत, जो हिन्दुस्तानी कौमो की जिन्दगी के एक-एक विभाग को तकसीम करने पर तुली हुई थी, फना हो चुकी है, नई स्थिति मे क्या उर्दू भाषा अपने प्राचीन सास्कृतिक प्रभाव से बाहर निकलकर आधुनिक सास्कृतिक प्रभाव न अपनाएगी? उर्दू अदब और शाइरी का गहरी नजर से अध्ययन करनेवाले आज भी यह बात अनुभव करते है कि उर्दू शाइरी का मिजाज बदलने लगा है और हम समझते है कि वह दिन दूर नही जब उर्दू शाइरी का सास्कृतिक मिजाज सही मानो मे सतुलित हिन्दुस्तानी मिजाज कहा जाएगा। हम 'दाग' की बात को तो दोहराना नही चाहते कि—

> कहते है उसे जबाने-उर्दू
> जिसमे न हो रग फारसी का

क्योकि यह भी सच है कि फारसी रग ने भी उर्दू को बहुत कुछ दिया है जो सीने से लगाए रखने के काबिल है। लेकिन हम यह स्वीकार करते है कि आज उर्दूवालो को सस्कृत-साहित्य से भी बहुत-कुछ लेना है। 'फिराक' गोरखपुरी लिखते है कि "हमारी उर्दू जबान मे कितनी विशालता और कितनी बड़ी

सम्भावनाएँ पैदा हो जाएँगी अगर उर्दू शब्दकोश में दो-ढाई हज़ार संस्कृत के शब्द भी शामिल कर लिए जाएँ। कितनी शक्ति और फैलाव, कितनी तहें, कितनी झलकियाँ और परछाइयाँ, कितना रस, कितनी सुगन्ध, कितना रचाव, कितनी सुगढ़ता, कितनी नई गूँजें, कितना सलीक़ा, कितना प्रवाह और ठहराव, कितना लोच और लचक उर्दू में पैदा हो जाएगी अगर संस्कृत शब्दों की किरनों की खनक भी अरबी, फ़ारसी और हिन्दी शब्दों की खटक, रस और झंकार के साथ साज़े-उर्दू से सुनाई देने लगे।" हम समझते हैं कि इन शब्दों की मिलावट से केवल उर्दू शब्दकोश ही को लाभ न पहुँचेगा बल्कि इस वृद्धि के द्वारा उर्दू साहित्य और शाइरी हिन्दुस्तान की रूह को और गहरे तौर पर अपने में समो सकेगी।

अन्त में उन चन्द मित्रों का शुक्रिया ज़रूरी है जिन्होंने पुस्तकें एकत्र करने में सहायता दी। उनमें प्रोफ़ेसर अब्दुस्सत्तार दलवी, प्रोफ़ेसर मुग़ीम उद्दीन फ़रीदी, राजनारायण 'राज़', दर्शनसिंह दुग्गल और साबिर दत्त के हम ख़ास-तौर पर आभारी हैं।

—जाँ निसार अख़्तर

पहला अध्याय

हिन्दोस्तान की अज़मत
(भारत महिमा)

तरान-ए-हिन्दी

डा० मुहम्मद इक़बाल

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी, यह गुलसितां हमारा
गुरबत[1] में हों अगर हम रहता है दिल वतन में
समझो वही हमें भी, दिल हो जहां हमारा
पर्वत वो सबसे ऊँचा हमसाया आसमां का
वो संतरी हमारा, वो पासबां[2] हमारा
गोदी में खेलती हैं इसकी हजारों नदियाँ
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जिनां[3] हमारा
अय आबे-रूदे-गंगा[4] वो दिन है याद तुझको
उतरा तिरे किनारे जब कारवां हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा
यूनानो-मिस्रो-रूमां सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-ज़मां हमारा
'इक़बाल' कोई महरम[5] अपना नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को दर्दे-निहां[6] हमारा

१. परदेश, २. संरक्षक, पहरेदार ३. जिस पर स्वर्ग भी ईर्ष्या करे, ४. गंगा नदी का पानी ५. दोस्त, रहस्य जाननेवाला, ६ छिपा हुआ दर्द।

हिन्दोस्तानी बच्चों का क़ौमी गीत

डा० मुहम्मद इक़बाल

चिश्ती[१] ने जिस ज़मीं में पैग़ामे-हक़[२] सुनाया
नानक ने जिस चमन मे वहदत[३] का गीत गाया
तातारियों[४] ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हिजाज़ियों[५] से दश्ते-अरब[६] छुड़ाया
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

यूनानियों को जिसने हैरान[७] कर दिया था
सारे जहाँ को जिसने इल्मो-हुनर[८] दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़[९] ने जर[१०] का असर[११] दिया था
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

टूटे थे जो सितारे फ़ारस[१२] के आसमां से
फिर ताव[१३] दे के जिसने चमकाये कहकशा[१४] मे
वहदत[१५] की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकां[१६] मे
मीरे-अरब[१७] को आयी ठंडी हवा जहाँ से
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

बंदे[१८]-कलीम[१९] जिसके, पर्बत जहाँ के सीना[२०]
नूहे-नबी[२१] का आकर ठहरा जहाँ सफ़ीना[२२]
रिफ़अत[२३] है जिस ज़मीं की बामे-फ़लक[२४] का जीना
जन्नत[२५] की जिंदगी है जिसकी फ़ज़ा[२६] मे जीना
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

१. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी, २. सत्य का सन्देश, ३. अद्वैत, ४. तातार के रहने-वाले, ५. हिजाज़ के रहनेवाले, ६. अरब का जंगल, ७. व्याकुल, ८. ज्ञान और शिल्प, ९. खुदा, १०. सोना, ११. प्रभाव, १२. ईरान, १३. चमक, १४. आकाश गंगा, १५. अद्वैत, १६. घर, मकान, १७. अरब का सरदार, १८. लोग, १९. हज़रत मूसा, २०. तूर नामक पर्वत जिस पर हज़रत मूसा को ख़ुदा का जल्वा दिखाई दिया, २१. हज़रत नूह (जिनके ज़माने में एक तूफ़ान आया था जिसमें सब-कुछ डूब गया था, केवल उनकी नाव बची थी) २२. नाव, २३. ऊँचाई, २४. आकाश की छत, २५. स्वर्ग, २६. वातावरण।

ख़ाके-हिन्द

पं० व्रज नारायण 'चकवस्त'

अय खाके-हिंद[1] तेरी अजमत[2] मे क्या गुमा[3] है
दरिया-ए-फैजे-कुदरत[4] तेरे लिए रवा[5] है
तेरी जबी[6] मे नूरे-हुस्ने-अजल[7] अया[8] है
अल्लाह रे जेबो-जीनत[9] क्या औजे-इज्जो-शा[10] है
हर सुबह है यह खिदमत खुरशीदे-पुरजिया[11] की
किरनो मे गूंथता है चोटी हिमालया की

इस खाके-दिलनशी[12] से चश्मे[13] हुए वो जारी[14]
चीनो-अरब मे जिनसे होती थी आबयारी[15]
सारे जहा प जब था वहशत[16] का अब्र[17] तारी[18]
चश्मो-चिरागे-आलम[19] थी सरजमी[20] हमारी
शमा-अदब[21] न थी जब यूना की अंजुमन[22] मे
ताबा[23] था मेहरे-दानिश[24] इस वादि-ए-कुहन[25] मे

गौतम ने आबरू[26] दी इस मआबदे-कुहन[27] को
सरमद ने इस जमी पर सदके किया[28] वतन को
अकबर ने जामे-उल्फत[29] बख्शा[30] इस अंजुमन को
सींचा लहू से अपने राना ने इस चमन को
सब सूरवीर अपने इस खाक मे निहा[31] हैं
टूटे हुए खडर है या उनकी हड्डियां हैं

१. भारत की धरती, २ महानता, ३ शक, ४ प्रकृति की दया रूपी नदी, ५ प्रवाहित, ६ ललाट ७ आदिकाल के सौंदर्य का प्रकाश, ८ प्रकट, ९ शोभा, १०. शान और प्रतिष्ठा की ऊँचाई, ११ प्रकाशमान सूर्य, १२ चित्ताकर्षक धरती, १३ स्रोत, १४ प्रवाहित, १५ सिंचाई, १६ पशुता, हैवानियत १७ बादल, १८ छाया हुआ, १९. संसार के नेत्रो की ज्योति, २० धरती, २१ साहित्य का दिया, २२. महफिल, २३ प्रकाशमान, २४. ज्ञान का सूर्य, २५. पुरानी वादी, २६. मान, प्रतिष्ठा, २७. प्राचीन आराधना-गृह, २८ न्यौछावर, २९. प्रेम का प्याला, ३०. प्रदान किया ३१ छुपे हुए।

दीवारो-दर से अब तक उनका असर अयां[३२] है
अपनी रगों मे अब तक उनका लहू रवा[३३] है
अब तक असर में डूबी नाक़ूस[३४] की फ़ुगा[३५] है
फ़िरदौसे-गोश[३६] अब तक कैफ़ीयते-अज़ा[३७] है
कश्मीर से अयां है जन्नत का रग अब तक
शौकत[३८] से बह रहा है दरिया-ए-गंग[३९] अब तक

है जू-ए-शीर[४०] हमको नूरे-सहर[४१] वतन का
आँखों में रौशनी है, जल्वा[४२] इस अंजुमन[४३] का
है रश्के-मेहर[४४] ज़र्रा[४५] इस मजिले-कुहन[४६] का
तुलता है बर्गे-गुल[४७] से काँटा भी इस चमन का
गर्दो-गुबार[४८] यां का खिलअत[४९] है अपने तन को
मरकर भी चाहते है ख़ाके-वतन[५०] कफ़न को

गुलज़ारे-वतन

दुर्गा सहाय 'सुरूर' जहानाबादी

फूलों का कुंजें-दिलकश[१] भारत में इक बनाये
हुब्बे-वतन[२] के पौदे उसमे नये लगाये
इक-एक गुल मे फूंके रूहे-शमीमे-वहदत[३]
इक-इक कली को दिल के दामन से दे हवाएँ
मुर्ग़ाने-बाग[४] बनकर उडते फिरे हवा मे
नग़मे[५] हों रूह-अफ़्ज़ा[६] और दिलरुबा सदाएँ[७]

३२. प्रकट. ३३. प्रवाहित, ३४. शख, ३५. आर्त-नाद, ३६ कानो मे समाई हुई, ३७ अजान की मस्ती, ३८. वैभव, ठाठ, ३९. गगा नदी, ४०. दूध की नदी, ४१ प्रभात का प्रकाश, ४२. दर्शन, ४३ महफिल, ४४. सूर्य के समान, ४५. कण, ४६. प्राचीन मंजिल, ४७. फूल की पत्ती, ४८. धूल-मैल, ४९. पुरस्कार, ५०. देश की धूल।

गुलजारे-वतन

१. मोहक कुंज, २. देशभक्ति, ३. अद्वैत की सुगंध, ४. उपवन के पक्षी, ५. गीत, ६. आत्मा को शांति देनेवाले, ७ आवाजे, ।

छायी हुई घटा हो, मौसम तरब-फ़ज़ा[८] हो
झोके चलें हवा के, अशजार[९] लहलहायें

इस कुंजे-दिलनशी[१०] मे क़ब्जा[१२] न हो खिजा का
जो हो गुलों का तख्ता[१३], तम्ना हो इक जिना[१४] का
बुलबुल को हो चमन मे सैयाद का न खटका[१५]
खुश-खुश हो शाखे-गुल[१६] पर, गम हो न आशिया[१७] का
मौसम हो जोशे-गुल[१८] का और दिन बहार[१९] के हों
आलम अजीब दिलकश[२०] हो अपने गुलसिता का
मिल-मिलके हम तराने हुब्बे-वतन[२१] के गायें
बुलबुल है जिस चमन के, गीत उस चमन के गायें

वतन

'जोश' मलीहाबादी

अय वतन, पाक वतन, रूहे-रवाने-अहरार[१]
अय कि जर्रो मे तिरे बू ए-चमन,[२] रगे-बहार[३]
अय कि ख्वाबीदा[४] तिरी खाक मे शाहाना वकार[५]
अय कि हर खार[६] तिरा रूकशे-सदरू-ए-निगार
रेजे अलमास[८] के तेरे खसो-खाशा मे है
हड्डिया अपने बुजुर्गो[१०] की तिरी खाक मे है

पाई गुन्चो[११] मे तिरे रग की दुनिया हमने
तेरे कांटो से लिया दर्से-तमन्ना[१२] हमने

८. आनन्द दायक, सुहाना, ९. वृक्ष, १० आकर्षक कुज, ११ अधिकार, १२ हेमन्त, १३. क्यारी, १४ स्वर्ग, १५ भय, १६, फूल की डाली, १७ घोंसला, १८ वसन्त, १९. बसन्त, २०. सुहाना, २१. देशप्रेम।

वतन

१. आजाद लोगो की रूह (प्राणवायु), २. चमन की सुगन्ध, २. बहार का रग, ४. सोया हुआ, ५. बादशाहो की गरिमा, ६. कांटा, ७. हजारो प्रेमिकाओ के चेहरे की तरह, ८. हीरक, ९. घासफूस, १०. पूर्वज, आदरणीय, ११ कली, १२. अभिलाषा का पाठ।

तेरे क़तरों[१३] से सुनी क़िरअते-दरिया[१४] हमने
तेरे ज़र्रों[१५] में पढ़ी आयते-सहरा[१६] हमने
क्या बतायें कि तिरी बज़्म[१७] में क्या-क्या देखा
एक आईने में दुनिया का तमाशा देखा

पहले जिस चीज़ को देखा वो फ़ज़ा[१८] तेरी थी
पहले जो कान में आई वो सदा[१९] तेरी थी
पालना जिसने हिलाया वो हवा तेरी थी
जिसने गहवारे[२०] में चूमा वो सबा[२१] तेरी थी
अव्वलीं रक़्स[२२] हुआ मस्त घटा में तेरी
भीगी हैं अपनी मसें आबो-हवा[२३] मे तेरी

अय वतन ! आज से क्या हम तिरे शैदाई[२४] हैं
आंख जिस दिन से खुली, तेरे तमन्नाई है
मुद्दतों[२५] मे तिरे जल्वों[२६] के तमाशाई है
हम तो बचपन से तिरे आशिक़ो-सौदाई[२७] हैं
भाई तिफ़्ली[२८] से हर इक आन[२९] जहा[३०] में तेरी
बात तुतला के जो की भी तो ज़ुबा में तेरी

हुस्न[३१] तेरे ही मनाज़िर[३२] ने दिखाया हमको
तेरी ही सुब्ह के नग़्मों[३३] ने जगाया हमको
तेरे ही अब्र[३४] ने झूलों में झुलाया हमको
तेरे ही फूलों ने नौशाह[३५] बनाया हमको

ख़ंद-ए-गुल[३६] की खबर तेरी जवानी आई
तेरे बाग़ों में हवा खाके जवानी आई

तुझसे मुँह मोड़के, मुँह अपना दिखायेंगे कहाँ
घर जो छोड़ेंगे तो फिर छावनी छायेंगे कहाँ

१३. बूंद, १४. नदी की कलकल, १५. कण, १६. जंगल की आयत, १७. महफ़िल, १८. वातावरण, १९. आवाज़, २०. पालना, २१. हवा, २२. नृत्य, २३. पेड़ और हवा, २४. मर-मिटने वाले, २५. वर्षों से, लम्बे अरसे से, २६. दर्शन, २७ प्रेमी, २८. बचपन, २९. अदा, ३०. संसार, ३१. सौंदर्य, ३२. दृश्य, ३३. गीत, ३४. बादल, ३५. दूल्हा, ३६. फूल की मुस्कान।

बज़्मे-अग़यार[३७] में आराम यह पायेंगे कहाँ
तुझसे हम रूठ के जायें भी तो जायेंगे कहाँ

तेरे हाथों में है क़िस्मत का नविश्ता[३८] अपना
किस क़दर[३९] तुझसे है मज़बूत यह रिश्ता[४०] अपना

अय मादरे-हिन्द

'फ़िराक़' गोरखपुरी

अय मादरे-हिंद,[१] सुब्ह तेरी, तिरी शाम
हैं साक़ि-ए-दौरां[२] के छलकते हुए जाम
लम्हों में तिरे राज़े-अबद[३] पिन्हां[४] हैं
तेरी हर साँस एक पैग़ामे-दवाम[५]

दरिया, आईन - ए - जहाने - गुज़रां[६]
कुहसार, तिरे सुकूने-दायम[७] के निशां[८]
है तेरी फ़ज़ा[९] में कुछ घुलावट ऐसी
अफ़ज़ू[१०] जो करे रिक़्क़ते-क़ल्बे यज़्दां[११]

इंसान को इंसान बनाया तूने
विज्दान[१२] को विज्दान बनाया तूने
हर फ़न को आईना हक़ीक़त[१३] का किया
हर इल्म[१४] को इरफ़ान[१५] बनाया तूने

शाने-रमे-ज़िंदगी[१६] अदाओं में तिरी
पेचो - ख़मे - ज़िंदगी,[१७] कलाओं में तिरी

३७. ग़ैरों की महफ़िल, ३८. लिखा हुआ, ३९. कितना, ४०. सम्बन्ध।

अय मादरे-हिन्द

१. भारत माता, २. समय का साक़ी, ३. अनन्त काल के रहस्य, ४. छुपे हुए, ५. नित्यता का सन्देश, ६. बीते हुए समय के आइने, ७. स्थायी शांति, ८. चिह्न, ९. वातावरण, १०. अधिक, ११. ईश्वर के दिल की सूक्ष्मता, १२. आगाही, जानकारी, १३. सच्चाई, १४. ज्ञान, १५. महाज्ञान, १६. जीवन की दौड़ की शान, १७. जीवन के मोड़।

मूसीक़ि-ए - सयाल[१८] लबो-लहजा[१९] तिरा
कैफ़ो - कमे-ज़िंदगी[२०] सदाओं[२१] में तिरी

बादल का धुआँ सरे-फ़राज़े-कुहसार[२२]
जल्वागहे[२३] देवलोक दश्तो-गुलज़ार[२४]
गाती हुई अप्सराएँ जैसे गुज़रें
नदियों ने तिरी वो छेड़ रखा है सितार

वो इन्द्रधनुष, वो सात रंगों की फुआर
बहुरूप दिखाते मौसमों की रफ़्तार[२५]
आ जाती है झंकार तिरी पायल की
इक रक़्से-सरमदी[२६] है, या रुत का सिंगार

रुख़सारों[२७] में तेरी ही दमक देखते हैं
हर अज़्व[२८] में तेरी ही लचक देखते हैं
पड़ती है आँख अपनी जब ख़लक़त[२९] पर
हर चेहरे में तेरी ही झलक देखते हैं

दिन-रात खनक रहे हैं लाखों ही तार[३०]
कानों में अज़ल[३१] से आ रही है झंकार
अफ़लाके-बरी[३२] पर उँगलियो ने तेरी
लौ देते हुए तारों का छेड़ा है सितार

तेरी हर साँस में जिनां[३३] की बू-बास
दामन की हवा तेरे ज़माने को है रास
हासिल हुआ धड़कनों से तेरे दिल की
रूहानियते-माद्दा[३४] का यह एहसास[३५]

हर फ़िरक़-ओ[३६]-हर मिल्लत-ओ[३७]-हर-मजहब-ओ-हर दीं[३८]
सबने जा-ए-पनाह[३९] पाई है यहीं

१८. प्रवाहित संगीत, १९. उच्चारण, २०. जीवन की न्यूनता की मस्ती, २१. आवाज, २२. फैले हुए पर्वतों पर, २३. दर्शनस्थल, २४. जगल और उपवन, २५. गति, २६. अनश्वर नृत्य, २७. कपोल, २८. अंग, २९. सृष्टि, ३०. सितार के तार, ३१. आदिकाल, ३२. सबसे ऊँचा आकाश ३३. स्वर्ग, ३४. भूत का अध्यात्म, ३५. अनुभूति, ३६. सम्प्रदाय, ३७. समाज, ३८. धर्म, ३९. शरण-स्थल ।

औलाद[४०] में मामता छलकती है तिरी
दुनिया की मादरे-वतन[४१] है यह ज़मीं

फेरी तिरे दर की जो लगा जाते थे
सीने की दबी जोत जगा जाते थे
सुनते हैं अलावा दौलते-दुनिया[४२] के
साइल[४३] तिरे कुछ और भी पा जाते थे

क्या-क्या हमें दे गये हमारे अजदाद[४४]
क्या-क्या हमें कर गये वो शादो-नाशाद[४५]
दी दौलते - बेदारे - रमूज़े - हस्ती[४६]
गहरी है निशातो-ग़म[४७] से जिनकी बुनियाद

पैग़ाम तिरा[४८] बात अटल है, अय हिंद
हर दौर तिरा एक ही पल है, अय हिंद
शामों पे तिरी शामे-अबद[४९] का साया
हर सुब्ह तिरी, सुब्हे-अज़ल[५०] है, अय हिंद

वो सैयारों[५१] के आने-जाने की सदा[५२]
वो कल्बे-जमा[५३], के थरथराने की सदा
पहली आवाज़ थी जमाने में तेरी
कहते हैं जिसे अलख जगाने की सदा

दिल साँचों में अनवार[५४] के ढल जाते थे
आतिश-नफ़सी[५५] के लोग बल जाते थे
जुल्मात[५६] के सीने में बक़ौले-रावी[५७]
साँसों से तिरी चिराग़ जल जाते थे

तू ने ही खिलाये हैं हक़ायक़[५८] के वो फूल
बैठी अब तक न जिन पे क़रनों[५९] की धूल

४०. सन्तान, ४१. देश की माँ, ४२ संसार की सम्पत्ति, ४३. भिखारी, ४४. पूर्वज, ४५. प्रसन्न और दुखी, ४६. जीवन के रहस्य को जगाने की सम्पत्ति, ४७. खुशी, और ग़म, ४८. संदेश, ४९. अनन्तकाल की सध्या, ५०. अनादिकाल का प्रभात, ५१. नक्षत्र, ५२. आवाज, ५३. ज़माने का दिल, ५४. प्रकाश (ब० व०), ५५. गर्म साँस, ५६. अंधेरे, ५७. रावी के कथनानुसार, ५८. सच्चाई, ५९. युग।

तारीखे-बशर[६०] है खैरो-बरकत[६१] तेरी
तहजीबे-जहां[६२] का तू इमामो-रसूल[६३]

इंसान की तक़दीर बना देती है
हर आह को तासीर[६४] बना देती है
पहलू में तिरे दबी हुई है वो आँच[६५]
जो दर्द को इकसीर[६६] बना देती है

देखा नहीं आँखों ने तिरा कोमल गात
है तेरे गवाह जिन्दगी के लम्हात[६७]
तू एक वजूदे-ग़ैरमरई[६८] की तरह
रहती है हमारे साथ, दिन हो या रात

हर गुच-ओ-गुल[६९] जामो-सुबू[७०] है तेरा
औलाद[७१] तिरी जोशे-नुमू[७२] है तेरा
हर अहले-वतन[७३] को तूने पाला-पोसा
इस कौम की रग-रग मे लहू है तेरा

कन्याएँ, अज़ल[७४] की है सबाहत[७५] जिनमें
राधा की अदाओं की नजाकत[७६] जिनमे
तू आज भी जन रही है ऐसे बच्चे
है कृष्ण की शोखी-ओ-शरारत[७७] जिनमे

शोले[७८] से जबीनों से[७९] लपक जाते है
मुरझाये हुए चेहरे दमक जाते है
उन चेहरों में जिन पर है अटी गर्दे-मलाल[८०]
रुख[८१] भीष्मो-अर्जुन के झलक जाते है

इक नग़मा[८२] हवा अब भी सुना जाती है
इक आग-सी सीनों मे लगा जाती है

६०. मानव का इतिहास, ६१. कल्याण, ६२. ससार की सभ्यता, ६३. नबी, ६४. असर, ६५. आग, ६६. रामबाण, ६७. क्षण, ६८. अगोचर अस्तित्व, ६९ कली और फल, ७०. प्याला और सुराही, ७१. सन्तान, ७२. विकास का जोश, ७३, देशवासी, ७४. आदिकाल, ७५. सलोनापन, ७६ कोमलता, ७७. चचलता, ७८. ज्वाला, ७९. ललाट, ८० दुख की धूल, ८१. चेहरा, ८२. गीत।

हाँ आज भी सनसनाती हुई बसवाडियों से
बसीवाले की तान आ जाती है

है तेरी कदामत[८३] मे भी बरनाई[८४] सी
असरारे-नुमू[८५] मे है शनासाई[८६] भी
वो सोच है जावियो[८७] मे फिक्रो-फन[८८] के
लेता है दवाम[८९] जिनमे अँगडाई-सी

हर फन्ने-लतीफ[९०] की वो नौईयत[९१] है
नश्तर[९२] जदे-विज्दान[९३] वो शेरीयत है
अनदेखी हकीकतो[९४] ने सूरत पकडी
कितनी दिलकश यह कल्बे-माहीयत[९५] है

बेजारि-ए-चश्मे-गैब[९६] की है जो मिसाल[९७]
देखा तिरे फनकारो[९८] ने वो ख्वाबे-जमाल[९९]
जो कल्बे-हकीकत[१००] मे छलक जाता है
शादाब[१०१] उसी लहू मे रगहा-ए-खयाल[१०२]

हर नक्शे-अजता[१०३] का वो चलता जादू
वो हुस्नो-जमाल[१०४] के बदलते पहलू
वो बुतसाजी[१०५] कि जान[१०६] पत्थर मे पडे
है ताज कि रुखसारे जमा[१०७] पर आँसू

पहुँचे है कहाँ-कहाँ मे तेरे फनकार
शिव का ताडव है या है सृष्टि-सिगार
पेशानि-ए-शिव[१०८] दमे-हलाहलनोशी[१०९]
वो अबरुओ[११०] पे चढी कमानो[१११] का उतार

८३ प्राचीनता, ८४ जवानी, ८५ विकास के रहस्य, ८६ जान पहचान, ८७ कोण, ८८. चिन्तन, ८९ स्थायित्व, ९० ललित कला, ९१ प्रकार, ९२ चाकू, ९३ आगाही की जद, ९४ यथार्थ, ९५ तत्वो का परिवर्तन, ९६. गैब की आँख की बेजारी, ९७. उदाहरण, ९८ कलाकार, ९९ सुदर स्वप्न, १००. सत्य का हृदय, १०१. हरी-भरी, १०२. कल्पना के रग, १०३ अजता के चित्र, १०४. सौदर्य, १०५. मूर्तिकारी, १०६ प्राण, १०७. ससार के कपोल, १०८ शिव का ललाट, १०९, विषपान के समय, ११० भृकुटी, १११. धनुष, ।

फ़ितरत[११२] की ख़िल्वतों[११३] में डाले डेरे
पेंचो-ख़मे-ज़ीस्त[११४] के लगाये फेरे
दुनिया के कुतुबख़ानों[११५] से जो पिन्हां[११६] थे
वो राज़[११७] खुले हैं जंगलों में तेरे

तहज़ीब[११८] की पहली सुबह[११९] की पाक[१२०] दुआएँ
गूँजी हुई हैं फ़ज़ा[१२१] में ऋषियों की सदाएँ[१२२]
अय गंगो-जमन[१२३] की गुनगुनाती लहरो
देती हैं सुनायी तुममें वेदों की ऋचाएँ

वो तेरे मुफ़क्किरों[१२४] का क़ल्बे हुशियार[१२५]
पलकों में जिनकी बंद रूहे-बेदार[१२६]
वो जैन और बुद्ध की ग़ायर-नजरी[१२७]
इंकार को कर दिया है रश्के-इक़रार[१२८]

शाइर तेरे जिस वक़्त सदा देते हैं
सोये हुए सपनों को जगा देते हैं
शफ़ाक़[१२९] के मंदिर में वो नग़मे[१३०] उनके
रह-रहके घंटियां बजा देते हैं

इन रागों का राज़[१३१] कोई पूछे हम से
अफ़लाक[१३२] खनक रहे है तालो-सम[१३३] से
मिट्टी तिरी अय हिंद है नरमायी हुई
सीता-ओ-शंकुतला के अश्के-ग़म[१३४] से

आग़ोशे-मुलायम[१३५] में सुलाया हमको
ख़ामोश[१३६] आवाज़ से जगाया हमको
कुछ हम भी बनायें तेरे बिगड़े हुए काम
ऐ ख़ाके-वतन[१३७] तूने बनाया हमको

११२. प्रकृति, ११३. एकांत, ११४. जिन्दगी के मोड़, ११५. पुस्तकालय, ११६. छुपे हुए, ११७. रहस्य, ११८. सभ्यता, ११९. प्रात:काल, १२०. पवित्र, १२१. शून्य, १२२. आवाज़ें, १२३. गंगा-यमुना, १२४. चिन्तक, १२५. जाग्रत हृदय, १२६ जागती हुई रूह, १२७. गहरी उतरने वाली नजर, १२८. जिस पर स्वीकृति रश्क करे, १२९. क्षितिज (ब० व०), १३०. गीत १३१. रहस्य, १३२. आकाश (ब० ब०), १३३. ताल और सम १३४. ग़म के आँसू, १३५. कोमल गोद १३६. चुप, मौन, १३७. देश की मिट्टी।

अहले-हिन्द

महाराज बहादुर 'बर्क' देहलवी

इन्कलाबे-दह्र[1] में सब शान वाले मिट गये
रूमवाले मिट गये, यूनानवाले मिट गये
सीथियावाले मिटे तूरानवाले मिट गये
कौन कहता है कि हिन्दुस्तानवाले मिट गये
नक्शे-बातिल[2] हम नही जिसको मिटाये आसमा[3]
हम नही मिटने के जब तक है बिना-ए-आसमा[4]

खाक से इस देश की पैदा हुए वो नामवर
नक्श[5] जिनके कारनामे है बिसाते-दह्र[6] पर
दरबार में जिनके झुकते थे सर-अफराजों[7] के सर
जिनका लोहा मानते है हुक्मराने-बहरो-बर[8]
तेगो-तरकश[9] के धनी थे, रज्मगह[10] मे फर्द[11] थे
इस शुजाअत[12] पर यह तुर्रा[13] है, सरापा[14] दर्द थे

आशना-ए-राजे-वहदत[15] फलसफि-ए-बेमिसाल[16]
गौहरे-दरिया-ए-दानिश[17], नुक्तादाने-बाकमाल[18]
माहिरे-इल्मो-हुनर[19] शेवा-बया[20], शीरी-मकाल[21]
रास्तबाजो-सुलह-जू[22] पाकीजा-खू[23], रोशन-खयाल[24]
बादा-ए-तहजीब[25] से वो सर-ब-सर[26] मखमूर[27] थे
कल्ब[28] रोशन मआरिफत[29] के नूर[30] से, पुर-नूर[31] थे

क्या थे अहले-हिन्द[32], यह चर्खे-कुहन[33] से पूछ लो
या हिमाला की गुफाओ के दहन[34] से पूछ लो

१ विश्वक्रान्ति, २ झूठ के निशान, ३ आकाश, समय, ४ आकाश की जड, ५ चित्रित, ६ ससार की बिसात, ७ ऊँचे सरवाले, ८ धरती और समुद्रो पर शासन करनेवाले, ९ तलवार और तूणीर, १० रण-स्थल, ११ यकता, एक, १२ बहादुरी, १३ विचित्रता, १४ सर से पैर तक, १५ अद्वैत के रहस्य से परिचित, १६ बेमिसाल दार्शनिक, १७ ज्ञान के समुद्र का मोती, १८ पारखी, १९ ज्ञान और कला के माहिर, २० कुशल वक्ता, २१ मधुर, २२ सदाचारी और सुलह करनेवाले, २३ अच्छी आदत वाले, २४. उदार, २५. सस्कृति की मदिरा, २६. बिल्कुल, २७ मस्त, २८ हृदय, २९ ब्रह्मज्ञान, ३०. प्रकाश, ३१ प्रकाशमान। ३२ भारतवासी, ३३ बूढा आकाश, ३४. मुह।

अपना अफ़साना लबे-गंगो-जमन[३५] से पूछ लो
पूछ लो, हर ज़र्र-ए-खाके-चमन[३६] से पूछ लो
अपने मुंह से क्या बतायें हम कि क्या वो लोग थे
नफ़्स-कुश[३७] नेकी[३८] के पुतले थे, मुजस्सम[३९] योग थे

हम मुअर्रा[४०] होके उन औसाफ़[४१] से पस्ती[४२] में हैं
दौलते-इल्मो-अमल[४३] खोकर तिही-दस्ती[४४] में हैं
शोहरः-ए-आफ़ाक़[४५] अब मस्ति-ओ-बदमस्ती[४६] में हैं
शम्ए-अफ़सुर्दा[४७] की सूरत महफ़िले-हस्ती[४८] में हैं
दौरे-रफ़्ता[४९] का मगर सौदा[५०] हमारे सर में है
बादः-ए-हुब्बे-वतन[५१] छलके हुए साग़र[५२] में है

फिर हमें होगा मुयस्सर[५३] दह्र[५४] में जाहो-जलाल[५५]
चार दिन में गुलशने-हस्ती[५६] में फिर होंगे निहाल[५७]
'बर्क़' यह ज़र्बुल-मसल[५८] होगी हमारे हस्बे-हाल[५९]
"हर कमाले रा ज़वाले, हर ज़वाले रा कमाल"[६०]
नैयरे-इक़बाल[६१] चमकेगा हमारा एक दिन
औज[६२] पर इस देश का होगा सितारा एक दिन

हिन्दोस्तां

ज़फ़र अली खां

नाक़ूस[१] से ग़रज़ है न मतलब अज़ां[२] से है
मुझको अगर है इश्क़[३] तो हिन्दोस्तां से है

३५. गंगा-यमुना के तट, ३६. उपवन की धूल का कण, ३७ सयमी, ३८. भलाई, ३९ साकार, ४०. वंचित, ४१. गुण, (ब० व०), ४२. गिरावट, ४३. ज्ञान और कर्म की सम्पत्ति, ४४. दरिद्रता, ४५. सुप्रसिद्ध, ४६. नशा, ४७. उदास चराग, ४८. जीवन की महफिल, संसार, ४९. अतीत, ५०. उन्माद, ५१. देशभक्ति की मदिरा, ५२. प्याला, ५३. प्राप्त, ५४. दुनिया, ५५. वैभव, ५६. अस्तित्व का उपवन, ५७. पौधे, ५८. लोकोक्ति, कहावत, ५९. स्थिति के अनुसार, ६०. उत्थान का पतन और पतन का उत्थान, ६१. प्रताप का तारा, ६२. उच्चता, ऊंचाई।

हिन्दोस्तां

१. शंख, २. अज़ान, बांग, ३. प्रेम।

तहज़ीबे-हिन्द[4] का नहीं चश्मा[5] अगर अज़ल[6]
यह मौजे-रंग-रंग फिर आयी कहां से है
ज़र्रे[7] में गर तड़प है तो इस अर्ज़े-पाक[8] से
सूरज में रौशनी है तो इस आसमां से है

हिन्दोस्तां

'सीमाब' अकबराबादी

वो परस्तिशगाहे-फ़ितरत[1], सिज्दागाहे-आफ़ताब[2]
किर्दगारे-सुब्हे-मशरिक[3], शामे-गेती[4] का शबाब[5]
था सनमज़ारे-अरब[6] जिसके सनमख़ानों[7] की धूप
आतिशे-बज़्मे-अजम[8] थी जिसके ऐवानों[9] की धूम
बुतकदों[10] में जिसके ज़िंदा थे बुताने-आज़री[11]
इश्क[12] की परवर्दिगारी[13], हुस्न[14] की पैगंबरी
सुर्ख़[15] संदल[16] सी जबीं[17], उन पे कश्कों[18] के चिराग[19]
बर्ग[20] से नाज़ुक[21] तबीअत, फूल से नाज़ुक दिमाग़
जिसके दरिया आईने पिघले हुए, बहते हुए
जिसके पर्वत कायनाते-अब्र[22] को घेरे हुए
जिसकी नदियां मौजे-मय[23] की तरह लहराती हुई
घूमती, गिरती, गुजरती, गूंजती, गाती हुई
शाम मस्ती-आफ़रीं[24], रंगे-सहर[25] जल्वा-पनाह[26]
इश्क की पहली जमाही, हुस्न की पहली निगाह
लहलहाते सब्जाज़ारों[27] में बहार[28] आयी हुई
इक घटा बरसी हुई और इक घटा छायी हुई

४. भारतीय संस्कृति, ५. स्रोत, ६ अनादि काल, ७ कण, ८ पवित्र धरती।

हिन्दोस्तां

१. प्रकृति का आराधना-गृह, २. सूर्य के सिजदा करने की जगह, ३ पूर्व के प्रभात का परमात्मा, ४. धरती, ५. यौवन, ६. अरब का सनमज़ार, ७ मन्दिर, ८ अजम की बज़्म की आग, ९. प्रासाद, १०. मन्दिर, ११ आज़र की मूर्तियां, १२ प्रेम, १३ ख़ुदाई, १४. सौंदर्य, १५. लाल, १६ चन्दन, १७. ललाट, १८. तिलक, १९. दिये, २०. पत्ते, २१. कोमल, २२. बादलों की दुनिया, २३. शराब की मौज, २४. नशीली, २५. प्रभात का रंग, २६. शरण, २७. हरे-भरे मैदान, २८. वसन्त।

जैसे रक्सां[२६] हो फ़जा[३०] में हुस्न का रंगीं खदंग[३१]
मुख़्तलिफ़[३२] रंगों का जैसे उड़ रहा हो इक पतंग
देखकर अफ़ग़ानियों[३३] ने उसकी परवाज़े जमील[३४]
ले लिया आग़ोशे-क़ुव्वत[३५] में ब-अन्दाज़े-जमील[३६]
मिल गयी शम्ए-हरम[३७] बुतखाने के फ़ानूस से
इब्ने-आज़र[३८] ने सदा[३९] दी परदः-ए-नाक़ूस[४०] से
मसलके-बुध[४१] को तहफ़्फ़ुज़[४२] का इशारा मिल गया
कृष्ण के मंदिर को मस्जिद का सहारा मिल गया
ज़र्रा-ज़र्रा[४३] महफ़िले-ज़ोहरा[४४] नज़र आने लगा
खून सा क़श्क़ा[४५] सुरैया[४६] बनके इतराने लगा
शामे-मग़रिब[४७] यह सितारा देख के ललचा गयी
सादः-ओ-बेनूर[४८] आंखों में चकाचौंध आ गयी
फ़लसफ़ी[४९] भी दाम[५०] ले-लेकर बढ़े, तुज्जार[५१] भी
अपना फंदा लेके उट्ठा देवे-इस्तेमार[५२] भी
अर्शे-सतवत[५३] पे थी मौजे-इशरते-अफ़ग़ानियां[५४]
जल्वः-ए-साग़र[५५] पे थी चमकी हुई महताबियां[५६]
थीं यही दो चार बातें गर्मि-ए-बज़्मे-शबाब[५७]
नग़मः-ए-मुतरिब[५८], कनारे-शाहिदो-जामे-शराब[५९]
कारवां ग़ाफ़िल हुआ, रौबे-शबे मंज़िल[६०] गया
पासबाने[६१]-वक़्त को शबखूं[६२] का मौक़ा मिल गया
शामे-मग़रिब[६३], सुब्हे-मशरिक़[६४] पर यकायक[६५] छा गयी
सुर्ख़[६६] इक बदली ज़मीं से आसमां तक छा गयी
अब वो सैयारा[६७] जो रिफ़अत[६८] पर मुबुक-परवाज[६९] था
पस्ति-ए-हालात[७०] से फिर नक़्शे-पा-अंदाज़[७१] था

२९. नृत्य करती हुई, ३०. वातावरण, ३१. तीर, ३२. विभिन्न, ३३. अफ़ग़ानिस्तान के रहनेवाले, ३४. सुन्दर उड़ान, ३५. शक्ति का बाहुपाश, ३६. सुन्दर ढंग से, ३७. हरम का चराग़, ३८. आज़र का बेटा, ३९. आवाज़, ४०. शंख का पर्दा, ४१. बुद्ध का धर्म, ४२. सुरक्षा, ४३. कण-कण, ४४. शुक्र ग्रह की महफ़िल, ४५. तिलक, ४६. कृत्तिका, ४७. पश्चिम की शाम, ४८. श्वेत और ज्योतिहीन, ४९. दार्शनिक, ५०. जाल, ५१. व्यापारी, ५२. साम्राज्य का राक्षस, ५३. आतंक का आकाश, ५४. अफ़ग़ानियों के वैभव की मौज, ५५. मधुपात्र का दर्शन, ५६. आतशबाज़ी, ५७. यौवन की बज़्म की गर्मी, ५८. गीतकार का गीत, ५९. शराब के जाम की ख़ुशी, ६०. मंज़िल की रात का आतंक, ६१. पहरेदार, ६२. शत्रु पर अचानक रात में हमला, ६३. पश्चिम की संध्या, ६४. पूर्व का प्रभात, ६५. सहसा, ६६. लाल, ६७. नक्षत्र, ६८. ऊँचाई, ६९. उड़ान पर, ७०. दुरवस्था, ७१. पैरों के निशान पर।

गो[७२] बज़ाहिर[७३] तू निशाते-क़ुदरते-अय्याम[७४] है
फ़िल-हक़ीक़त[७५] बे-सुकूं[७६], बेचैन, बे-आराम है
बहरो-बर[७७] तेरे वही हैं और तू बे-इक़्तिदार[७८]
एक ज़र्रे, एक क़तरे[७९] पर नहीं है इख़्तियार[८०]
अब भी मैदानों में बिछती है बिसाते-माहताब[८१]
तेरी मौजे-ख़ाक[८२] से अब भी बरसते है गुलाब
रूह[८३] से ख़ाली है लेकिन पैकरे-मुर्दा[८४] तिरा
जल्वा पज़मुर्दा[८५] है तेरा, बातिल[८६] अफ़सुर्दा[८७] तिरा
जैसे शम्ए-सुब्हे-महफ़िल[८८], जैसे छुपता आफ़ताब[८९]
जैसे शाइर का बुढ़ापा और बेवा का शबाब[९०]
पस्तियों[९१] को ईतिक़ा[९२] फिर जल्व-ए-आग़ाज़[९३] दे
काश मुस्तक़बिल[९४] तिरा माज़ी[९५] को फिर आवाज़ दे

अय मादरे-हिन्दोस्तां

'जमील' मज़हरी

हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां
तेरी ज़मीं[१] रश्के-फ़लक,[२] तेरा चमन रश्के-जिनां[३]

तेरी ज़मीने-पाक[४] मे मिहरो-महो-अख़्तर[५] उगे
तेरी मुक़द्दस[६] ख़ाक[७] से नानक उगे, अकबर उगे
इक राख की चुटकी तिरी टैगोर और गांधी बनी
हर ज़र्रा[८] इक सहरा[९] बना, हर मुश्ते-ख़ाक[१०] आंधी बनी

७२. यद्यपि, ७३. प्रत्यक्ष रूप मे, ७४ समय की विचित्रता का सुख, ७५. वास्तव में, ७६. अशान्त, ७७. समुद्र और धरती, ७८ सत्ताहीन, ७९. बूंद, ८०. अधिकार, ८१. चांद की बिसात, ८२. धूल की मौज, ८३ प्राण, आत्मा, ८४. मृत आकार, ८५. उदास, ८६. झूठ, ८७. उदास, ८८. महफ़िल की सुबह का चराग, ८९. सूर्य, ९० यौवन, ९१. पतन, ९२. विकास, उत्थान, ९३. आगाज़ का जल्वा, ९४. भविष्य, ९५. भूतकाल।

अय मादरे-हिन्दोस्तां

१. धरती, २. जिस पर आकाश भी ईर्ष्या करे, ३. जिस पर स्वर्ग ईर्ष्या करे, ४ पवित्र धरती, ५. चांद, सूरज और तारे, ६. पवित्र, ७. धूल, ८. कण, ९. जगल, १०. मुट्ठी-भर धूल।

इरफ़ां[११] का इक बादल बना, भारत तिरे दिल का धुआं
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

हर क़तर:-ए-रौशन[१२] तेरा इक आलमे-इरफ़ां[१३] लिये
अय मादरे-गंगा[१४] तिरा हर बुलबुला तूफ़ां लिये
अय अर्ज़े-पाके-हिन्द[१५] हम तेरी कहानी क्या कहें
इक क़ुलज़ुमे-रहमत[१६] है तू, तेरी रवानी[१७] क्या कहें

हर मौज इक तारीख़[१८] है, हर लहर है इक दास्तां[१९]
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

क़ौमें[२०] हुई शीरो-शकर[२१] पलकर तिरी आग़ोश[२२] में
मस्जिद तिरी आग़ोश में, मंदिर तिरी आग़ोश में
महफ़ूज़[२३] है पूंजी तिरी अब तक ख़ला[२४] की गोद मे
अय तरबियतगाहे-मलल,[२५] तेरी फ़ज़ा[२६] की गोद में

हम-सौत,[२७] हम-आहंग[२८] हैं सदियों से नाक़ूसो-अज़ां[२९]
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

सोज़े-उख़ूवत[३०] की लहर हर शहर में हर गांव में
जुमला[३१] मज़ाहिब[३२] दह्र[३३] के सरसब्ज़[३४] तेरी छांव में
तूने तमाम अदयान[३५] को मौक़ा दिया तलक़ीन[३६] का
पिरथी[३७] के राजस्थान में रौज़ा मोईनुद्दीन का

तेरी रवादारी[३८] का है पाइंद-ओ-मुहकम[३९] निशां
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

अय पाक[४०] मिट्टी हिन्द की, तुझमें बना गौतम का दिल
ज़र्रों[४१] में तेरे आज भी बेचैन है भीष्म का दिल
तूने शऊरे-इश्क़[४२] को इक कैफ़े-रूहानी[४३] दिया
प्यासी थी रूहे-ज़िंदगी[४४], तूने उसे पानी दिया

११. ब्रह्मज्ञान, १२. चमकदार बूंद, १३. ज्ञान का संसार, १४ गंगा मैया, १५ भारत की पवित्र धरती, १६. दया की नदी, १७. प्रवाह, १८. इतिहास, १९. कहानी, २०. राष्ट्र, २१. दूध-शकर, २२. गोद, २३. सुरक्षित, २४. शून्य, २५ राष्ट्रों का प्रशिक्षण-स्थल, २६. वातावरण, २७. एक आवाज़, २८. एक आवाज़, २९. शंख और अज़ान, ३०. भाईबन्दी का दर्द, ३१. सब, ३२. धर्म, ३३. दुनिया, ३४. हरे-भरे, ३५. दीन, धर्म, ३६. उपदेश, ३७. पृथ्वीराज चौहान, ३८. भाईचारा, ३९. मज़बूत, ४०. पवित्र, ४१. कण, ४२. प्रेमचेतना, ४३. आध्यात्मिक नशा, ४४. ज़िन्दगी की आत्मा।

तेरे क़िनारे आ बसा तिश्ना-लबों[४५] का कारवां
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

सदियों तलक चौखट तिरी, इक काब:-ए-इरफ़ां[४६] रही
चीनो-ख़ुतन[४७] के वास्ते सरचश्म:-ए-ईमां[४८] रही
झुकती रहीं पेशानियां[४९] तेरी ज़ियारतगाह[५०] में
तेरी जबीं[५१] की भीक है कशकोले-मेह्रो-माह[५२] में
इल्मो-अमल[५३] की राह में तेरी तजल्ली[५४] ज़ौफ़िशां[५५]
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

अय क़ुलज़ुमे-इरफ़ां[५६] तिरी हर मौज है कौसर[५७] लिये
प्यासों की महफ़िल में गये साक़ी तिरे साग़र[५८] लिये
इक आबशारे-ज़िंदगी[५९] तिरे चमनज़ारों में है
दिल मामता का मुज़तरिब[६०] इन दूध की धारों में है
तहज़ीबे-इंसानी[६१] हुई इस दूध से पलकर जवां
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां

हर रंग के, हर बाग़ के हैं फूल दामन में तिरे
नैरंगियां[६२] आफ़ाक़[६३] की सिमटी हैं गुलशन में तिरे
हर रेत में, हर खेत में, बरसा किया बादल तिरा
है एशिया पर आज भी साया-फ़िगन[६४] आंचल तिरा
लहरा रहा है आज भी तेरे तक़द्दुस[६५] का निशां
हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां, हिन्दोस्तां हिन्दोस्ता

४५. प्यासे होंठ, ४६. ज्ञान का काबा, ४७. चीन और ख़ुतन, ४८. ईमान का स्रोत, ४९. ललाट, ५०. दर्शन स्थल, ५१. ललाट, ५२. चांद और सूरज का भिक्षा पात्र, ५३. ज्ञान और कर्म, ५४. शुभ दर्शन, ५५. प्रकाशमान, ५६. ज्ञान की नदी, ५७. जन्नत की नहर, ५८. प्याले, ५९. जीवन का जल प्रपात, ६०. बेचैन, ६१. मानव-सभ्यता, ६२. इन्द्रजाल, जादूगरी, ६३. संसार, उफ़ुक़ का ब० व०, ६४. छांव किये हुए, ६५. पवित्रता।

ज़मीने-वतन

पं० आनंद नारायण मुल्ला

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

अज़ल[१] में जहां सबसे पहले हयात[२]
लिये अपनी आग़ोश[३] मे कायनात[४]
जलाती हुई शम्ए-ज़ातो-सिफ़ात[५]
हिजाबे-अदम[६] से हुई जल्वाज़न[७]
ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

जहां बिस्तरे-बर्फ़[८] से मस्ते-ख्वाब[९]
उठा आंख मलता हुआ आफ़ताब[१०]
लुटाती हुई जल्व-ए-बेनिक़ाब[११]
जहां आयी पहली सुनहरी किरन
ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

जहां पहले तख़लीक़े-इंसां[१२] हुई
तिरी रहमत[१३] उसकी निगहबां[१४] हुई
ख़िरद[१५] उसकी गहवार-जुंबां[१६] हुई
बशर[१७] ने तमद्दुन[१८] के सीखे चलन
ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

जहां इब्ने-आदम[१९] पला गोदियों
जहां नस्ले-इंसा[२०] चली घुटनियों
जहा चश्मे-हैरत[२१] के 'क्या' और 'क्यों'
लबे-तिफ़्ल[२२] तक आये बनकर सुख़न[२३]

१. अनादिकाल, २. जीवन, ३. गोद, ४. ब्रह्माण्ड, ५. व्यक्तित्व और गुण का दिया, ६. शून्य का पर्दा, ७. प्रकट, ८. बर्फ का बिस्तर, ९. नींद में डूबा हुआ, १०. सूर्य, ११. खुला हुआ सौंदर्य, १२. मानव-सृष्टि, १३, दया, १४. पहरेदार, १५ बुद्धि, अक्ल, १६. हिलता हुआ पालना, १७ इन्सान, १८. संस्कृति, १९. आदम की औलाद--मनुष्य, २० इन्सान की नस्ल, २१. आश्चर्य की आंख, २२ बचपन के होंठ, २३ बोल।

जमीने-वतन ! अय जमीने-वतन !

जहां खैरो-शर[24] में हुआ इम्तियाज[25]
बनी जीस्त[26] मजमूअ-ए-सोजो-साज[27]
खुला राजे-ईमां[28] में हस्ती[29] का राज[30]
तराशे गये एजदो-अहरमन[31]

जमीने-वतन ! अय जमीने-वतन !

वो ईमां[32] का बढ़ना हुआ एतकाद[33]
बने देवता आतिशो-आबो-बाद[34]
परस्तिश[35] पे दारोमदारे-मुराद[36]
वो वेदों के मीठे सुरीले भजन

जमीने-वतन ! अय जमीने-वतन !

जहां इक कंवल पर ब-सद दिलबरी[37]
उठी दूध के कुंड से लक्ष्मी
कदम शिव के शानों पे धरती हुई
उतर आयी गंगा जहां खंदाजन[38]

जमीने-वतन ! अय जमीने-वतन !

गये छोड़कर अपने-अपने निशां[39]
हुई बारी-बारी जहां कामरां[40]
जहां आके उतरा हर इक कारवां
मुगल, आर्या, तुर्क, तातार, हून

जमीने-वतन ! अय जमीने-वतन !

लिये गैर-मुल्कों[41] ने तुझसे सबक[42]
तिरी दास्तां के उड़ाये वरक[43]

२४ नेकी-बदी, २५ अन्तर फर्क २६ जीवन २७ सुख-दुख का मिश्रण २८ ईमान का रहस्य, २९ अस्तित्व ३० रहस्य ३१ खुदा और शैतान, ३२ मानव, ३३ विश्वास भरोसा, ३४ आग, पानी और हवा, ३५ पूजा, आराधना ३६ अभिलाषा, का आधार, ३७ माशूकी, ३८ मुस्कुराती हुई, ३९ चिह्न, निशान, ४०. सफल, कामयाब, ४१ विदेश, ४२ पाठ, शिक्षा, ४३ पृष्ठ, पन्ना।

तिरे खोशाचीं[४४] अज़ शफ़क़ ता शफ़क़[४५]
अरब, मिस्र, यूनान, चीनो-ख़ुतन

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

शबिस्ताने-ईरां[४६] का सामानो-साज़[४७]
तरक़्क़ि-ए-बाज़ारे-वेनिस[४८] का राज़[४९]
वो ख़ुद अहले-रूमा[५०] को था जिन पे नाज़[५१]
तिरे दस्तकार[५२] और तिरे अहले-फ़न[५३]

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

किसे आयेगा आज इसका यक़ीं[५४]
अशोक और अकबर की अय सरज़मीं[५५]
तिरे दर पे घिसती थी दुनिया जबीं[५६]
कभी तू ही थी सिज्दागाहे-ज़मन[५७]

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

तिरे कोहो-दरिया[५८] जमाल-आफ़रीं[५९]
तिरी वादियां रश्के-ख़ुल्दे-बरीं[६०]
किसी ने तुझे यों बनाया हसीं[६१]
कि जैसे संवारी गयी हो दुल्हन

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

मिटाकर तिरी गर्मबाज़ारियां[६२]
बनीं अहले-यूरप[६३] की ज़रदारियां[६४]
तिरे ख़ूं[६५] से सींची हुई क्यारियां
ये मग़रिब[६६] के सब लहलहाते चमन

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

४४. खेत का फल बीननेवाले, ४५. अरुणिमा, ४६. ईरान का शयनागार, ४७. उपकरण, ४८. वेनिस के बाज़ार की उन्नति, ४९. रहस्य, ५०. रोम के निवासी, ५१. गर्व, ५२. शिल्पी, ५३. कलाकार, ५४. विश्वास, ५५. धरती, ५६. ललाट, ५७. समय का सिजदा करने का स्थल, ५८. पहाड़ और नदियां, ५९. सुन्दर, ६०. जिस पर स्वर्ग भी ईर्ष्या करे, ६१. सुन्दर, ६२. बाज़ार की गर्मी, ६३. यूरोपवासी, ६४. सरमायादारी, ६५. रक्त ६६. पश्चिम ।

ये देहली के नक़्शो-निगारे-ख़मोश[६७]
यह चित्तौड़ की ख़ाके-लालाफ़रोश[६८]
ये कैलाश की चोटियां बर्फ़पोश[६९]
तुझे ढूंडती हैं उरूजे-कुहन[७०]

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

तुझे सौलते-बाबरी[७१] की क़सम
तुझे अस्मते-पद्मिनी[७२] की क़सम
तुझे ख़ाके-पानीपती[७३] की क़सम
फिर इक बार दिखला जलाले-कुहन[७४]

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने वतन !

बदलने को है मौसमे-रोज़गार[७५]
हवाओं में है एक कैफ़े-ख़ुमार[७६]
तिरी सिम्त[७७] फिर आ रही है बहार[७८]
लिये फिर गुलो-लाल-ओ-नस्तरन[७९]

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

फिर आने को हैं मूए-गुलशन[८०] असीर[८१]
बरसने को है फिर घटाओं से नीर
चटानों में है मुज़्तरिब[८२] जू-ए-शीर[८३]
कहा है कहां तेशः-ए-कोहकन[८४]

ज़मीने-वतन ! अय मीने-वतन !

उख़ूवत[८५] का फिर हाथ में जाम[८६] ले
मसावाते-इंसां[८७] का फिर नाम ले
रवायाते-माज़ी[८८] से फिर काम ले
वतन को बना दर हक़ीक़त[८९] वतन

ज़मीने-वतन ! अय ज़मीने-वतन !

६७. मौन बेल-बूटे, ६८ लाले के फूल खिलानेवाली मिट्टी, ६९ बर्फ़ से ढकी हुई, ७०. प्राचीन उत्थान, ७१ बाबर का प्रताप, ७२. पद्मिनी का सतीत्व. ७३. पानीपत की धरती, ७४. पुराना प्रताप, ७५. जमाने की ा, ७६. नशा, ७७. ओर, ७८. वसन्त, ७९. गुलाब, लाला और सेवती, ८०. गुलशन की ओर, ८१. क़ैदी, ८२. दुखी, ८३. दूध की नदी, ८४. कोहकन का कुदाल, ८५. भाईचारा, ८६. प्याला, ८७. इन्सानी बराबरी, ८८. भूतकाल की रिवायतें, ८९. वास्तव मे ।

तरानः-ए-वतन

'साग़र' निज़ामी

अय वतन, अय वतन, अय वतन
जाने-मन, जाने-मन जाने-मन

जर्रे-जर्रे[१] में महफ़िल मजा देंगे हम
तेरे दीवारो-दर[२] जगमगा देंगे हम
तुझको हस्ती[३] का गुलशन बना देंगे हम
आसमानों पे तुझको बिठा देंगे हम
बनके दुश्मन तिरा जो उठेगा यहां
उसको तहतुस्सरा[४] में गिरा देंगे हम
और तहतुस्सरा को फ़ना[५] के समदर में अर्थी बनाकर बहा देंगे हम
अय वतन, अय वतन

सुन लें ये इंसो-जानो-जमीनो-जमन[६]
अय वतन, अय वतन, अय वतन
जाने-मन, जाने-मन, जाने-मन

तेरी हस्ती[७] हिमाला की चोटी बनी
माहो-ख़ुरशीद[८] की उस पे बिंदी लगी
रौशनी शर्क़[९] से गर्ब[१०] तक हो गयी
सिज्दे मे झुक गयी अजमते-जिंदगी[११]
अजमते-जिंदगी की कसम है हमें
तेरी इज़्ज़त पे सर तक कटा देंगे हम
वक़्त आने दे अय मां! तिरे नाम पर अपनी हस्ती-ओ-मस्ती मिटा देंगे हम
अय वतन, अय वतन

१. कण, २. दीवार और दरवाजे, ३. अस्तित्व, ४ पाताल, ५ विनाश, ६. इन्सान, जिन, धरती और समय, ७. अस्तित्व, ८. चांद-सूरज, ९. पूर्व, १०. पश्चिम, ११. जीवन की महानता।

खून मे अपने भर देगे गगो-जमन[12]
अय वतन, अय वतन, अय वतन
जाने-मन, जाने-मन, जाने-मन

मस्तो-खुशबू हवाओ से शीतल है तू
माधुरी है, मनोहर है, कोमल है तू
प्रेम-मदिरा की लबरेज[13] छागल है तू
सर पे दुनिया के रहमत[14] का बादल है तू
आँख उठाके जो देखा किसी ने तुझे
छावनी अपनी लाशो की छा देगे हम
तेरे पाकीजा पेकर[15] को रूहो की बारीक चादर के नीचे छुपा देगे हम
अय वतन, अय वतन

तुझ प कुरबा[16] जरो-माल[17] और जानो-तन
अय वतन, अय वतन, अय वतन
जाने-मन, जाने-मन, जाने-मन

तेरी नदिया रसीली, मधुर नग्माख्वा[18]
तेरे पर्बत निगी अजमतो के निशा
तेरे जगल भी हसते हुए गुलसिता
तेरे गुलशन भी रश्के-बहारे-जिना[19]
तेरी मिट्टी मे खुशबू की फिरदौस है[20]
तेरे जर्रो का सूरज बना देगे
जो भी पूछेगा जन्नत का हम से पता, राहे-कश्मीर उसको बता देगे हम
अय वतन, अय वतन

तू चमन दर चमन है, अदन दर अदन
अय वतन, अय, वतन
जाने-मन, जाने-मन, जाने-मन

१२ गगा और यमुना, १३ परिपूर्ण, भरी हुई, १४ कृपा दया, १५. आकार, १६. न्योछावर, कुरबान, १७ धन-दौलत, १८ गीत गाती हुई १९ जन्नत की बहार, २०. जिस पर स्वर्ग, ईर्ष्या करे।

जिसका पानी है अमृत वो मख़ज़न[२१] है तू
जिसके दाने हैं बिजली वो ख़िरमन[२२] है तू
जिसके कंकर हैं हीरे वो मादिन[२३] है तू
जिससे जन्नत है दुनिया वो गुलशन है तू
देवियों, देवताओं का मस्कन[२४] है तू
तुझको सिज्दों से काबा बना देंगे हम
तेरी पाकीज़ा धरती को अम्नो-मुहब्बत का आकाश मंदिर बना देंगे हम
अय वतन, अय वतन

हर सितारे से फूटेगी तेरी किरन
अय वतन, अय वतन, अय वतन
जाने-मन, जाने-मन, जाने-मन

ये सितारे, यह निखरा हुआ आसमां
आसमां से हिमाला की सरगोशियां[२५]
यह तिरी अज़मतों[२६] का अटल राज़दां[२७]
मुस्तक़िल[२८], मोतबर[२९], मोहतशिम[३०], जाविदां[३१]
इसकी चोटी से मज़लूम दुनिया को फिर
हम, पयामे-हयातो-वफ़ा[३२] देंगे हम
हम, मुहब्बत का नग़मा सुना देंगे हम, हम, ज़माने को जीना सिखा देंगे हम
अय वतन, अय वतन

हम बुझा देंगे शम्ए-निज़ामे-कुहन[३३]
अय वतन, अय वतन, अय वतन
जाने-मन, जाने-मन, जाने-मन

२१. ख़ज़ाना, २२. खलिहान, २३. खान, २४. निवास २५. कानाफूसी, कान में बात कहना, २६. महानता, २७. मर्मज्ञ, रहस्य जाननेवाला, २८. स्थायी, २९. विश्वसनीय, ३०. नौकर-चाकर-वाला, ३१ शाश्वत, ३२. प्रेम-निर्वाह और जीवन का सन्देश, ३३. पुराने शासन का चिराग़।

वतन का राग

'अफसर' मेरठी

भारत प्यारा देश हमारा सब देशो मे न्यारा है
हर रुत, हर मौसम इसका कैसा प्यारा-प्यारा है
कैसा सुहाना, कैसा सुदर प्यारा देश हमारा है
दुख मे सुख मे हर हालत मे भारत दिल का सहारा है
भारत प्यारा देश हमारा सब देशो से प्यारा है

सारे जग के पहाडो मे बे-मिस्ल[1] पहाड हिमाला है
पर्वत सबमे ऊँचा है यह पर्वत सबमे निराला है
भारत की रक्षा करता है, भारत का रखवाला है
लाखो चश्मे[2] बहते है, यह लाखो नदियोवाला है
भारत प्यारा देश हमारा, सब देशो मे प्यारा है

गगाजी की प्यारी लहरे गीत सुनाती जाती है
सदियो की तहजीब[3] हमारी याद दिलाती जाती है
भारत के गुलजारो[4] को सरसब्ज[5] बनाती जाती है
खेतो को हरियाली देती, फूल खिलाती जाती है
भारत प्यारा देश हमारा, सब देशो से प्यारा है

कृष्ण की बसी ने फूकी है रूह[6] हमारी जानो मे
गौतम की आवाज बसी है महलो मे मैदानो मे
चिश्ती ने जो मय[7] दी थी, वह अब तक है पैमानों[8] मे
नानक की तालीम[9] अभी तक गूंज रही है कानो मे
भारत प्यारा देश हमारा, सब देशो से प्यारा है

मजहब[10] कुछ हो हिन्दी है हम, सारे भाई-भाई हैं
हिन्दू है या मुस्लिम है या सिख है या ईसाई है

१, अद्वितीय २ स्रोत, ३. सभ्यता, ४ उपवन, ५ हरा-भरा, ६ प्राण-वायु, ७ शराब, ८. प्याला, ९ शिक्षा, १० धर्म ।

प्रेम ने सबको एक किया है, प्रेम के हम शैदाई है
भारत नाम के आशिक है हम, भारत के सौदाई है
भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से प्यारा है

यह हिन्दोस्तां

अली सरदार जाफ़री

यह हिन्दोस्ता रश्के-ख़ुल्दे-बरी[1]
उगलती है सोना वतन की जमी
कही कोयले और लोहे की का
कही सुर्ख़ पत्थर की ऊँची चटा[2]
कही संगमरमर की शफ्फाफ सिल
फिसलता है जिसकी सफ़ाई पे दिल
बहुत-से ख़जीने है इस ख़ाक मे
हज़ारों दफ़ीने[3] है इस ख़ाक मे
गुलो-लाल:-ओ-यासमन[4] के अयाग[5]
महकते हुए आम के सब्ज बाग
हरे और भरे जंगलो की बहार
झलाझल चमकते हुए रेगज़ार[6]
यह सूरज की रगीन किरनो का जाल
कि जिस तरह फितरत[7] ने खोले हों बाल
उफ़ुक[8] से उबलता हुआ रगो-नूर
फ़ज़ाओं[9] मे परवाज[10] करते तयूर[11]
कुहिस्तान[12] के ये सुनहरे उक़ाब[13]
हवाओं मे उड़ते हुए आफ़ताब[14]

१. जिस पर स्वर्ग भी ईर्ष्या करे, २ चट्टान, ३ गड़ा हुआ धन, ४ गुलाब, लाला और चमेली, ५. प्याला, ६. रेतीले मैदान, ७ प्रकृति, ८ क्षितिज, ९. शून्य, १०. उड़ते हुए, ११ पक्षी, १२. पहाड़ी इलाका, १३ गिद्ध, १४ सूर्य ।

कंवल झील में मुस्कराते हुए
चिरागां[15] का मंजर[16] दिखाते हुए
ये फूलों से गुल-पैरहन[17] शाखसार[18]
गिज़ालों[19] से मामूर[20] ये मर्गज़ार[21]
तड़पती मचलती हुई बिजलियां
समंदर मे मिलती हुई नदियां
ये नीलम और अलमास[22] के कोहसार[23]
ये चादी के पिघले हुए आबशार[24]
ये मखमल में लिपटी हुई वादियां
हिमाला की गुलपोश[25] शहजादियां[26]
यह गगा का आंचल, यह जमुना की रेत
ये धान और गेहूँ के शादाब[27] खेत
मगर ये खजाने हमारे नही
हमारे नही है तुम्हारे नहीं

बादः-ए-वतन

'जांनिसार' अख्तर

पिला साकिया, बादः-ए-खानासाज़[1]
कि हिन्दोस्ता पर रहे हमको नाज[2]
मुहब्बत है खाके-वतन से हमें
मुहब्बत है अपने चमन से हमें
हमें अपनी मुद्दो मे शामो से प्यार
हमें अपने शहरों के नामों से प्यार
हमें प्यार अपने हर इक गाँव से
घने बरगदों की घनी छाव से

१५ दीपावली, १६. दृश्य, १७ फूलों के वस्त्र, १८ कुंज, झुरमुट, १९. हिरन, २०. परिपूर्ण, भरा हुआ, २१ हरे भरे जगल, २२ हीरक, २३. पहाड, २४. जल प्रपात, २५. फूलों से ढकी, २६ राजकुमारियां, २७ हरे भरे, लहलहाते हुए ।

बादः-ए-वतन

१ घर की बनी हुई मदिरा, २. गर्व, ।

हमें प्यार अपनी इमारात से·
हमें· प्यार अपनी रवायात[3] से
हमें प्यार है अपनी तमईज[4] से
हमे प्यार है अपनी हर चीज से
उठाये जो कोई नजर, क्या मजाल
तिरे रिंद[5] ले बढ के आंखे निकाल
सलामत रहे अपने दश्तो-दमन[6]
रहे गुनगुनाता हमारा गगन
निगाहें हिमाला की ऊँची रहे
सदा चाद-तारों को छूती रहे
रहे पाक गंगोतरी की फबन[7]
मचलती रहे जुल्फे - गंगो - जमन
रहे जगमगाता यह सगम का रूप
चमकती खुनुक[8] चादनी, नर्म धूप
झलकती रहे यह अशोका की लाट
ये गोकुल की गलिया, ये काशी के घाट
लुटाती रहे अपने नैनो का मध
यह सुब्हे-बनारस,[9] यह शामे-अवध[10]
नहाता रहे नर्म किरनो मे ताज
रहे ता कयामत मुहब्बत की लाज
एलौरा के बुत रक्स करते रहे
हसी ग़ार[11] तारो से भरते रहे
रहें मुस्कराती हसी वादिया
रहे शाद[12] जगल की शहजादिया
हरी खेतिया लहलहाती रहे
जवा लडकिया गीत गाती रहे
लहकता रहे सब्ज मैदा मे धान
जमीनों पे बिछते रहे आसमान
फ़ज़ा में घटाएं गरजती रहें
जवां छागलें तट पे बजती रहें

३. परम्परा, ४. सभ्यता, शिष्टाचार, ५. शराबी, ६. जगल, बूरा, ७. शोभा, ८. ठण्डी, ९. बनारस का प्रभात, १०. अवध की संध्या, ११. गुफाएं, १२. खुश।

उड़ाती रहे आंचलों को हवा
मल्हारों की बूंदों में गूंजे सदा
दहकती रहे पाक होली की आग
रहें खेलती नारियां पी से फाग
सदा गाये राधा कन्हैया के गुन
मचलती रहे बन में मुरली की धुन
रहे यह दिवाली की जगमग बहार
मुंडेरों पे जलते दियों की क़तार
फ़ज़ा[13] रोशनी में नहाती रहे
हमारी ज़मीं जगमगाती रहे
रहे आसमां पर दमकता हिलाल[14]
रहे ईद का मुस्कराता जमाल[15]
गले से गले लोग मिलते रहें
दिलों के जवां फूल खिलते रहें
रहे यह बसंतों के मेले की धूम
रहें शाद[16] ये गीत गाते हुजूम[17]
हसीनों के लहकें बसंती लिबास
रहे नर्म चेहरों पे हल्की मिठास
हसीं राखियां झलझलाती रहें
झमाझम सितारे लुटाती रहें
रहे अपने भाई पे बहनों को नाज
यह मासूम नर्मी, यह मीठा गुदाज[18]
घरों का तक़द्दुस[19] रहे बरक़रार
यह बेटों के माथों पे मांओं का प्यार
रहें शादो-आबाद[20] सहनों की धूम
रहें आंगनों में 'चमकते नुजूम'[21]
सलामत रहे अंखड़ियों की हया
सलामत रहे घूंघटों की अदा
सलामत दुपट्टों की रंगीं बहार[22]
सलामत जवां आंचलों का वक़ार[23]

१३. वातावरण, १४. चन्द्रमा, १५. सौंदर्य, १६. प्रसन्न, १७. जमघट, समूह, १८. मृदुलता, १९. पवित्रता, २०. खुश, २१. सितारे, २२. शोभा, २३. गरिमा।

सलामत रहे पाक अफ़शां[२४] का नूर[२५]
सलामत रहे बिंदियों का गुरूर
सलामत रहे काजलों की लकीर
सलामत रहें नर्म नज़रों के तीर
सलामत र: चूड़ियों की खनक
सलामत रहे कंगनों की चमक
सलामत हसीनों के सोलह सिंगार
ये जूड़े पे लिपटे चमेली के हार
सलामत रहें मृगनयनों के बान
सलामत रहे मरनेवालों की शान
सलामत वफ़ाओं[२६] के अरमां[२७] रहें
सलामत मुहब्बत के पैमां[२८] रहें
सलामत रहें हीर-रांझे के गीत
रहे हार में भी मुहब्बत की जीत
लजाना रहे, मुस्कराना रहे
मनाना रहे, रूठ जाना रहे
मुहब्बत के चश्मे उबलते रहे
जवां - साल[२९] नग़मों में ढलते रहें
रहे धूम टैगोरो - इक़बाल की
रहे शान पंजाबो - बंगाल की
रहे नाम अपने अदब का बुलंद
दिलों में समाया रहे प्रेमचंद
सदा ज़िंदगानी ग़ज़लख़्वां[३०] रहे
ज़माने में ग़ालिब का दीवां रहे
फ़ज़ाओं में छिड़ते रहें ये सितार
सदा झनझनाते रहें दिल के तार
मचलती रहे मस्त वीना की लय
बरसती रहे सात रंगों की मय
दहकता रहे अपने दीपक का राग
कलेजों में लगती रहे नर्म आग
रहे गूंजती घुंघरुओं की खनक
दफ़ों की सदा ढोलकों की गमक

२४. चमकी, २५. प्रकाश, २६. प्रेमनिर्वाह, २७. अभिलाषा, २८. वचन, अहद, २९. नवयुवक, ३०. ग़ज़ल गाती हुई ।

ये घूमर, ये कत्थक के तोड़े रहें
जवां नाच दिल को झंझोड़े रहें
रहे साक़िया, बादाख़्वारों[31] की ख़ैर[32]
रहे साक़िया, तेरे प्यारों की ख़ैर
उभरता रहे ज़िंदगानी का जोश
रहे तेरे रिंदों[33] को दुनिया का होश
सुराही से साग़र रहे मुत्तसिल[34]
न टूटे कभी तेरे शीशों[35] का दिल
उठा जाम, हां, दौर साक़ी रहे
जहां में सदा अम्न[36] बाक़ी रहे

वतन

'निहाल' स्योहारवी

सुरूरे-दीद-ओ-दिल[1] आलमे-दयारे-वतन[2]
हज़ार-खुल्द-दर-आग़ोश[3] है बहारे-वतन[4]
वतन का जब लबे-शाइर[5] पे नाम होता है
तो इक हदीसे-मुहब्बत[6] कलाम[7] होता है
फ़ज़ा-ए-दिल[8] में वफ़ाओं के राग उठते हैं
तमाम इश्क़ के जज़्बात[9] जाग उठते हैं
अगर जहां में मज़ाक़े-हयात[10] पस्त नहीं
वो आदमी ही नहीं जो वतन-परस्त नहीं
वतन के सर्वो-समन[11] की अदाएं क्या कहना !
वतन के बाग़, वतन की हवाएं क्या कहना !
हर एक हुस्ने-सरापा[12], अरे मआज़ अल्लाह ![13]
वतन के चश्मः-ओ-दरिया, मआज अल्लाह !

३१. शराबी, ३२ कुशल, ३३. शराबी, ३४ लगा हुआ, ३५. बोतल, ३६ शांति ।

वतन

१. आंखों और दिल की मस्ती, २ देश के घर की हालत, ३. हजारों स्वर्ग जिसकी गोद में हों, ४. देश की बहार, ५. कवि के होठ, ६ मुहब्बत की हदीस, ७ कविता, ८. दिल का माहौल, ९. भावनाएं, १०. जीवन की अभिरुचि, ११ सरो और चमेली, १२. सर से पाँव तक, १३. आश्चर्य-सूचक सम्बोधन ।

वतन का रूप है हर एक ला-कलाम[१४] अजीज[१५]
वतन की सुब्ह है दिलकश, वतन की शाम अजीज
अजीज अपने वतन की है चादनी रातें
पसंद अपने चमन की है चादनी राते
बरस रही है पया पैं[१६] शराब, क्या कहना !
वतन मे दिलकशि-ए-आफताब,[१७] क्या कहना !
वतन का चाद, वतन के नुजूम अच्छे है
वतन के फूलो को जी भरके चूम, अच्छे है।

नग़मः-ए-वतन[१]

एजाज सिद्दीकी

अय वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन

मुस्कुराती तेरी नदिया, गुनगनाते आबशार[२]
लहलहाते खेत तेरे, नक्हत-आगी[३] लाला-जार[४]
आसमा की रिफअतों[५] को छूनेवाले कोहसार[६]
मस्तो-रक्सा[७] ये घटाएँ और यह सावन की फुआर
हर तरफ इक कैफो-मस्ती,[८] हर तरफ रगे-खुमार[९]
गुचे-गुचे[१०] पर जवानी, पत्ते-पत्ते पर निखार
मोतियो को अपने दामन मे सजाये सब्जा-जार[११]
खुशबुओ को अपने आचल मे लिए सुब्हे-बहार
सर्वो-सुबुल[१२] के नजारे, यह चिनारो की कतार[१३]
यह बिसाते-लाल-ओ-गुल,[१४] ये हवाए खुशगवार[१५]

१४. बेशक, १५. प्रिय, १६, लगातार, १७ सूर्य का आकर्षण।

नग़मः-ए-वतन

१. देश का गीत, २. जल प्रपात, ३ सुगध फैलाने वाले, ४. लाले के खेत, ५. ऊँचाइयाँ, ६. पर्वत, ७. झूमती-नाचती, ८. नशा, ९. मदिरालय का रग, १०. कली, ११ हरे-भरे खेत, १२. सरो और बालछड़, १३. पक्ति, १४ लाले और गुलाब की बिसात, १५. सुहानी हवाएँ।

तेरी अर्ज़े-हुस्न[16] पर फ़ितरत[17] के लाखों शाहकार
ज़र्रे-ज़र्रे से तिरे कैफ़े-अज़ल[18] है जल्वा-बार[19]
तू है मयख़ाना मिरा और मैं हूं तेरा मयगुसार[20]
तुझ पे क़ुरबां मेरी हस्ती, तुझ पे जानो-दिल निसार

मेरे सीने में रहे हर वक़्त तेरी ही लगन
अय वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन

तेरी मिट्टी से हुआ रूहानियत[21] का इर्तिक़ा[22]
तू कि इक तहज़ीब का सदियों गहवारा[23] रहा
दिलकुशा[24] तेरी हवा तेरे मनाज़िर[25] जां-फ़िज़ा[26]
मुख़्तलिफ़[27] रंगों में भी यक-रंग है तेरी अदा
आग तेरी दौलते-दिल[28], ख़ाक तेरी कीमिया[29]
तुझ से अफ़ज़ल-तर[30] नहीं है कोई शै तेरे सिवा
वो रगों-पै[31] क्या, न जिस में दर्द हो तेरा बसा
ज़ीस्त[32] का हासिल है तू, तू ज़िंदगी का मुद्दआ[33]
तेरा परचम[34] अज़मते-अफ़लाक[35] को छूता हुआ
तेरे जादे[36] अम्ने-आलम[37] के लिए हैं रहनुमा[38]
एक इक ज़र्रे पे तेरे सब्त[39] है सिज्दा मिरा
तेरी चाहत, तेरी उल्फ़त है इबादत से सिवा[40]
तेज़गामो-तेज़रौ[41] है आज तेरा क़ाफ़िला
एक दिन यह पा ही लेगा अपनी मंज़िल का पता

तेरे दीवानों का कम होगा न अब दीवानापन
अय वतन, मेरे वतन, अच्छे वतन, प्यारे वतन

१६. सुन्दर धरती, १७. प्रकृति, १८. अनादिकाल का नशा, १९. दर्शन बिखेरता हुआ, २०. मदिरा पीनेवाला, २१. अध्यात्म, २२. विकास, २३. पालना, २४. दिल खोलनेवाले, २५. दृश्य, २६. जान को बढ़ानेवाला, २७. विभिन्न, २८. दिल की सम्पत्ति, २९. रसायन, ३०. श्रेष्ठ, ३१. नस, ३२. जीवन, ३३. उद्देश्य, ३४. झण्डा, ३५. आकाश की ऊंचाई, ३६. मार्ग, ३७. विश्व-शांति, ३८. मार्ग दर्शक, ३९. अंकित, ४०. अधिक, ४१. तीव्र गति।

नया साज़, नया अंदाज़

'नाज़िश' परतापगढ़ी

बहोश बाश[1] अय जुबाने-ख़ामा[2], है आज़माइश मिरे सुखन[3] की
लबों[4] की हर जुबिशे-ख़फ़ी[5] पर लगी है आंख अहले-अंजुमन[6] की
हर एक तशबीह[7] सजके निकले, कि लाज रह जाये फ़िक्रो-फ़न[8] की
हर एक मिसरे[9] के आईने में हसीन[10] तस्वीर हो वतन की
इक एक हर्फ़[11] आये नज्र[12] लेकर ख़जाना लफ्जों की वुसअतों[13] का
कि मेरी नब्-ए-रवां[14] ने छेड़ा है जिक्र भारत की अजमतों का[15]

नुक़ूश[16] एलौरा के पत्थरों पर कि चश्मे-गेती[17] में ख्वाब जैसे
क़ुतब की यह लाट, अज़्मे-आदम[18] की सूरत[19] कामयाब जैसे
यह ताज, इंसां की हुस्नकारी उलट रही हो निकाब जैसे
यह जामेअ मस्जिद का हुस्ने-सादा[20] हुआ कोई मुस्तेजाब[21] जैसे
यह अर्जे-कश्मीर,[22] एक शाइर की मुंतहा-ए-ख़याल[23] जैसे
यह लाल क़िलए की सुर्ख़ तामीर,[24] जम गया हो गुलाल जैसे

उड़ी है संगम से जब भी खुशबू तो आबरू-ए-वुतन[25] गयी है
हंसी है रात जब मालवे की तो रौशनी दिल में छन गयी है
पठार अर्ज़े-दकन के है या निगाहे-महबूब[26] तन गयी है
कोई अमावस की रात लहराके जुल्फ़े-बंगाल बन गयी है
निगारे-दिल्ली[27] की यह सजावट कथाकली का हो रूप जैसे
यह लखनऊ की हसीन शामें, गुलाबी जाड़ों की धूप जैसे

१. सँभल के, २ क़लम की ज़बान, ३. कलाम, ४. होंठ, ५ मामूली-सा कम्पन, ६ अंजुमन वाले, ७. उपमा, ८. कला और चिन्तन, ९. शेर की एक लाइन, १०. सुन्दर, ११, अक्षर, १२. भेंट, १३. विस्तार, १४. प्रवाहित कल्पना, १५. महानता, १६. चित्र, १७. धरती की आंख, १८. मानव का प्रण, १९. तरह, समान, २०. सादा सौंदर्य, २१. स्वीकार होने वाली, २२. कश्मीर की धरती, २३. चरम सीमा पर पहुँचा हुआ ख़याल, २४. निर्माण, २५. ख़ुतन की प्रतिष्ठा, २६. प्रेमिका की दृष्टि, २७. दिल्ली के चित्र।

ये धान की बालियां कि जिस तरह कोई नाजुक-सी आरज़ू हो
झुके हुए खोशाहा-ए-गंदुम[28] कि जैसे चश्मे-बहाना-जू[29] हो
ये पीले सरसों के खेत, आंगन में जैसे बैठी हुई बहू हो
ये फैली बिखरी हुई-सी बेलें कि जैसे आशिक की गुफ्तगू हो
ये क्यारियां हैं कि इक मुसव्विर[30] के शाहकारों[31] का सिलसिला है
ये कोंपलें हैं कि सीन-ए-आदमी में जीने का हौसला है

यह रूदे-सरजू[32] है या तकद्दुस[33] की आंख में रूह[34] गल गयी है
पवित्र जमुना के रूप में बांसुरी की इक तान बह रही है
यह पाक गंगा की जिसमें कल्बो-नजर[35] को आसूदगी[36] मिली है
हमारी धरती ने हाथ फैला के हमको आशीर्वाद दी है
ये नन्ही मौजें हैं या किसी मह-जबीं[37] के अबरू[38] की जुम्बिशें हैं[39]
ये नर्म लहरों का है तरन्नुम[40] कि दिल की मासूम[41] धड़कनें हैं

यहां की सन्नाइयों[42] में दस्ते-बशर[43] की मेहनत महक रही है
बनारसी साड़ियों की तह में हुनर की मस्ती झलक रही है
चिकन की वो चांदनी, कि तख्लीके-फन[44] की दुनिया चमक रही है
यह जामदानी का रूप है या चमन में जूही महक रही है
ये कामदानी की बूटियां, कहकशां[45] में जिनको खिराज[46] आये
जरी की यह धूप-छांव, जैसे किसी सुहागन को लाज आये

यहां ख्यालों[47] की जल्वागाहों[48] में अम्न के दीप जल चुके हैं
यहां निगाहों की बांसुरी से खुशी के नग्मे उबल चुके हैं
दयारे-गोकुल में हुस्नो-उल्फत[49] के सरमदी[50] गीत पल चुके हैं
यह वो जमीं है जहां फजा में गजल के अशआर[51] ढल चुके हैं
हमारे इस गुलसितां में अब भी हजारहा बर्गो-बार[52] होंगे
यहां के बेटों में कितने ही राम और श्रवन कुमार होंगे

२८ गेहूं की बालियां, २९. प्रेमिका की आंख, ३० चित्रकार, ३१ श्रेष्ठ कृतियां ३२ सरयू नदी, ३३. पवित्रता, ३४ आत्मा, ३५ दिल और नजर, ३६. तृप्ति, सन्तुष्टि. ३७ चन्द्रमुखी, ३८ भृकुटी, ३९. कम्पन, ४० स्वरमाधुर्य, ४१ निष्पाप, ४२ कारीगरी, ४३. मानव के हाथ, ४४ कला की सृष्टि, ४५ आकाशगंगा, ४६ नजराना, ४७ विचार, कल्पना, ४८ दर्शन-स्थल, ४९. प्रेम और सौंदर्य, ५०. अनश्वर, ५१. शेर, ५२. पत्ते और फल।

मिलेगा बुध के पयामे-हक़[५३] में वो सुकूने-हयात[५४] अब भी
गया के ज़र्रे दिखा रहे हैं जहां को राहे-नजात[५५] अब भी
अयोध्या की फ़जाओं में है वफ़ा-ए-सीता[५६] की बात अब भी
मुसीबतों के घनेरे जंगल में रामो-लछमन हैं साथ अब भी
कुरेदें माजी[५७] की राख उसमें शऊर[५८] का जामे-जम[५९] मिलेगा
उन्हीं[६०] के रवायात खजाने से हमें ज़ोरे-क़लम मिलेगा

वही अदाएं हैं गोपियों की तो कृष्ण की बांसुरी वही है
वफ़ा-ए-शाहजहाँ[६१] न की थी जो मरमरीं शायरी वही है
हजार लुटकर भी अपनी धरती पे जल्व-ए-जिंदगी[६२] वही है
फटा है पंजाब का कलेजा मगर लबों पर हंसी वही है
इन्ही में मौज़ू-ए-नज्म[६३] ढूंढें, यहीं पे मीनार-ए-अदब[६४] है
ज़मीन ही मरकज़े-सुखन[६५] है, वतन ही गहवार-ए-अदब है[६६]

हदीसे-वतन

'तैश' मिट्टीकी

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन[१]

मिरे वतन की सरजमीं जमील-ओ-दिलकश-ओ-हसीं
मिरे वतन का आसमां अजीम-ओ-अज्म आफरीं[२]
ये पुर खुलूस[३] बस्तियां फलाह-ओ-खैर की[४] अमीं[५]
ये जरफ़रोश[६] खेतियां सितारा खेज[७]-ओ-खुरजबीं[८]
शगूफ़ाबार-ओ-गुल चकां[९] नजर नवाज-ओ-नाज़नीं[१०]

५३. सत्य का संदेश, ५४. जीवन की शांति, ५५. मुक्ति-मार्ग, ५६. सीता की वफ़ा, ५७ अतीत, ५८. चेतना, ५९. एक रिवायती प्याला जिसमें संसार का हाल दिखाई देता है, ६०. परम्परा ६१. शाहजहां का प्रेम-निर्वाह, ६२ जीवन का जल्वा, ६३. कविता का विषय, ६४. साहित्य का मीनार, ६५. कलाम का केन्द्र, ६६. साहित्य का पालना।

हदीसे-वतन

१. जीवन और मन की दुनिया, २. महान और साहस प्रदान करनेवाला, ३. निष्ठायुक्त, ४. नेकी और भलाई, ५. अमानतदार, ६ सोना उगलनेवाली, ७. सितारे पैदा करनेवाली, ८. सूर्य जैसा ललाट, ९. कलियां और फूल बरसानेवाली, १०. सुन्दर और कोमल।

रवां दवां[11] है चारसू[12] फ़ज़ा में रूहे-अंगबीं[13]
मज़ाक़े-दीद[14] चाहिये तजल्लियां[15] कहां नहीं

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

मिटा मिटा सा है शबे-सियाह का हर इक समां
लुटी लुटी सी है अजल[16] की क़ुवतों की धज्जियां
उफ़ुक़[17] उफ़ुक़ है मग़रिबे-सहर की दिलसितानियां[18]
जफ़ाकशी-ओ-तन्दही[19] की मोतरिफ़[20] है खेतियां
खुलूसे-कार[21] की गवाह है मिलों की चिमनियां
उछल रहे हैं देवता मचल रही हैं देवियां
उबल रहे हैं नग़मे[22] ठुमक रही हैं मस्तियां

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

यहीं पे राम-ओ-लक्ष्मण पले बढ़े जवां हुए
यहीं पे नानक-ओ-कृष्ण-ओ-बुद्ध गुहरफ़िशां[23] हुए
यहीं पे सूर-ओ-तुलसी-ओ-कबीर नग़मा[24]-ख़्वां हुए
यहीं मुईन-ओ-वारिस-ओ-निज़ाम हक़ बयां हुए
यहीं सलीम-ओ-नासिर-ओ-कलीम नुक्तादां[25] हुए
यहीं नज़ीर-ओ-मीर-ओ-मिर्ज़ा रुबाबे-जां[26] हुए
हक़ाइक़-ओ-बसारत-ओ-नज़र[27] के तर्जुमां हुए
रसूले-ज़िन्दगी[28] हुए पयम्बरे-ज़मां[29] हुए

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

यह साधुओं की जन्मभूमि सूफ़ियों का यह वतन
तमद्दुनों[30] का मदरसा, सक़ाफ़तों[31] की अंजुमन

११. प्रवाहित, १२ चारों ओर, १३. शहद की रूह, १४ दर्शन की अभिरुचि, १५. [illegible] दर्शन, १६. मौत, १७. क्षितिज, १८. अत्याचार, १९. परिश्रम और लगन, २०. खेतियां स्वीकार करती हैं, २१. काम की निष्ठा, २२. गीत, २३. मोती बरसाये, २४ गीत गाये, २५. मर्मज्ञ, २६. प्राणों की वीणा, २७. वास्तविकता और परख, २८. जिन्दगी के रसूल, २९. समय के पैगम्बर—नबी, ३०. संस्कृति, ३१. सभ्यता।

ये सब्जपोश वादियां हरीफ़े-खित्त.-ए-खुतन[३२]
ये चश्म:हा-ए-जाफजा[३३], यह गंग और यह जमन
कहीं बहार मुजतरिब[३४] कहीं शराब मोजजन[३५]
लताफ़ते रविश रविश, नफ़ासते चमन चमन
ये दिलबराने-शोलारू[३६] सहर जमाल-ओ-सीमतन[३७]
इशारते[३८] अदा अदा इबारते[३९] सुखन[४०] सुखन

मेरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

ये काश्मिर की नुज़हते[४१] हिमालया की रिफ़अ़ते[४२]
ये सुब्ह-ओ-शामे-काशी-ओ-अवध की जाज़िबियते[४३]
ये देहली और लखनऊ की यादगार अज़मते[४४]
ये अर्ज़-ताज[४५] का उलू[४६], ये सीकरी[४७] की शौकते
ये पुरशिकोह[४८] मकबरे ये जीवकार[४९] तुर्बते[५०]
ये दीदा जेब[५१] बागचे ये दिलरुबा इमारते[५२]
ये सीम-ओ-ज़र की बारिशें ये फ़िक्र-ओ-फ़न[५३] की बर्कते
ये आशिकी के मोजिजे[५४] ये हुस्न की करामते[५५]

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

यह अम्न का पयाम्बर यह आश्ती[५६] का देवता
मुवाफ़िकत[५७] की राहबर मुसालहत[५८] का रहनुमा
यह बेबसों का ख़ैरख्वाह[५९] बेकसों का हमनवा[६०]
रफ़ीके-अहले - यूरुप[६१] - ओ-अनीसे - अहले - एशिया[६२]
उठा तो लेके दावते - निशात-ओ - खुर्रमी[६३] उठा
बढ़ा तो बहरे-इन्तजाम[६४] सुलह-ओ-दोस्ती बढ़ा
मिला तो सबसे आजिजी-ओ-इन्किसार[६५] से मिला
रहा तो सबमें होके सरफ़राज-ओ-सुर्खरू[६६] रहा

३२ खुतन मे टक्कर लेनेवाली, ३३ जीवन दायक स्रोत, ३४ बेचैन, ३५ तरंगित, ३६ अग्नि की तरह चमकनेवाले चेहरे, ३७ सौंदर्य और चांदी जैसे शरीर, ३८ इशारे, ३९ विषय, ४०. बातचीत, ४१ ताजगी, सुहानापन, ४२ ऊँचाइयाँ, ४३ आकर्षण, ४४ महानता, ४५. ताज की धरती, ४६ श्रेष्ठता ४७ फतेहपुर सीकरी, ४८ वैभवशाली, ४९ गरिमापूर्ण, ५०. कब्रें, ५१. मोहक, ५२ भवन, प्रासाद, ५३ चिन्तन और कला, ५४. चमत्कार, ५५. चमत्कार, ५६. शान्ति, ५७ अनुकूलता, ५८ समझौता, ५९ शुभचिन्तक, ६०. साथी, ६१. यूरोपवासियो का मित्र, ६२. एशियाइयो का साथी, ६३ सुख और आनन्द का निमंत्रण, ६४. व्यवस्था, ६५. विनम्रता, ६६. उच्च और सफल।

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

यह फ़लसफ़े का आस्ता[६७], हरीमे-दानिश-ओ-ख़बर[६८]
यह ज्ञानियों का आश्रम, यह आरिफ़ाने-हक़[६९] का घर
कहीं पे इज्तिमाए-शब[७०] कहीं पे महफ़िले-सहर[७१]
तिलावतें[७२] नफ़स नफ़स[७३], इबादतें नज़र नज़र
जुनू यहा का मुहतरम[७४] ख़िरद[७५] यहा की मुक़्तदर[७६]
यहा की ख़ाके-राह[७७] भी है 'तैश' कीमिया असर[७८]
ये बाग़-बन[७९] ये बहरो-बर[८०] ये काख़ो-कोहो-दश्तो-दर[८१]
यह लालाज़ारे-बेकरां[८२] यह एक ख़ुल्दे-मुख़्तसर[८३]

मिरा वतन मिरा वतन हयात-ओ-कायनाते-मन

अय वतन

गोपाल मित्तल

सलाम हो तिरी गलियों पे अय वतन कि जहाँ
यह रस्म आम है, जो चाहे सर उठाके चले
कोई भी शर्त बजुज़[१] वज़-ए-एहतियात[२] नहीं
कोई सँभल के चले, कोई लड़खड़ा के चले

सलाम हो तिरी गलियों पे अय वतन कि जहाँ
मिरे जुनून की पादाश[३] संग-ओ-ख़िश्त[४] नहीं
जहा पे दानः-ए-शऊर नहीं है वजहे-इताब[५]

६७ चौखट, घर, ६८ ज्ञान-भवन, ६९ सत्य पहचाननेवाले, ७० रात के जमघट, ७१ प्रात-काल की गोष्ठियाँ, ७२ धर्मग्रन्थ का पठन, ७३ सांस, ७४ आदरणीय, ७५. बुद्धि, ७६ जिसका प्रभुत्व हो, ७७ मार्ग की धूल, ७८ रसायन का असर रखनेवाली, ७९ उपवन और जंगल, ८० धरती और समुद्र, ८१ इमारत, मैदान और पहाड़ ८२ असीम उपवन, ८३ संक्षिप्त-सा स्वर्ग।

अय वतन

१. सिवाय, २. सावधानी की रीत, ३. सजा, ४. ईंट और पत्थर, ५ क्रोध का कारण।

जहे - नसीब[6] मुयस्सर[7] है वो बहिश्ते-बरी[8]
सलाम हो तिरी गलियो पे जो कुशादा[9] रहे
हमेशा मेरे लिए कल्बे-दोस्ता[10] की तरह
मै एक सरकश[11]-ओ-आवारा था मगर तूने
हमेशा बख्श दिया है शफीक[12] मा की तरह

सलाम तेरी हवा को, तिरी फिजा को सलाम
है जिनकी देन मिरा जौके-शेर-ओ-नग्मागरी[13]
खुलूसे दिल[14] मे दुआ है, रहे कयामत[15] तक
मुसर्रतो के सितारो से तेरी माग भरी

६ सौभाग्य, ७ प्राप्त, ८ स्वर्ग, ९ चौडी, १० मित्रो का दिल, ११ बागी, १२ दयालु, १३. शेर और गीत लिखने की अभिरुचि, १४ हार्दिक निष्ठा, १५ प्रलय ।

नज्र-वतन

सिकन्दर अली 'वज्द'

जिहादे-अम्न-ओ-सदाकत[1] है शाहकार तिरा
खुलूस-ओ-मेहर-ओ-मुरव्वत[2] रहा शिआर[3] तिरा
हगान वग्ग[4] तमद्दुन[5] सदाबहार तिरा
चमक रहा है नया ताजे-जर्रनिगार[6] तिरा

कही उफुक पे अंधेरा नजर नही आता
नजर न हो तो सवेरा नजर नही आता

कही जवाब नही तेरे कोहसारो का
समा[7] अजीब है गंग-ओ-जमन के धारो का
मिसाले-कौसे-कुजह[8] रंग शिश्तजारो[9] का
फजा मे इत्र है तहजीब की बहारो का

नज्र-वतन

[illegible] का धर्मयुद्ध, २. निष्ठा, दया, रवादारी, ३ चलन, ४. जीवनप्रद,
[illegible] मुकुट, ७. वातावरण, ८. इन्द्रधनुष के समान, ९ खेत ।

ज़माना तेरे फ़साने भुला नहीं सकता
नुक़ूशे-ताज-ओ-अजंता[10] मिटा नहीं सकता

बहार साज़[11] है तेरे जदीद[12] मैख़ाने
छलक रहे हैं मय-ए-आगही[13] के पैमाने
हक़ीक़तों[14] में जहां ढल रहे हैं अफ़साने
ख़िरद को[15] राह दिखाते हैं तेरे दीवाने

मुजाहिदों का लहू अर्जुमन्द[16] होके रहा
तिरे वक़ार[17] का परचम[18] बलन्द होके रहा

बहे जो चश्मः-ए-हिम्मत[19] में नूर के धारे
हक़ीर[20] ख़ाक के ज़र्रात बन गए तारे
हुए मुहीब[21] चटानों के संग महपारे[22]
क़दम क़दम पे चले ज़िन्दगी के फ़व्वारे

बशर[23] ने चश्म-ए-आबे-हयात[24] ढूंढ लिया
मआले-कार[25] निशाने-सबात[26] ढूंढ लिया

दयारे-नूर[27] है तू, दोस्ती का मख़ज़न[28] है
हिसारे-अद्ल[29] है जम्हूरियत का गुलशन है
हरीमे-अम्न-ओ-अमां[30] है ख़ुशी का मसकन[31] है
कोई हो तफ़रिक़ा परदाज़[32] तेरा दुश्मन है

किसी के ज़ुल्म वफ़ादार सह नहीं सकते
तिरी पनाह में ख़ूंख़्वार रह नहीं सकते

शमीमे-अम्न[33] ज़माने में चलने वाली है
महक रहे हैं चमन रुत बदलने वाली है
हयाते-नौ[34] की सवारी निकलने वाली है
तिरी ज़मीन जवाहर उगलने वाली है

१०. ताजमहल और अजन्ता के चित्र, ११. बहार बनानेवाले, १२ [illegible]न, १३. चेतना की मदिरा, १४. वास्तविकता, १५. बुद्धि, १६. सम्मानित, १७. प्रतिष्ठा, १८. झण्डा, १९. साहस का स्रोत, २०. तुच्छ, २१. भयानक, २२. चांद के टुकड़े, २३. इंसान, २४. अमृत का स्रोत, २५. काम का अच्छा परिणाम, २६. स्थायित्व का निशान, २७. आनन्द का घर, २८. भण्डार, २९. न्याय की चारदीवारी, ३०. शान्ति का घर, ३१. निवास-स्थान, ३२. फूट डालनेवाला, सच्चा, विश्वसनीय बात का पक्का, ३३. शान्ति की सुगंध, ३४. नया जीवन ।

यह इन्क़िलाबे-करामत[३५] नही तो फिर क्या है
शिकस्ते-ख़्वाब[३६] हक़ीक़त[३७] नहीं तो फिर क्या है

पयामे-सब्र-ओ-सूकूं[३८] धुन तिरे तराने की
निगाहे-शौक़[३९] है तेरी तरफ़ ज़माने की
नवेद[४०] तूने सुनाई बहार आने की
सितमकशों[४१] को है उम्मीद मुस्कुराने की

"लुटाके हुस्ने-सहर[४२] बेक़रार फूलो में
बहार झूल रही है ख़ुशी के झूलों में"

तेरा तरीक[४३] मदावा[४४] है दर्दे-आलम का
जहाने-ताज़ा[४५] करिश्मा[४६] है सइ-ए-पैहम[४७] का
नज़र नवाज़[४८] है अन्दाज़ तेरे परचम का
फ़ज़ा[४९] में नूर फिशा[५०] है पयाम[५१] गौतम का

सियाह दौरे-गुलामी[५२] खयाल-ओ-ख़्वाब है आज
बलन्द अज़मते-इनसा[५३] का आफताब है आज

३५. चमत्का का इकलाब, ३६. स्वप्न-भग, ३७. सत्य, सच्चाई, ३८. शांति और धैर्य का सन्देश, ३९. शौक़ (अभिरुचि) की निगाह, ४०. ख़ुशख़बरी, शुभ सूचना, ४१ अत्याचार सहन करनेवाले, ४२. प्रभात का सौंदर्य, ४३. नियम, ४४. इलाज, ४५. नया ससार, ४६. चमत्कार, ४७. निरन्तर प्रयत्न, ४८. प्रियदर्शन, ४९. वातावरण, ५०. प्रकाश फैलानेवाला, ५१. गौतम का सन्देश, ५२. ग़ुलामी का काला युग, ५३. मानव की महानता, ।

दूसरा अध्याय

हमारे क़ुदरती मनाज़िर

[हमारे प्राकृतिक दृश्य]

(पहला भाग)

आर्यों की पहली आमद हिन्दोस्तान में

वहीदुद्दीन सलीम पानीपती

वो देख कि मौजें रक़्सकुनां[1] हैं सतहे-ज़मीं पर गंगा की
नौवारिद[2] आर्या हैरत में हैं, देख के शान इस दरिया की
गंगोत्री से आती है चली अठखेलियां करती धारा इसकी
आज़ादी है तेवर से अयां,[3] मतवाली है रफ़्तार इसकी

उत्तर की तरफ़ जब उठती है इस क़ाफ़िल:-ए-मगरिब[4] की नज़र
पड़ती हुई किरनें सूरज की हैं देखते बर्फ़ के तोदों पर
हर किल:-ए-कोहे-हिमाला[5] पर अज़मत[6] के हैं बादल छाये हुए
सीनों को हैं ताने देव खड़े अम्बर से सरों को मिलाये हुए

बर्गद के दरख़्तों के जंगल, फैले हैं पहाड़ के दामन[7] में
शाख़ें[8] है जो इनकी साया-फ़िगन[9], ज़ुल्मत[10] का समा[11] है हर बन में
फिरते है वो पीले-मस्त[12] यहां, है देव का जिनके क़द[13] पे गुमां[14]
यह काली घटा जब दौड़ती है आता है नज़र हैबत[15] का समां[16]

हैं रंग बिरंग के फूल खिले, ज़ीनत[17] है चमन[18] की शबाब[19] इनका
खोला है नसीमे-सहर[20] ने अभी किस शान से बन्दे-निक़ाब[21] इनका
आये है मुसाफ़िर हिन्द मे जो खैबर के दर्रो से उतर के अभी
देखे थे उन्होंने लाला-ओ-गुल[22] पामीरी की वादी[23] में न कभी

१. नृत्य मे लीन, २. नवागन्तुक, ३. प्रकट, ४. पश्चिम का कारवां, ५. हिमालय पर्वत का क़िला, ६. महानता, ७. आंचल, ८. डालियां, ९. छांव फैलाए हुए, १०. अन्धकार, ११. वातावरण, १२. मस्त हाथी, १३. आकार, लम्बाई, १४. भ्रम, १५. आतंक, भय, १६. वातावरण, १७. शोभा, १८. उपवन, १९. यौवन, २०. प्रातः समीर, २१. मुखपट, २२. लाला और गुलाब, २३. घाटी।

ताइर[२४] भी यहां पैदा हैं किये, क़ुदरत[२५] ने अजब[२६] गुलरंग-ओ-हसी[२७]
गर[२८] ज़मज़मे[२९] इनके ऋषी सुन लें, याद आये उन्हें फ़िरदौसे-बरीं[३०]
इन्दर के अखाड़े की परियां, गाती हैं जो दिलकश[३१] रागनियां
यह लोच[३२] सुरों में उनके कहां, यह सोज़[३३] गलों में उनके कहां

सूरज की चमकती हुई किरनें, हैं छेड़ती ठंडी हवाओं को
भर देती हैं नूर-ओ-हरारत[३४] से बाग़ों को और उनकी फ़ज़ाओं[३५] को
सोती हुई सोतें[३६] चश्मों की, उठती हैं सब आंखें मल मल कर
धारें हैं जो बर्फ़ के पानी की आती हैं पहाड़ों से चलकर

अय आर्यो, आओ क़दम[३७] रखो, इन हुस्न[३८] भरे गुलज़ारों[३९] में
जन्नत[४०] के मज़े[४१] लूटोगे सदा इस पाक[४२] ज़मी[४३] की बहारों में
तुम गंग-ओ-जमन[४४] के किनारों पर शहर अपने नये आबाद[४५] करो
गा गा के भजन, कर करके हवन, हो जाओ मगन दिल शाद[४६] करो

हिमाला

डाक्टर मुहम्मद इक़बाल

अय हिमाला ! अय फ़सीले-किशवरे-हिन्दोस्तां[१]
चूमता है तेरी पेशानी[२] को झुककर आसमां[३]
तुझमें कुछ पैदा नहीं देरीना रोज़ी[४] के निशां[५]
तू जवां है गर्दिशे-शाम-ओ-सहर[६] के दरमियां[७]

एक जल्वा[८] था कलीमे-तूरे[९]-सीना के लिए
तू तजल्ली[१०] है सरापा[११] चश्मे-बीना[१२] के लिए

२४. पक्षी २५. प्रकृति, २६. विचित्र, २७. लाल और सुन्दर, २८ यदि, २९. गीत, ३०. स्वर्ग, ३१. मोहक, ३२. लचीलापन, ३३. तपन, ३४. प्रकाश और गर्मी, ३५ वातावरण, ३६. स्रोत, ३७. चरण, ३८. सौन्दर्य, ३९. उपवन, ४०. स्वर्ग, ४१. आनन्द, ४२. पवित्र, ४३. धरती, ४४ गंगा और यमुना, ४५. बसाओ, ४६. प्रसन्न।

हिमाला

१. भारत देश का प्राचीर, २. ललाट, ३. आकाश, ४. बुढ़ापा, ५. चिह्न, ६. सुबह-शाम का चक्र, ७. बीच, ८. शुभ दर्शन, ९. हज़रत मूसा, १०. प्रकाश, ११. सर से पैर तक, १२. दृष्टि वाले।

इम्तिहाने-दीद:-ए-ज़ाहिर[13] में कोहिस्तां[14] है तू
पासबां[15] अपना है तू, दीवारे-हिन्दोस्तां[16] है तू
मतल:-ए-अव्वल[17] फ़लक[18] जिसका हो वो दीवां[19] है तू
सू-ए-ख़लवतगाहे-दिल[20] दामन[21] कशे इन्सां[22] है तू

बर्फ़ ने बांधी है दस्तारे-फ़ज़ीलत[23] तेरे सर
ख़न्दाज़न[24] है जो कुलाहे-महरे-आलमताब[25] पर

तेरी उम्रे-रफ़्ता[26] की इक आन है अहदे-कुहन[27]
वादियों में हैं तिरी काली घटाएं ख़ेमाज़न[28]
चोटियां तेरी सुरैया[29] से है सरगर्मे-सुख़न[30]
तू ज़मीं पर[31] और पहना-ए-फ़लक[32] तेरा वतन

चश्म:-ए-दामन[33] तिरा आईन:-ए-सैयाल[34] है
दामने-मौजे-हवा[35] जिसके लिए रूमाल है

अब्र[36] के हाथों में रहवारे-हवा[37] के वास्ते
ताज़ियाना[38] दे दिया बर्क़े-सरे-कुहसार[39] ने
अय हिमाला कोई बाज़ीगाह[40] है तू भी, जिसे
दस्ते-कुदरत[41] ने बनाया है अनासिर[42] के लिए

हाय क्या फ़र्ते-तरब[43] में झूमता जाता है अब्र[44]
फ़ीले-बेज़ंजीर[45] की सूरत[46] उड़ा जाता है अब्र

जुम्बिशे-मौजे-नसीमे-सुब्ह[47] गहवारा[48] बनी
झूमती है नश:-ए-हस्ती[49] से हर गुल[50] की कली

१३. प्रत्यक्ष, १४ पर्वत, १५ प्रहरी, १६ भारत की दीवार, १७ पहला मतला (गजल का पहला शेर), १८. आकाश, १९. दीवान, २० दिल के एकांत गृह की ओर, २१. फैला हुआ दामन, २२ मानव, २३. विद्वत्ता की पगड़ी, २४. मुस्कुराता हुआ, २५. प्रकाशमान सूर्य की कुलाह, २६. अतीत, २७. प्राचीन काल, २८. तम्बू ताने हुए, डेरा डाले हुए, २९. कृत्तिका नक्षत्र, ३०. वार्तालाप मे व्यस्त, ३१. धरती, ३२. आकाश का विस्तार, ३३. दामन में बहने वाला स्रोत, ३४. बहता हुआ दर्पण, ३५ हवा की मौज का दामन, ३६. बादल, ३७. हवा का घोड़ा, ३८. कोड़ा, ३९ पर्वत र की बिजली, ४०. खेल का मैदान, ४१. प्रकृति के हाथ, ४२. तत्त्व, ४३. आनन्द की अधिकता, ४४. बादल, ४५. बिना बंधा हाथी. ४६. तरह रूप में, ४७. प्रातः समीर, ४८. पालना, ४९. अस्तित्व का नशा, ५०. फूल ।

यूं ज़बाने-बर्ग[५१] से गोया[५२] हैं इसकी ख़ामुशी[५३]
दस्ते-गुलचीं[५४] की झटक मैंने नहीं देखी कभी

कह रही है मेरी ख़ामोशी[५५] ही अफ़साना[५६] मिरा
कुंजे-ख़िलवत ख़ान:-ए-क़ुदरत[५७] है काशाना[५८] मिरा

आती है नद्दी फ़राज़े-कोह[५९] से गाती हुई
कौसर-ओ-तसनीम[६०] की मौजों को शर्माती हुई
आईना सा शाहिदे-क़ुदरत[६१] को दिखलाती हुई
संगे-रह[६२] से गाह[६३] बचती, गाह टकराती हुई

छेड़ती जा इस इराक़े-दिलनशीं[६४] के साज़[६५] को
अय मुसाफ़िर! दिल समझता है तिरी आवाज़ को

लैलि-ए-शब[६६] खोलती है आके जब ज़ुल्फ़े-रसा[६७]
दामने-दिल[६८] खींचती है आबशारों[६९] की सदा[७०]
वो ख़मोशी[७१] शाम की जिस पर तकल्लुम[७२] हो फ़िदा[७३]
वो दरख़्तों[७४] पर तफ़क्कुर[७५] का समां[७६] छाया हुआ

कांपता फिरता है क्या रंगे-शफ़क़[७७] कुहसार[७८] पर
ख़ुशनुमा[७९] लगता है यह ग़ाज़ा[८०] तेरे रुख़सार[८१] पर

अय हिमाला! दास्तां[८२] उस वक़्त की कोई सुना
मस्कने-आबा-ए-इन्सां[८३] जब बना दामन तिरा
कुछ बता उस सीधी सादी जिन्दगी का माजरा[८४]
दाग़[८५] जिस पर ग़ाज़:-ए-रंगे-तकल्लुफ़[८६] का न था

हां दिखा दे अय तसव्वुर[८७] फिर वो सुब्ह-ओ-शाम[८८] तू
दौड़ पीछे की तरफ़ अय गर्दिशे-अय्याम[८९] तू

५१. पत्ते की ज़बान, ५२. बातचीत करना, ५३. मौन, ५४. फूल तोड़ने वाले का हाथ, ५५. चुप्पी, ५६. कहानी, ५७. प्रकृति के एकान्त का कुंज, ५८. घर, ५९. पहाड़ की ऊँचाई, ६०. स्वर्ग की नहरें, ६१. प्रकृति की प्रेमिका, ६२. मार्ग के पत्थर, ६३. कभी, ६४. दिल मोह लेने वाले राग का साज, ६५. वाद्य, ६६. रात की दुल्हन, ६७. लम्बी लटें, ६८. दिल का दामन, ६९. जल-प्रपात ७०. आवाज, ७१. मौन, सन्नाटा, ७२. वार्तालाप, ७३. न्योछावर, ७४. वृक्ष, ७५. चिन्ता, ७६. वातावरण, ७७. अरुणिमा का रंग, ७८. पहाड़, ७९. सुन्दर, ८०. पाउडर, ८१. कपोल, ८२. कहानी, ८३. इन्सान के पूर्वजों का घर, ८४. हाल, ८५. धब्बा, ८६. औपचारिकता का रंग, ८७. कल्पना, ८८. प्रात: काल और संध्या, ८९. समय का चक्र।

हिमाला

बिशेश्वर प्रसाद 'मुनव्वर' लखनवी

मायः-ए-नाज़[1]-ओ-सरअफ़राज़[2] हिमाला पर्वत
सब पहाड़ों से है मुम्ताज़[3] हिमाला पर्वत

हामिले-ऐश[4] हैं क़ुदरत[5] के मज़ाहिर[6] इस को
क्यों ज़माना[7] न कहे काने-जवाहर[8] इस को

कभी धुंदला नहीं होता रुख़े-रौशन[9] इसका
बर्फ़ गिरने पे भी बेदाग़[10] है दामन[11] इसका

बर्फ़ गिरना है अगर ऐब[12] तो परवा क्या है
बर्फ़ गिरने से हिमाला का बिगड़ता क्या है

दिलफ़रेबी[13] में कभी फ़र्क़[14] नहीं आ सकता
ऐब[15] इक लाख मुहासिन[16] पे नहीं छा सकता

नक़्स[17] कम कसरते-ख़ूबी[18] में नज़र आता है
चाँद रौशन हो तो फिर दाग़ भी छुप जाता है

बूटियां इसकी ज़ियाबख़्शे-नज़र[19] हैं कैसी
जल्वा[20] गुस्तर[21] सिफ़ते-मिहर-ओ-क़मर[22] हैं कैसी

दूर इन से जो न हो जाये वो ज़ुलमत[23] ही नहीं
इन चिराग़ों के लिए तेल की हाजत[24] ही नहीं

१. गर्व करने योग्य, २. उन्नत सर, ३. प्रधान, प्रमुख, ४. ऐश्वर्यवाहक, ५. प्रकृति, ६. दृश्य, ७. संसार, ८. जवाहरों की खान, ९. प्रकाशमान चेहरा, १०. स्वच्छ, ११. आंचल, १२. दोष, १३. आकर्षण, १४. अन्तर, १५. दोष, १६. गुण, १७. दोष, १८. गुणों की अधिकता, १९. नज़र को ज्योति प्रदान करनेवाले, २०. दर्शन, २१. फैलानेवाला, २२. चांद-सूरज के गुण, २३. अंधकार, २४. आवश्यकता।

रौशनी[२५] इनकी छिटकती है जहां रात के वक़्त
इक अजब लुत्फ़[२६] का होता है समां[२७] रात के वक़्त

बर्फ़ जमने से चटानों के हैं आमार[२८] जहां
इक क़दम रास्ता चलना भी है दुश्वार[२९] जहां

एड़ियां बस्त:-ए-आज़ार[३०] हुई जाती हैं
उंगलियां टीस से बेकार हुई जाती हैं

किन्नरों[३१] की वो हसीनाने-सरापा एजाज[३२]
जिन का हिस्सा है अदा[३३], ख़त्म है जिन पर अन्दाज़[३४]

उड़के इस सिम्त[३५] जो बादल कहीं आ जाते हैं
सामने हर दहने-ग़ार[३६] के छा जाते हैं

किन्नरों की सितम-ईजाद[३७] हसीनों[३८] के लिए
नाज़नीनों[३९] के लिए माहजबीनों[४०] के लिए

पांव की कुछ न ख़बर, होश न सर का जिनको
चैन से बैठने देता नहीं ग़मज़ा[४१] जिनको

सादगी जिनकी तबीअत में है नादानी[४२] है
जिनके सरके हुए आंचल से पशेमानी[४३] है

यही बादल हैं जो करते हैं निगहबानि-ए-हुस्न[४४]
वरना मुमकिन ही नहीं पर्द:-ए-उरियानि-ए-हुस्न[४५]

इक अजब कैफ़[४६] का आलम[४७] है फ़ज़ा[४८] में जिसकी
नाज़नीनों[४९] की है रफ़्तार[५०] हवा में जिसकी

२५. प्रकाश, २६. आनन्द, २७. वातावरण, २८. लक्षण, २९. कठिन, ३०. कष्टग्रस्त, ३१. एक जाति, ३२. साक्षात विनम्रता—सुन्दरियाँ, ३३. हावभाव, ३४. नखरे, ३५. ओर, ३६. गुफा का द्वार, ३७. ज़ुल्म ढानेवाली, ३८. सुन्दरियाँ, ३९. कोमलांगिनी, ४०. चन्द्रमुखी, ४१. कटाक्ष, ४२. बेसमझी, ४३. शर्मिन्दगी, ४४. सौंदर्य की देखभाल, ४५. सौदर्य की नम्रता का पर्दा, ४६. नशा, मस्ती, ४७. दशा, ४८. वातावरण, ४९. कोमलांगिनी, ५०. गति।

उफ वो अन्दाजे-निगारी[51] का मजा दे जाना
झाग गंगा की तरंगो का उडा ले जाना

इसकी हर जुम्बिशे-मस्ताना[52] गजब ढाती है
देवदार ऐसे दरख्तो[53] को हिला जाती है

इसके झोके जिगर-ओ-दिल[54] मे उतर जाते है
पर थिरकते हुए मोरो के बिखर जाते है

आबे-शफ्फाफ[55] मे लबरेज[56] है झीले इसकी
क्या रवानी[57] मे जुनखेज[58] है झीलें इसकी

ढेर है हल्का-ए-सदरंग[59] मे छूटे हुए फूल
मस्तऋषियो के यदे-पाक[60] मे टूटे हुए फूल

रंग उठती हुई किरनो मे जो मिल जाते है
और ढलते हुए सूरज से यह खिल जाते है

इन पे शीराजः-ए-अनवार[61] बिखर जाता है
और भी रंग दमे-शाम[62] निखर जाता है

रोजे-अव्वल[63] मे है बेदार[64] मुकद्दर[65] इसका
सब मे ऊँचा है पहाडो मे बस इक सर इसका

५१ माशूको का अन्दाज, ५२ मस्त कम्पन, ५३ वृक्ष ५४ दिल और जिगर, ५५ स्वच्छ पानी, ५६ परिपूर्ण, ५७ प्रवाह, ५८ उन्मादप्रद, ५९ सैकडो रंग के हल्के, ६० पवित्र हाथ, ६१. प्रकाश का शीराजा, ६२. सध्याकाल, ६३ प्रथम दिन, आदिकाल, ६४ जाग्रत, ६५ भाग्य ।

कोहे-मसूरी[1]

'साग़र' निज़ामी

इस मंजरे-रंगीं[2] के आगे अब हर दिलचस्पी[3] खोटी है
इशरत[4] में है हर उज्वे-तन[5], फ़र्हत[6] में बोटी बोटी है
जिन चन्द बलन्द[7] चटानों पर बिजली रातों को लोटी है
वो सब पावोसे-शाइर[8] हैं, दुनिया नजरों में छोटी है
मैं उस चोटी पर बैठा हूँ जो सबसे ऊँची चोटी है

बस्ती कुछ धुंदली धुंदली है, आलम[9] कुछ मैला मैला है
दुनिया पे कुहरा तारी[10] है हर सिम्त[11] धुआं सा फैला है
शादाब[12] दरख़्तों[13] की शाख़ें[14] झुककर सिजदे में गिरती हैं
आज़ाद बलन्द[15] फ़ज़ाओं[16] में कुछ चिडियां उड़ती फिरती हैं
मैं उस चोटी पर बैठा हूँ जो सबसे ऊँची चोटी है

कुछ नाहमवार[17] चटाने हैं उन पर संगी[18] काशाने[19] हैं
आबादी में हर जा[20] रौशन बिजली से ख़लवतख़ाने[21] हैं
टेढ़ी सीधी ऊँची नीची सड़के कोसों फैला दी हैं
कुहसार[22] में भी इंसानों ने क्या जिन्दगियां[23] दौड़ा दी हैं
मैं उस चोटी पर बैठा हूँ जो सबसे ऊँची चोटी है

आँखों में किरनें भरने को कुछ काफ़िर[24] सुबहें[25] फिरती है
कुहरे की रिदा[26] में छुप छुपकर जन्नत[27] की हूरें[28] फिरती है
कुछ रंग हवायें लाती हैं उन पुतलों[29] में भर देने को

१. मसूरी पर्वत, २. सुन्दर दृश्य, ३. मनोरंजन, ४. आराम, ५. शरीर का अंग, ६. आनन्द, ७. ऊँची, ८. शाइर के पाँव चूमना, ९. संसार, १०. छाया हुआ, ११. दिशा, १२ हरे-भरे, १३. वृक्ष, १४. डालियाँ, १५. ऊँची, १६. शून्य, १७. ऊँची-नीची, १८. पत्थर के, १९. घर, २०. हर जगह, २१. शयनागार, २२. पर्वतीय देश, २३. जीवन, २४. ईमान डुला देनेवाली, २५. प्रभात, २६. चादर, २७. स्वर्ग, २८. अप्सरा, २९. मूर्तियाँ।

गुलज़ार[30] उभरकर निकले हैं अंगडाई फ़ज़ा में लेने को
मैं उस चोटी पर बैठा हूँ जो सबसे ऊँची चोटी है

बादल के साये वादी[31] की गोदी में मचले फिरते हैं
मैं पर्दों में छुप जाता हूँ अकसर[32] जब बादल घिरते हैं
हर अब्र[33] की आग़ोशे-तर[34] में इक मौजे-तबस्सुम[35] पाता हूँ
मब जिसको बिजली कहते हैं, मैं हंस हंस कर कुछ गाता हूँ
मैं उस चोटी पर बैठा हूँ जो सबसे ऊँची चोटी है

गंगा के चराग़

आनन्द नारायण मुल्ला

आबे[1]-गंगा क्या ही मस्ताना तिरा अन्दाज़[2] है
झूमकर चलने पे तेरे मुझ को क्या क्या नाज[3] है
क्या मिरे जज़्बात[4] की दुनिया का तू हमराज़[5] है
तेरी लहरों में मिरी तख़ईल[6] की परवाज़[7] है

अपनी मौजों का तलातुम[8] आ मिरे सीने में देख
अक्स[9] अपनी बेकली[10] का दिल के आईने में देख

आज तक आँखों में है तेरा समां[11] अय हरदुवार
वो हुजूमे-महवशा[12], महवे-तमाशा[13] बरकनार[14]
वो सफा-ए-आबे-अखज़र[15] में चरागों[16] की बहार
देखकर जिनको यही कहता था दिल बेइख़्तियार[17]

३०. उपवन, ३१. घाटी, ३२. अधिकाश, ३३. बादल, ३४. आर्द्र गोद, ३५. मुस्कान की लहर।

गंगा के चराग़

१. गंगा का पानी, २. ढग, चाल, ३. गर्व, ४. भावनाएँ, ५. मित्र, भेद जाननेवाला, ६. कल्पना, ७. उड़ान, ८. जोश, ९. प्रतिबिम्ब, १०. व्याकुलता, ११. दृश्य, वातावरण, १२. चन्द्रमुखियो का जमघट, १३. तमाशे में लीन, १४. किनारे पर, १५. हरे पानी की निर्मलता, १६. दिया, १७. अचानक, सहसा।

ता ब सतहे-स्राब[१८] हर गौहर[१९] उभर स्राया है क्या
स्रासमा[२०] लेकर सितारो को उतर स्राया है क्या

क्या शुस्रा-ए-मिहर[२१] के जर्रे[२२] परेशा[२३] हो गये
फैज[२४] से खुर्शीद[२५] के ये खुद दरख्शा[२६] हो गये
तेरे स्राबे-पाक[२७] के जौहर नुमाया[२८] हो गये
क्या किसी के दागे-इसिया[२९] नूरे-ईमाँ[३०] हो गये

रक्स[३१] करने के लिए जुगनू निकल स्राये है क्या
फूल जन्नत[३२] के फलक[३३] वालो ने बरसाये है क्या

ये मुसाफिर कौन है कैसा हैं इनका कारवा
क्या इसी का स्रक्स[३४] है कहते है जिसको कहकशा[३५]
किस कदर[३६] प्यारी है इनकी छोटी छोटी किश्तिया[३७]
ये कहा से स्राये है बहरे-तमाशा-ए-जहा[३८]

स्रहले-दुनिया[३९] को तिरी स्रजमत[४०] दिखाने के लिए
स्वर्ग से उतरी है क्या परिया नहाने के लिए

घूरने वालो की नजरो से यह घबराती नही
पैकरे-नूरी[४१] की उरियानी[४२] मे शर्माती नही
हा, यकी[४३] इन्सान[४४] की बातो का यह लाती नही
मौजे-दरिया[४५] छोंडकर साहिल[४६] तलक स्राती नही

हुस्न[४७] दिखलाती तो है लेकिन कुछ इस स्रन्दाज[४८] से
स्रपना जलवा[४९] खुद छुपा लेती है स्रपने नाज[५०] से

१८ पानी की सतह के ऊपर, १९ मोती, २० स्राकाश, २१ सूर्य की किरणे, २२ कण, २३ बिखर गये, २४ दया, २५ सूर्य, २६ प्रकाशमान, २७ पवित्र पानी, २८ प्रकट, २९ गुनाहो के दाग, ३० ईमान का प्रकाश, ३१ नृत्य ३२ स्वर्ग, ३३ स्राकाश, ३४ प्रतिबिम्ब, ३५ स्राकाश गगा, ३६ कितनी, ३७ नावे, ३८ ससार के तमाशे के लिए, ३९ दुनिया के लोग, ४०. महानता, ४१ नूरी का स्राकार, ४२ नग्नता, ४३ विश्वास, ४४ मानव, ४५. नदी की लहर, ४६ किनारा, ४७ सौंदर्य, ४८ ढग, ४९ दर्शन, ५०. नखरे, स्रदा, ।

अय चरागे-आबे-गगा[५१] तुझ मे कैसा नूर[५२] है
तू किसी आशिक[५३] का दिल है या जबीने-नूर[५४] है
इक झलक दिखला के तू मौजो मे फिर मस्तूर[५५] है
हुस्न[५६] का चश्मे-तमन्ना[५७] से यही दस्तूर[५८] है

तेरा जलवा[५९] क्या किसी मज्लूम[६०] की तकदीर[६१] है
एक हस्ती के उमीद-ओ-बीम[६२] की तस्वीर है

क्या तिरी तकदीर मे इनसा की रजूरी[६३] भी है
क्या तिरे दिल की तमन्नाओ[६४] की मजबूरी भी है
सीन-ए-नूरी[६५] मे तेरे जौके-महजूरी[६६] भी है
क्या तिरे जामे-गिली[६७] मे आबे-अगूरी[६८] भी है

किसकी उम्मीदो की गुलकारी[६९] तिरे दामन मे है ?
आर्ज्[७०] किसकी फरोजा[७१] तेरे पैराहन[७२] मे है ?

तू किसी के सोजे-दिल[७३] का शोल-ए-मस्तूर[७४] है
तू किसी के दीद-ए-गिर्या[७५] का सारा नूर[७६] है
तुझ मे सारी इल्तिजा-ए-खातिरे-मजबूर[७७] है
तू किसी बेकस[७८] की नजरो मे चरागे-तूर[७९] है

इक खुलूसे-दिल[८०] की तुझमे इन्तिहाई[८१] शान[८२] है
जल्व-ए-खुर्शीद[८३] तेरे नूर[८४] पर कुर्बान[८५] है

५१ गगा के पानी के दिये, ५२ प्रकाश, ५३ प्रेमी, ५४ प्रकाश का ललाट, ५५ गुप्त, ५६ सौदर्य, ५७ अभिलाषा की आँख, ५८ नियम, ५९ दर्शन, ६० पीडित, ६१ भाग्य, ६२ आशा और भय, ६३ अप्रसन्नता, ६४ आकाक्षा, ६५ तूती का सीना, ६६ विरह की अभिलाषा, ६७. मिट्टी का प्याला, ६८ अगूर का पानी, शराब, ६९ चित्रण, ७० अभिलाषा, ७१ प्रकाशमान, ७२ वस्त्र, ७३ दिल की जलन, ७४ छुपी हुई ज्वाला, ७५ अश्रुभरी आँख, ७६ प्रकाश, ७७ मजबूर के दिल की प्रार्थना, ७८ दुर्बल, ७९ तूर पवत का चराग, ८० दिल की निष्ठा, ८१ असीम, ८२ वैभव, ८३. सूर्य का दर्शन, ८४. प्रकाश, ८५ न्योछावर।

गंगा-स्नान

साक़िब कानपुरी

अय बहारे-गंग,[१] अय सरमाया:-ए-पाकीज़गी[२]
तेरी हस्ती[३] तश्नाकामों[४] के लिए मैख़ाना[५] है
दर्सग्रामोज़े-फ़ना[६] है क़तरा क़तरा[७] श्राब[८] का
या हुबावों[९] की ज़बां[१०] पर नार:-ए-मस्ताना[११] है

क्यों न हो ज़ौक़े-रवानी[१२] में तलाशे-हक़[१३] हमें
श्राब[१४] की चादर में हो जाते हैं पोशीदा[१५] गुनाह
नूर[१६] का पैकर[१७] बना देंगी लकीरें मौज की
दाग़े-ज़ुलमत[१८] को मिटा देंगी यह श्राबी जल्वागाह[१९]

ग़ैर मुमकिन[२०] है कि दिल में रौशनी पैदा न हो
बुलबुले पानी के हैं श्रज़हान[२१] में वहदत[२२] की शम्श्र[२३]
साधुश्रों के वास्ते उपदेश है मौजों का राग
हाथ में लेकर खड़े हैं देवता जन्नत[२४] की शम्श्र

तेरी मोजे-मुज़तरिब[२५] है श्रौर दिल पुरजोश[२६] है
यानी बेतावी[२७] में इसका मुद्दश्रा[२८] मिल जायेगा
हलक़:-ए-गिर्दाब[२९] में नक़्शे-हक़ीक़त[३०] देख कर
ग़ुंच:-ए-गुल[३१] की तरह दिल का कंवल खिल जायेगा

१. गंगा की शोभा, २. पवित्रता की दौलत, ३. अस्तित्व, ४. प्यासा, ५. मदिरालय, ६. विनाश का पाठ सिखानेवाला, ७. बूंद, ८. पानी, ९. बुलबुला, १०. वाणी, ज़बान, ११. मस्ती का नारा, १२. प्रवाह की अभिलाषा, १३. सत्य की खोज, १४. पानी, १५. छिपा हुआ, १६. प्रकाश, १७. आकृति, १८. अन्धकार के दाग़, १९. प्रदर्शन की जगह, २०. असम्भव, २१. मस्तिष्क, (ब० व०), २२. अद्वैत, २३. चराग़, दिया, २४. स्वर्ग, २५. व्याकुल मौज, २६. जोश से भरा हुआ, २७. बेचैनी, २८. उद्देश्य, २९. भँवर का चक्र, ३०. सत्य के चिह्न, ३१. फूल की कली।

बिन्ते-हिमाला[1]

परवेज़ शाहिदी

आह गंगा ! यह हसीं[2] पैकरे[3]-बिल्लूर[4] तिरा
तेरी हर मौजे-रवां[5] जलवः-ए-मग़रूर[6] तिरा
जौरे-मग़रिब[7] से, मगर दिल है बहुत चूर तिरा
झाँकता है तिरे गिर्दाब[8] से नासूर[9] तिरा

जुल्म[10] ढाये है सफ़ीनों[11] ने सितमगारों[12] के
जख़्म[13] अब तक तिरे सीने पे है पतवारों के

आह अय कोहे-हिमाला[14] के गुरूरे-सैयाल[15]
तेरी मौजों में जमाल[16] और तिरे तूफ़ां मे जलाल[17]
तेरे दामन पे कभी बैठी न थी गर्दे-मलाल[18]
मुँह तिरा पोंछता था चाँद का सीमीं[19] रूमाल

जख़्म सीने पे लिये आज है धारे तेरे
उफ़ कहाँ डूब गए चाँद सितारे तेरे

रेगे-दोज़ख़[20] को छुपाये है क़बा[21] के अन्दर
हौलनाक[22] आज है कितना यह दहकता मंज़र[23]
शाम ही शाम नज़र आती है क्यों साहिल[24] पर
क्यों तिरी मौजों से छनते नही अनवारे-सहर[25]

१. हिमालय की बेटी, २. सुन्दर, ३. आकार, ४. स्फटिक, ५. प्रवाहित मौज, ६. घमण्डी दर्शन, ७. पश्चिम का अत्याचार, ८. भँवर, ९. रिसता हुआ घाव, १०. अत्याचार, ११. नाव, १२. ज़ालिम, १३. घाव, १४. हिमालय पर्वत, १५. बहता हुआ घमण्ड, १६. सौंदर्य, १७. प्रताप, १८. दुख की धूल, १९. रुपहली, चाँदी का, २०. नरक की रेत, २१. लबादा २२. भयानक, २३. दृश्य, २४. किनारा, २५. प्रातःकाल का प्रकाश।

रौशनी[२६] क्यों हुई जाती है गुरेज़ां[२७] तुझ से
क्यों अँधेरों के है लिपटे हुए तूफ़ां तुझ से

लेकिन अय बिन्ते-हिमाला[२८] ! तिरी अज़मत[२९] की क़सम
सैल[३०] के साँचे मे ढाली हुई रिफ़अत[३१] की क़सम
तेरे जलवो[३२] की क़सम, तेरी लताफ़त[३३] की कसम
तेरी मौजों से उभरती हुई हिम्मत[३४] की क़सम

अब तिरी आँखों को नमनाक[३५] न होने देंगे
दामने-नाज़[३६] तिरा चाक[३७] न होने देंगे

गंगा के तीन रूप

'नज़ीर' बनारसी

वो सूर्य डूबा, वो दिन ने झुककर बढ़ा दिया रौशनी[1] का डेरा
वो रखके कांधे पे काली कमली हर इक तरफ़ मे उठा अँधेरा
उदासियाँ बढके चार जानिब[2] लगाये जाती है अपना फेरा
लुटेगा अब साझ का भी जेवर[3] है घात मे रात का लुटेरा
समय ने करवट बदल बदल के जो सूनी कर दी है सारी राहे
तो सांस ले ले के लम्बी-लम्बी हवाएं भरने लगी है आहे[4]

किये है ये दीप दान[5] किसने ठहर ठहर कर मचल रहे है
हैं रोशनी के जिगर के टुकड़े हवा से तेवर[6] बदल रहे है

२६. प्रकाश, २७. विरक्त, २८. हिमालय की बेटी, २९. महानता, ३० प्रवाह, ३१. ऊंचाई, ३२. दर्शन, ३३ कोमलता, ३४ साहस, ३५. अश्रुयुक्त, गीली, ३६ गर्व का दामन, ३७. विदीर्ण, फटना।

गंगा के तीन रूप

१. प्रकाश, २. चारो ओर, ३. गहना, आभूषण, ४. श्वास, आर्तनाद, ५. दिये जलाकर गगा में बहा दिये जाते हैं। हिन्दू अक़ीदे के अनुसार बुजुर्गों की रूहों को रौशनी मिलती है। मन्नत मानने के बाद मुराद पूरी होने पर भी दिये जलाकर बहा दिये जाते हैं। दीपदान के बाद लोग इन दियों को मुड़-मुड़कर देखते हैं और जैसे-जैसे उनकी लवें थरथराती हैं उनके माथे पर लकीरें बनती-बिगड़ती नज़र आती हैं, ६. भृकुटी।

नहीं नहीं नहीं ये दिये नहीं है जो बहते पानी पे चल रहे है
गगन से तारे उतर उतर कर लहर लहर पर टहल रहे हैं
दिये की लौ सहमी जा रही है, हवा का झोंका लपक रहा है
हर इक दिये में है दिल किसी का ठहर ठहर कर धड़क रहा हैं

वो चमचमाते कलश का आलम[7] वो सर उठाये-उठाये मन्दिर
वो इतने ऊँचे कि जिन पे अपनी नज़र उठाते हुए उठे सर
है कान में कुछ मधुर सदायें[8] नजर में शयन आरती[9] का मन्जर[10]
पवित्रता की वो मौज जिससे अंधेरा दिल हो उठे उजागर[11]

इधर दबे पाव नीद आई, गई वो गंगा की बेक़रारी[12]
किवाड़ मन्दिर के बन्द करके अभी-अभी सो गया पुजारी

बुझी-बुझी-सी दिखाई देने लगी है जलती हुई चितायें
दबी-दबी-सी है अग्नि ज्वाला, है सर्द[13]-सी मौत की सभायें
फजाओं[14] से टूटकर गगन से ये गिरती-पड़ती है तारिकायें
कि साधनालोक[15] तोड़ने को उतरती आती है अपसरायें

वो काला-काला-सा नाग जैसा हर इक तरफ झूमता अंधेरा
समय की वो सांय-सांय जैसे बजाये तुमड़ी कोई सपेरा

है रात अब कूच करनेवाली सब अपने खेमे[16] बढ़ा रहे है
वो जिनके दम से थी जगमगाहट उन्हीं के दम टूटे जा रहे हैं
निशा की शोभा बढ़ानेवाले सभाएं अपनी बढ़ा रहे है
बहुत-से डूबे बहुत-से टूटे बचे खुचे झिलमिला रहे हैं

७ दशा, समा, ८. आवाजें, ९ रात की आखिरी आरती जिसके बाद मन्दिरों के दरवाजे बन्द हो जाते है और गगा के सोने का वक्त हो जाता है। सुबह के तीन बजे तक गगा सोती रहती है, इस दौरान इसीलिए कोई नयी चिता नही जलाई जाती। जो चितायें जल चुकती है वही जलती रहती है, १० दृश्य, ११ प्रकट, जाहिर, १२. व्याकुलता, १३. ठण्डी, १४. शून्य, १५ ऋषि विश्वामित्र की साधना मेनका नामी एक अप्सरा (शकुन्तला की माँ) ने तोड़ी थी। लेकिन यहाँ शायर हर इक तारिका को अप्सरा मानता है जो तमाम कायनात की साधना मे बाधा डालने को पानी की सतह पर उतर आती है, १६. तम्बू, डेरे,।

यह कौन पर्दे में छुपके तारों को मात[१७] पर मात दे रहा है
ये हिचकियाँ रात ले रही है कि साँस परभात ले रहा है

सहर[१८] की आमद[१९] है सर्द[२०] झोके अभी से कुछ गुनगुना रहे हैं
अगर कथा कह रहे हैं तुलसी, कबीर दोहे सुना रहे है
अमर हैं वो सत और साधू जो मरके भी याद आ रहे है
जो काशी नगरी से उठ चुके हैं वो मन की नगरी बसा रहे है

यह घाट तुलसी के नाम से है यहीं वो करते थे जाप देखो
जहाँ पे गंगा वही पे तुलसी पवित्रता का मिलाप देखो

मिला है गंगा का जल जो निर्मल उतर के ऊषा नहा रही है
हवा है या रागिनी है कोई टहल के वीणा बजा रही है
अँधेरे करते हैं साफ़ रस्ता सवारी सूरज की आ रही है
किरन-किरन अब कलस-कलस को सुनहरी माला पिन्हा रही है

हुई है कितनी हसीन[२१] घटना नजर की दुनिया सँवर रही है
किरन चढ़ी थी जो बनके माला वो धूप बनकर उतर रही है

वो कुछ ब्राह्मण है घाट पर जो जमाये बैठे है अपने आसन
थे करते आये हैं जाने कितने युगों से सबके दिलों पे शासन
है तख़्त इक और एक छाता यही है हर एक का सिंघासन
यहीं पे गंगा की मौज करती है बढ़के हर पाप का बिनासन

है सामने शीतला का मन्दिर लगा है नरनारियों का मेला
पुकार कर शंख कह रहे है हुई सिंगार आरती की बेला

कहीं पे गुजरात की हैं परियाँ कहीं पे मरवाड़ की निशानी
वो सिंध का हुस्ने-बेतकल्लुफ़[२२] वो शोख़[२३] पंजाब की जवानी
खुले हुए केश की लटों में महकते बंगाल की कहानी
यह घाट है सामने नज़र के कि देवताओं की राजधानी

१७. पराजय, १८. प्रभात, १९. आगमन, २०. ठण्डे, २१. सुन्दर २२. अनौपचारिक सौंदर्य, वह, सौंदर्य जिसमें दिखावा या बनावट न हो, २३. चंचल ।

न जाने कितनों ने देस छोड़े हैं अपनी मुक्ति की जुस्तुजू[२४] में
यहां पे आये है जान लेकर यहां पे मरने की आर्जू[२५] में

सभी पराई नजर से अपनी नजर बचाकर गुजर रही है
ये देवियाँ है मिरे नगर की जो सीढियों से उतर रही है
घरो की परियाँ बदन समेटे उतर के इस्नान कर रही है
अभी जो इस्नान कर चुकी है किनारे हटकर सवर रही है

ये देखनेवाले की नजर पर यहाँ की मस्ती[२६] यहाँ का यौवन
कि सृष्टि जैसी हो दृष्टि वैसी, खयाल जैसा हो वैसा दर्शन

यहां खडी होके हर इमारत[२७] नसीब[२८] अपना जगा रही है
वो जिसकी हालत बिगड चुकी है वो अपनी बिगडी बना रही है
नये-नये घाट बन रहे है नवीनता मुस्कुरा रही है
हर आर्जू[२९] जैसे रक्स[३०] मे है निगाह मंगल मना रही है

यहा मुहब्बत[३१] की छाँव देखो यहा महब्बत की धूप देखो
यहा का आनन्द लेनेवालो यहा का संपूर्ण रूप देखो

पहन के आबे-रवा[३२] की साडी, रवा है सीमाबवार[३३] गंगा
रवा[३४] है मौजे कि मा के दिल की तरह से है बेकरार[३५] गंगा
वो छूत हो या अछूत, सबका उठा के चलती है भार गंगा
यहा नही ऊच-नीच कोई उतारे है सबको पार गंगा

'नजीर' अन्तर नही किसी मे सब अपनी माता के है दुलारे
यहा कोई अजनबी नही है न इस किनारे न उस किनारे

२४. खोज, २५. आकांक्षा, २६ नशा, २७. भवन, २८ भाग्य, २९ अभिलाषा, ३० नृत्य, ३१. प्रेम, ३२. बहता पानी, ३३. पारे की तरह, ३४. प्रवाहित, ३५ बेचैन।

गंगा

राही मासूम रज़ा

दुल्हन की तरह नर्म रफ़्तार[1] पानी
शुआओं[2] के गजरे
हसीं[3] चांद सूरज की परछाइयों के करनफूल पहने
हुबाबों[4] की पायल
निगाहें[5] झुकाये
तबस्सुम[6] छुपाये
यह गंगा
हिमाला की बेटी
कहीं एक धारा

कहीं एक दरिया
कहीं इक समन्दर

यह आमों के जंगल में
केले के झुंडों मे

बंसवाडियों के जहां मे
यह आठों पहर जागती शाहराहों[7]
मिलों, कोठियों और चालों की रंगीनी-ए-दास्तां[8] और महरूमी-ए-बेज़बां[9]

यह बंगाल सागर की लहरों के साये में इन देवहैकल[10] जहाज़ों को लोरी सुनाती हुई

अपने आबे-रवा[11] का दुपट्टा बिछाये हुए
पूछती है यह सबसे
बताओ कि जमना का आबे-रवा किस तरफ़ है
कि सरजू की वो शोखि-ए-दास्तां[12] किस तरफ़ है
ब्रह्मपुत्र का ते-- पानी यहां परफ़शां[13] किस तरफ़ है

१. मन्द गति, २. किरणें, ३. सुन्दर, ४. बुलबुला, ५. दृष्टि, नजर, ६. मुस्कान, ७. राजमार्ग, ८ दास्तान की सुन्दरता, ९. मौन वचितता, १०. विशाल, ११. प्रवाहित जल, १२. दास्तान की चचलता, १३. बिखरा हुआ ।

यह गंगा नहीं है
यह दरियाओं का इक बड़ा कारवां है
मगर यक ज़बां[14] है

बहुत दूर तक रास्ते मुख़्तलिफ़[15] थे
न अन्दाज़े-रफ़्तार[16] यकसां[17] था इनका
न अन्दाज़े-गुफ़्तार[18] यकसां था इनका
यह सब घूमते-घामते शाहराहे-तमन्ना[19] तलक—
रोदे-गंगा[20] तलक आ गए
और फिर रोदे-गंगा में गुम हो गए
अब न जमना है कोई
न सरजू है कोई
बस इक रोदे-गंगा है हद्दे-नज़र[21] तक

जमुना

'साग़र' निज़ामी

जिसके पा-ए-नाज़[1] मसजूदे-गदा-ओ-शाह[2] थे
जिसके साहिल[3] तीर अन्दाज़ों[4] के जौलांगाह[5] थे
जिसने पांडव को सुनाई थी नवैदे-ज़िन्दगी[6]
जिसकी बेकल[7] मौज भी तसकीन[8] का इक राग थी
साहिलों[9] पर जिसके सहरा-ए-लक-ओ-दक[10] था कभी
जो दरिन्दों[11] और हैवानों[12] का था मलजा[13] कभी

१४. एक ज़बान, १५. विभिन्न, १६. गति, १७. एक जैसी, १८. बातचीत का ढंग, १९. अभिलाषा का राजमार्ग, २०, नदी, २१. जहाँ तक दृष्टि जा सके।

जमुना

१. सौंदर्याभिमान के पाँव २. राजा और रंक के माथा टेकने की जगह, ३. किनारे, ४, तीर चलाने वाला, ५. दौड़ का मैदान, ६. जीवन-संदेश, ७. व्याकुल, ८. तृप्ति, सन्तोष, ९. किनारा, १०. चटियल मैदान, ११. हिंसक पशु, १२. पशु, १३. रक्षास्थान ।

जौक़[१४] ने उलफ़त[१५] के जिसको रश्के-गुलशन[१६] कर दिया
गुल ब-दामन[१७] कर दिया, जन्नत ब-दामन[१८] कर दिया

जिसको पांडों ने संवारा क्या वह दोशीजा[१९] है तू
सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू
जिसके आगे सर्द[२०] था क़ुलजुम[२१], वही दरिया[२२] है तू
जिसके पाकीजा[२३] किनारे मन्दिरों के शहर थे
जिसके क़तरे[२४] एक दिन चश्म-ओ-चिरागे-बहर[२५] थे
जिसकी गोदी में हज़ारों क़िलए थे लाखों चमन
जिसकी मौजों में बहा करती थी दुनिया और धन
जिसके साहिल[२६] पर बहादुर जिन्दगी पाते रहे
अर्जुन-ओ-भीम-ओ-युधिष्ठिर गुर्ज[२७] चमकाते रहे
आसमा जन्नत[२८] के मोती जिसपे बरसाता रहा
आरिया अजमत[२९] का झंडा जिसपे लहराता रहा

जिसको क़ुदरत[३०] ने तराशा[३१] है वही हीरा है तू
सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू
कृष्ण की बंसी का इक बहता हुआ नग्मा[३२] है तू

याद है अब तक तिरा तूफा उठाना याद है
गोरधन को देखकर मौजों पर आना याद है

१४. अभिरुचि, १५. प्रेम. १६ जिस पर उपवन भी ईर्ष्या करे, १७. जिसके दामन पर फूल हों, १८. जिसका किनारा स्वर्ग हो, १९. कुमारी, २०. ठण्डा, २१. अरब और मिस्र के बीच का समुद्र, २२. नदी, २३. पवित्र, २४. बूंदे २५. समुद्र के पुत्र, २६. किनारा, तट, २७. गदा, २८. स्वर्ग, २९. महानता, ३०. प्रकृति, ३१. काटा, ३२. गीत ।

किस क़दर[33] जादू-भरा था शौक़े-पाबोसी[34] तिरा.
तेरी बेताबी[35] पे आखिर कृष्ण को रहम[36] आ गया था
कृष्ण ने अपना क़दम मौजे-रवां[37] पर रख दिया
ताज[38] उलफ़त[39] का वफ़ा[40] के आस्तां[41] पर रख दिया
बोसे[42] देकर कृष्ण के क़दमों[43] को तू बहने लगी
माइले-मकसूद[44]-ओ-महवे-जुस्तजू[45] बहने लगी
जो मधुर मुरली की लै पर उम्र-भर वहती रही
कृष्ण से अफसानः-ए-शाम-ओ-सहर[46] कहती रही
शाम के हल्के धुदलके में ब-अन्दाजे-हिजाब[47]
छेड़ती थी कुंज में राधा मुहब्बत का रबाव[48]
हुस्न[49] का गहवारा[50] थी, दारुलअमाने-इश्क़[51] थी
जिसकी हर मौजे-रवां[52] आरामे-जाने-इश्क़[53] थी

कृष्ण जिसमे तैरते थे क्या वही दरिया[54] है तू
सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू
मुहवते-माजी[55] का इक पुरदर्द[56] अफ़साना[57] है तू
शानागीरी[58] शहजहां को तेरे गेसू[59] से मिली
मरके भी की जज़्बः-ए-मुमताज़[60] ने मश्शातगी[61]

३३. कितना, ३४ पाँव चूमने की इच्छा. ३५ विकलता, ३६. दया, ३७. प्रवाहित लहर, ३८. मुकुट, ३९ प्रेम, ४० प्रेम निर्वाह, ४१. चौखट, ४२. चुम्बन, ४३. चरण, ४४. मंज़िल की तरफ, ४५ खोज मे लीन, ४६. सुबह-शाम की कहानी, ४७. शर्माते हुए, ४८. बीणा, ४९. सौंदर्य, ५०. पालना, ५१ इश्क की पनाहगाह, ५२. प्रवाहित मौज, ५३. प्रेम की जान का मुख, ५४. नदी, ५५. भूतकाल की संगति, ५६. दर्द से भरा हुआ, ५७. कहानी, ५८. कंघी पकड़ना, ५९. बाल, ज़ुल्फें, ६०. मुमताज़ की भावना ६१. बनाव-सिंगार।

एक कोहेनूर दामन[६२] पर तिरे टांका गया
जो तिरी आबी[६३] दुलाई के लिए तारा बना
ताज से रातों की खामोशी[६४] मे क्या कहती है तू
आके इसकी गोद मे आहिस्ता[६५] क्यो बहती है तू
आह वो तेरे जमाने[६६] इक फसाना[६७] हो गए
नाचते थे मोर जिन कुजों मे वो क्या हो गए

यादगारे - हशमते - तारीखे - देरीना[६८] है तू
सच बता अय मेरी जमुना क्या वही जमुना है तू

संगम

हामिदुल्ला अफसर मेरठी

परयाग पे बिछडी हुई बहनें जो मिली है
पानी की जमी[१] पर भी तो कलियां भी खिली है
कुछ गंगा का रुकना
कुछ जमुना का झुकना
फिर दोनों का मिलना
वो फूल मे खिलना
किस शौक[२] से इठलाती हुई साथ चली है
ये इश्क-ओ-महब्बत[३] के नजारे[४] अजली[५] है
कहते है कि जन्नत[६] से भी आई है बहन एक
गो तीनों का है अस्ल[७] में घर एक वतन[८] एक

६२. आंचल, ६३. पानी की, ६४. सन्नाटा, ६५ धीरे, मन्द गति, ६६ दिन, ६७ कहानी, ६८. प्राचीन इतिहास के प्रताप की यादगार।

संगम

१. धरती, २. अभिलाषा, कामना, ३. प्रेम, ४. दृश्य, ५ आदिकाल से, ६. स्वर्ग, ७ वास्तव में, ८. देश।

घर जब मे छुटा था
दिल सर्द[९] हुआ था
वो कोह[१०] से गिरना
वो[११] दश्त में फिरना
रातो को वह सुनसान बयाबान[१२] में चलना
सहमे[१३] हुए तारों का वो सीने मे मचलना

था वो सफर दश्त[१४] मे मैदान मे बन मे
खामोश पहाडो मे गुलिस्तां[१५] मे चमन मे
जंगल मे निकलना
रुकते हुए चलना
कुछ बढ के पलटना
डर डर के सिमटना
मर मर के अकेले यह गुजारा[१६] है जमाना
जैसे कोई दुनिया मे न हो अपना यगाना[१७]

खाली कभी जाती नही बेलफ्ज[१८] सदाएँ[१९]
आखिर को असर कर गई खामोश[२०] दुआएँ[२१]
जागा है मुकद्दर[२२]
परयाग पे आकर
अब गम न सहेगे
तनहा न रहेगे
परयाग पे बहनो को मिलाया है खुदा ने
मुद्दत[२३] मे यह दिन आज दिखाया है खुदा ने

क्या जोशे-मुहब्बत[२४] मे बगलगीर[२५] हुई है
वारफ्तगि-ए-शौक[२६] की तस्वीर[२७] हुई है
अल्ला रे मुहब्बत
सरमाय:-ए - राहत[२८]

९ ठण्डा, १०. पर्वत, ११. जगल. १२ निर्जन स्थान, १३. डरे हुए, १४ जगल, १५ उपवन, १६ व्यतीत, १७ गैर १८ बिना शब्द, १९. आवाजे, २०. मौन, २१ प्रार्थनाएं, २२ भाग्य, २३, लम्बा समय, २४ प्रेम का जोश, २५ आलिंगनबद्ध. २६. अभिलाषा की शर्मिन्दगी, २७ चित्र, २८ सुख की दौलत ।

यह किसको खबर थी
दिल मिलते हैं यूँ भी
होगी न जुदा हश्र[२६], तक अब ऐसे मिली
खुश बहनें है या पानी पे कलियाँ सी खिली

कनारे-रावी

डाक्टर मुहम्मद इक़बाल

सुकूते-शाम[1] में महवे-सरोद[2] है रावी
न पूछ मुझसे जो है कैफियत[3] मिरे दिल की

पयामे[4] सज्दः[5] का यह जीर-ओ-बम[6] हुआ मुझको
जहाँ तमाम[7] सवादे-हरम[8] हुआ मुझको

सरे-कनार-ए-आबे-रवा[9] खडा हूँ मै
खबर नही मुझे लेकिन कहाँ खडा हूँ मैं

शराबे-सुर्ख[10] से रंगी हुआ हे दामने शाम[11]
लिये है पीरे-फलक[12] दस्ते-राशादार[13] मे जाम[14]

अदम[15] को काफिल-ए-रोजगार[16] तेज गाम[17] चला
शफ़क़[18] नहीं है, यह सूरज के फूल है गोया[19]

खड़े है दूर वो अजमत - फिजा-ए-तनहाई[20]
मनारे - ख्वाबगहे[21] शहमवारे - चुगताई[22]

२६. प्रलय।

कनारे-रावी

१. सध्याकाल की निस्तब्धता, २. गीत मे मग्न, ३ दशा, ४ सदेश, ५ नतमस्तक, ६ ऊपर-नीचे, ७ सारा समार, ८. हरम की सीमा, ९ प्रवाहित जल के तट पर, १० लाल मदिरा, ११ सध्याकाल का आंचल, १२. बूढा आकाश, १३ कापते हुए हाथ मे, १४ प्याला, १५. यमलोक, १६ समय का कारवां. १७ तीव्र गति, १८ अरुणिमा, १९. मानो २०. एकान्त की महानता बढाने वाले २१. शयनागार के मीनार, २२. मुगल शहमवार (जहाँगीर के मक़बरे के मीनार)।

फ़सानः-ए-सितमे-इंक़िलाब[२३] है यह महल
कोई ज़माने-सल्फ़[२४] की किताब है यह महल

मक़ाम[२५] क्या है, सरोदे-ख़मोश[२६] है गोया[२७]
शजर ![२८] यह अंजुमने-बेख़रोश[२९] है गोया

रवां[30] है सीनः-ए-दरिया[31] पे इक सफीनः-ए-तेज[32]
हुआ है मौज से मल्लाह जिसका गर्मे-सतेज़[33]

सुबुक रवी[34] में है मिस्ले-निगाह[35] यह किश्ती[36]
निकल के हल्क़ः-ए-हद्दे-नजर[37] से दूर गई

जहाजे-जिन्दगी-ए-आदमी[38] रवा[39] है यूँही
अबद[40] की बहर मे पैदा यूँ ही, निहा[41] है यूँ ही

शिकस्त[42] मे यह कभी आशना[43] नहीं होता
नज़र से छपता है, लेकिन फ़ना[44] नहीं होता

२३. क्रांति और अत्याचार की कहानी, २४. प्राचीनकाल, २५ स्थान, २६. खामोश गीत, २७. अर्थात्, २८. वृक्ष, पेड, २९. खामोश महफिल, ३०. प्रवाहित, ३१. नदी का सीना, ३२. गतिशील नाव, ३३ लड़ने के लिए आमादा, ३४ मद गति, ३५. दृष्टि के समान, ३६. नाव, ३७. दृष्टि की सीमा, ३८. मानव जीवन का जहाज, ३९. प्रवाहित, ४०. अनन्त-काल, ४१. गुप्त, ४२. पराजय, ४३. परिचित, ४४. नष्ट।

अय दरिया-ए-चिनाब

जगन्नाथ 'आज़ाद'

शोरिशे-आलम[1] से घबरा के लेके दिले-बेताब[2]
तेरे किनारे आ बैठा हूँ, अय दरिया-ए-चिनाब[3]

तेरा ज़ाहिर[4] ऐसा ठंडा जैसा बेरी नाग
लेकिन तेरे दिल में निहां[5] है जनम जनम की आग

तू इस खाकी दुनिया[6] में है जन्नत[7] की तस्वीर
मोहनी तेरे दामन में है तेरे किनारे हीर

तेरी लहरों की लै[8] में ख्वाबीदा[9] है फ़रियाद[10]
तेरा आबेरवां[11] है सस्सी पुन्नू की रूदाद[12]

तेरी मौजों का हर कतरा[13] एक धड़कता दिल
और धड़कते दिल को तेरी हर मौजे-रवां[14] साहिल[15]

मैं हूँ जिस दुनिया का बासी वो है दुनिया और
इस दुनिया का और है सौदा तेरा सौदा और

मेरी दुनिया की जुल्मत[16] में नूर[17] हुआ मस्तूर[18]
तेरा तन भी नूर है प्यारे तेरा मन भी नूर

१. संसार का कोलाहल, २. विकल हृदय, ३. चिनाब नदी, ४. प्रत्यक्ष, ५. गुप्त, ६. मिट्टी का संसार, ७. स्वर्ग, ८. सुर-ताल, ९. सुप्त, १०. आर्त्तनाद, ११. प्रवाहित जल, १२. कहानी, १३. बूंद, १४. प्रवाहित मौजें, १५. तट, १६. अंधकार, १७. प्रकाश, १८. विलीन, गुप्त।

दूसरा अध्याय

हमारे क़ुदरती मनाज़िर

(प्राकृतिक दृश्य)

दूसरा भाग

ज़ीहयात मनाज़िर[1]

'जोश' मलीहाबादी

ख़ामुशी[2] दश्त[3] पे जिस वक्त कि छा जाती है
उम्र भर जो न सुनी हो वो सदा[4] आती है

भीनी भीनी सी मचलती है फ़ज़ा[5] में ख़ुशबू[6]
ठंडी ठंडी लबे-साहिल[7] में हवा आती है

दश्त-ख़ामोश[8] की उजड़ी हुई राहों में मुझे
जादा-पैमाओं[9] के कदमों की सदा[10] आती है

पास आकर मिरे गाती है कोई ज़ोहरा-जमाल[11]
और गाती हुई फिर दूर निकल जाती है

मुस्कुराती है जो रह रह के घटा में बिजली
आग सी कोहे-बयाबा[12] पे झपक जाती है

करने लगते हैं नज़र[13] में जो बादल मायूस[14]
बर्क[15] आहिस्ता[16] से कुछ कान में कह जाती है

झाड़ियों को जो हिलाते हैं हवा के झोंके
दिले-शबनम[17] के धड़कन की सदा आती है

मुझसे करते हैं घने बाग के साये बातें
ऐसी बातें कि मिरी जान पे बन जाती है

१ जीवित दृश्य, २ सन्नाटा, ३ जंगल, ४ आवाज, ५, शून्य वातावरण, ६ सुगन्ध, ७ तट, कनारा, ८ सुनसान जंगल ६ पथिक, १० आवाज, ११ सुन्दरी, १२ सुनसान पहाड़, १३ दृश्य, १४ निराश, १५ बिजली, १६. धीरे से, १७. ओस का दिल।

गुनगुनाते हुए मैदान के सन्नाटे[१८] मे
आप ही आप तबीअत मिरी भर जाती है

यूँ नबातात[१९] को छूती हुई आती है हवा
दिल में हर साँस से इक फाँस सी चुभ जाती है

जब हरी दूब के मुड जाते है नाजुक[२०] रेशे
शीशः-ए-कल्ब[२१] मे इक ठेस सी लग जाती है

बाँसुरी जैसे बजाना हो कही दूर कोई
यूँ दबे पाँव बयाबा से हवा आती है

हसरते[२२] खाक[२३] की गुंचो[२४] मे उबल पडती है
रूह[२५] मैदान के फूलो से निकल आती है

तब्अ-शाइर[२६] को, रवानी[२७] का इशारा करके
नहर शाखो के घने साय मे सो जाती है

इन मनाजिर[२८] को मै बेजान[२९] समझ लूँ कैसे
'जोश' ! कुछ अक्ल मे यह बात नही आती है

१८. निस्तब्धता, १९ वनस्पति, २० कोमल, २१ हृदय का शीशा, २२ अपूर्ण अभिलाषाएँ, २३. धूल, २४. कलियाँ, २५. प्राण, आत्मा, २६. शाइर का मिजाज, २७ प्रवाह २८. दृश्य (ब० व०), २९. निर्जीव ।

दो मंज़र[1]

मीर हसन

दरख़्तों[2] की छाँव और वो कुछ धूप
वो धानों की सब्ज़ी[3] वो सरसों का रूप

वो लाले[4] का आलम[5], हज़ारे का रंग
वो आँखों के डोरे नशे की तरंग

गुलाबी से हो जाना दीवार-ओ-दर[6]
दरख़्तों[7] से आना शफ़क़[8] का नज़र

वो चादर का छुटना वो पानी का ज़ोर
हर इक जानवर का दरख़्तों पे शोर[9]

वो सुनसान जंगल वो नूरे-क़मर[10]
वो बुर्राक़[11] सा हर तरफ़ दश्त-ओ-दर[12]

वो उजला सा मैदां, चमकती सी रेत
उगा नूर[13] से चांद तारों का खेत

दरख़्तों के पत्ते चमकते हुए
ख़स-ओ-ख़ार[14] सारे झमकते हुए

दरख़्तों के साये से मह[15] का ज़ुहूर[16]
गिरे जैसे छलनी से छन छन के नूर[17]

१. दृश्य, २. वृक्ष, ३. हरियाली, ४. पोस्ते का फूल, ५. दशा, ६ दीवार और द्वार, ७. वृक्ष, ८. अरुणिमा, ९. कोलाहल, १०. चांद का प्रकाश, ११. शुभ्र, उज्ज्वल, १२. जंगल और द्वार, १३. प्रकाश, १४. घास और कांटे, १५. चन्द्र, १६. प्रकटन, १७. प्रकाश ।

सुब्हे-सहरा[1]

'बेनजीर' शाह

फलक[2] पर उडा वो सुनहरा गुबार[3]
मुनव्वर[4] हुए वादी-ओ-कोहसार[5]

मुतल्ला[6] पहाडो की वो चोटिया
दिखाती है इस वक्त क्या क्या समा[7]

हरे नख्ल[8] उन पर जरअफशा[9] किरन
शुआओ[10] की वो कोपलो पर फबन[11]

वो पानी का झरना, वो चाँदी के तार
वो शीशे की चादर वो साफ आवशार[12]

सरे-शाख[13] फूलो का गहना[14] कही
गले मिलके नहरो का बहना कही

वो निखरा हुआ चेहर-ए-नौनिहाल[15]
वो बिखरे हुए सुम्बुले-तर के बाल[16]

वो गुजान शाखे[17] शजर[18] सायादार
पहाडी के दामन मे वो सब्जाजार[19]

कही ताइराने-सहर[20] नग्माजन[21]
कही चौकडी भर रहे है हिरन

*१ जगल का प्रभात, २ आकाश, ३ धूल, ४ प्रकाशमान, ५ पहाड और घाटिया ६ जिन पर सोने का काम हो, ७ दृश्य, ८ वृक्ष, ९ सोना बिखेरती हुई, १० किरण, ११ शोभा, १२ जल प्रपात, १३ डाल पर, १४ आभूषण, १५ पौधे का चेहरा, १६ गीली बालछड, १७ डालियाँ, १८ पेड, वृक्ष, १९. हरे-भरे मैदान, २० सुबह के पक्षी, २१ गीत मे लीन ।

परिन्दो[२२] के झुरमुट बरंगे-सहाब[२३]
कहीं झुण्ड चिड़ियों का बाला-ए-आब[२४]

वो गल्लों का चरना चरागाह में
बिछा सब्ज़[२५] कालीन हर राह में

वो केले का जंगल वो आबे-रवां[२६]
तराई में लाखों जड़ी बूटियां

चटानों पे वो चादरे-आबे-साफ़[२७]
हो चाँदी के पत्तर का जैसे गिलाफ़

सिले संगे-मरमर की वाआब-ओ-ताब[२८]
दिखाने लगी परतवे-आफ़ताब[२९]

फ़ाख़्ता की आवाज़

'जोश' मलीहाबादी

आज तो फ़ाख़्ता की नर्म आवाज़
है कुछ इस तरह ग़र्क़-सोज़-ओ-गुदाज़[१]

जैसे पीरी[२] में यादे-तिफ़्ली[३] आये
जैसे जल-जल के शम्अ बुझ जाये

२२. पक्षी, २३ बादलों की तरह, २४. पानी के ऊपर, २५. हरा, २६. प्रवाहित जल, २७. स्वच्छ जल की चादर, २८ चमक, आभा, २९ सूर्य का अक्स।

फ़ाख़्ता की आवाज़

१. सोज़ (तपन) और गुदाज़ (पिघलानेवाला) में डूबा हुआ, २. बुढ़ापा, ३ बचपन की याद।

जैसे याकूब[४] गर्क शीवन[५] मे
जैसे सीता की जुस्तजू[६] बन में

शब[७] को जिस तरह दिल मे दर्द उठे
बेवगी[८] नौउरूस[९] की जैसे

शाम को ज़ेरे-साय.-ए-कुहसार[१०]
जैसे वादी में धीमी-धीमी फुवार

जैसे अश्कों[११] की लहर सीने मे
पानी आने लगे सफ़ीने[१२] मे

जैसे सुमराल मे कोई लडकी
देखकर बदलियो को सावन की

सुबह पनघट को नीम के नीचे
मायके की घटाएँ याद करे

राजहंस

अब्बास बेग 'महशर'

यह आबजू[१] के किनारो पे नर्कुलो की कनार[२]
नदी है बीच मे दोनो तरफ बहार बहार[३]

है नर्म शाखो पे बेलो के इस तरह साये
कि जैसे आशिक[४] की बाहो मे हुस्न[५] घिर जाये

४ एक पैगम्बर जिनका पुत्र उनसे बिछुड गया था, ५ रुदन मे लीन, ६ खोज, ७ रात, ८. वैधव्य, ९. नयी नवेला दुल्हन, १० पहाड की छांव के नीचे ११ आंसू, १२. नाव।

राजहंस

१. नदी, २. पंक्ति, ३ शोभा, ४ प्रेमी, ५ सौंदर्य।

कहीं-कहीं से निकाबे-जुमुर्रुदी[6] हटकर
गुलों[7] की आतिशे-रुखसार[8] आ रही है नजर

है उनके अक्स[9] से यूं गुलफिशाँ[10] नदी की किताब
भरे शबाब[11] मे जिस तरह जिन्दगी की किताब

ठहर-ठहर के जो हल्की हवा के झोंके आये
कहीं-कहीं यह हिजाबे-जमुर्रुदी[12] थर्राये

शराबरेज[13] नजारों[14] मे मस्त है आँखे
नजर पसन्द बहारों से मस्त है आँखे

सहर[15] के नूर[16] की जल्वागरी[17] निकल आई
हिजाबे-मौज[18] हटाकर परी निकल आई

यह राजहंस, यह हुस्ने-मतीन[19] की तनवीर[20]
यह बुत तराशी-ए-कुदरत[21] की मरमरी तस्वीर[22]

खिंची कमान[23]-सी गर्दन, तना हुआ सीना
हसीन[24] अक्स[25] मे रोशन नदी का आईना[26]

गुरूर[27] तोड़ रहा है शरीर मौजों का
पलट के होता है वापस जो तीर मौजों का

सुरूरे-फतह[28] मे लेता है बाजुओं[29] से काम
लुटा रहा है गुहर[30], शादकाम[31] मस्तखराम[32]

६ हरे निकाब ७ फूल, ८ गालों की अग्नि ९ प्रतिबिम्ब, १० फूल बिखेरती हुई ११ यौवन, १२ जमुर्रद (पन्ना) की लज्जा, १३ शराब बरसानेवाले, १४ दृश्य, १५ प्रभात, १६ प्रकाश, १७ दर्शन देना, १८ लहर पर्दा, १९ गंभीर सौंदर्य, २० चमक, २१. प्रकृति की मूर्तिकारी, २२ संगमरमर की मूर्ति २३ धनुष, २४ सुन्दर, २५ प्रतिबिम्ब, २६ दर्पण, २७ घमण्ड, २८ विजय का नशा, २९ बाँहें, ३० मोती ३१. खुश, ३२. मन्द गति ।

चरवाहे की बंसी

'अख्तर' शीरानी

शफक[1] की छाँव मे चरवाहा जब बसी बजाता है
तसव्वुर[2] मे मिरे माजी[3] के नक्शे[4], खीच लाता हे
नजर मे एक भूला बिसरा आलम[5] लहलहाता है

मिरे अफकारे-तिफ्ली[6] को है निस्बत[7] इसके नग्मो मे[8]
मैं बचपन मे किया करता था उलफत[9] इसके नग्मो मे
जमी बसी की लै मे अहदे-तिफ्ली[10] झिलमिलाता है

वो खेतो की कतारे[11] और वो नज्जारा[12] बागो का
वो दरिया का किनारा और वो गहवारा[13] बागो का
रसीली बाँसरी के हमहमो[14] मे झिलमिलाता है

नजर मे झूमता है बनके रगी ख्वाब[15] का आलम[16]
वो सहरा[17] के नजारे[18] और वो महताब[19] का आलम
वही अफसाना[20] इस बसी के लब[21] पर गुनगुनाता है

१ अरुणिमा, २ कल्पना, ३ भूतकाल, ४ चित्र, ५ ससार ६. बचपन का चिन्तन ७ सम्बध, ८. गीत, ९ प्रेम, १०. बचपन का दौर, ११ पक्तियाँ, १२, दृश्य, १३ पालना, १४ आवाज, १५. सुन्दर सपना, १६, ससार, १७ जगल, १८ दृश्य, १९ चन्द्र, २० कहानी, २१. होठ ।

एक वादी से गुज़रते हुए

'जा निसार' अख्तर

यह वादी किस कदर शादाब[1] थी अगली बहारों[2] मे

कभी यह खाक थी अय दोस्त रगी[3] मब्जाजारों[4] मे
यहाँ चाँदी खनकती थी पिघलते आबशारों[5] मे

वो खुदरो[6] फल, वो रगीं जमी[7] के खुशनुमा[8] तारे
वो सब्जे की लहकती मौज पर खुशबू के गहवारे[9]

सुनहरी तितलियाँ मशगूल[10] थीं रगीन खेलो मे
नजर से ओझल कोई झूलता रहता था बेलो मे

हवा गुजान[11] झाड़ी मे अनोखे गीत गाती थी
यहा शादाब[12] कजो मे मुहब्बत गुनगुनाती थी

तराने[13] फूटती किरनो पे झरने गुनगुनाते थे
कि कच्ची नै[14] पे चरवाहे पहाड़ी गीत गाते थे

वो चश्मे[15] के किनारे दब के रेशो मे हलका नम
किसी ने दूर तक कैंची मे कतरा था हरा रेशम

यहाँ बढ-बढ के घटती थी धडकने दिल की बेताबी[16]
यहाँ प्यासी नजर को सेर[17] कर देती थी शादाबी[18]

बहुत से जाने वाले इस घने जगल मे खो जाते
थके हारे मुसाफिर आके इस वादी मे सो जाते

१ हरी-भरी, २ वसन्त, ३ सुन्दर, ४ हरे-भरे मैदान, ५. जलप्रपात, ६ अपने-आप उगने वाले, ७ धरती, ८ सुन्दर, ९ पालने, १० व्यस्त, ११. घनी, १२ हरे-भरे, १३ गीत, १४. बसी, १५ स्रोत, १६. व्याकुलता, १७ तृप्त, १८. हरियाली ।

यहीं हमने मुहब्बत के हसीं[19] जादू जगाये थे
इन्ही शादाबियों[20] मे दिल के गुचे[21] मुस्कुराये थे

हम अकसर घास पर साये मे लेटे गीत गाते थे
कभी कुछ गुनगुनाते थे, कभी कुछ गुनगुनाते थे

कभी हम घूमते फिरते थे ऊँचे सब्ज[22] टीलो पर
जुमुर्रुद[23] सा बहा करता था मैदानो मे झीलों पर

वो किस्सा[24] उसके मुह से हंस की सच्ची मुहब्बत का
वो लहरो मे मुसर्रत[25] सी वो मौजो मे तबस्सुम[26] सा

जवानी बाद:-ए-गुलरग[27] दोनो को पिलाती थी
कोई देवी शफक[28] मे मुह छुपाये मुस्कुराती थी

न अब नग्मे[29] है डालो पर न अब खुशबू[30] है खारो[31] मे
बस इक दुखते हुए दिल की सदा[32] है आबशारो[33] मे

यह वादी किस कदर[34] शादाब[35] थी अगली बहारो मे

धान के खेत

फैयाजुद्दीन अहमद 'फैयाज'

यह धान के नन्हे पौदे है हरियाली के दल बादल मे
या काही रंग की गोट लगी है, हलके धानी आँचल मे

रिमझिम जो बरसता निकला है इक अब्र[2] का टुकडा खेतो पर
क्या खूब नहाकर निखरे है फितरत[3] के हसी[4] गगा जल मे

हर सुब्ह बिखरते है मोती, सब्जे[5] मे निखरते है मोती
शबनम[6] का खजाना होता है, धानो की जुमुर्रुदी[7] छागल मे

१९ सुन्दर २०. सरसब्ज, हरियाली, २१ कलिया, २२ हरे, २३ पन्ना, २४ कहानी, २५. खुशी, २६ मुस्कान २७ फूलो जैसे रंग की मदिरा, २८ अरुणिमा, २९ गीत, ३० सुगध, ३१ कॉटे, ३२. आवाज, ३३. जलप्रपात, ३४ कितनी, ३५ सुसिक्त, हरी-भरी ।

धान के खेत

१. गहरा हरा, २. बादल, ३ प्रकृति, ४ सुन्दर, ५. हरियाली, ६ ओस, ७ पन्ना-जैसी ।

खेतों के फ़राज-ओ-पस्ती[8] में यूं झूम रही है बादे-सहर[9]
जैसे कोई मस्त शराब पिये फिरता हो भटकता जंगल में

सुब्हों के सुहाने मंजर[10] में, रंगीं हैं नजारे[11] शामों[12] के
फूली है शफ़क,[13] उट्ठी है घटा, धानों को डुबोने जल-थल में

बढ़ती हुई शामों की जुल्मत[14] में यूं अक्स[15] शफ़क का डूबा है
जिस तरह किसी दोशीजा[16] की मस्ती भरी आँखें काजल में

बरसात की रुत सावन का महीना और जवानी का मौसम
मैके में उरूसे-फ़ितरत[17] है, मगन सनते हैं जंगल में

देहात के रंगीपोश[18] यहाँ, जब खेत को नीन्दने आते हैं
धानों के हरे-भरे खेतों में भी गुंचः-ओ-गुल[19] खिल जाते हैं

खुदरौ[20] पौदों के साथ उगना भाता नहीं नाजुक[21] धानों को
यह गैरत[22] कुम्हला देती है इन नन्हीं नन्हीं जानों को

नीन्दें जो न जायें खेत कहीं, मिट जाये यह सब तख्लीक़े-हसीं[23]
मेहनत करना ही पड़ती है दिन दिन भर कुछ इन्सानों को

धानों की नज़ाकत[24] कहती है यह काम है सिन्फ़े-नाज़ुक[25] का
इस सिन्फ़[26] के कदमों में पड़कर मिलती है जवानी धानों को

थक कर वो जब इक लम्हे[27] के लिए अंगड़ाई लेती उठती है
आ जाती है रौनक[28] खेतों पर मिलती है तरावट[29] धानों को

अय माल मगन ! कुछ सुनता है, इन धानों की क्या बिपता है
वो हाथ पकाकर पकते हैं तू खाता है जिन धानों को

सूरज ने भरा ही कुछ मेहनत, बादल ने बढ़ाई कुछ हिम्मत
लेकिन निरी नाशुकरी[30] फ़ितरत, भूली सारे एहसानों[31] को

८ ऊंचाई-नीचाई ९ प्रात समीर, १० दृश्य, ११ दृश्य, १२ सन्ध्याकाल, १३. अरुणिमा, १४ अंधकार, १५ प्रतिबिम्ब, १६. कुमारी, १७ प्रकृति रूपी दुल्हन, १८ रंगबिरंगे वस्त्रवाले, १९ फूल और कलियां, २० खुद बखुद उगनेवाले, २१ कोमल, २२ शर्म, २३ सुन्दर सृष्टि, २४ कोमलता, २५ कोमलांगनियाँ, २६ जाति, २७ क्षण, २८ सुन्दरता २९ तरी, ताजगी, ३० कृतघ्न प्रकृति, ३१ आभार।

इनसे ही हुकूमत पलती है खिलक़त[32] के यही अन्नदाता है
तन ढकने का मक़दूर[33] नहीं जिन बदक़िस्मत[34] इन्सानों को
'फ़ैयाज़' यह धान के खेत नहीं, इक दर्द भरा अफ़साना[35] हैं
मज़लूम[36] की सूखी रोटी है और ज़ालिम[37] का पैमाना[38] हैं

ज़ज़ीरों का ख़्वाब[1]

शहाब जाफ़री

फ़ज़ा[2] की गोद में सिमटा हुआ यह, ख़्वाबे-बहार[3]
पहाड़ियों में कहीं चाँद मुस्कुराता है

बहुत हसीन[4] है यह चाँदनी का शीश महल
वो मरसराये फ़ज़ाओं में शबनमी[5] आंचल

नदी किनारे सनोबर[6] की शाख़[7] लचकी है
फुवार पड़ती है चम्पा की नर्म टहनी है

छलक रही है वो शबनम[8] कुसुम की प्याली से
उतर रही है वो पर्वत से खामुशी[9] छमछम

नदी के मोड पे सोई हुई है तुग़ियानी[10]
परिन्द[11] पर को समेटे है आशियानों[12] में

मिरी भी लै है इसीराह के तरानों[13] में
यहां कोई नहीं आवारा घूमता हूँ मैं
हर एक शै[14] को मुहब्बत से चूमता हूँ मैं

३२. जन साधारण, ३३. साहस, ३४. अभागे, ३५ कहानी, ३६ पीड़ित, अत्याचार सहनेवाला, ३७. अत्याचारी, ३८. प्याला, शराब का प्याला।

जज़ीरों का ख्वाब

१. द्वीपों का स्वप्न, २. वातावरण, ३. बहार का स्वप्न, ४. सुन्दर, ५. ओस का, ६. सरो, ७. डाली, ८. ओस, ९. सन्नाटा, १०. तूफ़ान, बाढ़, ११. पक्षी, १२ घोंसला १३. गान, १४. वस्तु।

तीसरा अध्याय

हमारे सुब्ह-ओ-शाम

हम ऐसे अहले-नजर[1] को सबूते-हक[2] के लिए,
अगर रसूल[3] न आते तो सुब्ह[4] काफी थी

'जोश' मलीहाबादी

१ समझदार, २. खुदा का सुबूत, ३. नबी, ४. प्रात काल

तुलू-ए-आफ़ताब[1]

मिर्ज़ा ग़ालिब

सुब्हदम[2] दरवाज़:-ए-खावर[3] खुला
मिहरे-आलमताब[4] का मंज़र[5] खुला

खुसरवे-अंजुम[6] के आया सर्फ़[7] मे
शब[8] को था गंजीन.-ए-गौहर[9] खुला

वो भी थी इक सीमिया[10] की सी नमूद[11]
सुब्ह को राजे-मह-ओ-अख्तर[12] खुला

है कवाकिब[13] कुछ नजर आते है कुछ
देते है धोका ये वाजीगर[14] खुला

सनहे-गर्दू[15] पर पडा था रात को
मोतियो का हर तरफ जेवर खुला

सुब्ह ' आया जानिवे-मश्रिक[16] नजर
इक निगारे-आतिशी रुख,[17] सर खुला

१, सूर्योदय, २. प्रात.काल, ३. पूर्व दिशा का द्वार, ४. ससार को प्रकाशित करने वाला सूरज, ५.दृश्य, ६. तारो का बादशाह, ७. काम, ८. रात, ९. मोतियो का खज़ाना, १०. काल्पनिक, आकृतियाँ ११. प्रकटन, १२. चाद तारो का रहस्य, १३. तारे, १४. तमाशा दिखाने वाले, १५. आकाश की सतह, १६. पूर्व की ओर, १७. आग जैसे चेहरे की तस्वीर,

नूर ज़हूर का वक़्त

मीर बबर अली 'अनीस'

वो सुब्ह और वो छाँव सितारो की और वो नूर[1]
देखे तो गश[2] करे अरनी गोये औजे-तूर[3]
पैदा गुलो[4] से कुदरते-अल्लाह[5] का जहूर[6]
वो जा ब-जा[7] दरख्तो[8] पे तसबीह[9] - ख्वा तयूर[10]

गुलशन[11] खजिल थे[12] वादि-ए-मीनूअसास से[13]
जंगल था सब बसा हुआ फूलो की बास से

ठंडी हवा वो सब्ज.-ए-सहरा[14] की वो लपक
शरमाये जिससे अतलसे-जिगारी-ए-फलक[15]
वो झूमना दरख्तो[16] का फूलो की वो महक[17]
हर बर्गे-गुल पे[18] कतर-ए-शबनम[19] की वो चमक

हीरे खजिल[20] थे गौहरे-यकता[21] निसार[22] थे
पत्ते भी हर शजर[23] के जवाहर निगार[24] थे

वो नूर[25] और वो दश्त[26] सुहाना सा, वो फजा[27]
दुर्राजो-ओ-[28] कुब्क[29] तीतर-ओ-ताऊस[30] की सदा[31]
वो जोशे-गुल[32] वो नाल-ए-मुर्गाने-खुशनवा[33]
सर्दी[34] जिगर को बख्शती[35] थी सुब्ह की हवा

१ प्रकाश, २ बेहोश हो जाय, ३ जल्वे का तकाजा करने वाले हजरत मूसा, ४ फूल, ५ खुदा की कुदरत, भगवान की लीला, ६ प्रकटन, ७ कही-कही, ८ वृक्ष, पेड ९. माला जपते हुए, १० पक्षी, ११ उपवन, १२ लज्जित, १३. स्वर्ग के समान, १४ जंगल की हरियाली, १५. आकाश का नीला अतलस, १६ वृक्ष, १७. सुगंध, १८. फूल की पत्ती, १९. ओस की बून्द, २०. शर्मिन्दा, २१. अद्भुत मोती, २२ न्योछावर, २३, वृक्ष, २४ चित्र, २४. प्रकाश, २६. जंगल, २७ वातावरण, २८ एक पक्षी, २९. चकोर, ३० मोर, ३१ आवाज, ३२. फूलो का जोश, ३३ मधुर आवाज पक्षियो का आर्तनाद, ३४. ठण्ड, ३५. प्रदान करती ।

फूलों के सब्ज[36] सब्ज शजर[37] सुर्ख पोश[38] थे
थाले भी नख्ल[39] के सबदे-गुलफ़रोश[40] थे

वो दश्त[41] वो नसीम[42] के झोके वो सब्जाजार[43]
फूलो पे जा बजा वो गुहरहा-ए-ग्राबदार[44]
उठना वो झूमझूम के शाखो[45] का बार बार
बाला-ए-नख्ल[46] एक जो बुलबुल तो गुल[47] हजार

ख्वाहा[48] थे जहरे-गुलशने-जुहरा जवाब[49] के
शबनम[50] ने भर दिये थे कटोरे गुलाब के

वो कुमरियो[51] का चार तरफ सर्व[52] के हुजूम[53]
कू कू का शोर[54] नाल-ए-हक सर्रहू[55] की धूम
सुब्हाने-रब्बना[56] की सदा[57] थी अलल उमूम[58]
जारी थे वो जो उसकी इबादत[59] के थे रसूम[60]

कुछ गुल फकत[61] न करते थे रब्बे-उला[62] की मदह[63]
हर खार[64] को भी नोके-जबा[65] थी खुदा की मदह

३६ हरे, ३७ वृक्ष, ३८. लाल वस्त्रो मे ३९ वृक्ष, ४० पुष्प विक्रेता का टोकरा, ४१ जगल ४२. समीर, ४३ हराभरा मैदान, ४४ चमकदार मोती, ४५. डालियां, ४६ वृक्ष के ऊपर, ४७. फूल, ४८. इच्छुक, ४९. सुन्दरी के उपवन का जहर, ५० ओस, ५१ एक पक्षी, ५२. सरो, ५३ जमघट, ५४ कोलाहल, ५५. खुदा की तारीफ, ५६. खुदा की तारीफ के शब्द, ५७ आवाज, ५८ आम तौर से, ५९. आराधना, ६० रीतिरिवाज, ६१. केवल, ६२. खुदा, ६३ प्रशसा, स्तुति, ६४. काटा, ६५. जबान की नोक।

सुब्ह का समां[1]

नफीस

वो समा[1] दश्त[2] का वो नूर[3] का तड़का वो बहार[4]
मनअते-साने-ए-कुदरत[5] का वो था नक्श-ओ-निगार[6]
वज्द[7] में लाती थी खुशबू-ए-गुल-ओ-सौते-हजार[8]
कभी शाखों[9] का वो झुकना कभी उठना हर बार

शान दिखलाने को जो नख्ल[10] था आमादा[11] था
जुल्फ[12] सुम्बुल[13] भी सँवारे हुए इस्तादा[14] था

सब्जा[15] वो जिससे खजिल[16] रंग सिपहरे-अखजर[17]
मोती फैले हुए शबनम[18] के इधर और उधर
सर्द[19] नहरें कि जिन्हें देख के ठंडा हो जिगर
वो हुबाबों[20] की चमक जैसे फलक[21] पर अख्तर[22]

बढ़के गुँचों[23] के दहन[24] मुर्ग-चमन[25] चूमते थे
कुमरियाँ[26] बोलती थीं सर्वे-सही[27] झूमते थे

गुले-शब्बो[28] की सहर[29] को वो बहार[30] एक तरफ
जलवागर[31] एक तरफ बर्ग[32] तो बार[33] एक तरफ
रविशों[34] पर सनोबर[35] की, कतार[36] एक तरफ
डालियाँ पहने हुए फूलों के हार एक तरफ

खुर्रम-ओ-ताजा-ओ-तर[37] दश्त[38] भी गुलजार[39] भी था
तर जबाँ[40] जिक्रे-इलाही[41] में हर एक खार[42] भी था

१ प्रातःकाल का वातावरण, २ जंगल, ३ प्रकाश, ४ वसन्त ५ प्रकृति के कारीगर का उद्योग, ६ चित्र, ७ झूमना, ८ फूल की सुगंध और बुलबुल की आवाज, ९ डालियाँ, १०. वृक्ष, ११ तैयार, १२ बाल, १३ बालछड़, १४ खड़ा, १५ हरियाली, १६ शर्मिन्दा, १७ नीला आकाश, १८ ओस, १९ ठण्डी, २० बुलबुला, २१ आकाश २२ तारे, २३ कली २४ मुँह, २५ उपवन के पक्षी, २६ एक प्रकार की फाख्ता, २७ सीधे खड़े हुए सरो, २८ एक फूल, २९ प्रभात, ३० शोभा, ३१ दर्शन देते हुए, ३२ पत्ते, ३३ फल, ३४ क्यारी, क्यारियों के बीच का मार्ग, ३५. चीड़, ३६. पंक्ति, ३७ प्रसन्न और ताजा, ३८ जंगल, ३९ उपवन, ४०. आर्द्र जिह्वा, ४१ खुदा का जिक्र, ४२. काँटा।

शम्अ-ओ-परवाने का वो सोज़-ओ-गुदाज़[४३] एक तरफ़
बुलबुल-ओ-गुल[४४] में नये राज़-ओ-नियाज़[४५] एक तरफ़
तूती-ए-तेज़जबां[४६] नग़मा तराज़[४७] एक तरफ़
चमनिस्तां[४८] के हसीनों[४९] का वो नाज़[५०] एक तरफ़

नूरे-हंगामे - सहर[५१] देख के खुर्सन्द[५२] कोई
कोई खन्दां[५३] था चमन में तो शकरखंद[५४] कोई

था नया हुस्न[५५] जो बाग़ों का तहे-चर्खे-कुहन[५६]
हर तरफ़ रक़्स-कुनां[५७] फिरते थे ताऊसे-चमन[५८]
जब चटकने में हँसे ग़ुंचः-ओ-नसरीन-ओ-समन[५९]
जाग उठा सब्ज़ः-ए-ख्वाबीदा[६०] मियाने-गुलशन[६१]

फूल को समझी थी जो आँखों का तारा नर्गिस
कर रही थी चमनिस्तां का नज़ारा[६२] नर्गिस

था हर इक सहने-चमन[६३] तानाज़ने-चर्खे - बरी[६३]
जा बजा[६५] ताज़ा वो खोशे[६६] कि खजिल[६७] हो परवीं[६८]
खाक पर फ़र्श गुलों[६९] का वो निहालों[७०] के क़रीं[७१]
थी यह बालीदा[७२] कि फूली न समाती थी ज़मीं[७३]

रंगे-नाज़ुक[७४] जो हर इक गुल[७५] की कली रखती थी
फूंक कर पांव नसीमे-सहरी[७६] रखती थी

४३. जलन और मृदुलता, ४४. फूल और बुलबुल, ४५. रहस्य की बातें, ४६. वाकपटु तूती, ४७. गीत में लीन, ४८. उपवन, ४९. सुन्दरियाँ, ५०. गर्व, ५१. प्रातःकाल का प्रकाश, ५२. प्रसन्न, ५३. हंसता हुआ, ५४. मीठी हँसी, ५५. सौंदर्य, ५६. बूढ़े आकाश के नीचे, ५७. नाचते हुए, ५८. उपवन के पक्षी, ५९. सेवती और चमेली और कलियाँ, ६०. सोई हुई हरियाली, ६१. उपवन में, ६२. दर्शन, ६३. उपवन, ६४. आकाश पर व्यंग करता हुआ, ६५. जगह-जगह, ६६. बालियाँ, ६७. शर्मिन्दा, ६८. कृत्तिका, छः छोटे-छोटे तारों का गुच्छा, ६९. फूलों, ७० पौधे, ७१. तरीक़ा, ढंग, ७२. विकसित, ७३. धरती, ७४. कोमल रंग, ७५. फूल, ७६. प्रातः समीर।

जलवः-ए-सुब्ह[1]

बृज नारायण 'चकबस्त'

जब रंगे-शब[2] आईनः-ए-हस्ती[3] से हुआ दूर
हंगामे-सहर कौन-ओ मका[4] हो गये पुर नूर[5]
तबदील[6] हुई सूरते-कोहे-शबे दैजूर[7]
चमका वो तजल्ली-ए-सहर[8] से सिफ़ते-नूर[9]

बिजली की तरह चर्ख[10] पे नूरे-महर[11] आया
आंखों को न फिर खिरमने-अंजुम[12] नजर आया

वो सुब्ह का आलम[13] वो चमनज़ार[14] का आलम
मुर्गाने-हवा[15] नग्मा जनी[16] करते थे बाहम[17]
हगामे-सहर[18] बादे-सहर[19] चलती थी पैहम[20]
आराम मे सब्ज़ा था तहे-चादरे-शबनम[21]

हर सिम्त[22] बँधी नारः-ए-बुलबुल[23] की हवा थी
गुचों[24] की नसीमे-सहरी[25] उक्दाकुशा[26] थी

जो नख्ल[27] था गुलशन[28] मे बरोमन्द[29] खडा था
दामाने-सहर[30] मे गुले-खुर्शीद[31] पडा था
क्या खूब मुकद्दर[32] चमनिस्तां[33] का लडा था
हर गुल[34] पे गुहर[35] कतरः-ए-शबनम[36] का जडा था

बुलबुल कही ताऊस[37] कही घूम रहे थे
मस्तो की तरह नख्ले-चमन[38] झूम रहे थे

१. प्रभात दर्शन, २. रात का रग, ३ अस्तित्व का दर्पण, ४ ससार ५ प्रकाशमान, ६. परिवर्तित, ७. अँधेरी रात, ८ प्रभात का प्रकाश, ९. आभा की तरह, १० आकाश, ११ प्रभात का प्रकाश, १२ सितारो का जमघट, १३. समय, १४ हरा-भरा उपवन, १५ पक्षी, १६. गीत गाना, १७. परस्पर १८. प्रभात का समय, १९. प्रात. समीर, २०. लगातार, निरन्तर, २१. ओस की चादर के नीचे, २२ हरतरफ, २३. बुलबुल का नारा, २४ कली, २५. प्रातः समीर, २६. रहस्य खोलने वाली, २७. वृक्ष, २८. उपवन, २९ प्रसन्न, सम्पन्न, ३०. प्रभात का दामन, ३१. सूर्य का फूल, ३२. भाग्य, ३३. उपवन, ३४. फूल, ३५. मोती, ३६. ओस की बूँद, ३७. मोर, ३८. उपवन के वृक्ष।

था पेशे-नजर[३९] वादि-ए-ऐमन[४०] का तमाशा
हर शाख़-ओ-शजर[४१] में शजरे-तूर[४२] का नक़्शा
था आतिशे-गुल[४३] में असरे-बर्क़े-तजल्ली[४४]
मदहोश[४५] थे मुर्ग़ाने-हवा[४६] सूरते-मूसा[४७]
शक्ले-यदे-बैजा[४८] थी हर इक शाख़[४९] नजर में
एजाज़[५०] का गुल था कफ़े-गुलचीने-सहर[५१] में

रौनक[५२] पे दमे-सुब्ह[५३] था ख़ुमख़ान:-ए-आलम[५४]
थम थमके हवा चलती थी सर्दी भी थी कम कम
पैमाना:-ए-महताब[५५] था लबरेज[५६] रहर दम[५७]
था जामे[५८] सुबूही[५९] के लिए नैयरे-आजम[६०]
गर्दूं[६१] पे शफ़क़[६२] की भी अजब जलवागरी[६३] थी
मीना-ए-फ़लक[६४] मे मै-ए-गुलरंग[६५] भरी थी

३९. नजर के सामने, ४० तूर पर्वत की वादी, ४१. डाली और वृक्ष, ४२ तूर (पहाड जहाँ मूसा को ख़ुदा की तजल्ली दिखाई दी थी) का वृक्ष, ४३ फूल की आग, ४४ तजल्ली की बिजली का असर, ४५ मदमस्त, मदोन्मत्त, ४६ हवा के पक्षी, ४७ मूसा की तरह, ४८. सफेद चमकते हुए हाथ की तरह, ४९. डाली, ५०. चमत्कार, ५१. प्रात काल फूल तोड़ने वाले के हाथ मे, ५२ शोभा, ५३ प्रात काल के समय, ५४. संसार का मदिरालय ५५. चन्द्रमा का पैमाना, ५६ परिपूर्ण, ५७. सुबह के समय, ५८. प्याला, ५९. सुबह की शराब ६०. सूरज, ६१ आकाश, ६२. अरुणिमा, ६३ दर्शन दिखाना, ६४. आकाश की सुराही, ६५. गुलाबी रग की मदिरा।

सुब्ह की बहार

मुंशी द्वारका प्रसाद 'उफ़ुक' लखनवी

पुर्जे पुर्जे[1] है गुल[2] का दामा[3]
सद चाक[4] है सुब्ह का गरीबा[5]

आँखें मलते है गुंच-ए-तर[6]
छीटे देती है ओस मुँह पर

आवाजे-जरस[7] जगा रही है
शानों[8] को सबा[9] हिला रही है

फूली शफक[10] आसमा पर है
तड़का हुआ नूरे-सहर[11] है

मह[12] ने रहे-इल्तिफात[13] काटी
मुर्गाब[14] ने गम की रात काटी

वो चाँद जो मारे-शब[15] का मन[16] था
वो चाँद जो शम्-ए-अंजुमन[17] था

गुम मिस्ले-शरर[18] हुआ चमक के
जुगनू की तरह छुपा चमक के

शबनम[19] थी जो महवे-दुरफिशानी[20]
है बहरे-वज़-ए-गुल[21] वो पानी

बागो मे नसीम[22] चल रही है
परियो की तरह टहल रही है

१ टुकडे-टुकडे, २ फूल, ३ दामन, ४ सौ जगह से फटा हुआ, ५ गरेबान, ६ ताज़ी कलियाँ, ७ घण्टी की आवाज़, ८ कधा ९ हवा, १० अरुणिमा, ११ प्रात काल का प्रकाश, १२. चाद, १३ प्रेम का रास्ता, १४ चकवा, १५ रात का सांप, १६ मणि, १७ महफिल का चराग़, १८. चिंगारी की तरह, १९ ओस, २० मोती बरसाने मे लीन, २१ फूल के वज़ू के लिए, २२. समीर ।

गुल[२३] लहने-तुयूर[२४] सुन के सुन है
हर मुर्ग़[२५] को भैरवीं की धुन है

हर एक कली महक रही है
उँगली की तरह चटक रही है

नुमूदे-सुब्ह[१]

बेनज़ीर शाह वारसी 'बेनज़ीर'

नुजूमे-फ़लक[२] झिलमिलाने लगे
चिराग़े-सहर[३] टिमटिमाने लगे

ज़िया[४] आसमा से उतरने लगी
नज़र दूर तक काम करने लगी

वो शबनम[५] ने छिड़का चमन पर गुलाब
न रह जाये ता कोई सरगर्मे-ख़्वाब[६]

अनादिल[७] गुलिस्तां[८] में गाने लगे
तुयूरे-सहर[९] दिल लुभाने लगे

वो मैना[१०] पहाड़ी वो काकातुआ[११]
हुए आके शाख़ों पे नग़्मासरा[१२]

२३. फूल, २४. पक्षियों का राग, २५ पक्षी, मुर्ग़ा।

नुमूदे-सुब्ह

१· प्रभात का उदय, २. आकाश के तारे, ३. प्रातःकाल के चराग, ४. आभा, ५. ओस, ६. निद्रा-ग्रस्त, ७. बुलबुल, ८. उपवन, ९. प्रभात के पक्षी, १०. सारिका, ११. एक पक्षी, १२. गाने में लीन।

शुआयें[13] दिखाने लगीं वो झलक
हुई ज़ाफ़रानी[14] बिसाते-फ़लक[15]

शफ़क़[16] में बसंती किरन ज़ोफ़शां[17]
गले मिल रही है बहार-ओ-ख़िज़ां[18]

वो ज़र्दी[19] ज़रा और गहरी हुई
पहाड़ों की चोटी सुनहरी हुई

मुतल्ला[20] हुआ गुम्बदे-हर शजर[21]
बरसने लगा हर तरफ़ आबे-ज़र[22]

आफ़ताब

इक़बाल

अय आफ़ताब[1] ! रूह-ओ-रवाने-जहां[2] है तू
शीराज़ा बन्द[3] दफ़तरे-कौन-ओ-मका[4] है तू

बाइस[5] है तू वुजूद-ओ-अदम[6] की नुमूद[7] का
है सब्ज[8] तेरे दम से चमन हस्त-ओ-बूद[9] का

क़ायम[10] यह उनसुरों का तमाशा तुझी से है
हर शै[11] में ज़िन्दगी का तक़ाज़ा[12] तुझी से है

१३. किरणें, १४. केसरी, १५. आकाश की बिसात, १६. अरुणिमा, १७. चमकती हुई १८. वसन्त और हेमन्त, १९. पीलापन, २०. स्वर्ण-जटित, २१. हर वृक्ष का गुम्बद, २२. सोने का पानी।

आफ़ताब

१. सूर्य, २. ससार के प्राण, ३. क्रमबद्ध, ४. ससार, ५. कारण, ६. अस्ति-नास्ति, ७. उत्पत्ति, ८. हरा, ९. अस्तित्व, १०. स्थिर, ११. वस्तु, १२. मांग।

हर शै को तेरी जलवागरी[१३] से सबात[१४] है
तेरा यह सोज-ओ-साज[१५] सरापा[१६] हयात[१७] है

वह आफ़ताब[१८] जिससे ज़माने[१९] मे नूर[२०] है
दिल है, खिरद[२१] है, रूहे-रवा[२२] है शुऊर[२३] है

अय आफ़ताब[२४] ! हमको जिया-ए-शुऊर[२५] दे
चश्मे-खिरद[२६] को अपनी तजल्ली[२७] से नूर[२८] दे

है महफ़िले-वुजूद[२९] का सामा-तराज[३०] तू
यज्दाने-साकिनाने - नशेब-ओ-फराज[३१] तू

तेरा कमाल हस्ति-ए-हर जानदार[३२] मे
तेरी नुमूद[३३] सिलसिल.-ए-कोहसार[३४] मे

हर चीज की हयात[३५] का पर्वरदिगार[३६] तू
जाईदगाने-नूर[३७] का है ताजदार[३८] तू

ने इब्तिदा[३९] कोई, न कोई इन्तिहा[४०] तिरी
आजादे-कैदे-अव्वल-ओ-आखिर[४१] जिया तिरी

(तर्जुमा गायत्री)

१३. दर्शन, १४ स्थिरता, १५ जलन और वाद्य, १६ सर से पैर तक, १७ जीवन, १८. सूर्य, १९ ससार, २० प्रकाश, २१ होश, २२ प्राण, २३ चेतना, २४ सूर्य, २५ चेतना की आभा, २६ ज्ञान-चक्षु, २७ प्रकाश, २८ ज्योति, २९ अस्तित्व की महफिल, ३० सामान करने वाला, ३१ नशेब और फराज़ के रहने वालो का खुदा, ३२ प्राणी, ३३. बढवार, प्रकटन, ३४. पहाडो का सिलसिला, ३५ ज़िन्दगी, ३६. पालनहार, ३७ प्रकाश से पैदा होने वाले, ३८ मुकुटधारी, ३९ प्रारम्भ, ४० अन्त, ४१ आदि और अन्त की कैद से आज़ाद, ४२. चमक, रोशनी ।

नुमूदे-सुब्ह[1]

डाक्टर मुहम्मद इकबाल

हो रही है जेरे-दामाने-उफुक[2] से आशकार[3]
सुब्ह, यानी दुख्तरे-दोशीज:-ए-लैल-ओ-नहार[4]

पा चुका फुर्सत[5] वुरूदे-फस्ले-अंजुम[6] से सिपहर[7]
किश्ते-खावर[8], में हुआ है आफताब[9] आईनाकार[10]

आसमां[11] पर आमदे-खुर्शीद[12] की पाकर खबर
महमिले-परवाजे-शब[13] बांधा सरे-दोशे-गुबार[14]

शोला-ए-खुर्शीद[15] गोया हासिल[16] उस खेती का है
बोये थे दहकाने-गर्दूं[17] ने जो तारों के शरार[18]

है रवां[19] अंजुमे-सहर[20] जैसे इबादत खाने[21] से
सब से पीछे जाए कोई आबिदे-शब[22] जिन्दादार[23]

क्या समां[24] है जिस तरह आहिस्ता आहिस्ता कोई
खींचता हो म्यान की जुलमत[25] से तेगे-आबदार[26]

मतल:-ए-खुर्शीद[27] में मुजमिर[28] है यूं मजमूने-सुब्ह[29]
जैसे खलवतगाहे-मीना[30] में शराबे-खुशगवार[31]

१ प्रभात का प्रकटन, २ क्षितिज के दामन के नीचे, ३ प्रकट, ४ रातदिन की दोशीजा का लड़की, ५ अवकाश, ६ सितारों की फसल का आगमन, ७ आकाश, ८ पूर्व की खेती, ९ सूर्य, १० दर्पणकार, ११ आकाश, १२. सूर्योदय, १३ रात की उड़ान का महफिल, १४ धूल, भंवर के कंधों पर, १५ सूर्य की ज्वाला, १६ प्राप्त, १७ आकाश का किसान, १८ चिंगारी, १९ प्रवाहित, २० प्रात:काल के सितारे, २१ आराधनागार, २२ रात गये तक इबादत करने वाला, २३ रात को जिन्दा रखने वाला, २४ वातावरण, २५ अंधकार, २६ चमकती हुई तलवार, २७ सूर्योदय का स्थान, २८ निहित, पोशीदा, २९ प्रभात का अर्थ, ३० सुराही का एकान्त, ३१ सुहानी मदिरा।

है तहे-दामाने-बाद[३२] इख़तिलात - अंगेज सुब्ह[३३]
शोरिशे-नाकूस[३४] आवाज़े-अज़ा[३५] से हमकनार[३६]

जागे कोयल की अजां[३७] से ताइराने-नग्मा-संज[३८]
है तरन्नुमरेज़[३९] क़ानूने-सहर[४०] का तार तार[४१]

अलबेली सुब्ह

'जोश' मलीहाबादी

नजर झुकाए उरूसे-फितरत[1] जबी[2] से जुल्फे[3] हटा रही है
सहर[४] का तारा है जलजले[५] मे, उफुक[६] की लौ थरथरा रही है

रविश रविश[७] नग्म-ए-तुरब[८] है, चमन चमन जश्ने-रग-ओ बू है[९]
तुयूर[१०] शाखों पे है गजल - ख्वा[11], कली कली गुनगुना रही है

सितारः-ए-सुब्ह[१२] की रसीली झपकती आंखो मे है फसाने[13]
निगारे-महताब[१४] की नशीली निगाह जादू जगा रही है

३२ हवा के दामन के नीचे. ३३ प्रेम प्रदान करने वाला प्रभात, ३४ शंखध्वनि, ३५ अजान की आवाज, ३६ परिचित, ३७ बाग, ३८ गीत गाने वाले पक्षी, ३९ स्वरमाधुर्य प्रद, ४० सुबह का कानून, ४१ अस्त-व्यस्त ।

अलबेली सुबह

१. प्रकृति की दुल्हन, २ ललाट, ३. लटें, बाल, ४ प्रभात, ५. भूकप, ६. क्षितिज, ७ क्यारी, ८. हर्ष का गीत, ९. रंग और सुगंध का समारोह, १० पक्षी, ११. गजल गाते हुए, १२. सुबह का तारा, १३. कहानियां, १४. चन्द्रमा की प्रेयसी ।

तुयूर[१५] बज़्मे-सहर[१६] के 'मुतरिब,[१७] लचकती शाखों पे गा रहे हैं
नसीमे[१८] फ़िर्दौस[१९] की सहेली, गुलों को झूला झुला रही है

कली पे बेले की किस अदा से पड़ा है शबनम[२१] का एक मोती
नहीं, यह हीरे की कील पहने, कोई परी मुस्कुरा रही है

सहर[२२] को मद्दे-नजर[२३] हैं कितनी रिआयतें[२४] चश्मे-खूंफिशां[२५] की
हवा बयाबां[२६] से आने वाली, लहू[२७] में सुर्खी[२८] बढा रही है

शलूका[२९] पहने हुए गुलाबी, हर इक मुबुक[३०] पंखड़ी चमन में
रंगी हुई सुर्ख ओढनी का हवा में पल्लू सुखा रही है

फ़लक[३१] पे इस तरह छिप रहे हैं हिलाल[३२] के गिर्द-ओ-पेश[३३] तारे
कि जैसे कोई नई नवेली जबीं[३४] से अफ़शां[३५] छुड़ा रही है

खटक यह क्यों दिल में हो चली फिर ? चटकती कलियो ! जरा ठहरना
हवा-ए-गुलशन[३६] की नर्म रौ में यह किस की आवाज़ आ रही है

दोपहर

'अख्तर' अंसारी

धूप की ताबानियों[१] का राज है
मिहर[२] की उरियानियों[३] का राज है

मिस्ल[४] भट्टी के दहकता है जहां
फट पड़ा है जैसे इक आतिशफिशां[५]

१५. पक्षी, १६. प्रभात की महफिल, १७ गायक, १८ समीर, १९. स्वर्ग, २० फल २१ ओस, २२. प्रातःकाल, २३. ध्यान में, नजर में, २४ न्यूनता, २५ खून टपकाने वाली आंख, १६. जगल, २७ खून, रक्त २८. लाली, २९. वस्त्र ३०. कोमल, ३१. आकाश, गगन, ३२. चन्द्रमा, ३३. चारो ओर, ३४. ललाट, ३५. सिंदूर, ३६. उपवन की हवा।

दोपहर

१. चमक, २. सूर्य, ३. नग्नता, ४. भट्टी की तरह, ५. ज्वालामुखी।

जो किरन है मिहरे-आतिश बार[6] की
धार है जलती हुई तलवार की

तप रहे है कूचः-ओ-बाज़ार[7] सब
शोला - अफ़शां[8] है दर-ओ-दीवार[9] सब

सुर्ख़ आहन[10] जिस तरह देता है जौ[11]
उठ रही है खाक के ज़र्रों[12] से लौ

दश्त[13] की वीरानियों[14] का जिक्र क्या
काख-ओ-ऐवा[15] से नही आती सदा

आसमानों की फजा[16] खामोश है
और जमीं पर जिन्दगी रूपोश[17] है

हां इक उजडे नीम पर बेसाख्ता[18]
गा रही है अपनी धुन में फ़ाख्ता

शाम का एक मंज़र[1]

'जोश' मलीहाबादी

झुटपुटे का नर्म रौ[2] दरिया[3], शफ़क़[4] का इजतिराब[5]
खेतियाँ, मैदान, खामोशी, गुरूबे - आफ़ताब[6]

दश्त[7] के काम-ओ-दहन[8] को, दिन की तल्खी[9] से फ़राग[10]
दूर दरिया के किनारे धुधले-धुंधले-से चिराग

६. आग बरसानेवाला सूर्य, ७. बाजार और गलियाँ, ८. आग बरसानेवाले, ६. दीवार और दरवाजे, १०. लोहा, ११. चमक, १२. कण, १३. जगल, १४. निर्जनता, १५. गढी और महल, १६. शून्य, वातावरण, १७ छुपी हुई १८. सहसा।

शाम का एक मंजर

१. संध्याकाल का दृश्य, २. मन्दगति, ३. नदी, ४. अरुणिमा, ५. व्याकुलता, ६. सूर्यास्त, ७. जंगल, ८. मुह, ६. कटुता, १०. छुटकारा।

ज़ेरे-लब[11] अर्ज-ओ-समा[12] में, वाहमी[13] गुफ्त-ओ-शुनूद[14]
मशअले-गर्दू[15] के बुझ जाने से इक हलका-सा दूद[16]

वुसअते[17] मैदान की सूरज के छुप जाने से तंग
सब्ज़-ए-अफसुर्दा[18] पर ख्वाब-आफरीं[19] हल्का-सा रंग

खामुशी और खामुशी[20] में सनसनाहट की सदा[21]
शाम की खुनकी[22] से गोया दिन की गर्मी का गिला[23]

अपने दामन को बराबर कतअ[24] सा करता हुआ
तीरगी[25] में खेतियों के दरमियां[26] का फासला[27]

खार-ओ-खस[28] पर एक दर्द-अंगेज[29] अफसाने[30] की शान[31]
बामे-गर्दू[32] पर किसी के रूठकर जाने की शान

दूब की खुशबू[33] में शबनम[34] की नमी[35] से इक सुरूर[36]
चर्ख[37] पर बादल, जमीं पर तितलियां, सर पर तुयूर[38]

पारा-पारा[39] अब्र[40] सुर्खी[41] सुर्खियों में कुछ धुआं
भूली-भटकी-सी जमीं,[42] खोया हुआ-सा आसमां[43]

शाम

'निदा' फाजली

सूखे कपड़ों को छत में चुनती हुई
पीली किरनों का हार बुनती हुई

गीले बालों में तौलिया लिपटाये
हाथ में एक कटी पतंग उठाये

११ होंठों ही होंठों में, १२ धरती और आकाश १३ परस्पर, १४ बातचीत, १५ गगन की मशाल, १६ धुआं, १७ विस्तार, १८ उदास हरियाली, १९ नींद लानेवाला, २० सन्नाटा, २१ आवाज, २२ ठण्डक, २३ शिकायत, २४ काटता हुआ, २५ अंधकार, २६ बीच, २७ अन्तर, २८ कांटे और घास, २९ दर्द भरा, ३० कहानी, ३१ वैभव, ३२ आकाश की छत, ३३ सुगंध, ३४ ओस, ३५. आर्द्रता, ३६ नशा, ३७ गगन, ३८ पक्षी, ३९. टुकड़े-टुकड़े, ४०. बादल, ४१. अरुणिमा, ४२ धरती, ४३ आकाश।

दायें बाज़ू पे थोड़ी धूप सजाये
सीढ़ियों से उतर के आई है

किस क़दर बन-सँवर के आई है
बजते हाथों से चिमनियाँ धोकर

घर के हर काम से सुबुक होकर
पालने को झुला रही है शाम

प्यालियों में खिला रही है शाम
चन्दा मामू उगा रही है शाम

•

आसमानी लोरियां

'मख़दूम' मोहीउद्दीन

रोज़े-रोशन[1] जा चुका, है शाम की तैयारियाँ
उड़ रही है आसमा[2] पर ज़ाफरानी[3] सारिया

शाम रुखसत[4] हो रही है रात का मुँह चूमकर
हो रही है चर्ख़[5] पर तारों में कुछ सरगोशियाँ[6]

जलवे[7] है बेताब[8] पर्दे से निकलने के लिए
बन-सँवरकर आ रही है आसमा की रानियाँ

नौ उरूसे-शब[9] ने पहना है लिबासे-फ़ाख्रा[10]
आसमानी पैरहन में कहकशानी[11] धारियाँ

१. प्रकाशमान दिन, २. आकाश, ३. केसरी, ४. बिदा, ५. गगन, ६. कानाफूसी, ७. दर्शन, ८. बिकल. ९. रात की दुल्हन, १०. श्रेष्ठ बस्त्र ११. आकाश गंगा की।

कारचोबी[12] शामियाने[13] में रची बज़्मे-नशात[14]
साज़[15] ने अंगड़ाई ली, बजने लगी हैं तालियां

लाजवर्दी[16] फ़र्श[17] पर है मुश्तरी[18] जुहरा[19] का रक़्स[20]
नील तन गिरधर के पहलू में मचलती गोपियां

दस्त-ओ-पा[21] की नर्म-ओ-ख़ुश आहंग[22] हल्की जुम्बिशें[23]
या फ़ज़ा[24] में नाचती हैं गुनगुनाती बिजलियां

सरमदी[25] नग़मात[26] से सारी फ़ज़ा मामूर[27] है
नुत्क़े[28]-रब्बे-ज़ुलमनन[29] हैं रात की ख़ामोशियां

नीन्द-सी आंखों में आती है झुका जाता है सर
सुन रहा था देर से मैं आसमानी लोरियां

बज़्मे-अंजुम[1]

डाक्टर मुहम्मद इक़बाल

सूरज ने जाते-जाते शामे-सियह क़बा[2] को
तश्ते-उफ़ुक़[3] से लेकर लाले[4] के फूल मारे
पहना दिया शफ़क़[5] ने सोने का सारा ज़ेवर[6]
कुदरत[7] ने अपने गहने चांदी के सब उतारे

१२ कारचोब के कामवाला, १३. कपड़े की छत, १४. खुशी की गोष्ठी, १५. वाद्य, १६. नीला, १७. जमीन पर बिछा कपड़ा, १८. बृहस्पति, १९. शुक्र ग्रह, २०. नृत्य, २१. हाथ-पांव, २२ कोमल और मधुर आवाज, २३. कम्पन, २४. शून्य, २५. अनश्वर, २६. गीत, २७. परिपूर्ण, २८. शब्द, २९. ख़ुदा की आवाज़।

बज़्मे-अंजुम

१. तारों की महफ़िल, २. काले वस्त्रवाली शाम, ३. क्षितिज की थाली, ४. पोस्ता, ५. अरुणिमा, ६. आभूषण, ७. प्रकृति।

महमिल[८] मे खामुशी[९] के लैला-ए-जुलमत[१०] आई
चमके उरूसे[११] - शब के मोती वो प्यारे-प्यारे
वो दूर रहनेवाले हगाम.-ए-जहा[१२] से
कहता है जिनको इन्सा[१३] अपनी ज़बा[१४] मे 'तारे'

महवे-फलक फरोजी[१५] थी अजुमन फलक[१६] की
अर्शे-बरी[१७] से आई आवाज इक मलक[१८] की

अय शब[१९] के पासबानो[२०] ! अय आसमा के तारो
ताबिन्दा[२१] कौम मारी गर्दू-नशी[२२] तुम्हारी
छेडो सुरूद[२३] ऐसा, जाग उठटे सोनेवाले
रहबर[२४] है काफिलो की ताबे-जबी[२५] तुम्हारी
आईने किस्मतो[२६] के तुम को यह जानते है
शायद सुने सदाएँ[२७] अहले-जमी[२८] तुम्हारी

रुखसत[२९] हुई खमोशी[३०] तारो भरी फजा[३१] से
वुसअत[३२] थी आसमा[३३] की मामूर[३४] इस नवा[३५] मे

हुस्ने-अजल[३६] है पैदा तारों की दिलवरी[३७] मे
जिस तरह अक्से-गुल[३८] हो शबनम[३९] की आरसी[४०] मे
आईने-नौ[४१] से डरना तर्ज-कुहन[४२] पे अडना
मज़िल यही कठिन है कौमो की जिन्दगी मे
यह कारवाने-हस्ती[४३] है तेजगाम[४४] ऐसा
कौमे कुचल गई है जिसकी रवा रवी[४५] मे

८ ऊट का कजाडा, ९. मौन, १० अधेरी रात, ११ रात की दुल्हन, १२ संसार का कोलाहल, १३ मानव, १४ भाषा, १५ आकाश को चमकाने मे व्यस्त, १६ आकाश की महफिल, १७ सबसे ऊँचा आकाश, १८ फरिश्ता, १९ रात, २० पहरेदार, २१ प्रकाशमान, २२ आकाश पर विराजमान, २३ गीत, २४ मार्गदर्शक, २५ ललाट की चमक, २६ भाग्य, २७. आवाजे, २८ धरती के वासी, २९ विदा, ३० सन्नाटा, ३१ शून्य, ३२ विस्तार, ३३ आकाश, ३४ परिपूर्ण, ३५ आवाज, ३६ आदिकाल, का सौंदर्य, ३७ माशूकी, ३८ फूल का प्रतिबिम्ब, ३९ ओस, ४० दर्पण, ४१ नया विधान, ४२ पुराना ढग, ४३ अस्तित्व का कारवा, ४४ तीव्र गति, ४५ जल्दी।

आँखों से हैं हमारी ग़ायब[46] हज़ारों अंजुम[47]
दाख़िल[48] हैं वो भी लेकिन अपनी बिरादरी[49] में
इक उम्र[50] में न समझे इसको ज़मीनवाले
जो बात पा गये हम थोड़ी-सी ज़िन्दगी में

हैं जज़्बे-बाहमी[51] से क़ायम[52] निज़ाम[53] सारे
पोशीदा[54] है यह नुक्ता[55] तारों की ज़िन्दगी में

रात की कैफ़ियत

मौलवी मुहम्मद हुसैन 'आज़ाद'

आ अय शबे-सियाह[1] कि लैला-ए-शब[2] है तू
आलम[3] म शाहज़ादि-ए-मुश्की[4] नसब[5] है तू

होना वो बादे-शाम[6] शफ़क़[7] में अयां[8] तिरा
उड़ना वो आबनूस[9] का तख़्ते-रवां[10] तिरा

आलम[11] पे तू जो आती है रंग अपना फेरती
हाथों से मुश्क[12] उड़ाती है अम्बर बिखेरती

दुनिया पे सल्तनत[13] का तिरी देखकर हशम[14]
खाता है दिन भी तारों भरी रात की क़सम

४६. विलीन, ४७. तारे, ४८. सम्मिलित, ४९. खान्दान कुटुम्ब, ५०. मुद्दत, लम्बा समय ५१. परस्पर आकर्षण, ५२. स्थिर, ५३. विधान, ५४. गुप्त, ५५. मर्म।

रात की कैफ़ियत

१. अंधेरी रात, २. रात की लैला, ३. संसार, ४. कस्तूरी के खान्दान की राजकुमारी, ५. खान्दान, ६. शाम के बाद, ७. अरुणिमा, ८. प्रकट, ९. एक काली लकड़ी, १०. गतिशील सिंहासन, ११. संसार, १२. कस्तूरी, १३. शासन, राज्य, १४. प्रताप, दबदबा।

सोता गदा[१५] है खाक[१६] पर और शाह[१७] तख्त पर
माही[१८] बजेरे-आब[१९] है ताइर[२०] दरख्त[२१] पर

है बेखबर बडा जो बिछौनो पे घर मे है
दामाने-दश्त[२२] पर कोई सोता सफर[२३] मे है

घोडे पे अपने औंध गया है सवार भी
चूका है बल्कि राहजने-नाबकार[२४] भी

जिसको पुकारो वो सू-ए ख्वाबे-अदम[२५] गया
दरिया[२६] भी अब नो चलने से शायद हो थम गया

रात

मौलवी मुहम्मद इस्माईल 'इस्माईल'

गया दिन, हुई शाम, आई है रात
खुदा ने अजब[१] शै[२] बनाई है रात

न हो रात तो दिन की पहचान क्या
उठाये मजा दिन का इन्सान क्या

लगे होने अब हाट बाजार बन्द
जमाने के सब कार[३] और बार बन्द

१५ गरीब, दरिद्र, १६ धरती, १७ राजा, १८. मछली, १९ पानी के नीचे, २० पक्षी, २१ वृक्ष २२ जगल के आंचल पर, २३. यात्रा, २४. दुष्ट चोर, २५ यमलोक की निद्रा की ओर, २६ नदी,

रात

१. विचित्र, २ वस्तु, ३ कामकाज ।

हुई रात खि़लक़त[4] छुटी काम से
ख़मोशी[5] सी छाई सरे-शाम से

मुसाफ़िर ने दिन-भर किया है सफ़र
सरे-शाम मंज़िल पे खोली कमर

दरख़्तों[6] के पत्ते भी चुप हो गये
हवा थम गई पेड़ भी सो गये

अँधेरा उजाले पे ग़ालिब[7] हुआ
हर इक शख़्स[8] राहत[9] का तालिब[10] हुआ

हुए रौशन आबादियों[11] मे चराग़
हुआ सब को मेहनत से हासिल[12] फ़राग़[13]

किसान अब चला खेत को छोड़ कर
कि घर मे करे चैन से शब[14] बसर[15]

थपक कर सुलाया उसे नीन्द ने
तरद्दुद[16] भुलाया उसे नीन्द ने

ग़रीब आदमी जो कि मजदूर है
मशक्कत[17] से जिनके बदन चूर है

वो दिन भर की मेहनत के मारे हुए
वो माँदे थके और हारे हुए

निहायत[18] खुशी से गये अपने घर
हुए बाल बच्चे भी खुश देख कर

गये भूल सब बाल बच्चो का ग़म[19]
सवेरे को उट्ठेंगे अब ताजा दम

४. जनसाधारण, ५. निस्तब्धता, ६. वृक्ष, ७. विजयी, ८. व्यक्ति, ६. आराम, १०. इच्छुक, ११. बस्तियाँ, १२. प्राप्त, १३ अवकाश, १४. रात, १५. व्यतीत, १६. चिन्ता, १७ परिश्रम, १८. बहुत, १६. दुख ।

चाँदनी रात

बेनजीर शाह वारसी 'बेनजीर'

वो महताब[1] की आसमा[2] पर नुमूद[3]
मुज़ैयन[4] कवाकिब[5] से चर्खे-कबूद[6]

वो किरनों की शबनम[7] के अन्दर बहार
उडाया है चांदी का गोया गुबार[8]

लरजती है पानी पे यह चांदनी
कि दरिया[9] मे बिजली की है रौशनी

वह लहरे कही तिलमिलाती हुई
चमक आईने की दिखाती हुई

नही नाम को भी कही तीरगी[10]
कि अक्से-तजल्ली[11] है साये मे भी

रवा[12] है यह चारो तरफ मौजे-नूर[13]
कि उडते है दिन की तरह कुछ तयूर[14]

शुआओ[15] की अल्लाहरे तेजिया[16]
क़मर[17] के वो जोबन की नौखेजियां[18]

मगर छोटे-छोटे सितारे है मांद
कि आज अपने जलवे[19] मे पूरा है चांद

१ चन्द्रमा, २. गगन, ३. प्रकटन, ४. सुसज्जित, ५ तारे, ६ नीला आकाश, ७ ओस, ८ धूल, ९. नदी, १०, अँधेरा, ११. प्रकाश का प्रतिबिम्ब, १२. गतिशील, १३. प्रकाश की मौज १४. पक्षी, १५. किरणें, १६. तीव्रता, १७ चन्द्र, १८. जवानी, १९ दर्शन ।

शुग्राग्रों का वह जगमगाना कहीं
सितारों का आँखें चुराना कहीं

गिरा छन के पत्तों से नूरे-क़मर[20]
कि हीरे के टुकड़े पड़े हैं उधर

हुआ पच्चीकारी[21] का यह एहतिमाम[22]
कि मरमर[23] पे है संगे-मूसा[24] का नाम

यह साये में औराक़[25] मे नूर[26] के
कि गुल[27] संगे-मूसा पे बिल्लूर[28] के

सितारे जो रह रह के टूटे उधर
वो महताब[29] के फूल थे सरबसर[30]

हुई चाँदनी यह तजल्लीफ़िशां[31]
कि है आलमे-वज्द[32] में आस्मां[33]

सफ़ा[34] बाम-ओ-दर[35] मे समाई हुई
दरख्तों[36] पे हैरत[37] सी छाई हुई

चाँदनी

मुहम्मद याक़ूब 'औज' गयावी

गुंच:-ए-दिल[1] को खिला जाती है आकर चाँदनी
है बरंगे-मौसमे-गुल[2] रूह - परवर[3] चाँदनी

२०. चन्द्र का प्रकाश २१. पत्थर का काम, २२. व्यवस्था, २३. एक पत्थर, २४. एक पत्थर, २५. वर्क़, पन्ने, २६. प्रकाश, २७. फूल, २८. स्फटिक, २९. चन्द्रमा, ३०. सब, तमाम, ३१. प्रकाश फैलानेवाली ३२. भ्रमन का आलम, ३३ आकाश, ३४. पवित्रता, ३५. छत और द्वार, ३६. पेड़, ३७. आश्चर्य।

चाँदनी

१. दिल की कली, २. फूलों के मौसम की तरह, ३. प्राणवर्द्धक।

आस्मा से है झमाझम बारिशे-नूरे-ज़िया
नूर[4] का दरिया[5] रवां[6] है या जमीं[7] पर चाँदनी

आस्मा पर है सितारो से फरोगे-नूरे-माह[8]
चारसू[9] सतहे-जमी[10] पर जलवा-गुस्तर[11] चाँदनी

गुलशने-दुनिया[12] मे यह रगी[13] बहारे तुझ से है
नूर[14] की मूरत है तू अय माहपैकर[15] चाँदनी

इज्ज[16] कहते है इसे है नाम इसका इकिसार[17]
बिछ गई सतहे-जमी पर फर्श बनकर चाँदनी

मरमिटो पर रखती है लुत्फ-ओ-इनायत[18] की नजर
डालती है कब्र पर रहमत की चादर चाँदनी

गुच.-ए-खातिर[19] खिले जाते है कलियो की तरह
किस कदर है दिलकुशा[20] क्या पुरफजा[21] है चाँदनी

हर रविश पर क्यो न इतराती फिरे बाद-सबा[22]
शाम ही से बाग मे रौनकफिजा[23] है चांदनी

बाग मे जोशे-तरब[24] से बुलबुले है नगमाजन[25]
मरहबा अय औज क्या इशरत फिजा[26] है चाँदनी

है नमूना कुदरते-माने[28] का हर सू[29] आशकार
मजहरे-अनवारे-हक[31] शाने-खुदा[32] है चांदनी

४ प्रकाश, ५, नदी, ६. प्रवाहित, ७ धरती ८ चांद के प्रकाश की चमक, ९ चारो ओर, १० धरती की सतह ११ जल्वा बिखेरने वाली, १२ ससार का बाग, १३ सुन्दर, १४ प्रकाश, १५ चन्द्र के आकार, १६ नम्रता १७ विनम्रता, १८ दया कृपा १९ दिल की कली, २० आनन्द दायक विशाल, २१ खुशगवार, २२ प्रात समीर, २३ शोभा बिखेरती हुई, २४ आनन्द का जोश, २५ गीत गाती हुई, २६ वाहवाह, २७ आरामदेह, २८ स्रष्टा की प्रकृति २९ तरफ, ३० प्रकट जाहिर, ३१ सत्य के प्रकाश का द्योतक, ३२. खुदा की शान।

आख़िरे-शब

शाज़ तमकनत

ये हवाएँ यह सितारों का सुहाना साया
आह यह खुनकी[1] यह ठंडक यह उदासी यह गुदाज़[2]
तैरती फिरती है पिछले की रसीली आवाज़
डालियाँ ओस की बूँदों से लदी जाती हैं
चाँदनी कोह[3] के माथे से उतर आई है
यह घनी रात यह महकी हुई[4] अफ़सुर्दा फ़ज़ा[5]
दूर तालाब के मंज़र[6] की सलोनी रंगत
फ़र्श पे लेटा हुआ नील गगन हो जैसे
यह शबे-माह[7] दुआओं में मगन हो जैसे

सुरमई धुंध में लिपटा हुआ बोझल मंज़र[8]
गुल ज़मीनों की खमोशी में यह सुर यह सरगम
ये चटानें यह तराशीदा[9] नगीं[10] फ़ितरत[11] के
यह खनक नर्म हवाओं की चटीली आवाज़
तूले-हिज्राँ[12] वो मसीहा[13] है कि जिस के हाथों
दिल के दुखने का भी अन्दाज़[14] बदल जाता है

नुकरई[15] गर्द[16] में चुपचाप खड़े हैं अशजार[17]
जुगनू उड़ते हैं कि सीने हुए शोलों की लप
तारे जिस तरह घनी झाड़ियों की गोद भरें
फैलती जाती है साया की मुकद्दस[18] महकें[19]
करवटें लेती हैं हरियाली की सोंधी लपटें
यह सिजल रैन यह संगीत यह तारों की फबन

१. ठण्डक, २. मृदुलता, ३. पर्वत, ४ सुगंध में डूबी हुई, ५. उदास वातावरण, ६. दृश्य, ७. चाँदनी रात, ८. दृश्य, ९ काटे हुए, १० नगीने, ११. प्रकृति, १२. विरह की लम्बाई, १३. इलाज करने वाला, १४. ढंग, १५. चाँदी की, १६ धूल, १७. वृक्ष, १८. पवित्र, १९. सुगंध।

कौन सुन पायेगा फ़ितरत[२०] की ज़बाने-मासूम[२१]
जाने कब दीद:-ए-इनसां[२२] में धनक[२३] उतरेगी
अय मिरी झूमती, इठलाती ज़मी करवट ले
दिले-हर ज़र्रा[२४] धड़कता है कहीं आहट ले

दूर टूटे हुये क़िलए का पुर असरार[२५] सुकूत[२६]
ख़ामुशी[२७] सर को झुकाये हुए मेहराबों में
ने कुलाहे-सरे-शाहा[२८] न शिकोहे-औरंग[२९]
ने गुल-नग़मा न[३०] आहंग[३१] पसे-पर्द:ए-चंग[३२]
गुगं[३३] है ख्वाजगि-ए-रक़्स-ओ-तरब[३४] बरसों से
ख़न्दाज़न[३५] है क़मरे-आख़िरे-शब[३६] बरसों से
ने कनीज़ाने - समनफ़ाम-ओ-मसीहानफ़सा[३७]
दिलबरा,[३८] लालारुख़ा,[३९] मू कमरा,[४०] सर्वक़दा[४१]
ख़ुशदिला,[४२] ख़ुशबदनां,[४३] ख़ुशदहना,[४४] ख़ुश नज़रा[४५]
मक़तले-ऐश[४६] में मसलूबे-हवस[४७] होके रहीं
गुमशुदा[४८] काफ़ले[४९] की आहे-जरस[५०] होके रहीं

चीख़ते मलबे[५१] पे सन्नाटे के क़दमों के निशां[५२]
भीगती रातों में चुपचाप लहू देते हैं
पास ही सोये हुए कतबों[५३] के कजाक[५४] हुरूफ़[५५]
अपने खोये हुए नक़्क़ाश[५६] को देते हैं सदा[५७]
चांदनी ख़स्ता-ओ-दरमान्दा[५८] खड़ी है ख़ामोश[५९]

२० प्रकृति, २१. निष्पाप ज़बान, २२. मानव की आंखें, २३. इन्द्र धनुष, २४. हरकण का दिल, २५. रहस्यमय, २६. सन्नाटा, २७. निस्तब्धता, २८. बादशाह के सर का मुकुट, २९. सिंहासन का दबदबा, ३०. श्रेष्ठ गीत, ३१. आवाज़, ३२. चंग के पर्दे के पीछे, ३३. गूंगा, ३४. नृत्य और खुशी की हुकूमत, ३५. मुस्कुराता हुआ, ३६. आखिरी रात का चांद, ३७. हज़रत ईसा जैसी श्वास वाली (कहते हैं कि हज़रत ईसा की सांस से मुर्दे जीवित हो जाते थे) और चमेली के रंग की दासियां ३८. दिल ले जाने वालियां, ३९. लाले जैसे मुखवाली, ४०. बाल जैसी पतली कमर वालियां, ४१. सरो जैसे कद वाली, ४२. प्रसन्नचित्त, ४३. सुन्दर शरीर, ४४. सुन्दर मुख, ४५. सुन्दर नेत्र, ४६. ऐश का वधस्थल, ४७. अत्यधिक लालसा की सूली पर चढ़ा दी गयीं, ४८. खोये हुए ४९. कारवां, ५०. घण्टी का आर्तनाद, ५१. घूरा, ५२. चिह्न, ५३. कब्र पर ५४. आड़े-तिरछे, बेडौल, ५५. अक्षर, ५६. नक्श खोदने वाला, ५७. आवाज़. सगा पत्थर, ५८. जर्जर और असहाय, ५९. मौन ।

दामने-कोह[६०] में अलगोज़े[६१] का लहरा गूंजा
कोई चरवाहा दुखे दिल को लिये जागा है
कितने पुर दर्द[६२] है सुर कितनी हज़ी[६३] है यह अलाप
जिस तरह चोटें रगे-जाँ[६४] की चमकती जायें
चाँद लचकाता है किरनों के चमकते हुए तीर
किस मुसव्विर के रचाने का तमन्नाई[६५] है
रसमसे जंगलों की नीन्द में डूबी हुई लय
रंगे-मंज़र[६६] में फ़ज़ा-ए-दिले-शब[६७] घोलती है
अधखिले गुंचों[६८] में शबनम[६९] की तरी[७०] तोलती है
यह फ़ज़ा[७१] रसभरी कलियों की गिरह खोलती है
यह खुनक[७२] रात सितारों के गुहर[७३] रोलती है
साँवली चाँदनी, मदमाती छलक पड़ती है
इन हवाओं में गुलाबी[७४] सी झलक पड़ती है

टिमटिमाती है कहीं दूर चरागों की लवें
रहगुज़र[७५] नीन्द भरी आँखों से यूँ तकती है
कि पशेमाँ[७६] न हो मेहमाने-मुबुकगाम[७७] कोई
बज़्म-ए-जादा[७८] पे न आये कहीं इल्ज़ाम[७९] कोई
यह सरे-चर्ख़[८०] दमकता हुआ महताब[८१] नहीं
रात का नाग है काढ़े हुए मुकेश[८२] का फन
गीत पे सन्नाटे की बदमस्त हुआ जाता है

भर-भर उठती है लहराई हुई चन्द्रकिरन
यह उदाहट यह धुंधलका यह कसक यह महकार
कुन्दनी[८३] पंख समेटे हुए तारों के बदन
अर्श[८४] के नील में पानी में घुले जाते हैं

६० पहाड़ का दामन, ६१. बांसुरी, ६२. दर्द भरे, ६३. शोकातुर, ६४ प्राण धमनी ६५ इच्छुक, ६६ दृश्य का रंग, ६७ रात के दिल का वातावरण, ६८ कलियाँ ६९ ओस ७० आर्द्रता, ७१. वातावरण, ७२. ठण्डी, ७३ मोती, ७४ मदिरा, ७५ मार्ग, रास्ता ७६ लज्जित, शर्मिन्दा, ७७ मदगति मेहमान, ७८ मार्ग की शान ७९ आरोप, ८० आकाश पर, ८१ चन्द्र ८२ चांदी सोने के तारों का झालर, ८३. सुनहरी, ८४. आकाश।

ओस खाये हुए रुखसार[८५] सबा[८६] की रगत
पो का छलका हुआ शफ्फाफ़[८७] लहू है कि नही
महका-महका हुआ सोने का धुआँ छाया है
किस्मते-शर्के-हसी[८८] जाग रही है शायद
मेरी महबूब[८९] जमी[९०] जाग रही है शायद

८५ कपोल, ८६ हवा, मर्मार, ८७ स्वच्छ, ८८ सुन्दर पूर्व का भाग्य ८९ प्रेमिका, ९० धरती ।

चौथा अध्याय

हमारे मौसम

मौसमों का गीत

अली सरदार जाफ़री

कितने दिलकश[1] हैं मिरे मुल्क[2] के मौसम, इनमें
हुस्न[3] की बात करें, इश्क़[4] पर इसरार[5] करें
नूरे-महबूब[6] से रौशन[7] करें आंखों के चराग़
फूल की तरह से ज़िक्रे-लब-ओ-रुख़सार[8] करें
मुसहफ़े-हक़[9] की तरह खोलें किताबे-दिल[10] को
जिसमें जंग[11] और जदल[12] का कोई अफ़साना[13] नहीं
फ़स्ले-गुल[14] फ़स्ले-ख़िज़ां[15] फ़स्ले-ज़मिस्तां[16] है मगर
मौसमे-जंग[17] नहीं, मौसमे-वीराना[18] नहीं

गर्मियां आई हैं बरसाती हुई अंगारे
[illegible] शोला-बदन[19] धूप पे आया है शबाब[20]
लोग तालाबों में उतरे हैं नहाने के लिए
तहनशीं[21] होती चली जाती है हर चादरे-आब[22]
इक ज़रा देर को थोड़ा सा सुकूं[23] मिलता है
जिस्म[24] को छूता है जिस वक़्त ख़ुनुक[25] शाम का हाथ
इतनी सोज़िश[26] है कि बस सर्द[27] हुई गर्मिः-ए-इश्क़[28]
प्यार के मुंह से निकलती ही नहीं प्यार की बात

नींद आ सकती नहीं इश्क़[29] के बीमारों को
इन दिनों जागते रहने के बहाने हैं बहुत

१. मोहक, २. देश, ३. सौंदर्य, ४. प्रेम, ५. आग्रह, ६. प्रेमिका की आभा, ७ प्रकाशित, ८. होंठ और कपोलों का ज़िक्र, ९. कुरआन, १० दिल की किताब, ११. युद्ध, १२. बैर, १३. कहानी, १४. बहार का मौसम, १५. पतझड़, १६ शीतकाल, १७. युद्ध का मौसम, १८. निर्जनता का मौसम, १९. प्रज्वलित शरीर, २०. यौवन, २१. नीचे पैठना, २२. पानी की चादर, २३. शांति, २४. शरीर, २५. ठण्डी, २६. जलन, २७. ठण्डी, २८. प्रेम की गर्मी, २९. प्रेम ।

तैरती रहती है दुनिया की सुरीली ताने
गीत शीरी[30] है बहुत, नर्म[31] तराने[32] है बहुत
आबे-सदल[33] मे डुबोये हुए पखो की हवा
अपने महके[34] हुए हाथो से थपक देती है
और धडकते हुए सीनो पे धडकते हुए हार
हर लडी मोती की बस जान ही ले लेती है

आग बरसाती हुई धूप की किरनो का जलाल[35]
तेज और तुन्द[36] हो जिस तरह हवन का शोला[37]
दुश्मनी साँप की ताऊस[38] से बस खत्म हुई
वो भी ताऊस से देरीना[39] अदावत[40] भूला
इतनी गर्मी है कि खुलती नही मिनकार[41] उसकी
भूक बाकी नही, क्या जाये गिजा[42] के पीछे
धूप की जलती हुई आग से बचने के लिए
साँप आ बैठा है रगीन परो के नीचे

मेरी जा, अय मिरे नग्मो[43] की जवा[44] शहजादी[45]
फस्ले-गमा[46] सहर-ओ-शाम[47] तुझे राम आये
चाँदनी रात सजाये तिरी महकी[48] हुई सेज[49]
जिस्मे-सीमी[50] के लिए फूलो के तहने लाये
तेरी सुब्हो[51] को रखे सर्द[52] कवल की भीने
ठडे पानी के उछलते हुए फव्वारो से
तेरी शामो को तिरे चाहने वाले मिल जाए
जो चुने फूल तिरे हुस्न[53] के गुलजारो[54] से

३० मधुर, ३१ कोमल, ३२ गीत, ३३ चन्दन का पानी ३४ सुगन्धित, ३५ प्रताप, प्रचण्डता, ३६ तीव्र, ३७ ज्वाला, ३८ मोर, ३९ पुरानी, ४० शत्रुता, ४१ चोंच, ४२ खुराक, ४३ गीत, ४४ जवान, ४५ राजकुमारी, ४६ ग्रीष्म ऋतु, ४७ सुबह शाम, ४८ सुगंधित, ४९ शैया, ५० चाँदी का शरीर, ५१ प्रभात, ५२ ठण्डे, ५३ सौंदर्य, ५४ उपवन ।

धूप बेजान[55] हो गीतों की घटा छाई हो
तू हो, अहबाब[56] हों, और गोश:-ए-तन्हाई[57] हो

देखना मेघ का वो शाह सवार[58] आ पहुंचा
गूंज उठे कोह-ओ-दमन[59], गूंज उठे दश्त-ओ-जबाल[60]
घन गरज वो है सिरी जान, कि शाही डंके
जिस तरह बजते हैं मैदां[61] में बसद-शाने-जलाल[62]
बिजली लहराती है शोलों[63] का सुनहरी परचम[64]
अब्र[65] के फील[66] पे बारिश[67] का शहंशाह सवार
घर से सब उसके सुवागत को निकल आये हैं
गोल[68] उश्शाक[69] के बदमस्त[70] हसीनों[71] की कतार[72]
फौजें बादल की चली आती हैं करती हुई कूच[73]
चोट पड़ती है गरजते हुए नक्कारों[74] पर
आग की डोर है रगों की कड़कती है कमान[75]
बिजलियां बांधी गई इन्द्र धनुष पर चमककर
छींटा बारिश का है या तीरों की बौछारें हैं
जो किये देती हैं मतवालों[76] के दिल को छलनी
इश्क[77] तो जख्म-रसीदा[78] है, सितम दीदा[79] है
आज तो हुस्न[80] पे भी होती है नावकफिगनी[81]

ऐसा लगता है कि हमने लगा जंगल सारा
और नेपा[82] के दरख्तों[83] में नये फूल खिले

५५ निर्जीव, ५६ मित्रगण, ५७ एकांत, ५८ घुड़सवार, ५९ पहाड़ और टीले, ६०. जंगल और पहाड़, ६१ मैदान ६२ जलाल और शान से, ६३ ज्वाला, ६४ झंडा, ६५ बादल, ६६ हाथी, ६७ वर्षा, ६८ झुण्ड, ६९. प्रेमी (ब० व०), ७० मदोन्मत्त, ७१. सुन्दरियां, ७२. पंक्ति, ७३ मार्च, रवानगी, ७४ नगाड़ा, ७५. धनुष, ७६. मदमस्त, ७७. प्रेम, ७८ घायल, ७९ अन्याय पीड़ित, ८० सौंदर्य, ८१. तीरों की बौछार, ८२. वृक्ष विशेष ८३ वृक्षों।

शाख़ें[८४] बेताब[८५] हवाओं में निरित करने लगी
जैसे मदहोशी[८६] के आलम[८७] मे कोई रक़्स[८८] करें
आई नौरस्ता[८९] शगूफ़ो[९०] के लबों[९१] पर हलकी
दिलनवाज़ाना[९२] तबस्सुम[९३] की दिलआवेज़[९४] लकीर
दर्द बाक़ी है तपिश[९५] का न निशा[९६] गर्मी का
निकली बरसात जो पहने हुए पोशाके-हरीर[९७]

तुझको अय नूर[९८] की तस्वीर[९९], मुबारक[१००] हो ये दिन
लेके आये है जो घंघोर घटाओं का पयाम[१०१]
आतिशे-शौक[१०२] में जल जाये जवानी तेरी
नौ[१०३] उरूसी[१०४] को तिरी ऐश-ओ-मसर्रत[१०५] का सलाम
ज़िन्दगी जिससे तर-ओ-ताजा[१०६] है इस बारिश से
सब्ज[१०७] बेलो की तरह तू भी तर-ओ-ताजा रहे
मेरी महबूबा[१०८] पे हो रहमते-हक[१०९] की बारिश
जगमगाता हुआ रुख़सार[११०] रहे गाजा[१११] रहे

लो वो आती है खिजा[११२], गाव की क्वारी जैसे
नाज़-ओ-अन्दाज[११३] की जा[११४], हुस्न[११५] की नाज़ुक[११६] मूरत
बालिया धान की बालो मे सजा रक्खी है
दोनो रुख़सार[११७] दमकते[११८] है कंवल की मूरत[११९]
जिस्म[१२०] पर घास के फूलो का महकता[१२१] मलबूस[१२२]
अपनी रफ़्तार[१२३] से हंसों को भी शरमाती हुई
इसके स्वागत में चहक उठती है चिडिया जैसे
किसी माशूका[१२४] की पायल की सदा[१२५] आती है

८४. डालिया, ८५ व्याकुल, ८६ नशा, ८७ दशा, हालत, ८८. नृत्य, ८९ नव पल्लव, ९०. कली, ९१. होठ, ९२ मोहक, ९३ मुस्कुराहट, ९४ आकर्षक, ९५. गर्मी, ९६ निशान, ९७. रेशमी वस्त्र, ९८. प्रकाश, ९९. चित्र, १०० मगलकारक, १०१ सदेश, १०२ अभिलाषा की आग, १०३. नवीन, १०४. विवाह, शादी, १०५. खुशी और ऐश्वर्य, १०६. हराभरा, १०७. हरी, १०८. प्रेमिका, १०९. खुदा की रहमत, ११० कपोल, १११. पाउडर, मेक अप, ११२. पतझड़, ११३. नखरे और हावभाव ११४. प्राण, ११५. सौंदर्य, ११६. कोमल, ११७. कपोल, ११८. चमकते हैं, ११९. तरह, समान, १२०. शरीर, १२१. सुगंधित, १२२. वस्त्र, १२३. गति, १२४. प्रेमिका, १२५. आवाज ।

रात की मांग में तारों की सुनहरी अफ़शां[126]
ताजे-महताब[127] से कुछ और भी रौशन[128] है जबीं[129]
पैरहन[130], चांद की किरनों का चमकता रेशम
इतना शफ़्फ़ाफ़[131] कि बादल का कहीं नाम नहीं
हँसती है देख के मुंह चांद के आईने में
पड़ती है सांवले मुखड़े पे तबस्सुम[132] की फुहार
ऐसा लगता है कि नौ उम्र[133] है, दोशीज़ा[134] है
अभी आने को है भरपूर जवानी की बहार[135]

धान[136] के खेत, वो इस्तादा[137] समरबार[138] दरख़्त[139]
झूम उठते हैं जब आते हैं हवा के झोंके
लेके आग़ोश[140] में जब नाचती है बादे-ख़िज़ां[141]
फूल ही फूल बरस जाते हैं पेड़ों के तले[142]
झुरझुरी लेती है आहिस्ता[143] कंवल की झीलें
कलियां मुंह चूम के कलियों को झिझक जाती हैं
इश्क़[144] के मारों को आता है मुहब्बत का ख़याल[145]
ख़्वाहिशें[146] दिल के कटोरों[147] में छलक जाती हैं

इस ख़िज़ां[148] में भी मगर तू है बहारों की बहार[149]
नौजवां[150] जिस्म[151] के गुलरंग[152] शगूफ़े[153] फूटे
प्यार के हाथ मुहब्बत से संवारें तुझको
कभी होंटों कभी मुश्ताक़[154] निगाहों से छूं

१२६ चमक, १२७ चन्द्र मुकुट, १२८ प्रकाशमान, १२९. ललाट, १३०. वस्त्र, १३१. स्वच्छ, १३२. मुस्कुराहट, १३३. कम आयु, १३४. कुमारी, १३५. बसन्त, १३६. चावल, १३७. खड़े, १३८. फलों से लदे, १३९. वृक्ष, १४०. गोद, १४१. पतझड़ की हवा, १४२. नीचे, १४३. धीरे-धीरे, १४४. प्रेम, १४५. ध्यान, १४६. इच्छाएँ, १४७. प्याला, १४८. पतझड़, १४९. बसन्त, १५०. नवयुवक, १५१. शरीर, १५२. लाल, गुलाबी, १५३. कलियां, १५४ उत्सुक।

मुस्कुराये तिरे पैरो की हिना,[१५५] और महके
ज़ाफ़रां[१५६] जिस्म[१५७] की सीने का सुनहरा संदल[१५८]
दिल पे उश्शाक[१५९] के ज़ुल्फो[१६०] की घटाएँ बरसे
ढूंडे खुद भौंरो को हसती हुई आँखो के कवल

जा चुकी फस्ले-खिज़ा[१६१] फस्ले-जमिस्ता[१६२] आयी
कोई तनहा[१६३] सी कली शाख[१६४] पे नमदीदा[१६५] है
अपने दामन[१६६] मे लिये अपने सुनहरे मोती
खोशः-ए-गंदुमे[१६७]-नौ खेत मे बालीदा[१६८] है
गम न कर जाने-जहा[१६९] लुट गई गर दौलते-गुल[१७०]
सख्त जा[१७१] फूल कोई अब भी नजर आता है
बर्फ-ओ-बारा[१७२] मे भी बुझना नही शोला उसका
सर्द[१७३] और तेज हवाओ मे भी लहराता है

बर्फ आलूदा[१७४] हवाओ मे लरजती[१७५] बेलें
याद आती है उन्हे मौसमे-ताबिस्ता[१७६] की
कुछ तो मिल जाती है यादो मे हरारत[१७७] दिल को
जुस्तुजू[१७८] दर्द को है खोये हुए दरमा[१७९] की
जिन्दगी की वो तडप है कि अभी जिन्दा है
फिर भी पीली सी नजर आती है कुम्हलाई हुई
जिस तरह हिज्र[१८०] की मारी हो सुहागिन कोई
जैसे दोशीज़ा[१८१] कोई इश्क[१८२] की तरसाई हो

१५५. मेंहदी, १५६. केसर, १५७ शरीर, १५८ चन्दन, १५९ प्रेमी (ब० व०), १६०. बाल, लटें, १६१ पतझड का मौसम, हेमन्त ऋतु, १६२ सर्दी का मौसम, १६३. अकेली, १६४. डाली, १६५ सजल नेत्र, १६६ आंचल, १६७ गेहूं का बाली, १६८. विकसित, १६९. समार के प्राण, १७० फूलो की दौलत, १७१. मजबूत, १७२. बर्फ और वर्षा, १७३. ठण्डी, १७४ बर्फ में डूबी हुई, ठण्डी, १७५. कांपती, १७६ ग्रीष्म ऋतु, १७७. गर्मी, १७८. खोज, १७९. इलाज, १८०. विरह, १८१. कुमारी, १८२. प्रेम।

काश[183] यह फ़स्ले-ज़मिस्तां[184] हो तिरी फ़स्ले-उमीद[185]
हर घड़ी आये मुसर्रत[186] के फ़साने[187] लेकर
मुन्तज़िर[188] रहती हैं जिसके लिए दोशीज़ाएँ[189]
रोज़-ओ-शब[190] आयें वो राहत[191] के ख़ज़ाने लेकर
गाँव में शोर[192] है, हंगामा है आवाज़ें हैं
पक चुके खेत तो खलियान में आता है अनाज
दूर आकाश पे उड़ते हुए बगलों की क़तार[193]
हुस्न[194] को तेरे मिले इश्क़-ओ-मुहब्बत[195] का ख़िराज[196]

ऐ मेरी जां, मुझे इज़्ने-सुख़न आराई[197] दे
नौ बहार[198] आई है, नग़्मों[199] पे बहार आ जाये
नौ बहाराने-गुल अन्दाम[200] के दिल हमने लगें
इनकी बेताब[201] तमन्ना[202] को क़रार[203] आ जाये
भर गई नाज के ढेरों से ज़मीं[204] की गोदी
बढ़ गई और भी हर सीने की शौक़-अंगेज़ी[205]
दूर से आती है सारस के कलेजे की पुकार
ख़्वाबों[206] में होती है, जज़्बात[207] की रंग - आमेज़ी[208]

फ़स्ल[209] यह वो है कि ख़ुश होते है सब मिल जुलकर
जमा हो जाते है जब जलती हुई आग के पास
घर से बाहर जो निकलते है तो सूरज के लिए
सर्दि-ए-जिस्म[210] बढ़ा देती है कुछ धूप की प्यास

१८३. क्या ही अच्छा हो, १८४. शरद् ऋतु, १८५ आशाओं का मौसम, १८६. ख़ुशी आनन्द, १८७. कहानियाँ, १८८. प्रतीक्षा में, १८९. कुमारियाँ, १९०. दिन-रात, १९१. सुख, चैन, १९२. कोलाहल, १९३. पंक्ति, १९४. सौंदर्य, १९५. प्रेम, १९६. लगान, राजकर, १९७. शाइरी का निमंत्रण, १९८. नव बसन्त, १९९. गीत, २००. फूल जैसे शरीर, २०१. व्याकुल, २०२. अभिलाषा, २०३. चैन, २०४. धरती, २०५. उत्सुकता, २०६. स्वप्न, २०७. भावनाएँ २०८. रंग की मिलावट, २०९. मौसम, ऋतु, २१०. शरीर की ठण्डक।

ज़ेबे-तन[२११] अतलस-ओ-पशमीना-ओ-संजाब-ओ-समोर[२१२]
अब जो चलती हैं चलें सर्द[२१३] हवाएँ हरसू[२१४]
खिड़कियां बन्द है और लिपटी हुई है तन से
भीनी भीनी किसी दोशीज़ा[२१५] बदन की ख़ुशबू

नौबहारों[२१६] के यह दिन तुझको करें आसूदा[२१७]
रगे-आरिज़[२१८] से तिरे हुस्न[२१९] की हो गुलपोशी[२२०]
ख़ुश करे इश्क़[२२१] की गुस्ताख़[२२२] निगाही तुझको
तुझको सरशार[२२३] करे लज़्ज़ते-हमआग़ोशी[२२४]
नैशकर[२२४/२] रस की लताफ़त[२२५] से दहन[२२६] को भर दे
लबे-शीरीं[२२७] में हो चावल के निवालों[२२८] की मिठास
तेरी हस्ती[२२९] से रहे दूर बहुत दर्दे-फ़िराक़[२३०]
तेरी क़िस्मत में नहीं हिज्र[२३१] की रातों का हिरास[२३२]

आख़िरश[२३३] मौसमे-गुल[२३४] वीर वसंत आ ही गया
अपने हाथों में लिये इश्क़[२३५] की रंगीन कमान[२३६]
काले भौंरों की क़तारों[२३७] की लचकती डोरी
आम के बौर के तीर आते है या प्रेम के बाण
छेदते हैं ये मिरे दिल को तिरे सीने को
हम तो अय चन्द्र वदन इश्क़[२३८] के मतवाले है
हमने कब इश्क़ के देवता से किया है इंकार
हमने क्या शौक़[२३९] के पैग़ाम[२४०] कभी टाले है

२११. शरीर की शोभा २१२ कपड़े के प्रकार, २१३ ठण्डी, २१४. हर तरफ़, २१५. कुमारी, २१६ नव वसन्त, २१७. सन्तुष्ट, तृप्त, २१८ कपोलों का रंग, २१९ सौंदर्य, २२० फूलों से ढकना, २२१. प्रेम २२२. उद्दण्ड, २२३ तृप्त, २२४ आलिंगन का सुख, २२४।२ गन्ना, २२५. कोमलता, मृदुलता, २२६. मुँह. २२७. मधुर होंठ, २२८. कौर, ग्रास, २२९. अस्तित्व, २३०. विरह का दर्द, २३१. विरह, २३२. निराशा, २३३. आख़िर में, २३४. वसन्त, २३५. प्रेम, २३६. धनुष, २३७ पंक्ति. २३८ प्रेम, २३९. आकांक्षा, २४०. सन्देश।

जोशे-गुल[२४१] यह है कि शाखों[२४२] की झुकी है गर्दन
और हवा चलती है महकी हुई इतराई हुई
झीलें हैं सुर्ख़[२४३] कटोरों में कंवल के रौशन[२४४]
औरतें इश्क़ की किरनों से हैं गदराई हुई
दिन सुबुक,[२४५] नर्म, रवां,[२४६] शाम हसीन-ओ-शादाब[२४७]
दिल के ले लेने का अन्दाज़[२४८] इन्हें आता है
जो भी इस फ़स्ल में बालीद-ओ-रोईदा[२४९] है
बू-ए-गुल[२५०] रंगे-बहारां[२५१] में बदल जाता है

बेला फूला है कि जलते हैं बयाबां[२५२] में चराग़
नूर[२५३] का कुंज नज़र आता है मधुबन जैसे
जिस तरह इश्क़ में हँसती है हसीना[२५४] कोई
जगमगा उठते हैं रुख़सारों[२५५] के गुलशन[२५६] जैसे
ज़ाहिदे-ख़ुश्क[२५७] को भी ख़ैर[२५८] नहीं है कि रवां[२५९]
हर तरफ़ हुस्न की और इश्क़ की तस्वीरें[२६०] हैं
नौजवां सीनों में जज़्बात[२६१] हैं या आवेज़ां[२६२]
वस्ल[२६३] के ख़्वाबों[२६४] की हँसती हुई तस्वीरें[२६५] हैं

फ़स्ले-गुल[२६६] आई है या फ़स्ले-ख़िज़ां[२६७] आई है
एक माशूक-ए-खुर्शीदे-जमाल[२६८] आई है
कितने दिलकश[२६९] हैं मिरे मुल्क[२७०] के मौसम,[२७१] इनमें
हुस्न की बात करें इश्क़ पर इसरार[२७२] करें
नूरे-महबूब[२७३] में रौशन करें आँखों के चिराग़
फूल की तरह में ज़िक्रे-लब-ओ-रुख़सार[२७४] करें

२४१ फूलों का जोश, २४२ डालियाँ, २४३ लाल, २४४ प्रकाशमान, २४५ नाज़ुक, २४६ प्रवाहित, २४७ सुसिक्त और सुन्दर, २४८ ढंग, २४९ विकसित, २५०. फूल की सुगंध, २५१ बहारों का रंग, २५२ जंगल, २५३ प्रकाश, २५४ सुन्दरी, २५५ कपोल, २५६ उपवन, २५७ शुष्कविरक्त, २५८ कुशल, २५९ गतिशील, २६० आभा, चमक, २६१. भावनाएँ, २६२ लटकती हुई, २६३ मिलन, २६४. स्वप्न, २६५ चित्र, २६६ बसन्त, २६७ हेमन्त, २६८. सौंदर्य के सूर्य की प्रेमिका, २६९ मोहक, २७०. देश, २७१. ऋतुएँ, २७२ आग्रह, २७३ प्रेमिका की आभा, २७४. कपोलों और होंठों का ज़िक्र।

मुसहफ़े-हक़[२७५] की तरह खोलें किताबे-दिल[२७६] को
जिसमें जंग और जदल[२७७] का कोई अफ़साना नहीं
फ़स्ले-गुल[२७८] फस्ले-खिज़ां[२७९] फ़स्ले-ज़मिस्तां[२८०] है मगर
मौसमे-जंग[२८१] नहीं, मौसमे-वीराना[२८२] नहीं

(कालिदास की नज़्म 'ऋतु संहार' से माखूज़)

सावन

मुहम्मद अफ़ज़ल, 'अफ़ज़ल'

रमीदा[१] बरसरम[२] हंगामे-बरसात[३]
सजन परदेस है, हैहात! हैहात[४]

घटा कारी चहारो ओर छाई
बिरह की फौज ने कीनी चढाई

अरे जब कूक कोयल ने सुनाई
तमामी[५] तन बदन मे आग लाई

अंधेरी रात जुगनू जगमगावे
जले तन को मिरे दूना जलावे

सुनी जब मोर की आवाज बन सूं
शिकेब[६] अज़ दिल[७] गया, आराम तन सूं

२७५. क़ुरान, २७६. दिल की किताब, २७७ दुश्मनी, २७८ बसन्त, २७९ हेमन्त, २८०. जाड़े, २८१ युद्ध का मौसम, २८२. तबाही व बरबादी का मौसम।

सावन

१. आ पहुंचा, २. सर पर, ३. बरसात का समय, ४ शोक का सम्बोधक—हाय, हाय, ५. सारा ६ धैर्य, ७. दिल से।

भरे जल थल भया सरसब्ज़[8] आलम[9]
रहा जल वस्ल[10] का सूखा निहालम[11]

हिंडोले चढ़ रहें सब नार पिऊ संग
हसद[12] की आग ने जारा[13] मिरा रंग

चला सावन मगर साजन न आये
अरी किन दुतियों[14] ने टोने चलाये

भादों

मियह्[15] बादर चहारो ओर छाये
लिया मुझ घेर, पिऊ अजहू न आये

झडी पडने लगी और रद[16] गरजा
तमामी तन बदन ज्यों जान लरजा[17]

अकेली देख निस[18] कारी डरावे
तमामी रैन दिन बिरहा मनावे

घटा कारी के अन्दर बीज[19] चमके
डरे जिवरा कड़क सुन देह धमके

पिया बिन सेजरी[20] नागिन भई रे
हमन खेलन की सगरी सुध गई रे

सभी सखियां पिया संग सुख करत है
हमन सी पापियां नित दुख भरत हैं

८. हरा-भरा, ९. ससार, १०. मिलन, ११. पौधा, १२. ईर्ष्या, १३. जल गया, १४. लगाने-बुझाने वाली, १५. काली, १६. बादल, १७. कांपा, १८ रात, १९. बिजली, २०. सेज।

पिया परदेश जा हम कू बिसारा
न जानूं क्या गुनह देखा हमारा

घटा गम की उमड छाती सूं आई
अरे दो नैन ने बरखा लगाई

कहो पिऊ की खबर पूछू किसे जाय
लिखू पतियां, किसे देऊं, हाय रे हाय

दुहल[21] रेहलत[22] का भादों ने बजाया
अजहू लग सावरा परदेस छाया

(माखूज अज 'विक्ट कहानी')

बरसात

मीर तकी 'मीर'

रुत है बरसात की बहुत प्यारी
मौजज़न[1] झीलें नद्दियां सारी

खेत धानों के लहलहे शादाब[2]
कर रहे है नज़र की दिलदारी[3]

क्या हरी दूब जंगलों मे है
सब्ज़[4] मखमल मे है सिवा प्यारी

हर तरफ खिल रहे है गुल[5] बूटे
जिनसे शर्मिन्दा बाग की क्यारी

२१. ढोल, नक्कारा, २२. मृत्यु।

बरसात

१ प्रवाहित, मौजें मारती हुई, २. हरे-भरे, ३, हमदर्दी, ४. हरा, ५. फूल-पत्तियां।

नन्हीं-नन्हीं बरसती हैं बूँदें
रूह[६] पर होती है ख़ुशी तारी[७]

सोंधी सोंधी ज़मीन की मट्टी
भीनी भीनी चमन की बू[८] प्यारी

कोकिला बगला कोयलें ताऊस[९]
अपनी तानें सुनाते हैं प्यारी

क़ाज़ें[१०] मुर्ग़ाबियाँ[११] बतें[१२] मुर्ख़ाब[१३]
झीलों के साथ करती हैं यारी[१४]

शफ़क़े-सुर्ख़[१५] रंग लाई है
लाला[१६] रंग है सिपहरे-ज़ंगारी[१७]

बदलियाँ छा रही हैं गर्दूं[१८] पर
ज़र्द[१९] ऊदी[२०] मनहरी ज़ंगारी[२१]

सैर मछली भवन की चलकर देख
क्या नुमायाँ[२२] है क़ुदरते-बारी[२३]

मछलियों की चमक में है छलबल
जैसे रक़्साँ[२४] बुताने-फ़र्ख़ारी[२५]

६. आत्मा, ७. छायी हुई, ८. गंध, ९. मोर, १०. जंगली बतखें, ११. जलमुर्गी, १२. बतखें, १३. चकवा, १४. दोस्ती, १५. लाली, १६. लाल, १७. ज़ंग लगा हुआ आकाश, १८. आकाश, १९. पीली, २०. भूरी, २१. ज़ंग के रंग की, २२. प्रकट, २३. ख़ुदा की क़ुदरत, २४. नृत्य करते हुए, २५. मूर्तियाँ।

कसरते-बारिश[1]

मीर तकी 'मीर'

क्या कहूं अबके कैसी है बरसात
जोशे-बारां[2] से बह गये है पात

बूंद थमती नही है अबके साल
चर्ख[3] गोया[4] है आब दुर गरबाल[5]

जैसे दरिया उबलते देखे है
यां सौ परनाले चलते देखे है

वही यकसा[6] अंधेर बरसे है
आसमा[7] चश्मे-वा[8] को तरसे है

माह-ओ-खुर्शीद[9] अब निकलते है
तारे डूबे हुए उछलते है

रोज़-ओ-शब[10] या हमेशा झमका है
इन दिनो रंगे-बर्क[11] चमका है

अब्रे- रहमत[12] है या कि जहमत[13] है
एक आलम[14] गरीके-रहमत[15] है

न है जलसा[16] न रब्ते-यारा[17] है
शहर मे है तो बाद-ओ-बारा[18] है

१. वर्षा की अधिकता, २. वर्षा का जोर ३. आकाश, ४. अर्थात्, ५. छलनी, ६ एक-जैसा ७. आकाश, ८. खुली आंख, ९. चांद-सूरज, १०. रात-दिन, ११. बिजली का रग, १२. दया के बादल, १३. कष्ट, १४. समार, १५. रहमत मे डूबा हुआ, १६. महफिल, १७. दोस्तो से मेल-जोल, १८. हवा और बारिश ।

आदमी हैं सो कब निकलते है
मर्दमे-आबी[19] फिरते चलते है

हर तरफ है नजर मे अब्रे सियाह[20]
पानी है जिस तरफ कोकरिये निगाह

लिखिये क्या मीर मेंह की तुगियानी[21]
हो गई है सियाही भी पानी

(माख्ज़ अज़ 'जश्ने-होली-ओ-कतखुदाई')

बरसात की बहारें

'नजीर' अकबराबादी

है इस हवा मे क्या-क्या बरसात की बहारे
सब्जों[1] की लहलहाहट, बागात[2] की बहारे
बूंदो की झमझमाहट, कतरात[3] की बहारे
बरसात के तमाशे, हर घात की बहारे
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारे

बादल हवा के ऊपर हो मस्त छा रहे है
झडियो की मस्तियो से धूमे मचा रहे है
पडते है पानी हरजा,[4] जल-थल बना रहे है
गुलजार[5] भीगते है सब्जे[6] नहा रहे है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारे

१६ पानी मे रहने वाले मानव, २० काले बादल २१ तूफान।

बरसात की बहारें

१ हरियाली, २ बाग (ब० व०), ३. बूदे, ४, हर जगह, ५. बाग, उपवन, ६ हरियाली।

मारे है मौज डाबर दरिया[7] दुबंड[8] रहे है
मोर-ओ-पपीहे कोयल क्या-क्या रुमड[9] रहे है
झड कर रही है झरियाँ, नाले उमड रहे है
बरसे है मेह झडाझड़ बादल चुमड रहे है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

जंगल सब अपने तन पर हरियाली सज रहे है
गुल, फूल, झाड, बूटे कर अपनी धज रहे है
बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे है
अल्लाह के नकारे नौबत के बज रहे है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

सब्जों की लहलहाहट, कुछ अब्र[10] की सियाही[11]
और छा रही घटाएँ, सुर्ख[12] और सफेद काही
सब भीगते है घर घर ले माह ता ब माही[13]
यह रंग कौन रंगे तेरे सिवा इलाही[14]
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

क्या क्या रखे है यारब[15] सामान तेरी कुदरत[16]
बदले है रंग क्या-क्या हर आन तेरी कुदरत
सब मस्त हो रहे है पहचान तेरी कुदरत
तीतर पुकारते है "सुब्हान[17] तेरी कुदरत"
क्या-क्या मची है यारो बरसात की बहारें

बोले बयें, बटेरें, कुमरी[18] पुकारे कू कू
पी पी करे पपीहा, बगले पुकारें तू तू
क्या हुदहुदों[19] की हक-हक क्या फाख्ता की हू-हू
सब रट रहे है तुझको, क्या पख क्या पखेरू
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

७ नदियाँ, ८ जोश मारना, ६. शोर मचाना, १०. बादल, ११. अंधकार, १२ लाल, १३. चांद और मछली, अर्थात्, ऊपर से नीचे तक, १४. खुदा, १५. या खुदा, १६ लीला, १७. वाह वाह, १८ एक पक्षी, १६. एक पक्षी।

जो खुश है वो खुशी में काटे हैं रात सारी
जो ग़म में है, उन्हें पर गुजरे है रात भारी
सीनों से लग रही है जो है पिया की प्यारी
छाती फटे है उनकी जो हैं बिरह की मारी
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

जो वस्ल[20] में है उनके जूड़े महक रहे हैं
झूलों में झूलते है, गहने झमक रहे हैं
जो दुख में है, सो उनके सीने फड़क रहे हैं
आहें निकल रही है, आंसू टपक रहे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

गाती है गीत कोई झूले पे करके फेरा
मारू जी[21] आज कीजो या रैन का बसेरा
है खुश, किसी को आकर है दर्द-ओ-गम[22] ने घेरा
मुँह जर्द[23] बाल बिखरे और आँखों में अंधेरा
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

और जिनको अब मुहैया[24] हुस्नों[25] की ढेरियां है
सुर्ख[26] और सुनहरे कपड़े इशरत[27] की घेरियां है
महबूब[28] दिलबरों[29] की जुल्फें[30] बिखेरियाँ हैं
जुगनू चमक रहे हैं, रातें अंधेरियाँ है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

कितनों को महलों अन्दर है ऐश[31] का नजारा[32]
या सायबान[33] सुथरा या बांस का ओसारा[34]
करता है सैर कोई कोठे का ले सहारा
मुफलिस[35] भी कर रहा है पौले तले गुजारा
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

२० मिलन, २१. जगत्, लड़का, माशूक को इस तरह मुखातिब किया जाता है। २२ शोक, २३. पीला, २४. प्राप्त, २५ सुन्दरी, २६. लाल, २७. ऐश्वर्य, २८. प्रेमिका, २६. दिल लेनेवाला, ३०. बाल, लटें, ३१. विलास, ३२. दृश्य, दर्शन, ३३. छज्जा, ३४. बरामदा ३५ ग़रीब, निर्धन।

कोई पुकारता है लो यह मकान[३६] टपका
गिरती है छत की मट्ठी और सायबान[३७] टपका
छलनी हुई अटारी,[३८] कोठा निदान टपका
बाक़ी था इक ओसारा सो वह भी आन टपका
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

सब्ज़ों[३९] पे बीर बहूटी,[४०] टीलों ऊपर धतूरे
पिस्सू से मच्छरों से रोये कोई बिसूरे
बिच्छू किसी को काटे कीडा किसी को घूरे
आगन मे कनसलाई, कोनों मे कनखजूरे
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

जिस गुलबदन[४१] के तन में पोशाक[४२] सोसनी[४३] है
सो वह परी तो ख़ासी काली घटा बनी है
और जिसपे सुर्ख़[४४] जोडा, या ऊदी[४५] ओढनी है
उस पर तो सब घुलावट बरसात की छनी है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

और जिस सनम[४६] के तन में जोडा है जाफ़रानी[४७]
गुलनार[४८] या गुलाबी, या जर्द,[४९] सुर्ख,[५०] धानी[५१]
कुछ हुस्न[५२] की चढाई और कुछ नई जवानी
झूलों मे झूलते है, ऊपर पड़े है पानी
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

कोई तो झूलने मे झूले की डोर छोडे
या साथियों में अपने पाँव से पाव जोडे
बादल खडे है सर पर बरसे है थोड़े-थोडे
बूंदों से भीगते हैं लाल और गुलाबी जोडे
क्या क्या मची हैं यारो बरसात की बहारें

३६. घर, ३७. छज्जा, ३८. कोठा, ३९. हरियाली, ४०. लाल मख़मल जैसा कीड़ा, ४१. फूल जैसे शरीरवाली, ४२. वस्त्र, ४३. नीली, ४४. लाल, ४५. भूरी, नीली, ४६. मूर्ति, प्रेमिका, ४७. केसरी, ४८. लाल, अनार के रंग का, ४९. पीला, ५०. लाल, ५१. हल्का हरा, ५२. सौंदर्य ।

कितने शराब पीकर हो मस्त छक रहे हैं
मय[53] की गुलाबी[54] आगे प्याले छलक रहे हैं
होता है नाच घर-घर घुंघरू झनक रहे हैं
पड़ता है मेह झड़ाझड़ तबले खड़क रहे हैं
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

हैं जिनके तन मुलायम,[55] मैदे की जैसे लोई
वो इस हवा में खासी ओढ़े फिरे हैं लोई
और जिनकी मुफ़लिसी[56] ने शर्म-ओ-हया[57] है खोई
है उनके सर पे सिरकी या बोरिये की खोई
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

जो इस हवा में यारो दौलत[58] में कुछ बड़े हैं
है उनके सर पे छतरी हाथी ऊपर चढ़े हैं
हैं जो गरीब गुर्बा, कीचड़ में गिर पड़े हैं
हाथों में जूतियाँ हैं और पाँयचे चढ़े हैं
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

है जिनको मुहैया[59] पक्का पकाया खाना
उनको पलंग पे बैठे झड़ियों का हज़[60] उठाना
है जिनका अपने घर में पान नोन तेल लाना
है सर पे उनके पखा या छाज है पुराना
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

कहता है कोई अपने महबूबे-सीमबर[61] से
इस मेह में तुम न जाओ प्यारे हमारे घर से
कोई कहे है अपने दिलदार[62] खुश नज़र[63] से
हाथों से मेरे जानी खा ले यह दो अंदरसे[64]
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

५३ शराब, ५४ शराब, ५५ कोमल, ५६ दरिद्रता, ५७. लज्जा ५८ धन, ५९ प्राप्त, ६० आनन्द, ६१ चाँदी जैसे शरीरवाला, ६२ प्रेमिका, ६३ सुन्दर आँखोंवाला, ६४ एक मिठाई।

कीचड से हो रही है जिस जा[65] जमी[66] फिसलनी
मुश्किल हुई है वां से हर इक को राह चलनी
फिसला जो पाँव, पगडी मुश्किल है फिर सँभलनी
जूती गिरी तो वां से क्या बात फिर निकलनी
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

गिरकर किसी के कपडे दलदल मे है मुअत्तर[67]
फिसला कोई किसी का कीचड मे मुँह गया भर
इक-दो नही फिसलते, कुछ इनमे आन, अकसर[68]
होते हे सैकडो के सर नीचे पाँव ऊपर
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

यह रुत वो है कि जिसमे खुर्द-ओ-कबीर[69] खुश है
अदना,[70] गरीब, मुफ्लिस,[71] शाह-ओ-वजीर[72] खुश है
माशूक[73] शाद-ओ-खुर्रम,[74] आशिक[75] असीर[76] खुश है
जितने है अब जहां[77] मे सब अय 'नजीर' खुश है
क्या क्या मची है यारो बरसात की बहारें

बरखा रुत

ख्वाजा अल्ताफ हुसैन 'हाली

गर्मी की तपिश[1] बुझाने वाली
सर्दी का पयाम[2] लाने वाली
कुदरत[3] के अजाइबात[4] की कान[5]
आरिफ[6] के लिए किताबे-इरफान[7]

६५. जगह, ६६ धरती, ६७ भीगे हुए, ६८ अधिकाश, ६९ छोटे-बडे, ७० दरिद्र, ७१ निर्धन, ७२. राजा और मत्री, ७३ प्रेमिका, ७४ प्रसन्न, ७५ प्रेमी, ७६ कैदी ७७ ससार।

बरखा रुत

१ गर्मी, २ सदेश, ३ प्रकृति, ४ विचित्रताए, ५ खान, ६ ज्ञानी, ७ ब्रह्मज्ञान की पुस्तक।

वो शाख-ओ-दरख्त[8] की जवानी
वो मोर-ओ-मलख[9] की जिन्दगानी[10]
वो सारे बरस की जान[11] बरसात
वह कौन - खुदा की शान[12] बरसात
आई है बहुत दुआओं[13] के बाद
और सैंकड़ों इल्तिजाओं[14] के बाद
बरसात का बज रहा है डंका
इक शोर[15] है आसमां[16] पे बरपा[17]
है अब्र[18] की फौज आगे आगे
और पीछे है दल के दल हवा के
है रंग-बरंग के रिसाले[19]
गोरे है कहीं कहीं है काले
है चर्ख[20] पे छावनी-सी छाती
एक आती है फौज[21] एक जाती
मेंह का है जमीं[22] पर दड़ेड़ा[23]
गर्मी का डुबो दिया है बेड़ा[24]
बिजली है कभी जो कौन्द जाती
आंखों में है रौशनी-सी आती
घंघोर घटायें छा रही है
जन्नत[25] की हवाए आ रही है
कोसों है जिधर निगाह जाती
कुदरत[26] है नजर खुदा का आती
सूरज ने निकाब[27] ली है मुंह पर
और धूप ने तै किया है बिस्तर
बाग़ों ने किया है गुस्ले-सेहत[28]
खेतों को मिला है सब्ज़ खिलअत[29]

८. डाली और वृक्ष, ९. टीटरी, एक पक्षी, १०. जीवन, ११. प्राण, १२. लीला, १३. प्रार्थना, १४. विनती, १५. कोलाहल, १६. आकाश, १७. छाया हुआ, १८. बादल, १९. सेना की टुकड़ियां, २०. आकाश, २१. सेना, २२. धरती, २३. हमला, २४. नवसेना, २५. स्वर्ग २६. प्रकृति, लीला, २७. मुख पट, २८. स्वास्थ्य-स्नान, २९. राज पुरस्कार।

सब्ज़े[30] से है कोह-ओ-दश्त[31] मामूर[32]
है चार तरफ बरस रहा नूर[33]
फूलों से पटे हुए है कोहसार[34]
दूल्हा से बने हुए है अशजार[35]
पानी से भरे हुए है जल थल
है गूज रहा तमाम[36] जगल
करते है पपीहे पीहू पीहू
और मोर चिघाडते है हर सू[37]
कोयल की है कूक जी लुभाती
गोया कि है दिल मे बैठी जाती
मेडक जो है बोलने पे आते
ससार को सर पे है उठाते
अब्र[38] आया है घिर के आसमा[39] पर
कलमे[40] है खुशी के हर ज़बा[41] पर
जाता है कोई मल्हार[42] गाता
है देस मे कोई गुनगुनाता
खम[43] बागो मे जा-ब-जा[44] गडे है
झूले है कि सू-ब-सू[45] पडे है
कुछ लडकिया बालिया है कमसिन[46]
जिनके है ये खेलकूद के दिन
हैं फूल रही खुशी से सारी
और झूल रही है बारी बारी
जब गीत है मिल के सारी गाती
जगल को है सर पे वो उठाती
इक सबको खडी झुला रही है
इक गिरने मे खौफ[47] खा रही है
है इनमे कोई मलार गाती
और दूसरी पेग है चढाती

३०. हरियाली, ३१. जंगल और पहाड, ३० भरा हुआ, ३३ प्रकाश, ३४ पहाडी क्षेत्र, ३५. वृक्ष, पेड़, ३६. सम्पूर्ण, ३७ हर तरफ ३८ बादल, ३९ आकाश, ४०. वाक्य, वचन, ४१. वाणी, ४०. एक राग, ४३. खम्भे, ४४. जगह-जगह, ४५ जगह-जगह, ४६. कम उम्र, ४७. भय ।

गाती है कभी कोई हिंडोला
कहती है कोई बिदेसी ढोला
नद्दी नाले चढ़े हुए हैं
तैराकों के दिल बढ़े हुए है
जोरो पे चढ़ा हुआ है पानी
मौजो की हैं सूरते डरानी[४८]
नावें है कि डगमगा रही है
मौजो के थपेड़े खा रही है
मल्लाहो के उड रहे है औसा[४९]
बेड़े का खुदा ही है निगहबा[५०]
मंझदार की रौ यह जोर पर है
मछली को भी जान का खतर[५१] है

फ़ज़ा-ए-बर्शगाल[१]

मुंशी दुर्गा सहाय 'सुरूर' जहानाबादी

उठा वो झूम के साकी[२] चमन मे अब्रे-बहार[३]
चटक रहे हैं शगूफे[४] बरस रही है फुवार

सही कदों[५] का है जमघट कनारे-आबे-रवा[६]
कि बिर्ज मे लबे-जमुना[७] है गोपियां की कतार[८]

४८ भयानक, ४९ होश, ५०. देखभाल करने वाला ५१. भय

फ़ज़ा-ए-बर्शगाल

१. वर्षा का वातावरण, २. मदिरा वितरक, ३. बहार का बादल, ४. कलियां, ५. ऊँचाई, ६. प्रवाहित जल, ७. यमुना के किनारे, ८. पंक्ति ।

तराना-रेज़[9] है यूं शाखे-सर्व[10] पर कुमरी[11]
कि जैसे गाती हो मधुबन मे कोई सुन्दर नार

है मोतियो की लडी या कतार[12] बगलो की
हवा मे उडते है जुगनू कि छूटते हैं अनार

अजब निशात[13] है बादाकशो[14] चलो तो सही
पयामे-ऐश[15] है लाया चमन मे अब्रे-बहार

आमदे-अब्र[1]

'बेनजीर' शाह

घटा ऊदी ऊदी[2] क्या छा गयी
बहारे-चमन[3] रग पर आ गयी

परो को इधर मोर तोले हुए
घटाये उधर बाल खोले हुए

वो कोयल गजब नै[4] बजाती हुई
पपीहो से ताने लडाती हुई

हवा दोश[5] पर शाल डाले हुए
घटाओ के आचल संभाले हुए

घटाएं, वो बगलो की हर सू[6] कतार[7]
कि जुलमत[8] मे आबे-हयात[9] आशकार[10]

९. गीत छेड रही है, १०. सरो की डाली, ११ कोयल, १२. पंक्ति, १३ आनन्द
१४. मदिरा पीने वालो, १५. ऐश का सन्देश ।

आमदे-अब्र

१. बादल का आगमन, २. भूरी, ३. चमन की शोभा, ४. बांसुरी, ५. कंधा, ६. हर तरफ,
७. पंक्ति, ८. अंधकार, ९. अमृत, १०. प्रकट ।

सियाही[११] में यह उजली-उजली लकीर[१२]
रवां[13] दामने-कोह[१४] में जू-ए-शीर[१५]

ज़मीं-ओ-फ़लक[१६] पर है मस्ती का शोर[१७]
गरजते ही बादल के चिल्लाये मोर

कभी अब्र[१८] गिरियां[१९] कभी ख़न्दाज़न[२०]
है दीवाने का स्वांग चर्खे-कुहन[२१]

फ़लक[२२] पर गरजता है अब्रे-मुतीर[२३]
ज़मीं पर न क्यों रिन्द[२४] गायें कबीर

यह बारीक बूंदें यह गहरी घटा
यह सब्ज़-ए-ख़ुनक[२५] और ठंडी हवा

दरख़्तों[२६] मे ताइर[२७] उड़ें क्या मजाल[२८]
फ़ुहारों ने डाला है जाली का जाल

गरज बादलों की सुनाती हुई
बहार आई डंके बजाती हुई

जो करता है शोख़ी[२९] कुछ अब्रे-रवां[३०]
लगाती है कोड़े उसे बिजलियां

घटा रक्स[31] परवाज़े-मस्ती[३२] है आज
कि मोरों पे आवाज़े कसती है आज

बुलन्दी[33] को नज़रों मे तोले हुए
ये परियां उडी बाल खोले हुए

११. अंधेरा, १२ रेखा, १३. प्रवाहित, १४ पहाड़ का दामन, १५. दूध की नदी, १६. धरती और आकाश, १७. कोलाहल १८. बादल, १९. रोना, २०. मुस्कान, २१. पुराना, गगन, २२. आकाश, २३. बरसता हुआ बादल, २४. शराबी, २५ ठंडी हरियाली, २६. वृक्ष, पेड़, २७ पक्षी, २८, साहस, २९. चंचलता, ३०. प्रवाहित बादल, ३१. नृत्य, ३२. मस्ती में, ३३. ऊंचाई ।

हर एक अपनी रफ़अत[३४] दिखाने लगी
कि गर्दू[३५] में थिगली लगाने लगी

सियह[३६] मस्त बादल जो छाये हैं आज
ये पा - बोसे-साक़ी[३७] को आये हैं आज

बरसात की बहार

मुशी द्वारका प्रसाद 'उफ़ुक़' लखनवी

रुत आई हुस्न-ओ-इश्क़अंगेज़[१] फसले-खुशगवार[२] आई
बहार[3] आई बहार आई बहार आई, बहार आई

कभी ऊदी घटा छाई कभी काली घटा उठ्टी
जब उठ्टी दिल लुभाने वाली मतवाली घटा उठ्टी

चमक दिखलाके कौंदा[४] इस तरह खामोश होता है
कोई झलकी दिखाकर जिस तरह रूपोश[५] होता है

गुबारे-दिल[६] जमीं[७] का धुल गया बादल के पानी से
जड़ें सींची गई सब्जे की आबे-ज़िन्दगानी[८] से

हरी खेती हुई शादाबि:-ए-किश्ने-जराअत[९] से
पड़ा सूखे हुए धानो में पानी आबे-रहमत[१०] से

३४. ऊंचाई, ३५. गगन ३६ काले, ३७ साकी के पाव चूमने ।

बरसात की बहार

१. सौंदर्य और प्रेमप्रद, २. सुहाना मौसम, ३. शोभा, ४. बिजली, ५. छुपना, ६ दिल का मैल, ७. धरती, ८. जीवन-जल, ९. खेत की सेराबी, १०. खुदा की दया का पानी ।

सितम[11] है नाज़[12] से रखना क़दम ज़ुहरा-जबीनों[13] का
क़यामत[14] है उठाकर पायचे चलना हसीनों[15] का

है चौथी[16] की दुल्हन की सी जवानी मुर्ग़ज़ारों[17] पर
फ़जा[18] गुलज़ार की क़ुर्बान[19] है इनकी बहारों पर

पपीहे ने कहीं पी पी कहा कोयल कहीं कूकी
कहीं धुन बांध दी शमशाद[20] पर क़ुमरी[21] ने कूकू की

कहीं जंगल में उड़कर नाचती कब्के-दरी[22] आई
यह गोया काफ़[23] मे बज़्मे-सुलेमां[24] में परी आई

कहीं नाऊस[25] का गुल[26] है कहीं झंकार झींगुर की
कहीं है जाफ़िज़ाई[27] कोकिला के दिलरुबा[28] सुर की

चमकते है नई सज-धज अनोखी शान से जुगनू
चमकते है गुल-ए-यार[29] मे जिस शान से जुगनू

तुयूरे-ख़ुशनवा[30] नख़्लों[31] पे रस लेते हैं फूलों का
फली फूली हुई शाखें[32] मजा देती हैं झूलों का

दरख़्तों[33] पर फटा पड़ता है जोबन सब्ज़ परियों का
हसीनो का छलावा है हवा-ए-सर्द[34] का झोंका

नसीमे-सुब्ह[35] सहने-बाग़ मे दिन रात चलती है
परिस्तां की परी है छुप के नजरों से टहलती है

गुलू-ए-कोकिला[37] से लहने-दाऊदी[38] हरी बोला
हुए गुल सुन के बुलबुल बोलिया जादूभरी बोला

११ अत्याचार, १२. अदा, नखरे, १३. आभायक्त ललाट वाली, १४. प्रलय. १५. सुन्दरियों, १६. विवाह के दूसरे दिन चौथी की रस्म होती है, १७. बाग, १८. वातावरण, १९. न्योछावर, २०. सर्व, २१ कोयल. २२. चकोर, २३. एक पर्वत, २४ सुलेमान की महफिल, २५. मोर. २६. कोलाहल, २७. आनन्द, २८. मधुर, २९. प्रेमिका का गला, ३०. मधुर कंठ पक्षी, ३१. वृक्ष, पेड़, ३२. डालियां, ३३. वृक्ष, ३४. ठण्डी हवा, ३५. प्रातः समीर, ३६. बाग़ का आंगन, ३७ कोकिला का गला ३८. दाऊद पैग़म्बर के गाने की तान।

हुआ शमशाद को सक्ता[३९] वो नग्मे[४०] क़ुमरियां गाईं
मलारें मोर ने बुलबुल ने फ़सली ठुमरियां गाईं

कहां तक ज़िक्र हो इस फ़स्ले-ऐशअफ़ज़ा[४१] के आलम[४२] का
फ़क़त[४३] है हिन्द में घर इस बहार-अंगेज़[४४] मौसम का

बरसात की उमंग

सैयद फ़ज़लुल हसन 'हसरत' मोहानी

घिर के आखिर आज बरसी है घटा बरसात की
मैकदों[१] मे कब से होती थी दुआ[२] बरसात की

मूजिबे - सोज - ओ - सुरूर[३]-ओ-बाइसे-ऐश-ओ-नशात[४]
ताज़गी बख़्शे[५] दिल-ओ-जां[६] है हवा बरसात की

शामे-सरमा[७] दिलरुबा[८] थी सुब्हे-गर्मा[९] ख़ुशनुमा[१०]
दिलरुबातर ख़ुशनुमातर है फ़ज़ा[११] बरसात की

सुर्ख़ पोशिश[१२] पर है ज़र्द-ओ-सब्ज़[१३] बूटों की बहार
क्यों न हो रंगीनियां तुझ पर फ़िदा[१४] बरसात की

३९. मूर्च्छारोग, ४०. गीत, ४१ ऐशदायक मौसम, ४२. दशा, ४३ केवल, ४४. शोभाप्रद।

बरसात की उमंग

१. मदिरालय, २. प्रार्थना, ३. नशे और गर्मी का कारण, ४. सुख और आनन्द का कारण, ५. प्रदान करे, ६. दिल और जान, ७. सर्दी की शाम, ८. मनोहर, ९. गर्मी का प्रातःकाल, १०. सुहावना, ११. वातावरण, १२. वस्त्र, १३. पीले और हरे, १४. कुर्बान, न्योछावर।

देखने वाले हुए जाते हैं पामाले-हवस[15]
देखकर छब तेरी अय रंगीं अदा बरसात की

लाजिम-ओ-मलजूम[16] है अब्रे-तर-ओ-दामाने-तर[17]
दरख़ुरे-रहमत[18] है 'हसरत' यह ख़ता[19] बरसात की

बरसात की पहली घटा

'जोश' मलीहाबादी

क्या जवानी है फ़ज़ा[1] में, मरहबा[2] सद[3] मरहबा
चल रही है रूह[4] को छूती हुई ठंडी हवा

आ रही है दूर से काफ़िर[5] पपीहे की सदा
हुस्न[6] उठा है ख़ाक[7] से अंगड़ाइयां लेता हुआ

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

आर्ज़ू[8] में हैं तलातुम[9], जोश अर्मानों[10] में है
हसरतों[11] में वलवले[12] हैं, ताज़गी जानों में है

नौजवानी का तबस्सुम[13] सर्द[14] मैदानों में है
रोशनी है दश्त[15] में ख़ुशबू बयाबानों[16] में है

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

१५. अत्यधिक लालसा से नष्ट, १६ अनिवार्य और आवश्यक, १७ आर्द्र बादल और आर्द्र दामन, १८ दया का पात्र, १९ अपराध, गलती।

बरसात की पहली घटा

१ वातावरण २ वाह वाह, ३ सौ, ४· आत्मा, ५ विधर्मी, ज़ालिम, ६ सौंदर्य, ७. धूल, ८ अभिलाषा, ९ जोश, १०. आकांक्षा, ११ अपूर्ण इच्छा १२ जोश, १३ मुस्कान, १४ ठण्डे, १५ जंगल, १६ जंगल, निर्जन स्थान।

मुतरिबों[१७] ने साहिलों[१८] पर जाके छेड़े हैं सितार
हल धरे कांधों पे हंसते जा रहे हैं काश्तकार[१९]

मस्त है जंगल में चरवाहा चमन में जू-ए-बार[२०]
गा रहा है नाखुदा[२१] दरिया[२२] के सीने पर मलार

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

बस्तियों में नै[२३] है गर्मे-ज़मजमा[२४], जंगल में बास
जी उठी है धूप के मारे हुए मैदां[२५] मे घास

ले रहे है फूल इत्मीनान[२६] से बागों मे सास
अब्र[२७] के नाखुन ने दिल से खीच ली गर्मी की फास

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

माह[२८] पैकर लड़किया रंगीनियों पर तुल गयी
रंग की पुड़िया हजारों एक दिन मे खुल गयी

ली जो गहरी सास दिल की कुलफते[२९] सब घुल गयी
गर्द[३०] कुछ इस तरह से बैठी कि आँखें खुल गयी

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

भर दिये पानी ने जल थल नद्दिया बहने लगी
छोड़कर शानो[३१] पे जुल्फे[३२] मुस्कराए नाजनी[३३]

आज है गर्के-सफेदी[३४], सुर्ख[३५] थी कल जो जमी[३६]
सर्द[३७] पानी चूसकर जर्रों[३८] ने आंखें बन्द की

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

छा गई लो दफ़अतन[३९] आमो के बागों पर बहार[४०]
उठ रही है सोंधी सोंधी सी शमीमे-खुशगवार[४१]

१७. गायक, १८ किनारा, १९ किसान, २०. नदी, २१. नाविक, मल्लाह, २२. नदी, २३ बसी, २४. गीत, २५. मैदान, २६. सन्तोष, २७. बादल, २८ चन्द्र, २९. तकलीफे ३० धूल, ३१. कंधा, ३२. लटे, बाल, ३३. सुन्दरियां, ३४. सफ़ेदी मे डूबी हुई, ३५. लाल, ३६. धरती, ३७. ठण्डा, ३८. कण, ३९. सहसा, ४० शोभा, फ़स्ल, ४१. सुहानी हवा।

शाख[42] पर कोयल ग़ज़लख्वां[43] है लबे जू[44] मैगुसार[45]
गा रहे है रख के डोली नीम के नीचे कहार

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

पड रहा है तेज पानी, पक रही है पूरिया
रक्स[46] करता जा रहा है मौजे-बारां[47] मे धुआं

महवशो[48] की जेब-ओ-जीनत[49] अल्लहफीज-ओ-अलअमा[50]
हर कलाई मे नजर आती है धानी चूडिया

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

अब्र[51] के सैलाब[52] मे डूबा हुआ है जुज्व-ओ-कुल[53]
खार[54] की नब्जो[55] मे भी दौडा हुआ है खूने-गुल[56]

सहन मे पानी है और पानी मे है बच्चो का गुल[57]
इक तरफ लकडी की कश्ती[58] इक तरफ मट्टी का पुल

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

• बाहमी[59] आवेजिशे[60] गम ख्वारिया[61] भी बन गयी
बेजरी[62] की कुलफते[63] जरदारिया[64] भी बन गयी

भर गया पानी, जमी पर धारिया भी बन गयी
जा बजा मट्टी जो सिमटी क्यारिया भी बन गयी

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

४२ डाली, ४३ गज़ल गान मे लीन, ४४. नदी के किनारे ४५ मदिरा पीने वाले ४६ नृत्य, ४७ बरसात की मौज, ४८ सुन्दरिया, ४९ शोभा और शृंगार, ५० खुदा सुरक्षित रखे ५१ बादल, ५२ बाढ, ५३ अंश और सम्पूर्ण ५४ कांटा, ५५. धमनियो मे, ५६ फूल का रक्त, ५७ शोर, कोलाहल, ५८. नाव, ५९ परस्पर, ६० मेल-जोल, ६१ सहानभूति, ६२ निर्धनता, ६३ कष्ट, ६४ धनाढ्यता।

जिन्दगी की सर्द[65] नब्ज़ो[66] मे हरारत[67] आ गयी
मुनइमो[68] में खुल्क[69], कांटों मे नज़ाकत[70] आ गयी

हिज्र[71] के अफसुर्दा[72] चेहरो पर बशाशत[73] आ गयी
हद है खुशचश्मो[74] की आंखो मे मुरव्वत[75] आ गयी

झूमकर बरसी है क्या बरसात की पहली घटा

बरसात

(असाढ, सावन और भादो)
अब्दुल मजीद 'शम्स'

असाढ आया, बारिश[1] न आई मगर
हर इक की सू-ए-आसमा[2] है नज़र

है शिद्दत[3] से बरसात का इन्तिजार[4]
परेशा[5] बहुत है दिले-काश्तकार[6]

कि अब निकले जाते हैं खेती के दिन
न देखें कहीं खुश्क साली[7] के दिन

मकई और किनारी[8] है अफसुर्दाहाल[9]
झुकाये हुए सर है हर नौनिहाल[10]

६५ ठण्डी, ६६ नाडी ६७ गर्मी, ६८ धनी लोग, ६९. शिष्टाचार, ७० कोमलता, ७१. बिरह, ७२ उदास, ७३ प्रसन्नता, ७४ बेमुरव्वत, ७५ लिहाज।

बरसात

१. वर्षा, २. आकाश की ओर, ३ तीव्रता, ४. प्रतीक्षा, ५ व्याकुल, ६ किसान का दिल, ७. सूखा, अकाल, ८. गन्ना, ९. उदास, १०. पौधा।

हर इक दिन क़यामत[11] हर इक शब[12] बला[13]
अज़ीयत[14] में मख़लूक़[15] है मुब्तिला[16]

यकायक[17] घटा आसमां पर उठी
हर इक सिम्त[18] तेजी से बढ़ने लगी

हवा थी जो साकिन[19] हुई तेज़-पा[20]
चली दोश[21] पर लेके काली घटा

बरसने लगा अब्र-तर[22] टूटकर
हुईं किरनें ख़ुर्शीद[23] की बेअसर[24]

नमी[25] फ़त्ह[26] ख़ुश्की[27] पे पाने लगी
नयी ज़िन्दगी मुस्कुराने लगी

जो कुछ देर के बाद बारिश रुकी
घरों से निकलने लगे आदमी

जो पानी का बच्चों ने देखा बहाव
चलाने लगे अपनी काग़ज़ की नाव

जो बदला समा[28] आन की आन मे
मवेशी[29] निकल आये मैदान मे

धुली गर्द[30] पत्ते चमकने लगे
दरख़्तो[31] पे ताइर[32] चहकने लगे

उमगे किसानो की ताज़ा हुई
उमीदे[33] नयी दिल मे पैदा हुई •

११. प्रलय. १२. रात, १३ विपत्ति, १४. कष्ट, १५. जनसाधारण. १६. ग्रस्त, १७. सहसा, १८. ओर, तरफ़, १९. स्थिर, २०. तीव्र गति, २१. कधो, २२ आर्द्र बादल, २३. सूर्य, २४. निर्जीव, निष्प्रभ, २५. आर्द्रता, २६. विजय, २७. सूखा, २८. वातावरण, २९. पशु, ३०. धूल, ३१. वृक्ष, पेड़, ३२. पक्षी, ३३. आशाएं ।

जो बारिश से मट्टी में आई तरी[३४]
जली घास होने लगी फिर हरी

नहा कर तर-ओ-ताज़ा[३५] थी झाड़ियाँ
पहनने लगीं फिर नयी साड़ियाँ

ख़ुशी से लगी झूमने डालियाँ
बजाने लगी पत्तियाँ तालियाँ

(२)

जो बादल की आमद[३६] है अब पै-ब-पै[३७]
शब-ओ-रोज[३८] मेंह मूसलाधार है

झड़ी है यह सावन की बादल है मस्त
सभी बादाख़्वारों[३९] के जागे हैं बख़्त[४०]

घने बादलों का लटकना कभी
सिमटना कभी और भटकना कभी

है कजरी का मौसम है झूलों के दिन
"उमगों की रातें मुरादों[४१] के दिन"

जिधर देखिये है जमीं[४२] सब्ज़पोश[४३]
नयी दूब हर जा[४४] जुमुर्रुद - फ़रोश[४५]

जिधर देखिये खेत है धान के
जो यकसर[४६] हैं पानी मे डूबे हुए

हो आहर कि पोखर हो नाला कि टाल
फ़रावानि-ए-आब[४७] से है निहाल[४८]

३४. गीलापन, आर्द्रता, ३५. गीली और ताज़ी, ३६. आगमन, ३७. बार-बार, ३८. दिन-रात, ३९. शराबी, ४०. भाग्य, ४१. अभिलाषा, ४२. धरती, ४३. हरी-भरी, ४४. हर जगह, ४५. पन्ना विक्रेता, हरी-भरी, ४६. बिल्कुल, ४७. पानी की अधिकता, ४८. पौधे।

झलकती है पानी की लहरों पे धूप
निराला है बारिश से फितरत[49] का रूप

है दिलकश[50] बहुत धान की रोपनी
जरा गाँव में जाके देखे कोई

है इक झुंड में गाँव की लड़कियां
लिये हाथ में धान की मोरियां

वो झुक-झुक के मोरी को है रोपती
मिलाकर गला गीत गाती हुई

(३)

महीना है भादों का बादल है मस्त
फजा में यह रक्सां[51] है बाला-ओ-पस्त[52]

चली आ रही है घटा पर घटा
नमी[53] से है बोझल कबा-ए-फजा[54]

बढ़ा है कई दिन से बारिश का जोर
है हर सिम्त[55] सैलाब[56] का जोर-ओ-शोर

हो नद्दी कि नाला हो आहर कि डाव
छुपे हैं सभी आजकल जेरे-आब[57]

वो पानी चला बांध को तोड़कर
वो नद्दी बढ़ी अपना रुख[58] मोड़कर

लबालब[59] है हर खेत अब आब[60] से
खजाने हैं पानी के हर जा भरे

नयी मट्टी अब आ गई खेत में
बड़ी ताजगी आ गई खेत में

४६. प्रकृति, ५०. आकर्षक, ५१. नृत्य करती हुई, ५२. ऊँचे और नीचे ५३. आर्द्रता, ५४. माहौल की कबा, ५५. ओर, ५६. बाढ़, ५७. पानी के नीचे, ५८. मुंह, ५६. परिपूर्ण, ६०. पानी।

मरेगा न अब धान है यह यक़ी[६१]
है उम्मीद उगलेगी सोना जमी[६२]

रबी की जो उम्मीद अब वध गयी
न पूछो किसानों के दिल की खुशी

ओ देस से आने वाले बता

'अख़्तर' शीरानी

ओ देस से आने वाले बता

ओ देश से आने वाले बता
किस हाल[१] मे है याराने-वतन[२]
आवारः-ए-ग़ुर्बत[३] को भी सुना
किस रग[४] मे है कनआने-वतन[५]
वो बाग़े-बतन[६], फ़िर्दौसे-वतन[७]
वो सर्वे-वतन,[८] रेहाने-वतन[९]

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी वहा के बागो मे
मस्ताना हवाएं आती है ?
क्या अब भी वहा के पर्बत पर
घनघोर घटाएं छाती है ?

६१. विश्वास, ६२ धरती,

ओ देश से आने वाले बता

१. दशा, २. मित्रगण, ३. परदेश में भटकने वाला, ४. दशा, हाल, ५. देश की सुंदरियाँ, ६. देश के उपवन, ७. देश का स्वर्ग, ८. देश के सरो, ९. देश की घास ।

क्या अब भी वहाँ की बरखायें
वैसे ही दिलों को भाती है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी वतन में वैसे ही
सरमस्त[10] नजारे[11] होते है ?
क्या अब भी सुहानी रातों को
वो चाँद सितारे होते है ?
हम खेल जो खेला करते थे, क्या
अब भी वो सारे होते है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी शफ़क[12] के सायों मे
दिन रात के दामन मिलते है ?
क्या अब भी चमन[13] मे वैसे ही
खुशरंग[14] शिगूफे[15] खिलते है ?
बरसाती हवा की लहरों में
भीगे हुए पौदे हिलते है

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

शादाब-ओ-शिगुफ्ता[16] फूलों से
मामूर[17] है गुलजार[18] अब कि नही ?
बाजार में मालन लाती है
फूलों के गुंधे हार अब कि नही ?

१० नशीले, मस्त, ११ दृश्य, १२ लाली, १३ उपवन, १४. सुन्दर, १५. कलियाँ, १६ ताजे और सुसिक्त १७ परिपूर्ण, १८ उपवन ।

और शौक[19] से टूटे पडते हैं
नौ उम्र[20] खरीदार अब कि नहीं ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या शाम पडे गलियो मे वही
दिलचस्प[21] अंधेरा होता है ?
और सडको की धुधली शम्ओ[22] पर
सायो का बसेरा होता है ?
बागो की घनेरी शाखो[23] मे
जिस तरह सवेरा होता है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी वहा वैसी ही जवा[24]
और मध भरी राते होती है ?
क्या रात भर अब भी गीतो की
और प्यार की बाते होती है ?
वो हुस्न[25] के जादू चलते है
वो इश्क[26] की घाते होती है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी महकते[27] मन्दिर मे
नाकूस[28] की आवाज आती है ?
क्या अब भी मुकद्दस[29] मस्जिद पर
मस्ताना अजा[30] थर्राती है ?

१९. अभिरुचि, २०. कमउम्र, २१. मनोरजक, २२. बत्तियो, २३. डालियो, २४. जवान, २५. सौंदर्य, २६. प्रेम, २७. सुगन्धित, २८. शख, २९ पवित्र, ३०. बाग।

और शाम के रंगी[31] सायों पर
अज़मत[32] की झलक छा जाती है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी वहां के पनघट पर
पनहारिया पानी भरती है ?
अंगड़ाई का नक्शा बन बनकर
सब माथे पे गागर धरती है ?
और अपने घरों को जाते हुए
हंसती हुई चुहलें[33] करती है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

बरसात के मौसम अब भी वहां
वैसे ही सुहाने होते हैं ?
क्या अब भी वहां के बागों में
झूले और गाने होते हैं ?
और दूर कहीं कुछ देखते ही
नौ उम्र दिवाने होते हैं ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी पहाड़ी घाटियों में
घंघोर घटाएं गूंजती है ?
साहिल[34] के घनेरे पेड़ों में
बरखा की हवाएँ गूंजती हैं ?

३१. रंगीन, ३२. महानता, ३३. छेड़छाड़, ३४. किनारा।

झींगर के तराने जागते है ?
मोरों की सदाएं[३५] गूजती हैं ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या आम के ऊँचे पेड़ों पर
अब भी वो पपीहे बोलते हैं ?
शाख़ों[३६] के हरीरी[३७] पर्दों में
नग़्मों[३८] के ख़ज़ाने खोलते हैं ?
सावन के रसीले गीतों से
तालाब में अमरस घोलते है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी किसी के सीने मे
बाकी है हमारी चाह[३९] बता ?
क्या याद हमें भी करता है अब
यारों में कोई आह बता ?
ओ देस से आने वाले बता
लिल्लाह[४०] बता, लिल्लाह बता

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या गांव में अब भी वैसी ही
मस्ती भरी रातें होती है ?
देहात की कमसिन[४१] माहवशें[४२]
तालाब की जानिब[४३] जाती हैं ?

३५. आवाजें, ३६. डालियों, ३७. रेशमी, ३८. गीतों, ३९. मुहब्बत, ४०. ख़ुदा के लिए, ४१. कम उम्र, ४२. चन्द्रमुखी, ४३. ओर ।

और चाँद की सादा रौशनी मे
रगीन तराने गाती है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या अब भी गजरदम[४४] चरवाहे
रेवड को चराने जाते है ?
और शाम के धुधले सायो के
हमराह[४५] घरो को आते है ?
और अपनी रसीली बासरियो मे
इश्क[४६] के नग्मे[४७] गाते है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

क्या गाव मे अब भी सावन मे
बरखा की बहारे छाती है ?
मासूम[४८] घरो मे भोर भए
चक्की की सदाए[४९] आती है ?
और याद मे अपने मैके की
बिछडी हुई सखिया गाती है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

दरिया[५०] का वो ख्वाब-आलूदा[५१] सा घाट
और उसकी फजाये[५२] कैसी है ?
वो गाव, वो मजर[५३], वो तालाब
और उसकी हवाएँ कैसी है ?

४४. तडके, सवेरे, ४५ साथ ४६ प्रेम ४७ गीत, ४८ निष्पाप ४९ आवाजे, ५० नदी, ५१ स्वप्निल, ५२ वातावरण, ५३ दृश्य ।

वो खेत, वो जंगल, वो चिड़ियां
और उनकी सदाएं[५४] कैसी है ?

ओ देस से आने वाले बता

ओ देस से आने वाले बता

आखिर[५५] मे यह हसरत[५६] है कि बता
वो गारते-ईमां[५७] कैसी है ?
बचपन में जो आफ़त[५८] ढाती थी
वो आफते-दौरां[५९] कैसी है ?
हम दोनों थे जिसके परवाने
वो शम्-ए-शबिस्तां[६०] कैसी है ?

ओ देस से आने वाले बता

जाड़े की बहारें

'नज़ीर' अकबराबादी

जब माह अगन का ढलता हो, तब देख बहारें जाड़े[१] की
और हँस-हँस पूस मंभलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
दिन जल्दी-जल्दी चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
पाला भी बर्फ़ पिघलता हो, तब देख बहारें जाड़े की
चिल्ला ख़म ठोक उछलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

दिल ठोकर मार पछाड़ा हो, और दिल मे होती हो कुश्ती सी
थर-थर का जोर अखाडा हो, बजती हो सबकी बत्तीसी

५४. आवाजें, ५५. अन्त मे. ५६ अभिलाषा, ५७. ईमान को नष्ट करने वाली—प्रेमिका, ५८. मुसीबत, ५९. समय की विपत्ति, ६० शयनागार की शम्अ ।

जाड़े की बहारें

१. सर्दी ।

हो शोर फफू हू हू हू का, और धूम हो सी सी सी की
कल्ले पर कल्ला लग लगकर चलती हो मुँह में चक्की सी
हर दाँत चने से दलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हर एक मकाँ में सर्दी ने आ बाँध दिया हो यह चक्कर
जो हर दम कँप कँप होती हो, हर आन कड़ाकड़ और थरथर
बैठी हो सर्दी रग[2] रग में और बर्फ पिघलता हो पत्थर
झड़ बाँध महावट पड़ती हो और तिस पर लहरें ले-लेकर
सन्नाटा बाव का चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हर चार तरफ से सर्दी हो, और सहन[3] खुला हो कोठे का
और तन में नीमा[4] शबनम[5] का हो जिसमें हुस्न[6] का इत्र लगा
छिड़काव हुआ हो पानी का और खूब पलंग भी हो भीगा
हाथों में प्याला शर्बत का हो आगे इक फर्राश[7] खड़ा
फर्राश भी पंखा झलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हो फर्श बिछा गालीचों का और पर्दे छुटे हों आकर
इक गर्म अँगीठी जलती हो, और शमअ[8] हो रोशन, और तिस पर
वो दिलबर[9], शोख[10] परीचेहरा, है धूम मची जिसकी घर घर
रेशम की नर्म निहाली[11] पर सौ नाज-ओ-अदा से[12] हंस-हंसकर
पहलू के बीच मचलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

तर्कीब बनी हो मजलिस[13] की और काफिर नाचने वाले हों
मुँह उनके चाँद के टुकड़े हों तन उनके रुई के गाले हों
पोशाकें[14] नाजुक रंगों की और ओढ़े शाल दुशाले हों
कुछ नाच और रंग की धूमें हों, कुछ ऐश[15] में हम मतवाले हों
प्याले पर प्याला चलता हो, तब देख बहारें जाड़े की

हर एक मकाँ हो खिलवत[16] का और ऐश[17] की सब तैयारी हो
वो जान कि जिससे जी खुश हो सौ नाज[18] से आ झनकारी हो
दिल देख 'नजीर' उसकी छब को हर आन[19] अदा पर वारी[20] हो
सब ऐश मुहैया[21] हो आकर जिस जिस अरमाँ[22] की बारी हो
जब सब अरमान निकलता हो तब देख बहारें जाड़े की

२ नस-नस, ३ आँगन, ४ एक वस्त्र, ५ ओस, ६ सौंदर्य, ७ फर्श बिछाने वाला, ८ चिराग, ९ प्रेमिका, १० चंचल, ११ बिस्तर, १२. नखरे और अदा, १३ गोष्ठी, १४ वस्त्र, १५ विलास, १६ एकांत, १७ विलास, १८ नखरे, गर्व, १९. हर समय, २० न्योछावर, २१ प्राप्त, २२ अभिलाषा।

शिद्दते-सर्मा[1]

मिर्ज़ा मुहम्मद रफ़ी 'सौदा'

सर्दी अबके बरस है इतनी शदीद[2]
सुब्ह निकले है कांपता खुर्शीद[3]

जितना आलम[4] था काश्मीर हुआ
बल्कि कहिये कि जमहरीर[5] हुआ

इन दिनों चर्ख[6] पर नहीं है मिहर[7]
गोद में कांगड़ी[8] रखे है पिहर[9]

कुहर पड़ने को कहते है सब यार
ठंड से है जहां के दिल में गुबार[10]

लेक[11] देखा जो गौर करके मैं आप
निकले है मुंह से आसमां[12] के भाप

पानी पर जिस जगह कि काई है
मख्ज[13] वां शाल की रजाई है

अक्स[14] पानी में यूं है शक्लपिजीर[15]
रहती है जेरे-शीशा[16] ज्यूं तस्वीर[17]

देख गुल[18] पर सबा[19] नहीबे-नबर्द[20]
सरनी फिरती है हर तरफ दमे-सर्द[21]

सरसरे-सुब्ह[22] जान खोती है
तीर सी दिल के पार होती है

१. सर्दी की तीव्रता, २. तीव्र. प्रचण्ड, ३. सूर्य, ४ संसार, ५ बेहद ठण्डा, ६. आकाश, ७. सूर्य, ८. छोटी-सी मिट्टी की अंगीठी, ९ आकाश, १० धूल, ११. लेकिन, १२. गगन, १३. हरी, १४. प्रतिबिम्ब, १५. सूरत पकड़ने वाला, १६. शीशे के नीचे, १७. चित्र, १८. फूल, १९. हवा, २०. युद्ध का डर, २१. ठंडी आह, २२. प्रात: समीर।

जिस तरफ़ अब निगाह जावे है
जूही जू बेद थरथरावे है

दिन की कटती है धूप मे औकात[२३]
काले कम्बल मे रात काटे है रात

रात[२४] सर्दी के हाथ गर्म फरोश[२५]
अब्र[२६] दोशे-हवा[२७] पे बाला पोश[२८]

बर्फ पडती नही फलक नद्दाफ[२९]
फेके है वास्ते जमी के लिहाफ[३०]

शब[३१] जो रख्शिन्दगी[३२] पे बर्क[३३] आये
अब्र[३४] मे यूँ ठिठुर के रह जाये

मुनइमो[३५] के घरो मे आज और कल
है पडे पर्दे दहके है मनकल[३६]

हम पे जाडे मे है यह उनका हाल
नाक मे छुटता नही रूमाल

कोई अब जा से हिल नही सकता
घर से बाहर निकल नही सकता

फिर जो कोई निदान[३७] निकले है
ठंड के मारे जान निकले है

लिपटे रहते है रूई मे मजबूर
जिस तरह नाशपाती-ओ अंगूर

अहले-हिर्फा पे कीजिये जो निगाह
कारोबार[३८] उनका हो गया है तबाह[३९]

पीटकर सर रहे है भटियारा
हाय अब क्या करूँ मैं बेचारा

२३. प्रतिष्ठा, २४ मधनाद, २५ विक्रेता, २६ [illegible], २७ हवा के कंधे, २८ ढका हुआ २९ धुनिया, ३० मोटी रजाई, ३१. रात, ३२ चमक, ३३ बिजली, ३४ बादल, ३५. धनी, ३६ अँगीठियाँ, ३७. आखिरकार, ३८ कामकाज, ३९. नष्ट।

सक्का[४०] बोले है भर के आंख मे अश्क[४१]
यारो पानी निकालो चीर के मश्क[४२]

गरज[४३] ऐसी ही कुछ पडी है ठड
मिट गया जमहरीर[४४] का भी घमड

'सौदा' आखिर है सर्दी का मजकूर[४५]
शेर भी गर खुनक[४६] हो रख माजूर[४७]

आगे जाता नही है अब बोला
हो गई है जबान भी ओला

शबे-सर्मा[१]

मौलवी मुहम्मद हुसैन 'आजाद'

अय जमिस्ता[२] कहू किस तरह तेरी रात का लुत्फ[३]
तेरी शबहा-ए-दराज[४] और यह बरसात का लुत्फ

है कोई छीट का ओढे हुए फर्गुल[५] बैठा
पर फुलाये हुए जैसे कोई बुलबुल बैठा

४० भिश्ती, पानी भरने वाला, ४१ आंसू, ४२ परवाल, ४३ अर्थात्, ४४ बडी सर्दी
४५ जिक्र बयान, ४६ ठण्डा, ४७ मजबूर।

शबे-सर्मा

१ सर्दी की रात, २ शीतकाल, ३ आनन्द, ४ लम्बी रातें, ५ लबादा।

ओढ बैठा कोई सर्दी मे लिहाफ़ अपना है
कोई कर बैठा बिछौने को गिलाफ़[6] अपना है

कुछ लिहाफ़ों मे अभी मुँह को निकाले है पड़े
लेकिन अंगीठी को पहलू मे संभाले है पड़े

मारे सर्दी के जिगर सीनों मे थर्राते है
बच्चे मा बाप की बगलों मे घुसे जाते है

कही सू-सू कही सी-सी कही सीटी है
गिर्द[7] सब बैठे है और बीच मे अंगीठी है

बज़्मे-अहबाब[8] की सुहबत[9] का मजा है तुझ मे
साजे-इशरत[10] के लिए बर्ग-ओ-नवा[11] है तुझ मे

शबे-सर्मा[12] ही मे है गाने बजाने का मजा[13]
पान खाने का, गिलोरी के चबाने का मजा

सूफी-ओ-रिन्द[14] के जल्से[15] की तुही साकी[16] है
मायः-ए-ऐश-ओ-तरब[17] दम से तिरे बाकी है

बस कर अय दिल कि नही लिखने की ताकत बाकी
मारे सर्दी के नही हाथ मे हरकत बाकी

मेरे अल्लाह तू ही अब है बचाने वाला
तेरे 'आजाद' को पाले[18] मे पडा है पाला[19]

६. खोल, ७ आस-पास, ८. दोस्तो की महफ़िल, ९. संगत, १० ऐश का वाद्य, ११. खाने-पीने का सामान, १२. सर्दी की रात, १३. आनन्द, १४ सूफ़ी और शराबी, १५ महफ़िल, १६ मदिरा विक्रेता, १७. ऐश और ख़ुशी का सरमाया, १८. सर्दी, १९. सामना ।

फ़स्ले-सर्मा[1]

'बेनजीर' शाह

ढकी चोटियाँ बर्फ से सर बसर[2]
कि चाँदी चढाई है कुहसार[3] पर

खिले फूल गेंदे के वो जर्द जर्द[4]
चली आती है क्या हवा सर्द सर्द[5]

वो गुलमेंहदी फूली गिले, गुलफिरंग[6]
चमकता हुआ वो हजारे[7] का रंग

वो नीलम के सागर[8] लिये कासनी
वो सूरज की हम-शक्ल[9] सूरजमुखी

अनारो मे कलियाँ भी लो आ गई
वो केलो की फलियां भी गदरा गई

बिही, मेव, अमरूद पकने लगे
वो शाखो[10] मे कोले चमकने लगे

लदो है दरख्तो[11] म नारगिया
झुकी पडती है बोझ मे डालिया

१. शीतकाल, २. बिल्कुल, ३ पहाड, ४ पीले, ५. ठण्डी, ६ अंग्रेजी फूल, ७ एक फूल, ८. प्याले, ९ एक जैसी, १० डालियां, ११ वृक्ष ।

गजब इश्क पेचा की शाखो का मेल
वो नाज़ुक[12] वो बारीक पत्ती की बेल

तराशे[13] है कुदरत[14] ने क्या बेमिसाल[15]
करन फूल याकूत[16] के लाल लाल

वो कुछ फूल सरसों में आने लगे
जरा खेत जोबन दिखाने लगे

कही छोटे छोटे वो चेरी के फूल
कही ऊदे ऊदे वो अलसी के फूल

हवा जब उड़ाती है जंगल की रेत
तो क्या लहलहाते है गेहूँ के खेत

जाड़ा और अंगीठी

'जोश' मलीहाबादी

बचपन की अय उदास अंगीठी खुदा गवाह
क्या कहिये तुझ पर आज पड़ी किस तरह निगाह

तू और खाके-सर्द[1] पे यू मिस्ले-सोगवार[2]
अफसोस अय जमान-ए-तिफ्ली[3] की यादगार

१२. कोमल, १३ काटे हैं, १४. प्रकृति, १५ अद्वितीय, १६. एक रत्न ।

जाड़ा और अंगीठी

१ ठण्डी धूल, २. शोकातुर की तरह ३. बचपन के दिन ।

मेरी ही तरह क्या तिरा पहलू भी सर्द[४] है
क्या तेरे आईने पे भी माज़ी[५] की गर्द[६] है

अफसोस वो नशात[७] के मौसम वो जमज़मे[८]
जाडों की दिलफ़रेब[९] वो रातें, वो चहचहे

शोलों[१०] से तेरे हाथ वो उठता हुआ धुआ
वो कहकहों की गूज वो शीरीं[११] पहेलिया

खुशबू[१२] वो तेरी आँच[१३] की जा बख़्श-ओ-दिलनवाज[१४]
वो तीरगी[१५] मे रंग तिरा जैसे दिल मे राज[१६]

शोले[१७] वो सुर्ख़[१८] सुर्ख़ दिलो मे तुले हुए
वो सुर्ख़ियों[१९] मे नर्म[२०] तबस्सुम[२१] घुले हुए

शोलो के वार बार वो अन्दाजे[२२] - दिल नशीं[२३]
दम[२४] भर मे जरनिगार[२५] तो दम भर मे सुर्मगीं[२६]

डूबी हुई हयात[२७] मे तेरी वो गर्मियाँ
वो गर्मियों मे लुत्फ़[२८] के क़िस्सों[२९] की नर्मिया[३०]

वो सादगी की बज़्म[३१] मे बजते हुए सितार
कलियों का कोयलों की चटकना वो बार बार

४. ठण्डा, ५. भूतकाल ६. धूल, ७ आनन्द, ८. गीत, ९. सुहानी, १०. ज्वाला, ११. मधुर, १२. सुगंध, १३ गर्मी, १४. मोहक और जीवनप्रद, १५ अंधकार, १६. रहस्य, भेद, १७. ज्वाला, १८. लाल, १९. लाली, लिपस्टिक, २०. कोमल, २१. मुस्कान, २२. ढग, २३. आकर्षक, २४. क्षण-भर, २५. सुनहरी, २६. सुर्मे के रग के, २७. जीवन, २८. आनन्द २९. कहानियां, ३०. कोमलता, ३१ महफ़िल।

वो ग़ुंचगी[32] का अह्द[33] वो गुलबारियां[34] तिरी
उड़ती हुई हवा में वो चिंगारियां तिरी

वो नर्म[35] नर्म जिस्म[36] वो तेरी हरारतें[37]
वो ज़िम्मेदारियों से मुअर्रा[38] शरारतें[39]

वो छोकरे अदब[40] से दरों में खड़े हुए
दायाओं के सरों पे वो आंचल पड़े हुए

मामाओं की सफ़ों[41] मे वो मुगलानियों[42] की शान[43]
रखा हुआ वो तख़्त पे चांदी का पानदान

वो तेरे गिर्द-ओ-पेश[44] बसद[45] शाने-इफ़्तिख़ार[46]
आवाज पानदान के खुलने की बार बार

शायाने-आफ़रीं[47] वो ख़्वातीन[48] का शिआर[49]
शोख़ी[50] के रंग मे भी वो इक नौअ[51] का वक़ार[52]

वो हैकलें[53] गलों में लबों[54] पर वो लालियां
हिलती हुई वो कानों में सोने की बालिया

वो लौंडियों[55] के रुख़[56] पे निशां[57] ख़ाक धूल के
जूड़े वो ऊंचे ऊंचे वो मूबाफ़[58] टूल[59] के

वो मर्द-ओ-ज़न[60] लिहाफ़ों के अन्दर घुटे हुए
रोब-आफ़री[61] दरों में वो पर्दे छुटे हुए

३२. कली होने का भाव, ३३. युग, ३४. फूलो की वर्षा, ३५. कोमल, ३६. शरीर, ३७. गर्मियां ३८. ऊपर, ३९. छेड़छाड़, ४०. शिष्टता, ४१. पक्तियों, ४२. मुग़ल स्त्रियां, ४३. वैभव, ४४. आसपास, ४५. सैकड़ों, ४६. गर्व की शान, ४७. शाबासी के योग्य, ४८. महिलाएं, ४९. आचरण, ५०. चचलता, ५१. प्रकार, ५२. गरिमा, ५३. हार, ५४. होंठ, ५५. दासियां ५६. चेहरा, ५७. चिह्न ५८. चोटी में बांधने का कपड़ा, ५९. टूल, लाल कपडा, ६०. स्त्री-पुरुष ६१. रोबीले ।

वो निचले[६२] बैठने से तबीअत का इतिशार[६३]
पहलू रजाइयो मे बदलना वो बार बार

हलकी रजाइयो की वो अफसाना-बारिया[६४]
अतलस[६५] की सुर्ख गोट पे वो सुर्ख[६६] धारिया

वो एक बादशाह की बेटी का जिक्रे-ख्रैर[६७]
वो बलवले जुनू[६८] के वो परियो का शौके-सैर[६९]

वो गरहमत[७०] मे गर्क[७१] बडी बूढियो की जान
वो काटना डली[७२] का कहानी के साथ सात

वो इक अजीब शाने-तरब[७३] से मिली हुई
शीरी[७४] हिकायतो[७५] मे सरोतो की रागनी

क्यो, अब भी याद है वो लडकपन के जमजमे[७६]
अय शम्ए-ख्वाबगाहे - फरागत[७७] जवाब दे

जिनको भुला रही है हमारी जवानिया
अब उनमे तुझको याद है कितनी कहानिया

६२. शांत, ६३. बेचैनी, ६४. कहानियां बनाना, ६५ रेशमी कपडा, ६६ लाल, ६७ बयान, ६८ उन्माद, ६९. सैर का शौक, ७० दया, ७१ डूबी हुई, ७२ सुपारी, ७३ खुशी की शान, ७४. मीठी, ७५ वृत्तांत, ७६ गीत, ७७ अवकाश ।

जाड़ा

अब्दुल मजीद 'शम्स' अज़ीमाबादी

गुलाबी है जाडा, सुहानी फजा[1]
खुला आसमा और ठडी हवा
हर इक घर है आसूदा,[2] गम[3] है किसे
मकई और मडवा से मटके भरे
है खेतो मे अब धान पक कर खडा
कही बोझ मे उसका खोशा[4] झुका
है कटनी मे मसरूफ[5] कुछ लडकिया
झुकी धान पर है वो मिस्ले-कमा[6]
कमर मे है आंचल के पट्टे बधे
अदा से है हाथो मे हसुआ लिये
है हाथो मे बिजली की जौलानिया[7]
मसर्रत[8] की आंखो मे ताबानिया[9]
कोई धान के काटने मे लगी
कोई उनके गट्ठों को लेकर चली
है अब जम्अ[10] कुछ धान खलियान मे
दमाही[11] के सामान खलियान मे
है खेतो मे गन्ने भी पक कर खडे
सजीले हरे और रस से भरे
हुआ गर किसी का इधर से गुजर
लगा चूसने एक दो तोडकर

१ वातावरण, २ समृद्ध, ३ शोक, दुख, ४ बाली, ५ व्यस्त, ६ धनुष के समान, ७ स्फूर्ति, ८ खुशी, ९ चमक, आभा, १० एकत्र, ११ धान काटने के बाद खलियान मे जमा करते हैं और उसके तनों को जमीन पर फैलाकर बैलो से रौन्दवाते हैं जिससे धान के दाने तने से अलग हो जाते हैं।

—२—

बढ़ी और सर्दी जो पूस आ गया
ठिठुरते है सर्दी से अब दस्त-ओ-पा[११/१]
मुसीबत बढ़ी और आया जो माघ
मसल है कि माघ का है बाघ
जो पछवा हवा तेज़ चलने लगी
तो होने लगी जिस्म[१२] मे कपकपी
सरे-शाम[१३] सर्दी से जाती है जा[१४]
किसानों को घर मे भी कब है अमा[१५]
है सर्दी से इस तरह इनका बचाव
जो घर मे है बुरसी[१६] तो बाहर अलाव
ज़मी[१७] पर बिछाया गया है पयाल
न तोशक[१८] न तकिये का कुछ है सवाल
कहीं खेत के पास कुलसार है[१९]
जहा सब्ज गन्नो का अम्बार[२०] है
जो चलती है चक्की निकलता है रस
लगातार मटकों मे ढलता है रस
किसान इसको पी पी के होते है मस्त
है कुलसार अब उनकी जा-ए-नशस्त[२१]
है जाड़े के फूलों की हर सू[२२] बहार[२३]
नही जिनकी क़िस्मो[२४] का कोई शुमार[२५]
है फूलों पे शबनम[२६] की वो आब-ओ-ताव[२७]
हो शोलो[२८] की मौजों पे जैसे हुबाब[२९]
खज़ाने हैं फ़ितरत[३०] के हर जा खुले
जिसे ज़ौक़[३१] हो सैर इनकी करे
अजब शान से खिल रहे है गुलाब
उमंडता है जाड़ों मे इनका शबाब[३२]

११/१. हाथ-पांव, १२. शरीर, १३. सध्याकाल, १४. प्राण, १५. सुरक्षा, शाति, १६. मिट्टी की अगीठी, १७. धरती, १८. गदेला, १९. चर्खी, २०. ढेर, २१. बैठक, २२ हर तरफ़, २३. शोभा, २४. प्रकार, ३५. गिनती, हिसाब, २६. ओस, २७. चमक, २८. ज्वाला, २९. बुलबुला, ३०. प्रकृति, ३१. इच्छा, शौक़, ३२. यौवन ।

अलग सबकी खूबी[33] अलग सबकी खू[34]
किसी में है रंगत किसी में है बू[35]
कोई सुर्ख है[36] और गुलाबी कोई
कोई है सफ़ेद और बसंती कोई
किसी में है रंगे शफ़क़[37] शोलाबार[38]
किसी में है नूरे-सहर[39] का निखार
नज़ाकत,[40] लताफ़त,[41] मलाहत,[42] चमक
लगावट, सजावट, तरावट, महक[43]
हर इक हुस्न-ओ-खूबी[44] का पैकर[45] गुलाब
फ़रोग़े-नज़र[46] रूह - परवर[47] गुलाब

गर्मी की शिद्दत[1]

'अनीस'

कोसों किसी शजर[2] में न गुल[3] थे न बर्ग-ओ-बार[4]
एक एक नख़्ल[5] जल रहा था सूरते-चिनार[6]
हंसता था कोई गुल न लहकता था सब्ज़ाज़ार[7]
कांटा हुई थी सूख के हर शाख़[8] बार दार[9]

गर्मी न थी कि जीस्त[10] से दिल सबके सर्द[11] थे
पत्ते भी मिस्ले-चेहर:-ए-[12]मदकूक़[13] ज़र्द[14] थे

३३. गुण, ३४. आदत, ३५. गंध, ३६. लाल, ३७. शफक का रंग, ३८. आग बरसाने वाला, ३९.प्रभात का प्रकाश, ४०. कोमलता, ४१. मृदुलता, ४२. सलोनापन, ४३ सुगंध, ४४. सौंदर्य और गुण, ४५. आकार, ४६ नज़र की चमक, ४७. ४७. प्राणवर्द्धक।

गर्मी की शिद्दत

१. तीव्रता, २. पेड़, वृक्ष, ३. फूल, ४. पत्ते और फल, ५. पेड़ ६. चिनार की तरह, ७. हरियाली, ८. डाली, ९. फलदार, १०. जिन्दगी, ११. ठण्डे, १२. चेहरे की तरह, १३. क्षयग्रस्त, १४. पीले।

शेर उठते थे न धूप के मारे कछार से
आहू न[15] मुंह निकालते थे सब्ज़ाज़ार[16] से
आईना मिह्र[17] का मुकद्दर[18] ग़ुबार[19] से
गर्दूं[20] को तप चढ़ी थी ज़मीं के बुख़ार से

गर्मी से मुज़तरिब[21] था ज़माना[22] ज़मीन पर
भुन जाता था जो गिरता था दाना ज़मीन पर

गर्मी का मौसम

ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

गर्मी से तड़प रहे थे जानदार
और धूप में तप रहे थे कुहसार[1]
भूबल से सिवा था रेगे-मेहरा[2]
और खौल रहा था आबे-दरिया[3]
थी लूट सी पड़ रही चमन में
और आग सी लग रही थी बन में
आरे थे बदन पे लू के चलते
शोले[4] थे ज़मीन से निकलते

१५. हिरन, १६. चरागाह, १७ सूरज, १८ मलिन, १९ धूल, २०. आकाश, २१ बेचैन, २२. संसार।

गर्मी का मौसम

१. पहाड़ी क्षेत्र, २. रेगिस्तान की रेत, ३. नदी का पानी, ४. ज्वाला।

थी सब की निगाह सू-ए-अफलाक[५]
पानी की जगह बरसती थी ख़ाक[६]
पंखे से निकलती जो हवा थी
वो बादे-समूम[७] से सिवा[८] थी
सात आठ बजे से दिन छुपे तक
जानदारों पे धूप की थी दमक
बाजार पड़े थे सारे सुनसान
आती थी नजर न शक्ले-इंसान[९]
चलती थी दुकान जिनकी दिन रात
बैठे थे वो हाथ पर धरे हाथ
खिलकत[१०] या हुजूम[११] कुछ अगर था
था पियाऊ पे या सबील[१२] पर था
पानी से थी सबकी जिन्दगानी[१३]
मेला था वहां जहां था पानी
थी बर्फ पर नीयतें लपकती
फालूदे पे राल थी टपकती
बच्चों का हुआ था हाल बेहाल
कुम्हलाये हुए थे फूल से गाल[१४]
आँखों में था उनके प्यास से दम
थे पानी को देख करते मम मम
पानी दिया गर किसी ने लाकर
फिर छोड़ते थे न मुंह लगाकर
तख़सीस[१५] थी कुछ न मेरी तेरी
पानी से न थी किसी को सैरी[१६]

५. आकाश की ओर, ६ धूल, ७ लू, ८ अधिक, ९ मानव १० जनसाधारण, ११. जमघट, १२. पियाऊ, १३ जीवन, १४ कपोल, १५. विशेषता, १६ तृप्ति।

कल शाम तलक तो थे यही तौर
पर रात से है समा[१७] ही कुछ और
पुर्वा की दुहाई फिर रही है
पछवा से खुदाई[१८] फिर रही है
बरसात का बज रहा है डंका
इक शोर[१९] है आसमा[२०] पर बरपा[२१]

गर्मी का मौसम

मौलवी मुहम्मद इस्माईल 'इस्माईल'

मई का आन पहुंचा है महीना
बहा चोटी मे एडी तक पसीना
बजे बारह तो सूरज सर पे आया
हुआ पैरो तले पोशीदा[१] साया
चली लू और तडाके की पडी धूप
लपट है आग की गोया कडी धूप
जमीं[२] है या कोई जलता तवा है
कोई शोला[३] है या पछवा हवा है

१७. वातावरण, १८ ससार, १९ कोलाहल, २० आकाश २१ फैला।

गर्मी का मौसम

१. छुपा हुआ, २ धरती, ३ ज्वाला।

दर-ओ-दीवार[४] हैं गर्मी से तपते
बनी आदम[५] हैं मछली से तड़पते
न पूछो कुछ ग़रीबों के मकां[६] की
ज़मीं का फ़र्श है छत आसमां[७] की
न पंखा है न टट्टी है न कमरा
ज़रा सी झोंपड़ी मेहनत का समरा[८]
अमीरों को मुबारक हो हवेली
ग़रीबों का भी है अल्लाह बेली[९]

गर्मी और देहाती बाज़ार

'जोश' मलीहाबादी

दोपहर, 'बाज़ार'[१] का दिन, गांव की ख़िलक़त[२] का शोर[3]
ख़ून की प्यासी शुप्राएँ[४] रूहफ़र्सा[५] लू का ज़ोर

आग की रौ कारोबारे-ज़िन्दगी[६] का पेच-ओ-ताब[७]
तुन्द[८] शोले, सुर्ख़[९] ज़र्रे, गर्म झोंके, आफ़ताब[१०]

शोर, हलचल, ग़लग़ला, हैजान[११], लू, गर्मी, ग़ुबार[१२]
बैल, घोड़े, बकरियां, भेड़ें, क़तार अन्दर क़तार[13]

४. दरवाज़े और दीवारें, ५. इंसान, मानव, ६. घर, ७. आकाश, ८. फल, ९. सहायक, मददगार।

गर्मी और देहाती बाज़ार

१. हाट, २. जनसाधारण, ३. कोलाहल, ४. किरणें, ५. रूह को घोटनेवाला, ६. जीवन का कामकाज, ७. मोड़, ८. प्रचण्ड, ९. लाल कण, १०. सूर्य, ११. कम्पन, १२. धूल, १३. पंक्ति।

धूप की शिद्दत[१४] हवा की यूरिशें[१५] गर्मी की रौ[१६]
कमलियों पर सुर्ख़[१७] चांवल टाट के टुकडों पे जौ

गर्म ज़र्रों के शदाइद[१८] झक्कडों[१९] की सख़्तिया[२०]
झक्कडों में खांसते बूढ़ों की चिलमों का धुआ

मांओ के काधों पे बच्चे गर्दनें डाले हुए
भूक की आँखो के तारे प्यास के पाले हुए

बाम-ओ-दर[२१] लरज़े[२२] हुए ख़ुर्शीद[२३] के आफात[२४] मे
हर नफस[२५] इक आँच सी उठती हुई ज़र्रात[२६] मे

मर्द-ओ-ज़न[२७] गर्दिश[२८] मे चीलो की सदा[२९] सुनते हुए
चिलचिलाती धूप की रौ मे चने भुनते हुए

म्यान से मौसम की तेगे[३०]-बे अमा[३१] निकली हुई
प्यास से इसान-ओ-हैवा[३२] की ज़बा निकली हुई

लू के मारे बाम-ओ-दर[३३] की रूह[३४] घबराई हुई
दोस्तो की शक्ल[३५] पर बेगानगी[३६] छाई हुई

यूं शुआएं[३७] साय:-ए-अशजार[३८] से छनती हुई
बेमुरव्वत[३९] की सपाट आँखो की जैसे रोशनी

१४. प्रचण्डता, १५. वर्षा, हमले, १६. वर्षा, १७ लाल, १८ तीव्रता, १९. तेज़ हवा, २०. कष्ट, २१. छत और दरवाज़े, २२. कम्पायमान, २३. सूर्य, २४ विपत्ति, २५ साम, २६. कण, २७. नरनारी, २८. चक्र. २९. आवाज़, ३०. तलवारें, ३१ बिना सुरक्षा के, ३२. मनुष्य और पशु, ३३. छत और द्वार, ३४ आत्मा, प्राण, ३५ सूरत, ३६ अनजानपन, अनभिज्ञता, ३७. किरणें, ३८. वृक्षो की छाव, ३९. जिनमे लिहाज़ न हो।

आसमां पर अब्र[40] के झटके हुए टुकड़ों का रम[41]
नशे में मुमसिक[42] का जैसे वादः-ए-जौद-ओ-करम[43]

हर रविश[44] पर चिड़चिड़ापन हर सदा[45] में बेरुखी[46]
हर जिगर भुनता हुआ, हर खोपड़ी पकती हुई

सर पे काफ़िर[47] धूप जैसे रूह[48] पर अक्से-गुनाह[49]
तेज किरनें, जैसे बूढ़े सूदख्वारों[50] की निगाह

गर्मी

(बैसाख और जेठ)

'शम्स' अज़ीमाबादी

परेशान[1] है इस वक्त हर आदमी
कि गर्मी है यह जेठ बैसाख की

गज़ब की है लू और कड़ी धूप है
बला जेठ बैसाख की धूप है

दहकती ज़मी, आसमां शोलाबार[2]
है सूखे हुए सरबसर[3] किश्तज़ार[4]

४० बादल, ४१ भागना, ४२. कंजूस, ४३ अत्याचार और दया का वचन, ४४ पुश्ता, ४५. आवाज़, ४६. रूखापन, ४७ विधर्मी, अत्याचारी, ४८ प्राण, ४९ पापों का प्रतिबिम्ब, ५० ब्याज खानेवाले,

गर्मी

१. व्याकुल, २. ज्वाला बरसाता हुआ, ३ बिल्कुल, ४ खेत।

है झुलसी हुई हर तरफ़ झाडियां
नही घास तक का जमी पर निशा

सिमट आये है बाग में सब चरिन्द[५]
छुपे बैठे है पत्तियों में परिन्द[६]

है खेत इन दिनों सारे सूखे पडे
भरे इनमे काटे है छोटे बडे

मगर खेत गन्नों के है जा बजा[७]
तर-ओ-ताजगी जिनकी है दिलकशा[८]

अलग सब से अन्दाज[९] है बाग का
हरी पत्तियो और फलो से भरा

खज़ाने है पानी के जेरे-ज़मी[१०]
कही दूर पर, पास ही मे कही

इन्ही से है शादाब[११] सारे शजर[१२]
इन्ही से है बालीदा[१३] बर्ग-ओ-समर[१४]

फ़रेबे-नजर[१५] रंग आराइया[१६]
है फ़ितरत[१७] की हर सम्त[१८] गुलकारिया[१९]

कही लीचियों के गुलाबी समर[२०]
बहार[२१] इनसे है बाग में रंग पर

कही फ़ालसा है कही मुलसिरी
कही जामुनों मे है शाखे झुकी

५. पशु, ६. पक्षी, ७. जगह-जगह, कहीं-कही, ८ आनन्ददायक, ९. अदा, हाव-भाव, १०. धरती के नीचे, ११. हरे-भरे, १२. वृक्ष, १३. विकसित, १४. पत्ते और फल, १५. नजर का धोखा, १६. सजावटें, १७. प्रकृति, १८. दिशा, १९, फूल बाजियां, २०. फल, २१. बसन्त, शोभा।

कहीं कटहलों से तने हैं लदे
कहीं पेड़ हैं बड़हलों में झुके

है आमों से हर बाग़, बाग़े-जिनां[२२]
है नज़्ज़ारे[२३] से जिनके दिल शादमां[२४]

जो ज़र्द[२५] आलुओं से हैं जरी[२६] शजर[२७]
तो हैं लाल परियों[२८] से लाली शजर

कही तोता[२९] परियों से रंगीं है बाग़
कही है सफ़ेदों[३०] से रौशन चिराग

चमकते है इस तरह रौशन तबाक़[३१]
कि हैं क़ुमक़ुमे जेरे-नीली रवाक़[३२]

जो जाती है चौमों[३३] की जानिब नजर
तो कहता है दिल है 'बहिश्ती समर'[३४]

कोई आम है शक्ल[३५] मे लाजवाब[३६]
गरज[३७] जितने है आम उतने सिफ़ात[३८]

हुई जेठ की सेपहर[३९] अब तमाम[४०]
गये लू के झोके, सुहानी है शाम

हवा की हरारत[४१] मे आई कमी
दरख़्तों[४२] पे आने लगी ताजगी

२२. स्वर्ग का बाग, २३. दृश्य, देखना. २४. प्रसन्न. २५. पीले, २६. सुनहरी, २७. वृक्ष, २८. एक आम, २९. आम का प्रकार, ३०. एक आम, ३१. एक आम, ३२. नीले बादलों के नीचे, ३३. एक आम, ३४. एक प्रकार का आम, ३५. देखने में, रूप, ३६. बेमिस्ल, अद्वितीय, ३७. अर्थात्, ३८. गुण, ३९. तीसरा, ४०. समाप्त, ४१. गर्मी, ४२. वृक्षों।

घरों से निकल आये इंसान भी
थे गर्मी के मारे परेशा[४३] सभी

हवा चलते चलते रुकी यक बयक[४४]
फजा[४५] पुर सुकू[४६] हो गई यक बयक

थी साकित[४७] हवा और जमी पुर सुकू
खामोशी[४८] दरख्तो की थी पुरफुसू[४९]

गरजने की बादल के आई सदा[५०]
चमकने लगी बिजलियो मे फजा

हवा थी जो सकिन हुई तेजगाम[५१]
कि अब रख्शे-फितरत[५२] हुआ बेलगाम

जमी से उठी गर्द[५३] सू-ए-फलक[५४]
लगे आँख मलने फलक पर मलक[५५]

हवा हर तरफ खाक उडाने लगी
दरख्तो को भला भलाने लगी

गिरी शाखे[५६] और पत्तियाँ टूट कर
गिरे डालियो से समर[५७] छूट कर

अजब नश्शे मे झूमते थे दरख्त
खुद अपने कदम चूमते थे दरख्त

था अब मूसलाधार पानी का जोर
गरज बादलो की हवाओ का शोर[५८]

४३. व्याकुल, ४४. सहसा, ४५ वातावरण. ४६ शान्त, ४७ स्थिर, ४८. मौन, ४९. रहस्यमयी, ५० आवाज, ५१ तीव्र गति, ५२ प्रकृति का घोडा, ५३ धूल, ५४. गगन की ओर, ५५. फरिश्ते, ५६. डालियाँ, ५७ फल, ५८. कोलाहल ।

न ठहरा पे[५६] पानी बहुत देर तक
फ़ज़ा साफ़ होने लगी यकबयक

हुआ अब्र[६०] दोशे-हवा[६१] पर रवा[६२]
बदलने लगा रंग फिर आसमा[६३]

फिर अन्दाजे-मौसम[६४] बदलने लगे
वही झोंके पछवा के चलने लगे

जलाने लगी जेठ की धूप तेज
हुआ मिहरे-ताबिन्दा[६५] फिर शोलारेज[६६]

जमी तप के आतिश[६७] उगलने लगी
जो सुलगी हवा, दूब जलने लगी

(मसनवी 'जलव-ए-सद रंग' से माखूज)

मौसमे-बहार

मिर्जा मुहम्मद रफी 'सौदा'

सजदः-ए-शुक्र[१] में है शाखे-समर[२] दार हर एक
देखकर बागे-जहां[३] में करमे-इज्ज-ओ-जल[४]

वास्ते खिलअते-नौरोज[५] के हर बाग के बीच
आरजू[६] कत्अ[७] लगी करने रविश[८] पर मखमल

५६ मगर, ६० बादल, ६१ हवा के कंधे, ६२ रवाना, ६३ आकाश, ६४ मौसम का रंग ढंग, ६५. प्रकाशवान सूर्य, ६६ आग बरसाने वाला, ६७. आग ।

मौसमे बहार

१. आभार मानने का सिज्दा, २ फूलों से लदी डाली, ३ संसार, ४. भगवान की दया ५. नौरोज का पुरस्कार, ६, नदी, नहर, ७. काटना, ८. पुश्ता, क्यारियों के बीच की जगह ।

बख्शती है गुले-नौरस्ता[१०] की रंग आमेज़ी[११]
पोशशे-छीट[१२] कलमकार[१३] बहरे-दश्त-ओ-जबल[१४]

अक्से-गुलबन[१५] पे ज़मी है कि जिसके आगे
कारे[१६]-नक़्शाशि-ए-मानी है[१७] दोयम[१८] वो अव्वल[१९]

साय-ए-बर्ग[२०] है इस लुत्फ[२१] से हर इक गुल[२२] पर
सागरे-लाल[२३] मे जू कीजिये जमुर्रुद[२४] को हल

बार[२५] से आबे-रवा[२६] अक्से-हुजूमे गुल[२७] के
लोटे है सब्ज़े पे अजबस[२८] कि हुवा है बेकल[२९]

आबजू[३०] गिर्दे-चमन[३१] लमअए-खुर्शीद[३२] से है
खत्ते-गुलजार[३३] के सफहे[३४] पे तिलाई[३५] जदवल[३६]

चश्मे-नर्गिस[३७] की बसारत[३८] के जिबर्स[३९] है दरे पे[४०]
गुच.-ए-लाला[४१] ने सुरमे से भरी है मिकजल[४२]

लड़खडाती हुई फिरती है खयाबा[४३] मे नसीम[४४]
पाव रखती है सबा[४५] सहन मे गुलशन[४६] के सँभल

(मारूज)

९ प्रदान करती. १०. नया फूल, ११. रग भरना, १२. छीट का वस्त्र, १३. एक फूलदार नक्शी कपड़ १४. जगल और पहाड के लिए, १५. सुर्ख गुलाब का प्रतिबिम्ब, १६. काम, १७ अर्थ की नक्काशी, १८. दूसरा, १९ प्रथम, २० पत्तो की छाव, २१. कृपा, २२. फूल, २३. शराब का प्याला, २४. पन्ना, २५ बोझ, २६. बहता पानी, २७. फूलो के जमघट का प्रतिबिम्ब, २८. बहुत, २९. व्याकुल, ३०. नदी, ३१ उपवन के आसपास, ३२. सूरज का प्रकाश, ३३. क्यारी, ३४. पृष्ठ, ३५. सुनहरी, ३६. लकीर, रेखा, ३७. नर्गिस की आँख, ३८. ज्योति, ३९. बहुत ४०. पीछे पड़ी हुई ४१. लाले की कली, ४२ सुर्मे की सलाई, ४३. क्यारी, ४४. हवा, ४५. हवा, ४६. उपवन।

आमदे-बहार

'ग़ालिब'

फिर इस अन्दाज़ से बहार आई
हो गये मिहर-ओ-मह[1] तमाशाई[2]

देखो ऐ साकिनाने-ख़ित्ता:-ए-ख़ाक[3]
इसको कहते हैं आलम आराई[4]

कि ज़मीं हो गई है सर ता सर[5]
रूकशे-सतहे-चर्खे - मीनाई[6]

सब्ज़े को जब कहीं जगह न मिली
बन गया रू-ए-आब[7] पर काई

सब्ज़:-ओ-गुल[8] के देखने के लिए
चश्मे-नर्गिस[9] को दी है बीनाई[10]

है हवा में शराब की तासीर[11]
बादा-नोशी[12] है बादा - पैमाई[13]

क्यों न दुनिया को हो ख़ुशी 'ग़ालिब'
शाहे-दीदार[14] ने शफ़ा[15] पाई

१. चांद और सूरज, २. तमाशा देखनेवाले, ३. धूल के क्षेत्र के वासियो, ४. सजावट, ५. नितांत. ६. नीले आकाश की तरह, ७. पानी की सतह. ८. फूल और हरियाली, ९. नर्गिस की आंख, १०. ज्योति, ११. असर, १२. मदिरापान, १३. शराबखोरी, १४. धर्मात्मा बादशाह, १५. सेहत, स्वास्थ्य ।

बहार आई

'अकबर' इलाहाबादी

बहार आई खिले गुल[१] जेबे-सहने-बोस्ता[२] होकर
अनादिल[3] ने मचाई धूम सरगर्मे-फ़ुगा[४] होकर

बिछा फ़र्शे-ज़ुमुर्रुद[५] एहतमामे-सब्ज़ः-ए-तर[६] मे
चली मस्तानावश[७] बादे-सबा[८] अम्बरफ़िशा[९] होकर

उरूजे-नश्शः-ए-नश्व-ओ-नुमा[१०] से डालिया झूमी
तराने[११] गाये मुर्ग़ाने-चमन[१२] ने शादमा[१३] होकर

बलाये शाखे-गुल[१४] की ली नसीमे-सुब्हगाही[१५] ने
हुई कलिया शिगुफ़्ता[१६] रू-ए-रगीने-बुता[१७] होकर

जवानाने-चमन[१८] ने अपना अपना रंग दिखलाया
किसी ने यासमन[१९] होकर किसी ने अर्गवा[२०] होकर

किया फूलों ने शबनम[२१] से वज़ू[२२] सहने-गुलिस्ना[२३] मे
सदा-ए-नग्मः-ए-बुलबुल[२४] उठी बागे-अजा[२५] होकर

१. फूल, २. उपवन की शोभा, ३. बुलबुल, ४ आर्तनाद मे लीन, ५. पन्ने का फर्श, ६. हरियाली के तत्वावधान में, ७. मस्तो की तरह, ८. प्रात समीर, ९ सुगध बिखेरती हुई, १०. विकास के नशे का उत्थान, ११. गीत, १२. उपवन के पक्षी, १३ खुश, १४ फूल की डाली, १५. प्रातः समीर, १६. ताज़ी, १७. सुन्दरियो के चेहरे, १८. उपवन के जवान, १९. चमेली, २० लाल, २१. ओस, २२. नमाज़ से पहले हाथ-मुह धोना, २३. उपवन, २४. बुलबुल के गीत की आवाज़, २५. अज़ान की आवाज़ ।

हवा-ए-शौक़[२६] में शाखें[२७] झुकीं खालिक़[२८] के सजदे[२९] को
हुई तस्बीह[३०] में ममरूफ़[३१] हर पत्ती ज़बां[३२] होकर

ज़बाने-बर्गे-गुल[३३] ने की दुआ रंगीं इबारत[३४] की
खुदा सरसब्ज़[३५] रखे इस चमन को महरबां[३६] होकर

बहार

'बेनज़ीर' शाह

बहार आई निखरे निहाले[१]-चमन
बदलने लगे नख़्ल[२] रख़्ते-कुहन[३]

वो बूटों में कल्ले[४] लगे फूटने
अनादिल[५] के चहले लगे छूटने

दरख़्तों[६] ने पहना वो धानी लिबास
लबे-नहर[७] सब्ज़ा[८] ज़ुमुर्रुद असास[९]

नई पत्तियां वो चमकने लगीं
वो खिलखिल के कलियां महकने लगीं

२६. अभिरुचि, २७. डालियां, २८. सृष्टा, २९. नतमस्तक, ३०. माला, ३१. व्यस्त, ३२. ज़बान, जिह्वा, ३३. फूल की पत्ती की ज़बान, ३४. वर्णन, ३५. हरा-भरा, ३६. मेहरबान, दयालु ।

बहार

१. पौधे, २. वृक्ष, ३. पुराने कपड़े, ४. अंकुर, ५. बुलबुल, ६. वृक्ष, ७. नहर के किनारे, ८. हरियाली, ९. बुनियाद ।

बनफ़शा[१०] कहीं सुम्बुले-तर[११] कहीं
कहीं सौसन-ओ-गुल[१२] बहार आफ़री[१३]

खिले फूल बेले के वो लाजवाब[१४]
वो फूले हज़ारों तरह के गुलाब

वो फूली चम्बेली खिला मोगरा
खिली चांदनी बाग़ में जा बजा[१५]

वो फूलों पे उड़ती हुई तितलियां
वो छत्तों से झुकने लगीं टहनियां

भरी गोद शाखों की असमार[१६] से
टपकने लगा शहद अशजार[१७] से

वो गदराये फल रंग लाने लगे
अनार अपना जोबन दिखाने लगे

वो अंगूर वो रसभरी लीचियां
लटकती हैं आमों में वो कैरियां

वो सेहरा[१८] की देखे कोई अब बहार[१९]
कि फूलों से हर शाख़[२०] है शोलाज़ार[२१]

वो फूला हुआ ढाक भी हर तरफ़
लगाये है इक आग सी हर तरफ़

१०. एक फूल, ११. ताज़ी बालछड़, १२. सेवती और गुलाब, १३. बहार दिखाने वाला, १४. अद्वितीय, १५. जगह जगह, १६. फल, १७. वृक्ष, १८. जंगल, १९. शोभा, २०. डाल, २१. लाल ।

वो सरसे के फूलों की बू तेज़-ओ-तुन्द[२२]
जिसे सूंघते ही खुले ज़ह्ने-कुन्द[२३]

दिखाते हैं इस वक़्त क्या क्या फबन[२४]
चमकती हो चाँदी की जैसे किरन

किधर से यह आई हवा या अजीब[२५]
मगर है करौंदे का जंगल क़रीब[२६]

करन फूल अकोबर[२७] लिये बेशुमार[२८]
दिखाता है चाँदी के घुंगरू मदार[२९]

वो सहजन के वो सुर्ख़[३०] घुंगची के फूल
अमलतास और मालकंगी के फूल

वो सेंहुरा का हर नख़्ल[३१] फूला हुआ
ग़मे-बादे-सरसर[३२] को भूला हुआ

नहीं होता यह ज़ोरे-मस्ती[३३] कभी
कि हर शै[३४] पे छाई है इक बेख़ुदी[३५]

मैं इस शाने-क़ुदरत[३६] पे हरदम निसार[३७]
दिखाई हमें जिसने क्या क्या बहार

२२. तीव्र, प्रचण्ड, २३. बन्द मस्तिष्क, २४. शोभा, २५. विचित्र, २६. निकट, २७, एक वृक्ष, २८. अनगिनत, २९. एक वृक्ष, ३०. लाल, ३१. वृक्ष, ३२. गरम हवा का ग़म, ३३. मस्ती का ज़ोर, ३४. वस्तु, ३५. नशा, बेहोशी, ३६. प्रकृति की शान, ३७. न्योछावर ।

आमदे-बहार[१]

मौलवी अहमद अली साहब 'शौक' किदवाई

हवा चारो तरफ अक्सा-ए-आलम[२] मे पुकार आई
बहार आई बहार आई बहार आई बहार आई

बहार आई दिखाई कादिरे-मुतलक[३] की शान उसने
जमी की तह[४] मे जो मुर्दे थे डाली उसमे जान[५] उसने

बहार आई है नेचर अपनी नक्काशी[६] दिखाता है
बहुत रगीन नक्शे सामने आखो के लाता है

जहा[७] से मिट गया बर्गे-खिजा[८] का बदनुमा[९] सिक्का
बहार अब ढालती है अशरफी के फूल का सिक्का

हवा-ए-सुब्ह[१०] इसके साथ पखा झलती आती है
हसी पडती हैं कलिया जब यह उनको मुह लगाती है

पहाडो से बहाया उसने बर्फे-साफ पिघला कर
रवा[११] होकर वही पानी समुन्दर मे मिला जाकर

शमीमे-बाग[१२] ने सीखा चलन इतरा के[१३] चलने का
जमाना आ गया पर्दे से सब्जे[१४] के निकलने का

दुल्हन की शक्ल[१५] हर गुल ने लिबासे-सुर्ख[१६] पहना है
शजर[१७] के जिस्म[१८] पर क्या खुशनुमा[१९] फूलो का गहना है

१. बसन्त का आगमन, २. ब्रह्माण्ड, ३ खुदा, ४ धरती के नीचे, ५ प्राण, ६ चित्रकला, ७. ससार, ८ हेमन्त के सूखे पत्ते, ९. कुरूप, १० प्रात समीर, ११ प्रवाहित, १२ बाग की सुगध, १३. इठला के, नखरे से, १४ हरियाली, १५ रूप, तरह, १६ लाल वस्त्र, १७. वृक्ष, १८. शरीर, १९. सुन्दर।

हुआ मश्शातगी[२०] पर नैयरे-आज़म[२१] जो आमादा[२२]
संवारा मुख़्तलिफ़[२३] रंगों से दुनिया का रुख़े-सादा[२४]

तअज्जुब[२५] क्या जो हैबत[२६] से ख़िज़ां[२७] के रुख़[२८] पे ज़र्दी[२९] है
कि वो फ़ौज उस पे ग़ालिब[३०] आई जिसकी सुर्ख़ वर्दी[३१] है

निकल आये हिजाबे-अर्ज़[३२] से गुल पैरहन[३३] लाखों
कहीं हैं सर्व क़द[३४] लाखों कहीं गुंचा-दहन[३५] लाखों

पिलाती है शजर[३६] को ओस अपना दूध ला लाकर
मुहब्बत से हवा मुंह चूमती है बार बार आकर

जड़ें अन्दर ही अन्दर फैलकर क़ूवत[३७] पकड़ती हैं
जमीं इनको जकड़ती है जमीं को वो जकड़ती हैं

चमन और दश्त[३८] में है हर तरफ़ अम्बार[३९] फूलों का
जिधर देखो ज़मीं[४०] पहने हुए है हार फूलों का

अयां[४१] सब्ज़े[४२] पे उलफ़त[४३] की अदाएं[४४] की हैं सूरज ने
बढ़ाकर हाथ किरनों के बलाएं ली हैं सूरज ने

हैं रौशन चाँदनी के फूल या तारे चमकते हैं
खिले हैं फूल लाला के कि अंगारे दहकते हैं

हज़ारों रंग की चिड़ियां हैं शक्लें[४५] ख़ुशनुमा[४६] जिनकी
अदाएं दिलरुबा[४७] जिनकी सदायें[४८] नग़मा ज़ा[४९] जिनकी

बहार आने से ख़ुश हैं हर तरफ़ इतराती फिरती हैं
हवा तो नाचती फिरती है चिड़ियां गाती फिरती हैं

२०. सिंगार, २१. सूर्य, २२. तैयार, २३. विभिन्न, २४. सादा चेहरा, २५ आश्चर्य, २६. भय, २७. हेमन्त, २८. चेहरा, २९. पीलापन, ३०. छा गयी, ३१. लाल वर्दी, ३२. धरती की शर्म, ३३. वस्त्र, ३४. सरो जैसे क़द के, ३५. कली जैसे मुह वाले, ३६. वृक्ष, ३७. शक्ति, ३८. जंगल, ३९. ढेर, ४०. धरती, ४१. प्रकट, ४२. हरियाली, ४३. प्रेम, ४४. हाव-भाव, ४५. रूप, ४६. सुन्दर, ४७ मोहक, ४८. आवाजें, ४९. संगीतमय।

दिया है तितलियो को रिज़्क[५०] का सामान फूलो ने
किया भौरो को जोशे-फैज़[५१] से मेहमान फूलो ने

हवा ही ने खिलाये गुल हवा ही फिर गिराती है
ज़मी जिसने किया पैदा वही फिर उनको खाती है

गरज़ अय 'शौक' इतराना अबस[५२] है हुस्ने-फानी[५३] पर
घमड इन्सा[५४] को नाज़ेबा[५५] है दो दिन की जवानी पर

बहार की एक दोपहर

'जोश' मलीहाबादी

बेचैन है हवाए बादल है हलका-हलका
भेडे चरा रही है दोशीजगाने-सेहरा[१]

कुछ लडकिया चने के खेतो मे गा रही है
कुछ फूल चुन रही है कुछ साग खा रही है

बूढा किसान अपनी गाडी पे जा रहा है
खेतो को देखता है और सर हिला रहा है

जेरे-कदम[२] जो बर्गे-पज़मुर्दा[३] आ रहे है
हर गाम पर कुचलकर नग्मे[४] सुना रहे है

खुर्शीद[५] बादलो मे किश्ती[६] जो खे रहा है
कौवो का बोलना तक इक लुत्फ[७] दे रहा है

खेतो पे धुंधली-धुंधली किरनें चमक रही है
सरसब्ज[८] झाडियो मे चिडिया फुदक रही है

५० भोजन, अन्न, ५१ दया का जोश ५२ बेकार, ५३ नश्वर सौंदर्य, ५४ मानव, ५५ अनुचित, अशोभनीय।

बहार की एक दोपहर

१ जगल की कुमारिया, २ पाव के नीचे, ३ उदास पत्ते, ४. गीत, ५ सूर्य, ६. नाव, ७. आनन्द, ८. हरी-भरी।

सूरज है सर पे, बादल साया किये हुए हैं
ठंडी हवा के झोंके गर्मी लिये हुए हैं

गुंचे[९] चटक रहे हैं गुलज़ारे-ज़िन्दगी[१०] के
दर खुल रहे हैं दिल पर असरारे-ज़िन्दगी[११] के

खुद अपने हाफ़्ज़े[१२] में जलवे दिखा रहा हूं
खोया गया हूं ऐसा अपने को पा रहा हूं

फागुन

अब्दुल मजीद शम्स'

फज़ा[१] न हैं फागुन की रानाइयां[२]
हवा में बहारों की सरमस्तियां[3]

हर इक सू फ़रावानि-ए-रंग-ओ-बू[४]
है फ़ितरत[५] में हर सिम्त[६] जोशे-नुमू[७]

दिलों में मसर्रत,[८] सरों मे सुरूर[९]
मिज़ाजों[१०] में बालीदगी[११] का वफ़ूर[१२]

न गर्मी, न सर्दी की शिद्दत[13] है अब
दिलों में उमंग और मसर्रत[१४] है अब

है दुनिया पे सूरज की तिरछी नज़र
कि फ़स्ले-बहारां[१५] की है से पहर[१६]

९. कलियां, १०. जीवन-वाटिका, ११. जीवन के रहस्य, १२. याददाश्त।

फागुन

१. वातावरण, २. सुन्दरता, ३. नशा, ४. रंग और सुगंध की अधिकता, ५. प्रकृति, ६. हर तरफ़, ७. विकास का जोश, ८. खुशी, ९. नशा, १०. स्वभाव, ११. बढ़वार, १२. अधिकता, १३. तीव्रता, १४. खुशी, १५. वसन्त, १६. तीसरा पहर।

बढी कुछ हरारत[१७] तो अब्र[१८] आ गया
फलक[१९] पर रिदा[२०] की तरह छा गया

तमाज़त[२१] मे सूरज की आई कमी
हवा मे तर-ओ-ताजगी[२२] आ गई

बरस कर खुला है जो अब्रे-बहार[२३]
नही नाम को अब फजा[२४] मे गुबार[२५]

हवा मे है इतना नमी[२६] का असर
है गौहर बदामा[२७] गियाह-ओ-शजर[२८]

सुहाना है मजर[२९] सुनहरी है धूप
कि धुल कर निखर आया फितरत[३०] का रूप

जमी पर है बारिश की ताबिन्दगी[३१]
उभरने को बेताब[३२] है जिन्दगी

जो ओझल हुआ आँख से आफताब[३३]
घटी बामे गर्दू[३४] की वो आब-ओ-ताब[३५]

हजर[३६] हो, शजर[३७] हो कि बर्ग-ओ-गियाह[३८]
सभी पर पडी इक रिदा-ए-सियाह[३९]

चमकने लगा अब रुखे-माहताब[४०]
फरोजा[४१] है अजुम[४२] बसद[४३] आब-ओ-ताब[४४]

है छिटकी हुई चांदनी हर तरफ
है चाँदी की चादर बिछी हर तरफ

१७ गर्मी, १८ बादल, १९ आकाश २० चादर, २१ गर्मी, २२ जीवन, सुहानापन, २३. वसन्त का बादल, २४ वातावरण २५ धूल, २६ आर्द्रता, २७ दामन मे मोती लिये हुए; २८ घास और पेड, २९ दृश्य, ३० प्रकृति, ३१ चमक, ३२ व्याकुल, ३३ सूर्य, ३४ आकाश की छत, ३५ आभा, ३६ पत्थर, ३७ पेड, ३८ पत्ते और घास, ३९ काली चादर, ४० चाद का मुह, ४१ प्रकाशमान, ४२ तारे, ४३ सैकडो ४४ आभा।

करौंदे से फूलों की झाड़ी भरी
बबूल और बेरी की शाखें[४५] हरी

मुअत्तर[४६] है फूलों की खुशबू[४७] से बन
हर इक पेड़ पर है नई इक फबन[४८]

हवा मस्त है झूमते हैं दरख़्त[४९]
हर इक शाख़, साक़ि-ए-साग़र बदस्त[५०]

जो रोशन हुआ चर्खे-गर्द[५१] का फ़र्क[५२]
छलकने लगा जामे-ज़र्री[५३] से शर्क़[५४]

चमकने लगी सुब्हे-नौ की[५५] किरन
हर इक शै[५६] में आने लगा बांकपन

खुशी से फ़ज़ा मुस्कुराने लगी
नसीमे सहर[५७] गुनगुनाने लगी

कहीं शाख़ पर फ़ाख़्ता[५८] खुशगुलू[५९]
बसद[६०] वज्द[६१] कहती है 'या पाक तू'

पपीहों ने रट 'पी कहां' की लगाई
कहीं मस्त कोयल ने कू कू सुनाई

कहीं से सदाएं[६२] महुकल की आई
कहीं तीतियां हारियल[६३] ने न ाई

वो तीतर कहीं फड़फड़ाकर उड़े
कहीं मोर झाडी में छुपने लगे

हिरन चौकड़ी भर के भागे उधर
गये दूर इतने न आये नज़र

४५. डालियां, ४६. सुगंधित, ४७. सुगध, ४८. शोभा, ४९. वृक्ष, पेड़, ५०. हाथ में प्याला लिये हुए साकी, ५१ आकाश, ५२. ललाट, ५३. सुनहले प्याले, ५४. पूर्व, ५५. नयी सुबह, ५६. वस्तु, ५७. प्रातः समीर, ५८. पंडुक, ५९. मधुर स्वर, ६०. सैकडों, ६१. झूमना, ६२. आवाजें, ६३. एक पक्षी ।

नई कोपलो से सजी झाडिया
हरी, सुर्ख[६४] और चम्पई पत्तिया

हो शीशम कि बड, ताड हो या खजूर
सभी है बहारो के नश्शे मे चूर

निकल आये पीपल से पत्ते नये
चमकदार, चिकने, सजीले बडे

है पाकड[६५] भी इस वक्त दूल्हा बना
है पहने हुए इक गुलाबी कबा[६६]

सरस के भी है फूल क्या खुशनुमा
सफेद और हरे रग मे जलवा नुमा[६७]

है आमो के बागो मे मजर[६८] की बास
हवा मे है नश्शा दरख्तो[६९] के पास

हसी[७०] शाखे[७१] कचनार की है झुकी
है कलियो मे इनकी अजब[७२] दिलकशी[७३]

है खुशरग[७४] फूलो मे चम्पा सजा
कोई बन्द है और कोई अधखिला

करौंदे के काटो पे फूलो का जाल
दिलो को भुलाता है रज-ओ-मलाल[७५]

हैं बेले की कलियो से शाखे[७६] लदी
हर इक शाख है मोतियो की लडी

६४ लाल, ६५ यह दरख्त पीपल से मिलता-जुलता होता है, इसको पाखर भी कहते है। इसमे जब नई पत्तियां निकलती हैं तो गुलाबी रग की होती हैं, ६६ वस्त्र, ६७ दर्शन देता हुआ, ६८ बौर, ६९ वृक्ष, ७० सुन्दर, ७१ डालिया, ७२ विचित्र, ७३ मोहकता, ७४. सुन्दर, ७५ शोक और दुख, ७६. डालिया।

अजब शान से भोगरा है खिला
दिल अफ़रोज़[७७] बू, दिलकश-ओ-दिलरुबा[७८]

है जर्कंडा या कोई नीलम परी
फ़रोज़ां[७९] चमन में बसद दिलबरी[८०]

अमलतास के ज़र्द[८१] चमकीले फूल
हों जिस तरह आवेज़ां[८२] सेहरे के फूल

कहीं गुलमुहर की क़तारें[८३] खड़ी
हसीं सुर्ख़[८४] फूलों से शाखें[८५] लदी

ग़रज़[८६] हर शजर[८७] पर है हुस्ने-बहार[८८]
छुपी दामने[८९]-गुल से है नोके-ख़ार[९०]

हैं कटनी में मसरूफ़[९१] पीर-ओ-जवां[९२]
मुसर्रत[९३] है चेहरों पे सब के अयां[९४]

है मेड़ों पे ग़ल्लों[९५] के बोझे धरे
है रक्खा जिन्हें खेत से काट के

इन्हें लड़कियां सर पे रक्खे चलीं
है चाल इनकी दिलकश,[९६] अदा दिलनशीं[९७]

उठाती हैं अपने क़दम तेज तेज़[९८]
जवानी की रानाइयां[९९] हश्र ख़ेज़[१००]

कमर में लचक बाज़ुओं में तनाव
जबीं[१०१] पर शिकन,[१०२] अबरुओं[१०३] में झुकाव

७७. मोहक, ७८. आकर्षक, ७९. प्रकाशमान. ८०. सैकड़ों आकर्षण लेकर, ८१. पीले, ८२. लटकते हुए, ८३. पंक्तियां, ८४. लाल, ८५. डालियां, ८६. अर्थात् ८७. वृक्ष, ८८. बहार का सौंदर्य, ८९. फूल का दामन, ९० कांटे की नोक, ९१. व्यस्त, ९२. बूढ़े और जवान, ९३. खुशी, ९४. प्रकट, ९५. अनाज, ९६. आकर्षक, ९७. दिल में बैठ जाने वाली, ९८. जल्दी-जल्दी, ९९. श्रृंगार, १००, प्रलय मचाने वाली, १०१. ललाट, १०२. बल, १०३. भवें।

है सीनोकी जुम्बिश[१०४] से लरजा[१०५] जमी[१०६]
न हो जाये बरपा[१०७] कयामत[१०८] कही

निगाहो मे इस्मत[१०९] की बेबाकिया[११०]
मशक्कत[१११] की चेहरे पे शादाबिया[११२]

कोई घूर के देख ले क्या मजाल[११३]
है गुर्बत[११४] की आँखो मे जाह-ओ-जलाल[११५]

चले शहर की सैर को साकिया[११६]
तिरे साथ होली का लूटे मजा[११७]

हर इक सिम्त[११८] होली की है धूम धाम
मुसर्रत[११९] से सरशार[१२०] हर खास-ओ-आम[१२१]

कई रग की दीदनी[१२२] है बहार[१२३]
जमी पर है कौसे-कजह[१२४] बेशुमार[१२५]

पिलाई है मौसम ने इतनी शराब
कि गालो पे सबके खिले है गुलाब

पिये बेपिये सब है नश्शे मे चूर
खुशी का है सबके दिलो मे सुरूर[१२६]

(मसनवी 'जलवः-ए-सदरग' से उद्धृत)

१०४ हिलना, १०५ कम्पायमान, १०६ धरती, १०७ उपस्थित १०८ प्रलय १०९ सतीत्व, ११० निर्भयता, १११ श्रम, मेहनत, ११२ ताजगी, ११३ साहस, हिम्मत, ११४. दरिद्रता, ११५ प्रताप, ११६ मदिरा विक्रेता, मदिरा पिलाने वाली, ११७ आनन्द, ११८. दिशा, ओर, ११९ खुशी, १२० परिपूर्ण, १२१ जनसाधारण, १२२ दर्शनीय, १२३ शोभा, १२४ इन्द्रधनुष, १२५. अनगिनत १२६ नशा।

पांचवां अध्याय

हमारे त्योहार

होली

'फ़ाइज़' देहलवी

आज है रोज़े - बसन्त अय दोस्तां[1]
सर्व क़द[2] हैं, बोस्तां[3] के दरमियां[4]

बाग़ में है ऐश-ओ-इशरत[5] रात दिन
गुल रुख़ां[6] बिन नईं[7] गुज़रती एक दिन

सबके तन में है लिबासे-केशरी[8]
करते है सद बर्ग[9] सूं लब[10] हमसरी[11]

ख़ूबरू[12] सब बन रहे हैं लाल ज़र्द[13]
बाग़ का बाज़ार है इस वक़्त सर्द[14]

चांद जैसा है शफ़क़[15] भीतर अयां[16]
चेहरा सब का अज़ गुलाल[17] आतिशफ़िशां[18]

हर छबीली अज़ लिबासे-केसरी[19]
ताज़ा करती है बहारे-जाफ़री[20]

नाचती गा-गा के होली दम-बदम[21]
ज्यों सभा इन्दर की दर बाग़े-इरम[22]

१. मित्रो, २. सरो जैसी ऊंचाई वाले, ३. उपवन, ४. बीच, ५. भोगविलास, ६. सुन्दरियां, ७. नहीं, ८. केशरी बाना, ९. सैकड़ों पत्ते, १०. होंठ, ११. बराबरी, १२. सुन्दर, १३, पीले, १४. ठण्डा, १५. अरुणिमा, १६. प्रकट, १७. गुलाल से, १८. ज्वालामुखी, १९. केसरी वस्त्रों में, २०. एक फूल का नाम, २१. क्षण प्रतिक्षण, २२. स्वर्ण का उपवन।

अज़ अबीर-ओ-रंगे-केशर और गुलाल[२३]
अब्र[२४] छाया है सफ़ेद-ओ-जर्द-ओ-लाल[२५]

ज्यो झड़ी हर सू[२६] है पिचकारी की धार
दौड़ती है नारियाँ बिजली के सार[२७]

जोशे-इशरत[२८] घर-ब-घर है हर तरफ़
नाचती है सब तकल्लुफ बर तरफ़[२९]

बयाने-होली

मीर तक़ी 'मीर'

होली खेला आसिफुद्दौला वजीर[१]
रंगे-सुहबत[२] से अजब है खुर्द-ओ-पीर[३]

जश्ने - नौरोजि-ए - अहले - हिन्द[४] सब
है यही, तब महवे-इशरत[५] हैगे अब

शीशा शीशा रंग सर्फ़े-दोस्ता[६]
सहने - दौलतखाना[७], रश्के - बोस्ता[८]

२३. अबीर गुलाल और केसर का रग, २४ बादल, २५. सफेद, पीला और लाल, २६. हर तरफ, २७. तरह २८. विलास का जोश, २९ लज्जा को छोडकर।

बयाने-होली

१. मंत्री, २. संगीत का आनन्द, ३. बच्चे-बूढ़े, ४. हिन्दुस्तानियो के नये साल का समारोह, ५. ऐश में लीन, ६. भारत पर न्योछावर, ७. घर का आँगन, ८. जिससे उपवन ईर्षा करे।

दस्ता दस्ता रंग में भीगे जवां[९]
जैसे गुलदस्ते थे जूओं पर रवां[१०]

रंग-अफ़शानी[११] सी पड़ती थी फुआर
रंगे-बारां[१२] था मगर अब्रे-बहार[१३]

क़ुमक़ुमे[१४] जो मारते हैं भर कर गुलाल
जिसके लगता आनकर फिर मुंह है लाल

बर्गे-गुल[१५] मिलवा[१६] उड़ाते थे अबीर
थी हवा में गर्द[१७] ता चर्ख़े-असीर[१८]

रौशनुद्दौला की थी यह रौशनी[१९]
कब हुई थी लेकिन ऐसी रौशनी

वो चरागां[२०] गर्चे[२१] थे दरगाह तक
थे तमाशाई गदा-ओ-शाह[२२] तक

राह में तिर्पोलिये[२३] मीनार थे
रौशनी के कूचः-ओ-बाज़ार[२४] थे

था जहां तक आब-ओ-दरिया[२५] का बहाव
वां तलक[२६] था इस चराग़ां का दिखाव

एक आलम[२७] देखता था दूर से
रात, दिन थी रौशनी के नूर[२८] से

९. युवक, १०. प्रवाहित, ११. रंग उड़ाना, १२. बरसात का रंग, १३. बहार का बादल, १४. बल्ब, १५. फूल की पत्ती, १६. मिलकर, १७. धूल, १८. बन्दी आकाश तक, १९. प्रकाश, २०. दीपोत्सव, २१. यद्यपि, २२. राजा और रंक, २३. तीन दरवाज़ेवाले, २४. बाज़ार और गलियां, २५. पानी और नदी, २६. तक, २७. संसार, २८. प्रकाश ।

इन दियों के अक्स[२९] से दरिया[३०] का आब[३१]
आईने की सत्ह की रखता था ताब[३२]

मुनअकिस[३३] जो थे चरागा तह तलक[३४]
आब[३५] की वुसअत[३६] थी बर नज्मे-फलक[३७]

हर दो जानिब[३८] चुन गये नारी अनार[३९]
गुलफिशानी[४०] से उन्हूं की थी, बहार

इस रविश से थे सितारे छूटते
नागहा[४१] जू होवे तारे टूटते

माहताबी इक तरफ से जो दबी
चॉद सा निकला, हुए हैरा[४२] सभी

आफरी[४३] सन्नाअ[४४] लोगो आफरीं
क्या लगाया बाग आकर कागजी[४५]

गुल[४६] कतर कर फूल गुल ही कर दिये
रग ताजे, कागजो मे भर दिये

मुत्तसिल[४७] तोपे सितारो की दगी
लोगो की आँखे फलक[४८] से जा लगी

देखिया क्या क्या न शोलाखेजिया[४९]
थी हवा मे से सितारारेजिया[५०]

२९. प्रतिबिम्ब, ३० नदी, ३१. पानी, ३२. चमक, ३३ प्रतिबिम्बित, ३४. तक, ३५ पानी, चमक, ३६. विस्तार, फैलाव, ३७. आकाश के तारे, ३८. दोनो ओर, ३९. आतिशबाजी का अनार, ४०. फूल बरसाना, ४१ अचानक, ४२. आश्चर्यचकित, ४३. धन्य, ४४. कारीगर, ४५. कागज का ४६. फूल, ४७. निकट, ४८. गगन, आकाश, ४९. शोले बरसाना, ५०. कण-कण होना।

नज़्र[५१] को नव्वाब की अहले-फ़िरंग[५२]
लेके आतिशबाजी आये रंग रंग[५३]

अर्सा[५४] गुलरेजी[५५] से गुलशन हो गया
चर्ख़[५६] इन तारों से रौशन हो गया

दागियां तोपें हवाई एक बार
फैले तारे आसमां[५७] में बेशुमार[५८]

क्या ही आतिश दस्तियां[५९] देकर गये
शोलों[६०] से पानी की लहरें भर गये

रहमत[६१] अय आतिश ज़नां[६२] क्या लाग है
कि बिसाते - आबे - दरिया[६३] आग है

(माख़ूज़ अज़ 'कुल्लियाते-मीर')

होली

मीर तक़ी 'मीर'

आओ साक़ी[१] बहार घिर आई
होली में कितनी शादियां[२] लाई

जिस तरफ़ देखो मारिका[३] सा है
शहर है या कोई तमाशा है

५१. भेंट करने, ५२. अंग्रेज, ५३. भांति-भांति की, ५४. मैदान, ५५. फूलझड़ी, ५६. आकाश, ५७. गगन, ५८. अनगिनत, ५९. हस्तकौशल, ६०. ज्वाला, ६१. दया, ६२. आग लगानेवाला, ६३. दरिया के पानी की बिसात।

होली

१. मदिरा पिलानेवाला, २, खुशियां, ३. मोर्चा।

आईन - बस्ता[४] हुआ है सारा शहर
कागज़ीं गुल[५] से गुलिस्ता[६] है दहर[७]

ऐसे गुल[८] फूल है जो सर्फ़े-कार[९]
राह रस्ते हुए है बाग-ओ-बहार[१०]

और बाज़ार रग लाये है
सारे रंगी सुतू[११] लगाये है

बस्ता आई[१२] दुकानें है अकसर[१३]
जिसमे सस्ती मताअ[१४] लाल-ओ-गुहर[१५]

मेवा नौरस - ओ-रसीदा[१६] बहुत
गुले[१७] - खुशरंग-ओ-बू-ए-चीदा[१८] बहुत

फिर लबालब[१९] है आबगीरे-रंग[२०]
और उडे है गुलाल किस किस ढंग

पगडिया जामे[२१] भीगी सौ सौ है
उनको - गुलहा-ए - तर[२२] कहे तो है

छडिया फूलो की दिलबरो[२३] के हाथ
सैकडो फूलो की छडी है हाथ

कुमकुमे भर गुलाल जो मारे
महवशा[२४] लाला रुख़[२५] हुए सारे

४. विधानबद्ध, ५. कागज़ के फूल, ६. उपवन, ७ ससार, ८ गुलाब, ९. काम के, १० सुसज्जित, ११. खम्भे, १२. शीशो से मजी हुई, १३ अधिकांश, १४ वस्तुएँ, १५. लाल और मोती, १६ ताज़ा और सूखा हुआ, १७. फूल, १८. चुनी हुई सुगन्ध और रग वाले, १९. पूर्ण, भरे हुए, २०. रग के पोखर, २१ जिसमे, २२. ताज़ा फूल, २३. प्रेमिका, २४. चन्द्रमुखी, (ब० ब०) २५. लाले के समान चेहरेवाले ।

ख्वान[26] भर भर अबीर लाते हैं
गुल की पत्ती मिला उड़ाते हैं

जश्ने - नौरोज़े - हिन्द[27] होली है
राग-ओ-रंग और बोली ठोली है

होली

शाह 'हातिम'

मुहैया[1] सब है अब अस्बाबे-होली[2]
उठो यारों भरो रंगों से झोली

इधर यार और उधर ख़ूबां[3] सफ़आरा[4]
तमाशा है तमाशा है तमाशा

चमन में धूम-ओ-गुल[5] चारों तरफ़ है
इधर ढोलक उधर आवाज़े-दफ़ है

इधर आशिक़[6] उधर माशूक़[7] की सफ़[8]
नशे में मस्त-ओ-हरयक जामबर[9] कफ़[10]

गुलाल अबरक से सब भर-भर के झोली
पुकारे यकबयक[11] होली है होली

२६. बड़ी थालियां, २७. नये साल का समारोह।

होली

१. प्राप्त, उपलब्ध, २. होली की सामग्री, ३. सुन्दरियां, ४. पंक्तिबद्ध, ५. धूम और कोलाहल, ६. प्रेमी, ७. प्रेमिका, ८. पंक्ति, ९. प्याला, १०. हाथ में, ११. सहसा।

लगी पिचकारियों की मार होने
हर एक सू[12] रग की बौछार होने

कोई है सावरी कोई है गोरी
कोई चम्पा बरन उम्रों मे थोडी

(माखूज अज मसनवी 'बज्मे-इशरत')

होली की बहारें

'नजीर' अकबराबादी

जब फागुन रग झमकते हो, तब देख बहारे होली की
और दफ के शोर खडकते हो, तब देख बहारे होली की
परियो के रग दमकते हो, तब देख बहारें होली की
खुम[1] शीशे[2], जाम[3] झलकते हो, तब देख बहारे होली की
महबूब[4] नशे मे छकते हो, तब देख बहारे होली की

हो नाच रगीली परियो का, बैठे हो गुलरू[5] रग भरे
कुछ भीगी ताने होली की, कुछ नाज-ओ-अदा[6] के ढग भरे
दिल भूले देख बहारो को और कानो मे आहग[7] भरे
कुछ तबले खडके रग भरे, कुछ ऐश[8] के दम मुह चग भरे
कुछ घुगरू ताल छनकते हो, तब देख बहारें होली की

१२ हर तरफ।

होली की बहारें

१. घड़ा, २ बोतल, ३ प्याला, ४. प्रेमिका, ५. फूल जैसे मुह वाले, ६ नखरे और हाव-भाव, ७ आवाज, ८ विलास।

सामान जहाँ तक होता है इस इशरत[९] के मतलूबों[१०] का
वो सब सामान मुहैया[११] हो, और बाग़ खुला हो ख़ूबों[१२] का
हर आन शराबें ढलती हों, और ठठ हो रंग के डब्बों का
हर ऐश[१३] मज़े के आलम[१४] में इक ग़ोल खड़ा महबूबों[१५] का
कपडों पर रंग झिड़कते हों, तब देख बहारें होली की

गुलज़ार[१६] खिले हों परियों के, और मजलिस[१७] की तैयारी हो
कपड़ों पर रंग के छींटों से खुशरंग अजब[१८] गुलकारी[१९] हो
मुंह लाल, गुलाबी आँखें हों और हाथों में पिचकारी हो
उस रंग भरी पिचकारी को अंगिया पर तक कर मारी हो
सीनों मे रंग ढलकते हों, तब देख बहारें होली की

उस रंग रंगीली मजलिस[२०] मे वो रण्डी नाचनेवाली हो
मुंह जिसका चाँद का टुकड़ा हो और आँख भी मय[२१] की प्याली हो
बदमस्त[२२] बड़ी मतवाली हो, हर आन बजाती ताली हो
मयनोशी[२३] हो, बेहोशी[२४] हो, 'भड़वे' की मुह में गाली हो
भड़वे भी भड़वा बकते हों, तब देख बहारें होली की

और एक तरफ़ दिल लेने को महबूब[२५] भवैयों के लडके
हर आन घडी गत भरते हों, कुछ घट घट के कुछ बढ़ बढ़ के
कुछ नाज[२६] जतावे लड लड़ के, कुछ होली गावे अड़ अड़ के
कुछ लचके शोख़[२७] कमर पतली, कुछ हाथ चलें, कुछ तन फड़के
कुछ काफ़िर नैन मटकते हों, तब देख बहारें होली की

९ भोग-विलास, १०. इच्छुक, ११ उपलब्ध, १२. सुन्दरियाँ, १३. विलास, १४. दशा, १५. प्रेमिकाएँ, १६. उपवन, १७. महफिल, १८. विचित्र, १९. बेलबूटे, २० महफ़िल, २१. मदिरा, २२ मदोन्मत्त, २३. मदिरापान, २४. मत्तता, २५. प्रिय, २६. नख़रे, २७. चंचल।

यह धूम मची हो होली की और ऐश[२८] मज़े का झक्कड़[२९] हो
उस खींचा खींच घसीटी उपर भडवे खन्दी का फक्कड़ हो
माजून[३०],शराबें, नाच, मज़ा और टिकिया,[३१] सुलफ़ा[३२] कक्कड़ हो
लड़भिड़ के 'नज़ीर' भी निकला हो, कीचड में लत्थड पत्थड़ हो
जब ऐसे ऐश महकते हों, तब देख बहारें होली की

होली

सआदत यार खां 'रंगी'

भर के पिचकारियों में रंगी[१] रंग
नाज़नीं[२] को खिलाई होली संग

चलती है दो तरफ से पिचकारी
मेह बरसता है रंग का भारी

बादल आये हैं घिर गुलाल के लाल
कुछ किसी का नहीं किसी को ख़याल[३]

हाथ में जिसके वा हज़ारा है
एक आलम[४] को उसने मारा है

हैं जो मसरूफ़[५] सब सग़ीर-ओ-कबीर[६]
उड़ रहा है गुलाल और अबीर

बन गये है हवा मे वो बादल
और जमी[७] मे पडे है·थल के थल

२८. बिलास, २९. तेज़ हवाएं, ३० पाक, ताक़त की दवा, ३१ नशे की गोली, ३२. नहारी, नाश्ता ।

होली

१. रंग-बिरंगे, २. प्रेमिका, सुन्दरी, ३. ध्यान, ४. संसार, ५. व्यस्त, ६. छोटे-बड़े, ७. धरती ।

सर के बालों का है किसी को ग़म[८]
कोई मलती है आंख ही हरदम

है खड़ी कोई भर के पिचकारी
और किसी ने किसी को जा मारी

कोई जाती है इस तरफ़ से उधर
कोई आती है उस तरफ़ से इधर

भर के पिचकारी वो जो है चालाक
मारती है किसी को दूर से ताक

किसी ने भर के रंग का तसला[९]
हाथ से है किसी का मुंह मला

और मुट्ठी में अपनी भर के गुलाल
डालकर रंग मुंह किया है लाल

जिसके बालों में पड़ गया है अबीर
बड़बड़ाती है यह, वह हो दिलगीर[१०]

ऐसी होली का खोजड़ा[११] जावे
कोई नौज[१२] ऐसे खेल में आवे

जिसकी आंखों में पड़ गया है गुलाल
वो यह कहती है ठिनक के है, फ़िलहाल[१३]

८. चिन्ता, शोक, ९. तासला, थाली, १०. दुखी, ११. नाम-निशान, १२. ख़ुदा न करे, १३. अभी।

चल गई मुझ पे आह फ़ौज की फ़ौज[१४]
घर से मैं अपने आज आई नौज

जिसने डाला है हौज़[१५] में जिसको
वो यह कहती है कोसकर उसको

यह हंसी तेरी भाड़ में जाये
तुझको होली न दूसरी आये

मेरी होली

'सीमाव' अकबराबादी

काश[१] हासिल[२] हो हक़ीक़ी[३] ज़िन्दगी का एक दिन
सरख़ुशी[४] का एक लमहा[५], या ख़ुशी का एक दिन
कर दिया है शोरिशे-आलम[६] ने दीवाना[७] मुझे
है बिसाते-दहर[८], वहशतनाक[९] वीराना[१०] मुझे[११]

इक नई दुनिया की ख़िलक़त[१२] है मेरी तख़ईल[१३] में
जो मआविन[१४] हो सके इंसान[१५] की तकमील[१६] में
एहतमामे-ज़िन्दगी[१७] जिसमें बतौरे-ख़ास[१८] हो
आसमां[१९] जिसका मुहब्बत हो, ज़मीं[२०] इख़लास[२१] हो

१४. सैना, १५. छोटा तालाब।

मेरी होली

१. क्या ही अच्छा हो, २. प्राप्त, ३. वास्तविक, ४. मस्ती, ५. क्षण, ६. संसार की बग़ावत, ७. पागल, ८. दुनिया रूपी बिसात, ९. भयानक, १०. निर्जन स्थान, ११. मेरे लिए, १२. सृष्टि, १३. कल्पना, १४. सहयोगी, १५. मानव, १६. पूर्णता, १७. जीवन-व्यवस्था, १८. विशेष रूप से, १९. आकाश, २०. धरती, २१. निष्ठा।

कृष्ण की अज यादे-रफ़्ता[22] महफ़िलें[23] ज़िन्दा करो
ब्रज-ओ-गोकुल की बुझी शमओं[24] को ताबिन्दा[25] करो
खुश्कि-ए[26] गंग-ओ-जमन[27] को आबयारी[28] के लिए
दावतें[29] दो गोपियों को रंग बारी[30] के लिए

अज़ सरे-नौ[31], फिर, मरत्तब[32] हो जहाने-रंग-ओ-बू[33]
खार-ओ-ख़स[34] मे फिर हो पैदा कारखाने-रंग-ओ-बू[35]
प्रेम रस से लाओ भर कर खुशनुमा[36] पिचकारियाँ
हों नई दामाने-हस्ती[37] पर लताफ़त बारियाँ[38]

रूह[39] की आवाज हम आहंगे-साज-ओ-चंग[40] हो
जो पड़े इंसां[41] पे वो इन्सानियत[42] का रंग हो
चाहता हूँ यूं हो रंगी पैरहन और सारियाँ
शुस्त-ओ-शू[43] में भी न जायल[44] हो सके गुलकारियाँ[45]

जिस्म[46] की सूरत[47] रहे दिल भी, मसर्रत[48] में शरीक[49]
रूहे-आज़ादी[50] भी हो जाये हक़ीक़त[51] में शरीक
चाहता हूँ गुलशने-कुहना[52] पर आ जाये शबाब[53]
तिनका तिनका फूल हो और पत्ता-पत्ता आफ़ताब[54]

२२. बीती याद, २३. गोष्ठियां, २४ चराग, २५. रोशन, २६. सूखापन, २७ गंगा और यमुना, २८. सिंचाई, २९ निमंत्रण, ३०. रंग बरसाना, ३१ फिर से, ३२ सम्पादित, ३३. रंग और सुगंध का संसार, ३४ कांटे और घास, ३५. रंग और सुगंध, ३६. सुन्दर, ३७. अस्तित्व का आंचल, ३८ मृदुलता की वर्षा, ३९ आत्मा, ४० साज़ और चंग की आवाज के समान, ४१ मानव, ४२. मानवता, ४३ धोना, ४४. नष्ट, ४५. बेलबूटे, चित्र, ४६. शरीर, ४७. समान, ४८. ख़ुशी, आनन्द, ४९. सम्मिलित, ५०. आज़ादी की रूह, ५१ सचमुच, ५२. प्राचीन उपवन, ५३ जवानी, यौवन, ५४. सूर्य।

ताज़गी बजहे-शिगुफ्ते-खातिरे-आलम[५५] रहे
मेरी दुनिया मे हमेशा एक ही मौसम रहे
शाइर-ओ-सन्नाअ[५६] हो फिक्र-ओ-खलिश[५७] से बेनियाज[५८]
ख्वाजः-ओ-मजदूर[५९] में बाकी न हो कुछ इम्तियाज[६०]

इर्तिका[६१] के रंग से लबरेज़[६२] झोली हो मेरी
इंकिलाब[६३] ऐसा कोई हो ले[६४] तो होली हो मेरी

बसन्त और होली की बहार

मुशी द्वारका प्रसाद 'उफ़क' लखनवी

साकी[१] कुछ आज तुझको खबर है बसन्त की
हर सू[२] बहार[३] पेशे-नजर[४] है बसन्त की

सरसो जो फूल उठी है चश्मे-क़ियास[५] मे
फूले फले शजर[६] है बसन्ती लिबास[७] मे

पत्ते जो जर्द जर्द[८] है सोने के पात है
सद बर्ग[९] से तिलाई[१०] करन फूल मात[११] है

५५. ससार के लिए ताजगी का कारण, ५६ कारीगर, ५७. चिन्ता और दुख, ५८ निस्पृह, ५९. मजदूर और मालिक, ६० फर्क, अन्तर, ६१ विकास, ६२ परिपूर्ण, भरी हुई, ६३ क्रांति. परिवर्तन, ६४ हो जाय।

*बसन्त और होली की बहार

१. मदिरा पिलाने वाली, २. तरफ, ३. बसत, ४. नजर के सामने, ५. कल्पना की आंख, ६. वृक्ष, ७. वस्त्र, ८. पीले, ९. पत्ते, १०. सोने की, ११. हेच, तुच्छ।

है चूड़ियों की जोड़ बसन्ती कलाई में
बांकें बहारदार[12] है दस्ते-हिनाई[13] मे

मस्ती भरे दिलों की उमंगें न पूछिये
क्या मंतिक़ें[14] हैं क्या है तरंगें न पूछिये

माथे पे हुस्नखेज़[15] है जलवा[16] गुलाल का
बिन्दी से ग्रौज[17] पर है सितारा जमाल[18] का

गेंदों से माईले-गुलबाज़ी[19] हसीन[20] है
सर के उभार पर से दुपट्टे महीन है

ग्रक्से-निक़ाब[21] जीनते-रुखसार[22] हो गया
ज़ेवर जो सीम[23] का था तिलाकार[24] हो गया

सरसों के लहलहाते खेत इस बहार मे
नर्गिस के फूल फूल[25] उठे लालाजार[26] मे

ग्रावाज है पपीहों की मस्ती भरी हुई
तूती[27] के बोल सुन के तबीयत[28] हरी हुई

कोयल के जोड़े करते है चुहले[29] सुरूर[30] से
ग्राते हैं तान उड़ाते हुए दूर दूर से

बौर ग्राम के है यूं चमने-कायनात[31] में
मोती के जैसे गुच्छे हों ज़रकारपात[32] में

१२. सजे हुए, १३. मेंहदी-लगा हाथ, १४. तर्क, १५. सौंदर्य बढ़ाने वाला, १६. दर्शन, १७. पराकाष्ठा, १८. सौंदर्य, १९. फूल फेंकने को लालायित, २०. सुन्दरियां, २१. निक़ाब का प्रतिबिम्ब, २२. गालों की शोभा, २३. चांदी, २४. सुनहरी, २५. खिल उठे, २६. लाले का उपवन. २७. मैना-एक पक्षी, २८. खुश, प्रसन्न, २९. छेड़छाड़, ३०. मस्त होकर, ३१. संसार का बाग़, ३२. सुनहरी ।

भौंरों की गूंज मस्त है हर किश्तज़ार[३३] में
बंसी बजाते किशन हैं गोया[३४] बहार में

केसर कुसुम की ख़ूब दिलअफ़ज़ा[३५] बहार है
गेंदों की हर चमन में दो रूया[३६] क़तार[३७] है

इक आग सी लगाई है टेसू ने फूल[३८] के
क्या ज़र्द ज़र्द फूल खिले हैं बबूल के

हैं इष्ट देवताओं के मन्दिर सजे हुए
हैं ज़र्द ज़र्द फूलों से कुल दर[३९] सजे हुए

बसुदेवजी के लाल[४०] की झांकी अजीब[४१] है
आनन्द बेहिसाब दिलों को नसीब[४२] है

बंसी जड़ाऊ सोने की लब[४३] से मिली हुई
दिल की कली कली है नज़र में खिली हुई

पीताम्बर नफ़ीस[४४] कमर में कसा हुआ
ख़ुशबू[४५] से हार फूल की मन्दिर बसा हुआ

शानों[४६] पे बल पड़े हुए ज़ुल्फ़े-सियाह[४७] के
राधा से बार बार इशारे निगाह के

बांकी अदाएं[४८] देख के दिल लोट पोट है
रुतकाम स्त्री के कलेजे पे चोट है

कानों में कुन्डलों की चमक है ज़ड़ाव से
राधा लजाई जाती हैं चंचल सुभाव से

३३. खेत, ३४. मानो, ३५. दिल लुभाने वाली, ३६. दोनों ओर, ३७. पंक्तियां, ३८. खिलकर, ३९. दरवाजे, ४०, श्रीकृष्ण. ४१. विचित्र, अनोखी, ४२. प्राप्त, ४३. होंठ, ४४. सुन्दर, ४५. सुगंध, ४६. कंधे, ४७. काली लटें, ४८. हाव-भाव ।

प्यारी का हाथ अपनी बग़ल में लिये हुए
आँखें शराबे-हुस्ने-जवानी[४६] पिये हुए

दिल राधिका का बाद:-ए-उलफ़त[५०] से चूर है
कोहनी से ठेलने की अदा का जहूर[५१] है

चुपकी खड़ी हैं किशन के रुख़[५२] पर निगाह है
है पहलु-ए-जिगर में जगह दिल में राह है

उलफ़त[५३] भरी जो बंसी की जानिब[५४] नज़र गई
गोया[५५] बसंत राग की धुन मस्त कर गई

इस छब पे इस सिंगार पे दिल से निसार[५६] 'उफ़ुक'
क़ुर्बान[५७] एक बार नहीं लाख बार उफ़ुक़

अय किशन नाज़िरीन[५८] को मुबारक बसंत हो
खेला जो आपने वो अबद[५९] तक बसंत हो

बसंत

'नज़ीर' अकबराबादी

मिलकर सनम[१] से अपने हंगामे-दिलकुशाई[२]
हंस कर कहा यह हमने अय जां[३] बसंत आई

४६. यौवन-सौंदर्य की मदिरा, ५०. प्रेम-मदिरा, ५१. प्रकटीकरण, ५२. चेहरा, ५३. प्रेम, ५४. ओर, ५५. मानो, ५६. न्योछावर, ५७. न्योछावर, ५८. दर्शक, ५६. अनादिकाल।

बसंत

१. प्रेमिका, मूर्ति, २. दिल खोलने के समय, ३. अय जान।

जब रंग के आई उसकी पोशाक[४] पर नजाकत[५]
सरसो की शाखे-पुरगुल[६] फिर जल्द इक मंगाई

इक पंखडी उठाकर नाज़ुक[७] सी उंगलियो मे
रंगत फिर उसकी अपनी पोशाक[८] से मिलाई

फिर तो बसद मसर्रत[९] और सौ नजाकतो[१०] से
नाज़ुक बदन[११] पर अपने पोशाक वो खपाई

चम्पे का इत्र मलकर मोती से फिर खुशी हो
सीमी[१२] कलाइयो मे डाले कडे तिलाई[१३]

क्या क्या बया हो जैसे चमकी चमन चमन[१४] मे
वो ज़र्दपोशी[१५] उसकी, वो तर्ज़े-दिलरुबाई[१६]

बसंत

इशाअल्ला खा 'इशा'

सद[१] बर्ग[२] गह[३] दिखाये है, गह अर्गुवा[४] बसत
लावे है एक ताज़ा शिगूफा[५] यहा बसत

आते नज़र हैं दश्त-ओ-जबल[६] ज़र्द[७] हर तरफ़
है अबके साल ऐसी ही अय दोस्ता[८] बसत

४. वस्त्र, ५ मृदुलता, ६ फूलो से लदी डाली, ७ कोमल, ८. वस्त्र, ९. आनन्द, १०. कोमलताओ, ११. शरीर, १२ चादी की, चादी जैसी, १३ सोने के, १४. उपवन, वाटिका, १५. पीले कपडे पहनना, १६ आकर्षक ढग।

बसंत

१. सौ, २. पत्ते, ३ जगह, ४. लाल, ५. कली, ६ जंगल और पहाड, ७ पीले, ८ दोस्तो।

शादाबि-ए-नसीम[९] से . बहरे - सुरूर[१०] को
करती है जोश मारके अब बेकरां[११] बसंत

गर शाखे-जाफ़रा[१२] इसे कहिये तो है रवा[१३]
है फ़रहवख्श[१४] वाक़ई[१५] इस हद को हा बसंत

'इंशा' मे शेख पूछता है क्या सलाह[१६] है
तर्गीबि-बादा[१७] दे है मुझे अय जवा[१८] बसंत

बसंत

'अमानत' लखनवी

है जलव.-ए-तन[१] मे दर-ओ-दीवार[२] बसंती
पोशाक[३] जो पहने है मिरा यार बसंती

क्या फ़स्ले-बहारी[४] ने शिगूफे[५] है खिलाये
माशूक[६] है फिरने सरे-बाजार बसंती

गेंदा है खिला बाग़ मे, मैदान मे सरसों
सेहरा वो बसती है, यह गुलजार[७] बसंती

गेंदों के दरख्तों[८] मे नुमायां[९] नहीं गेंदे
हर शाख के सर पर है यह दस्तार[१०] बसंती

९. मृदु समीर की मुमिक्ति, १० नशे का सागर, ११ असीम, १२ केसर की डाली, १३. उचित, १४. आनन्ददायक, १५. सचमुच, १६. इरादा, १७. मदिरापान के लिए उसकाना, १८. जवान।

बसंत

१. शरीर का दर्शन, २ दरवाजे और दीवारें, ३. वस्त्र, ४. बसंत, ५. कलियाँ, ६ प्रेमिकाएँ, ७. उपवन, ८ पौधों, ९ प्रकट, १०. पगड़ी।

मुंह जर्द[11] दुपट्टे के न आंचल में छुपाओ
हो जाये न रंगे-गुले-रुखसार[12] बसंती

खिलती है मिरे शोख[13] पे हर रग की पोशाक[14]
ऊदी,[15] अगरी, चम्पई, गुलनार[16], बसंती

है लुत्फ[17] हसीनो[18] की दोरंगी का 'अमानत'
दो चार गुलाबी हो तो दो चार बसंती

बसंती रंग की बहार

'बेनजीर' शाह

चले साकिया[1] दौर[2] गुम हो हवास[3]
कि जोबन दिखाये बसंती लिबास[4]
उठा जामे-जर्रीं[5] पिला बेद रग
कि आशिक[6] के हिस्से मे है[7] ज़र्द रग
वो बौर आये आमो पे, है क्या समा[8]
चमकती है पुखराज[9] की कलगिया[10]
दिखाते है दो चार फूल अब बबूल
है पर दूर तक फूले[11] सरसो के फूल
दिया किसने यह आबे-जर[12] बेकियास[13]
कि हर खेत का है बसती लिबास

११. पीला, १२. कपोल के फूल का रग, १३ चचल, १४ वस्त्र, १५ हरी, १६ लाल, १७. मजा, १८. सुन्दरियो ।

बसंती रंग की बहार

१. मदिरा पिलाने वाला, २. चक्र, ३ होश, ४. वस्त्र, ५. सुनहरी प्याला, ६ प्रेमी, ७ पीला, ८. वातावरण, ९. पीला रत्न, १०. तुर्रे, ११. खिले, १२. सोने का पानी, १३. बेहिसाब ।

यह ज़र-बफ़्त[१४] और कामदानी[१५] का काम
    किया किसने मख़मल पे यकसां[१६] तमाम[१७]
यह मस्ती दिखाई है हर फूल ने
    कि आँखों में सरसों लगी फूलने
नज़र तुर्फ़ातर[१८] रंग लाने लगी
    हथेली पे सरसों जमाने लगी
सुनहरी हुई सन की पक्की फली
    छड़े और छागल बजाने लगी
गले में खजूरों की लौ चमई
    पिन्हाई है मौसम ने चम्पाकली
वो फूला कुसुम ग़ैरते-ज़ाफ़रां[१९]
    बना रश्के-कशमीर[२०] हिन्दोस्तां
चमकती है वो गोंदनी दूर से
    कि यह क़ुदरती[२१] ज़र्द मोती फले
चमन में वो सींकों की है क्या बहार
    कि क़ुदरत ने खींचे हैं सोने के तार
वो हिलती है सरसे की सूखी फली
    लटकती है सोने की या पचलड़ी
जो बुन्दे हैं पुखराज के ज़र्द बेर
    दिखाते हैं सोने के जुगनू कनेर
मटर की वो फलियां जो कच्ची थी सब
    दिये ज़र[२२] के जौशन[२३] इन्हें किसने अब
वो क्या-क्या चमकती है कमरख की फांक
    बिठाई है क़ुदरत ने कुन्दन की डांक
वो लीमू जो थे कागज़ी सब्ज़तर[२४]
    लटकते हैं अब बनके तावीज़े-ज़र[२५]
पहाड़ी कसौंजी जो है सामने
    बुलाक़ इसको सोने के किसने दिये

१४. चमकदार कपड़ा, १५. तारकशी, १६. एक जैसा, १७. पूरा, १८. नवीन, अद्भुत, १९. केसर को शरमाने वाले २०. कश्मीर भी जिससे ईर्षा करे, २१. प्राकृतिक, स्वाभाविक, २२. सोना, २३. बाजू का गहना, २४. हरे-हरे, २५. सोने के तावीज़।

वो गेंदे की शाखें जो है सब्ज़फ़ाम[२६]
है लटकाये कुन्दन के झुमके तमाम
हुई जर्द पककर फली सेम की
चमकती है क्या बिजलिया चम्पई
वो चम्पा कि खिजलत[२७] दहे-लाजवर्द[२८]
मिला क्या ही झूमर उसे जर्द ज़र्द[२९]
उठाये हुए हाथ सूरजमुखी
दिखाती है सोने की वो आरसी
जो दाऊदी के जर्द गुचे खिले
करनफूल इनको कहा से मिले
हरी गोद केले की थी जो उधर
बनी झाड पुखराज का सर बसर[३०]
लिये जामे - जर्री[३१] बसद[३२] आब-ओ-ताब[३३]
वो क्या जर्द - जर्द आज फूला गुलाब
सुनहरी जो गोभी मे फूल आये हे
कटोरे यह सोने के औधाये हे[३४]
वो फूलो पे हर सिम्त[३५] छाया बसत
वो बुलबुल भी गाते है क्या-क्या बसत
दरख्तो[३६] से वो उतरी आती है धूप
जमी[३७] पर भी सोना चढाती है धूप
पडा जर्द किरनो का अक्स[३८] आब[३९] मे
हुआ जर्द पानी भी तालाब मे
बसती है यह जाम-ए-हर बशर[४०]
कि हलदी भी शर्माती है देखकर
है माशूक[४१] या साहबे-दर्द[४२] है
जिसे देखिये जर्द ही जर्द हे
न क्यो इतनी ज़र्दी पे हो अक्ल[४३] दग[४४]
यह छाया हे उड-उड के आशिक[४५] का रग

(माखूज़)

२६ हरी, २७ लज्जा, २८ एक नीला रत्न, २९ पीला, ३०. बिल्कुल, ३१ सोने का प्याला, ३२ सैकडो, ३३ चमक, ३४ उलटे हैं, ३५ ओर, ३६ वृक्षो, ३७ धरती, ३८ प्रतिबिम्ब, ३९ पानी, ४०. हर व्यक्ति के वस्त्र, ४१ प्रेमिका, ४२ दर्द की मूर्ति, ४३ बुद्धि, ४४ चकित, ४५. प्रेमी ।

वसंत बहार

'मुनव्वर' लखनवी

लौंग की बेल को छूती-छूती मलियागिर की मस्त पवन है
कितनी इसमें चतुराई है कितना इसमें अल्हड़पन

दल के दल मतवाले भौंरे काट रहे हैं चक्कर क्या-क्या
लेती हैं इनकी झनकारें दिल से हर दम टक्कर क्या-क्या

दूर लता कुंजों के अन्दर कोयल क्या क्या कूक उठती है
टीस भी पैदा हो जाती है दिल में हूक सी हूक उठती है

हिज्र[1] के मारे ग़मकोशों[2] का जिससे और भी ग़म[3] बढ़ता है
दर्द की अफ़ज़ाइश[4] होती है दिल का पेच-ओ-ख़म[5] बढ़ता है

जब यह आलम[6] दुनिया का है जब गुलरेज़[7] बसंत आया है
जब हैजान बपा करने को वहशतख़ेज़[8] बसंत आया है

गोपियों को पहलू में लेकर कृष्ण कन्हैया नाच रहे हैं
झूम रही है सारी दुनिया मौज में क्या क्या नाच रहे हैं

राग यह ज़ुहरा-जमालों[9] में है रंग यह माहजबीनों[10] में है
इक तफ़रीह[11] का आलम[12] जारी[13] इन नौख़ेज़ हसीनों[14] में है

जिनके पति हैं दूर सफ़र में ललनाये वो हिज्र[15] की मारी
दिल के तक़ाज़ों[16] से अफ़सुर्दा[17] महवे-फ़ुग़ां[18] है माईले-ज़ारी[19]

१. विरह, २. दुखी, शोकातुर, ३. शोक, ४. वृद्धि, ५. मोड़, ६ दशा, स्थिति, ७. फूल बरसानेवाला, ८. घबराहट पैदा करनेवाला, ६. सुन्दरियां, १०. चन्द्रमुखी, ११. मनोरंजन, १२. दशा, १३. चालू, १४. कम-उम्र सुन्दरियां, १५. विरह, १६. माँग, १७. दुखी, उदास, १८. आर्तनाद में लीन, १६. रोने पर तत्पर, ।

मौसमे-गुल[२०] में इनकी हालत ग़ैर[२१] नज़र आती है ग़म[२२] से
ऐसी रुत में इनकी जुदाई अपने परदेसी प्रीतम से

मौलसिरी में फूल खिले हैं उन पर भौरे मँडलाते हैं
फूलों के रस की ख़ुशबू में खोकर मस्त हुए जाते हैं

ऐसी रुत में नाच रहे हैं बालाओं में कृष्ण कन्हैया
दिल बहलाते है जा जाकर ललनाओं में कृष्ण कन्हैया

नख़्ले-तमाल[२३] के बर्गे-नौ[२४] की ख़ुशबू[२५] से है नाफ़:-ए-मुश्कीं[२६]
फूल पलास के हैं मेहराबी[२७] काम के नाख़ुन रंगीं रंगीं

नौख़ेज़ों[२८] के दिल के पर्दे जिससे चाक[२९] हुए जाते है
सहमे सहमे जो जज़्बे[३०] थे वो बेबाक[३१] हुए जाते है

काम के चित्र नूरानी[३२] है फूल नही यह नागफनी के
तर्कशे-इश्क़[३३] में तीर हैं गोया पर्द:-ए-गुल[३४] के अन्दर भौरे

ऐसी रुत में नाच रहे है बालाओं मे कृष्ण कन्हैया
दिल बहलाते है जा जाकर ललनाओ में कृष्ण कन्हैया

पर्दादरी[३५] का ज़िक्र[३६] करे क्या उरियानी[३७] सी उरियानी है
देख के सरमस्ती[३८] का आलम[३९] हैरानी[४०] सी हैरानी है

बन्दे-क़बा[४१] की सूरत क्या क्या गुलशने-हुस्न[४२] के दर[४३] खुलते है
ख़न्दाज़नी[४४] पर माइल[४५] पैहम[४६] फूलो के जौहर खुलते है

माधवी बेल की ख़ुशबू क्या क्या हर सू इत्रफ़िशां[४७] होती है

२०. बसन्त, २१. बुरी हालत, २२. शोक, दुख, २३ सफेद फूल वाला एक वृक्ष, २४. नये पत्ते, २५. सुगध, २६. कस्तूरी-युक्त नाभि, २७. मेहराब के आकार के, २८. नवपक्व, .२९. विदीर्ण, ३०. भाव, ३१. निडर, ३२. प्रकाशमान, ३३. इश्क़ का तरकश, ३४. फूल के पर्दे, ३५. पर्दा उठाना, ३६. बयान, ३७. नग्नता, ३८. नशा, ३९. दशा, ४०. व्याकुलता, ४१. चोंगे के बन्द, ४२. सौंदर्य, ४३. दरवाज़े ४४. हँसी बिखेरना, ४५. प्रकृति, ४६. निरंतर, ४७. इत्र बिखेरना, ।

मालती और चम्बेली से जब बू-ए-कैफ़[४८] रवां[४९] होती है

मुनियों का भी हाल बुरा है उनके दिलों को राम किये है
सारे नौउम्रों[५०] को अपना बन्दा इक बेदाम[५१] किये है

बेल कोई जब आम के पेड़ को बढ़-बढ़कर चिमटा लेती है
रोयें रोयें को मस्ती से इस्तादा[५२] सा कर देती है

बृंदाबन की क़ुर्बत[५३] में यह सुन्दर सुन्दर जो धरती है
जमुना अपने जल से उसको मंसब[५४] पाक[५५] अता[५६] करती है

फूल चमेली के ये सीमीं[५७] चश्मे-नीम कुशादा[५८] से हैं
उनके ज़ीरे की लपटों से सेहरा[५९] दर सेहरा महके हैं

केतकी की ख़ुशबू के साथी पैके-सबा[६०] का जौर[६१] तो देखो
कान[६२] के रंगीं नावक है यह देखो इनके तौर[६३] तो देखो

मौसमे-गुल[६४] में इक इक झोंका आग की बारिश[६५] करता है
फ़ुर्क़त[६६] की मारी रूहों[६७] को वक़्फ़े-बेताबी[६८] करता है

महजूरों[६९] के गमगीं[७०] दिल में आतिशे-फ़ुर्क़त[७१] शोलाजन[७२] है
आतिशे-फ़ुर्क़त शोलाज़न है नारे-महब्बत[७३] शोलाज़न है

आम के गुच्छों का शीरीं[७४] रस भौंरे चूसने को आते हैं
चक्कर सौ सौ काट रहे है चारों जानिब[७५] मँडलाते हैं

इन गुच्छों में हलकी-हलकी लरज़िश[७६] सी कुछ आ जाती है
इन गुच्छों से सारी डाली हिलती है झोंके खाती है

डाली डाली पर मतवाली कोयल क्या क्या कूक रही है

४८. नशे की गंध, ४९. प्रवाहित, ५०. छोटी आयुवाले, ५१. बिना मूल्य का, ५२. खड़ा, ५३. निकट, ५४. दर्जा, स्थान, ५५. पवित्र, ५६. प्रदान, ५७. चांदी जैसे, ५८. अर्धखुली आँखें, ५९. जंगल, ६०. समीर का सन्देशवाहक, ६१. ज़ुल्म, ६२. कामदेव, ६३. ढंग, तरीक़े, ६४. बसन्त, ६५. वर्षा, ६६. विरह, ६७. आत्मा, ६८. व्याकुलता में लीन, ६९. वियोगी, ७०. शोकातुर, ७१. विरह की आग, ७२. भड़की हुई, प्रज्वलित, ७३. प्रेम की आग, ७४. मधुर, मीठा, ७५. चारों ओर, ७६. कम्पन।

मन की मीठी तन की काली कोयल क्या क्या कूक रही है

कोयल की हर कूक मे पिन्हा[७७] कितने बरछे है भाले है
इन हथियारो ने महजूरो[७८] के दिल जख्मी[७९] कर डाले है

मौसमे-गुल के[८०] इस आलम[८१] मे शग्ले[८२] यादे-गुलरूया[८३] है
मौजे-हवा की इक इक जुम्बिश[८४] दफ्तरे-इश्क[८५] का इक उनवा[८६] है

महजूरो को महबूबो[८७] के ध्यान से राहत[८८] मिल जाती है
लम्हे[८९] गा ये फुर्कत[९०] के है वस्ल[९१] की लज्जत[९२] मिल जाती है

(जयदेवकृत 'गीत गोविन्द' का उर्दू अनुवाद)

बसंत

'नजीर' लुधियानवी

देखो बसंत लाई है गगा पे क्या बहार[१]
सरसो के फूल हो गये हर सिम्त[२] आशकार[३]

है कितनी खुशगवार[४] हवा कोहसार[५] की
हिन्दोस्ता मे है यही इक रुत बहार[६] की

हर कोई कह रहा है कि जाडा[७] निकल गया
मौसम बदल गया कि जमाना बदल गया

७७. छिपा हुआ, ७८ वियोगी, ७९ घायल ८० बसन्त, ८१ दशा ८२. काम, ८३ सुन्दरियो की याद, ८४ हिलना, ८५. इश्क का दफ्तर, ८६ शीर्षक, ८७ प्रेमिका ८८ सुख, शाति, ८९ क्षण, ९० विरह, ९१ मिलन, ९२ आनन्द, सुख ।

बसंत

१. शोभा, २ हर तरफ, ३. प्रकट, ४. आनन्दप्रद, ५ पर्वत, ६ बसन्त, ७ सर्दी।

आमदे[८] बहार[९] की है रहें क्यों उदास हम
पहनेंगे शाद[१०] होके बसंती लिबास[११] हम

हिन्दोस्तान का यह पुराना शिआर[१२] है
सदियों से अपने देस की यह यादगार है

आओ वतन का हक़्क़े-मुहब्बत[१३] अदा करें
हम आंसुओं से प्रेम का बूटा हरा करें

बसंत

'नुशूर' वाहिदी

फागुन के गुलाबी छींटों से, हर सू[१] सब्ज़े[२] उग आये हैं
सरसों फूली, कल्ले फूटे, छिटके हुए बादल छाये हैं

खेतों मे हवा के चलने से, लहराती है जौ की हरियाली
हलके हलके बादल में छिपी चलती हुई सूरज की थाली
फागुन की हवा-ए-दिलकश[३] से, शादाब[४] है जामुन की डाली

महके हैं मटर के फूल कहीं, आमों मे कहीं बौर आये हैं
सरसों फूली, कल्ले फूटे, छिटके हुए बादल छाये है

जलवों[५] का वो झुर्मट होता है, फागुन के बसंती मेलों में
जैसे कभी जमघट होता है आईना-रुखों[६] के रेलों[७] में
दिल हार गये हैं अहले-नजर[८] इन जौके-नजर[९] के खेलों में

८. आगमन, ९. बसन्त, १०. खुश, प्रसन्न, ११. वस्त्र, १२. तौर-तरीका, १३. प्रेम का हक़।

बसंत

१. हर तरफ, २. हरियाली, ३. मोहक हवा, ४. हरी-भरी, ५. दर्शन, ६. दर्पण के समान चेहरे वाले, ७. जमघट, बहाव, ८. नजर वाले, ९. अभिरुचि।

हर गाम[१०] पे ऐसे मेलों में, इक पार:-ए-दिल[११] छोड़ आये हैं
सरसों फूली, कल्ले फूटे, छिटके हुए बादल छाये हैं

शफ़्फ़ाफ़[१२] जबीनो[१३] ने जैसे अफ़लाक[१४] से बादल तोड़े है
उस शोख़[१५] ने आँचल डाला है, इस शोख ने बाज़ू तोड़े है
चेहरों पे बसंती आलम[१६] है, जिस्मों[१७] पे बसंती[१८] जोड़े है

इस रंग ने जाने कितनों के एहसास[१९] पे महशर[२०] ढाये है
सरसों फूली, कल्ले फूटे, छिटके हुए बादल छाये हैं

बसंत

फ़ैयाज़ुद्दीन अहमद ख़ा 'फैयाज़'

हुई पहली किरन, सूरज की यूं रक्मा[१] हिमाले[२] मे
पुजारन जैसे कोई सुब्ह दम[३] आये शिवाले[४] मे

गुलाबी सर्दियां आई, हवा मे नर्मिया आई
सुनहरी साअतें[५] लेकर बसंती गर्मिया आई

बहुत खामोश[६] और पुरकैफ़[७] तबदीली[८] है नेचर[९] मे
कोई जिस तरह किश्ती[१०] खे रहा हो प्रेम सागर मे

इधर सरसों का सोना, कासनी[११] फूलों मे अलसी के
उधर शबनम[१२] का झूले झूलना झूलों में अलसी के

हवा के साथ जौ की खुशनुमा[१३] बालों का लहराना
हरी चादर में लाखों गेसुओं[१४] वालों का लहराना

१०. कदम, ११. दिल का टुकड़ा, १२. स्वच्छ, १३. ललाट, १४ गगन, १५. चचल, १६. दशा, १७. शरीर, १८. वस्त्र, १९. भावना, २०. प्रलय।

बसंत

१. नाची, २. हिमालय, ३. प्रभात में, ४. मन्दिर, ५. क्षण, ६. मौन, ७. नशीली, ८. परिवर्तन, ९. प्रकृति, १०. नाव, ११. जामनी, बैंगनी, १२. ओस, १३. सुन्दर, १४. बाल, लटे।

चने के सब्ज़ काही[१५] खेत से उठते हुए गेहूं
किनारे पर नदी के रेत से उठते हुए गेहूं

सुनहरी रंग छाता जा रहा है कोने-कोने में
ज़ुमुर्रुद[१६] जिस तरह हल[१७] कर रहा हो कोई सोने में

राखी

'नज़ीर' अकबराबादी

चली आती है अब तो हर कहीं बाजार की राखी
सुनहरी सब्ज[१] रेशम ज़र्द[२] और गुलनार[3] की राखी
बनी है गोकि[४] नादिर[५] खूब हर सरदार की राखी
सलोनों में अजब रगीं है उस दिलदार[६] की राखी
न पहुँचे एक गुल को यार जिस गुलजार[७] की राखी

अयां[८] है अब तो राखी भी, चमन भी, गुल भी, शबनम[९] भी
झलक[१०] जाता है मोती और झलक जाता है रेशम भी
तमाशा है अहाहाहा ! गनीमत[११] है यह आलम[१२] भी
उठाना हाथ प्यारे वाह वा टुक देख ले हम भी
तुम्हारी मोतियों की और ज़री[13] के तार की राखी

अदा से हाथ उठते है गुले-राखी[१४] जो हिलते है
कलेजे देखने वालों के क्या-क्या आह ! छिलते है

१५. गहरा हरा, १६. पन्ना, १७. घोलना, मिलाना ।

राखी

१. हरी, २. पीली, ३. लाल फूल, ४. यद्यपि, ५. अद्भुत, ६. प्रेमिका, ७. उपवन, वाटिका, ८. प्रकट, ९. ओस, १०. चमक, ११. सराहनीय, १२. दशा, १३. सोने का तार, १४. राखी के फूल ।

कहा नाजुक[१५] यह पहुँचे और कहा यह रंग मिलते है
चमन[१६] मे शाख[१७] पर कब इस तरह के फूल खिलते है
जो कुछ खूबी[१८] मे है उस शोखे-गुलरुखसार[१९] की राखी

फिरे है राखिया बाधे जो हरदम हुस्न[२०] के तारे
तो उनकी राखियो को देख अय जा चाव के मारे
पहन जुन्नार[२१] और कश्का[२२] लगा माथे उपर बारे
'नजीर' आया है बाह्मन बन के राखी बाधने प्यारे
बधा लो उससे तुम हसकर अब इस त्योहार की राखी

दिवाली का सामान

'नजीर' अकबराबादी

हर इक मका[१] मे जला फिर दिया दिवाली का
हर इक तरफ को उजाला हुआ दिवाली का
सभी के दिल मे समा[२] भा गया दिवाली का
किसी के दिल को मज़ा[३] खुश[४] लगा दिवाली का
अजब बहार[५] का है दिन बना दिवाली का

जहा मे यारो अजब तरह[६] का हे यह त्योहार
किसी ने नक्द लिया और कोई करे है उधार

१५ कोमल, १६. उपवन, १७ डाली, १८ सुन्दरता, १९ फूलो जैसे कपोल वाला चचन
२० सौंदर्य, २१ जनेऊ, २२ तिलक।

दिवाली का सामान

१ घर, २ वातावरण, ३ आनन्द, ४. अच्छा, ५ शोभा, ६ विचित्र प्रकार।

खिलौने खीलों बतासों का गर्म है बाज़ार
हरइक दुकां[7] में चिराग़ों की हो रही है बहार[8]
सभों को फ़िक्र है अब जा बजा दिवाली का

मिठाइयों की दुकानें लगा के हलवाई
पुकारते है कि लाला दिवाली है आई
बतासे ले कोई बर्फ़ी किसी ने तुलवाई
खिलौने वालो की उनमे जियादा बन आई
गोया उन्हों के वां[9] राज आ गया दिवाली का

सराफ़[10] हराम की कौडी का जिनका है व्योपार
उन्होंने खाया है इस दिन के वास्ते ही उधार
कहे है हंसके क़र्ज़ख्वाह[11] मे हरइक इक बार
दिवाली आई है सब दे चुकायेंगे अय यार
खुदा के फ़ज़्ल[12] से है आसरा[13] दिवाली का

मकान लीप के ठलिया जो कोरी रखवाई
जला चिराग को कौडी वो जल्द झनकाई
असल जुआरी थे उनमें तो जान सी आई
खुशी से कूद उछलकर पुकारे ओ भाई
शगून पहले करो तुम जरा दिवाली का

किसी ने घर की हवेली गिरो[14] रखा हारी
जो कुछ थी जिन्स[15] मुयस्सर[16] जरा जरा हारी
किसी ने चीज किसी की चुरा छुपा हारी
किसी ने गठरी पड़ोसन की अपनी ला हारी
यह हार जीत का चर्चा पड़ा दिवाली का

७.दुकान, ८. शोभा, ९. उन्ही के यहाँ, १०. सुनार, ११. उधार मांगनेवाला, १२. दया, १३. सहारा, १४. गिरवी, बधक, १५. अनाज, वस्तु, १६. प्राप्त ।

ये बातें सच है न झूठ इनको जानियो यारो
नसीहतें[१७] हैं इन्हें दिल मे ठानियो यारो
जहा को जाओ यह क़िस्सा बखानियो यारो
जो जुआरी हो न बुरा उसका मानियो यारो
'नज़ीर' आप भी है ज्वारिया दिवाली का

दिवाली

आले अहमद 'सुरूर'

यह बाम-ओ-दर[१] यह चरागा[२] यह कुमकुमो की कतार[3]
सिपाहे-नूर[४] सियाही[५] से बरसरे - पैकार[६]

यह ज़र्द[७] चेहरो पे सुर्खी[८], फसुर्दा[९] नजरो मे रग
बुझे बुझे से दिलो को उजालती है उमंग

यह इम्बिसात[१०] का गाजा[११], परी - जमालो[१२] पर
सुनहरे ख्वाबो[13] का साया, हसी खयालो[१४] पर

यह लहर लहर, यह रौनक[१५], यह हमहमा[१६], यह हयात[१७]
जगायें जैसे चमन[१८] को नसीमे-सुब्ह[१९] की बात

हर एक शम्अ[२०] पे दिल दे रहे है परवाने
नजर नज़र से बरसते है कितने अफसाने[२१]

१७. उपदेश।

दीवाली

१. छत और दरवाजे, २. दीपोत्सव, ३. पंक्ति, ४. प्रकाश की सेना, ५. अंधकार, ६ युद्ध मे रत, ७. पीले, ८. लाली, ९. उदास, १०. हर्ष, ११. पाउडर, १२. सुन्दरियो, १३. स्वप्न, १४. सुन्दर विचार, १५. शोभा, १६. हगामा, १७. जीवन, १८. उपवन, १९. प्रात.-समीर, २०. चराग़, २१. कहानिया।

ग़ज़ब[22] है लैलए-शब[23] का सिंघार आज की रात
निखर रही है उरूसे-बहार[24] आज की रात

हज़ार जंग[25] के साये, हज़ार क़हत[26] के भूत
हज़ार शर[27] के दलाइल[28], हज़ार ग़म[29] के सुबूत[30]

हज़ार ख़तरः-ए-रहज़न,[31] हज़ार फ़ितनः-ए-ज़र[32]
हज़ार ज़ीस्त[33] के सदमे[34], हज़ार मौत के डर

हज़ार तलख़ि-ए-दौरां[35], हज़ार जौरे-बुतां[36]
हज़ार मरहलाहा - ए - तिलिस्मे-सूद-ओ-ज़ियां[37]

हज़ार ज़ख़्मों की टीसें, हज़ार दाग़ों के दर्द
हज़ार ख़ुश्क[38] लबों[39] पर, हज़ार नालः-ए-सर्द[40]

हज़ार ख़्वाब-ओ-हक़ीक़त[41] की कशमकश[42] का अलम[43]
हज़ार ख़ूने-तमन्ना[44] की महफ़िले-मातम[45]

हज़ारों साल के दुख दर्द में नहाये हुए
हज़ारों आरज़ुओं[46] की चिता जलाये हुए

ख़िज़ा - नसीब[47] बहारों के नाज़ उठाये हुए
शिकस्त-ओ-फ़तह[48] के कितने फ़रेब[49] खाये हुए

इन आँधियों में बशर[50] मुस्कुरा तो सकते हैं
सियाह[51] रात में शम्अें[52] जला तो सकते हैं

२२. विलक्षण, २३. रात की दुल्हन, २४. बहार की दुल्हन, २५. युद्ध, २६. अकाल, २७. बदी, २८. तर्क, २९. शोक, ३०. पुरावा, ३१. चोर का भय, ३२. धन-दौलत का उपद्रव, ३३. जीवन, ३४. ग़म, शोक, ३५. ज़माने की कटुता, ३६. प्रेमिकाओ के अत्याचार, ३७. लाभ-हानि के जादू की समस्याएं, ३८. शुष्क, ३९. होंठ, ४०. ठण्डे आर्तनाद, ४१. वास्तविकता, ४२. संघर्ष, ४३. दुख, ४४. अरमानों का ख़ून, ४५. शोक-गोष्ठी, ४६. आकांक्षा ४७. पतझड़, ४८. जय-पराजय, ४९. धोखा, ५०. मानव, ५१. अंधेरी, ५२. चराग़ ।

लवों की रेखा

हुरमतुल इकराम

दूर' अशजार[१] के पीछे कही सूरज डूबा
शाम की पालकी धरती के करीब[२] आके रुकी
उतरी इक शोख[3] अदा चेहरे पे घूघट डाले
बिखरी जुल्फे[४] तो महक उट्ठा शबिस्ताने-उफुक[५]

दिन की एक-एक किरन कह गई जाते-जाते
रोशनी[६] डूबने वाली नही, सूरज डूबे
इतना काफी है कि ऊँची रहे तासुब्ह[७] लवे
राख हो जायेगा लका का खयाबाने-जलाल[८]

रौशनी आग भी है रौशनी हनुमान भी है
रात रावण है, खिची रहने दो लमहों[९] की कमा[१०]
बान[११] पर बान चलाते रहे मट्टी के दिये
झिलमिलाता रहे आईने-सदाकनतलवी[१२]

मुस्कुराती रहे किरदार[13] की तनकी नसवी[१४]
यह मुडेरो के तबस्सुम[१५] का दिलआवेज[१६] गुरूर[१७]
खीरा सर वक्त[१८] को देता है उजाले का शुऊर[१९]
रौशनी पुल है अंधेरो के समन्दर के लिए

१. वृक्ष (ब० व०) २. निकट, ३ चचल, ४. लटे, बाल, ५. क्षितिज का शयनागार, ६ प्रकाश, ७. प्रात काल तक, ८ प्रताप का बाग, ९. क्षण, १० धनुष, ११ बाण, १२ सच्चाई की माग का विधान, १३. चरित्र, १४ सहनशीलता की विजय, १५ मुस्कान, १६. मोहक, १७ अभिमान, १८. काले दिल वाला समय, १९. चेतना ।

रौशनी, फ़तहे-निशां[20], रौशनी, उनवाने-मुराद[21]
जाने-अफ़साना[22] है कन्दीलों की परतौफ़िगनी[23]
कैकयी जीत के हार है, अमावस है यही
राम की हार में भी जीत, यह दिवाली है

नाम तुलसी का है, लिखते हैं दीये रामायण
रूह[24] बनबास के शोलों[25] में नुमू[26] पानी है
खेंच दो ख़ाके-बियाबां[27] पे लबों की रेखा
अश्के-यक़दाना[28] सी लरज़ां[29] है अकेली सीता

आये किस भेस में रावण, यह किसे है मालूम
क्या हो अन्दाज़े-कलाम,[30] इसकी ख़बर है किसको
अजब[31] आलम[32] है कि गहनों में भी आरी[33] है बदन
कौन जायेगा तअक़्क़ुब[34] में, किधर जायेगा

गुम रस्तों ने दिया है किसे मंज़िल[35] का सुराग़[36]
रौशनी के सिवा रहबर[37] है, न कोई ग़मख़्वार[38]
तोशा-ए-जां[39] है इक-इक लौ, इसे कर लो महफ़ूज़[40]
जैसे-तैसे कटे इक साल तो आती है यह रात

रौशनी इसकी तलब[41], रौशनी इसकी सौग़ात[42]
रौशनी मांगती है, रौशनी दे जाती है
(कितनी तन्नाज़[43] है, किस किस तरह इतराती[44] है!)
ज़रफ़िशां[45], नूर चकां[46], सर से क़दम[47] तक ख़न्दां[48]

२०. विजय का निशान, २१. अभिप्राय का शीर्षक, २२. कहानी के प्राण, २३. प्रतिबिम्ब डालना, २४ आत्मा, प्राण, २५ ज्वाला, २६ विकास, बढ़वार, २७. जंगल की धूल, २८. अश्रु की बूंद, २९. कम्पायमान, ३० बातचीत का ढंग, ३१. विचित्र, ३२. दशा, ३३. विहीन, ३४ पीछा करना, ३५ गंतव्य स्थान, ३६ पता, ३७ मार्गदर्शक, ३८ हमदर्द, ३९. जान का तोशा (मार्ग का भोजन), ४०. सुरक्षित, ४१. इच्छित, ४२. भेंट, ४३. शोख़. ४४. इतराती, नखरे करती, ४५. सोना बरसाने वाली, ४६. प्रकाश फैलाना, ४७. पांव, ४८. प्रसन्न ।

(रूप ऐसा कि निगाहों से 'न ठहरा जाये)
खेलती अपने ही पिन्दारे-खुद-आराई[४९] से
लक्ष्मी रहगुज़रे-शब[५०] पे है मसरूफ़े-ख़िराम[५१]
खोल दो दिल के भी पट, घर के किवाड़ों की तरह
रात दीवाली की आई है उजालो इसको
नीन्द में कब से यह नगरी है जगा लो इसको

तक़वीमे-नूर[१]

'शमीम' करहानी

दिये जलाओ, मुसलसल[२] जलाओ आज की रात
तमाम[3] साल फ़ज़ा[४] से यही सवाल रहा
कि तेरे चेहरे पे शानों[५] पे आस्तीनों पर
यह नागवार[६] सियाही[७] के हाशिये[८] क्यों हैं
ज़मीं[९] की कोख, अंधेरों का मस्कने-मग़मूम[१०]
कभी तो जश्ने-चराग़ां[११] का गाहवारा[१२] बने

नसीबे-लम्हः-ओ-अय्यामे-ज़िन्दगी[13] क्यों हो
नज़र का दर्द, जबीनों[१४] की गर्द[१५], दिल का ग़ुबार[१६]

४९. स्वयं को सजाने का घमण्ड, ५०. रात का मार्ग, ५१. चलने में व्यस्त ।

तक़वीमे-नूर

१. प्रकाश का पंचांग, २. लगातार, ३. सब. ४. वातावरण, ५. कंधे, ६. दुखदायी, ७. अंधकार, ८. पट्टियां, ९. धरती, १०. दुखी निवास-स्थान, ११. दीपोत्सव, १२. पालना, १३. जीवन के दिन और क्षणों का नसीब, १४. ललाट, १५. धूल, १६. मैल ।

कोई बताओ कि 'धरती से क्या क़ुसूर[17] हुआ
क़ुसूर यह कि मुक़द्दस[18] है पाक[19] दामन है
निखर के आई है, शोलों[20] के आबशारों[21] से
यह अपनी फ़त्ह[22] की तारीख़[23] नूर[24] की तक़्वीम[25]
कहीं न वक़्त[26] की तारीकियों[27] में खो जाये
बढ़े जो ज़ुलमते-दौरां[28] तो मुस्कुराते रहो
हवा-ए-तुन्द[29] में दिल का दिया जलाते रहो
दिये जलाओ, मुसलसल[30] जलाओ आज की रात

यह रात

'मख़मूर' सइदी

फिर एक साल की तारीक[1] राह[2] तै[3] करके
मता-ए-नूर[4] लुटाती यह रात आई है
उफ़ुक़ से ता-ब उफ़ुक़[5] रौशनी की अर्ज़ानी[6]
यह रात कितने उजालों को साथ लाई है

फिर एक साल की तारीक राह तै करके
मता-ए-नूर लुटाती यह रात आयेगी
मगर मैं सोच रहा हूँ जब आयेगी तो हमें
घिरा हुआ फिर इन्हीं ज़ुलमतों[7] में पायेगी

१७. अपराध, १८. पवित्र, १९. पूजनीय २०. ज्वाला, २१. जलप्रपात, २२. विजय, २३. इतिहास, २४. प्रकाश, २५. पंचाग, २६. समय, २७. अंधकार, २८. समय का अंधकार, २९. प्रचण्ड हवा, ३०. निरन्तर।

यह रात

१. अंधेरा, २. मार्ग, ३. चलकर, ४. प्रकाश की दौलत, ५. क्षितिज, ६. बाहुल्य, ७. अंधकार।

ये जुल्मते जो मुसल्लत[८] है हम पे सदियो से
ये एक रात मे तो दूर हो नही सकती
सियाहपोश[९] फजाये[१०] यह दीद - ग्रो-दिल[११] की
निशात-ग्रो-नूर[१२] से मामूर[१३] हो नही सकती

मगर यह रात जो मेहमा[१४] है चद लम्हो[१५] की
इस एक रात को हम क्यो न जाविदा[१६] कर ले
यह रात लाई है साथ ग्रपने जिन उजालो को
न किसलिये इन्हे महफूजे-कल्ब-ग्रो-जा[१७] कर ले

कदम कदम पे जो रौशन[१८] हे ये दिये इनसे
फकत[१९] निगाह ही क्यो **इकतिसाबे** - नूर[२०] करे
जो कर सके तो इन्हे क्यो न हम ग्रता[२१] कर दे
वो रौशनी जो तकददुर[२२] दिलो का दूर करे

फिर एक साल की तारीक राह तै करके
मता-ए-नूर लुटाती यह रात ग्राई हे
उफुक से ता-ब उफुक रौशनी की ग्रर्जानी
यह रात कितने उजालो को साथ लाई हे

८ थोपी हुई, ९ ग्रधकारपूर्ण, १०. वातावरण, ११ दिल ग्रौर ग्राखे, १२ प्रकाश ग्रौर ग्रानन्द, १३ परिपूर्ण, १४ ग्रतिथि, १५ क्षणो, १६ ग्रमर, १७. हृदय ग्रौर प्राणो मे सुरक्षित, १८ जल रहे हैं, १९ केवल, २० प्रकाश का उपार्जन, २१ प्रदान, २२ मलिनता।

ईदे-मीलादुन्नबी

'हफ़ीज़' जालन्धरी

यह किसकी जुस्तजू[1] में मिह्रे-आलमताब[2] फिरता था
अज़ल[3] के रोज से बेताब[4] था बेख्वाब[5] फिरता था

यह किसकी आरज़ू[6] में चाद ने सन्नी[7] सही बरसों
जमीं पर चाँदनी बरबाद-ओ-आवारा[8] रही बरसों

यह किसके शौक[9] में पथरा गई आँखें सितारों की
ज़मी को तकते तकते आ गई आँखें सितारों की

करोड़ों रंगतें किसके लिए अय्याम[10] ने बदलीं
पया पे करवटें किस धुन में सुब्ह-ओ-शाम[11] ने बदलीं

यह सब कुछ हो रहा था एक ही उम्मीद की खातिर[12]
ये सारी काहिशें[13] थी एक सुब्हे-ईद[14] की खातिर

मशीयत[15] थी कि यह सब कुछ तहे-अफ़लाक[16] होना था
कि सब कुछ एक दिन नजरे-शहे-लौलाक[17] होना था

मुरादें[18] भरके दामन मे मुनाजाते-ज़बूर[19] आई
उमीदों की सहर[20] पढ़ती हुई आयाते-नूर[21] पाई

१. खोज, २. ससार को प्रकाश देने वाला सूर्य, ३. अनादिकाल, ४ व्याकुल, ५ जिसे नींद न आये, ६. अभिलाषा, ७. कठिनाइया, ८ व्यर्थ भ्रमी, ९. अभिलाषा, १०. समय, ११. प्रात: और साय, १२. के लिए, १३. कष्ट, दुर्बलता, १४ ईद का प्रभात, १५. ईश्वरेच्छा, १६. आकाश के नीचे, १७. रसूलअल्लाह की उपाधि, १८. अभिलाषाए, १९. ज़बूर की ईश-स्तुति, २०. प्रातःकाल, २१. प्रकाश की आयतें ।

नजर आई बिल आखिर[२२] मानी-ए-इजील[२३] की सूरत[२४]
वदीअत[२५] हो गई इसान को तकमील[२६] की सूरत

हवाये पै बे पै इक सरमदी[२७] पैगाम[२८] लाती थी
कोई मुजदा[२९] था जो हर गोशे-गुल[३०] मे कह सुनाती थी

तबस्सुम[३१] ही तबस्सुम थे नजारे[३२] लालाजारो[३३] के
तरन्नुम[३४] ही तरन्नुम थे किनारे जू-ए बारो[३५] के

यकायक[३६] हो गई सारी फजा[३७] तिमसाले-आईना[३८]
नजर आया मुअल्लक[३९] अर्श[४०] तक इक नूर[४१] का जीना

खुदा की शान रहमत[४२] के फरिश्ते सफ-ब-सफ[४३] उतरे
परे बाधे हुए सब दीन-ओ-दुनिया के शरफ[४४] उतरे

सहावे - नूर[४५] आकर छा गया मक्के की बस्ती पर
हुई फूलो की बारिश हर बलन्दी[४६] और पस्ती[४७] पर

हुआ अर्शे-मुअल्ला[४८] से नुजूले - रहमते - बारी[४९]
तो इस्तकबाल[५०] को उट्ठी हरम[५१] की चारदीवारी

मुबारकबाद[५२] है उनके लिए जो जुल्म[५३] सहते है
कही जिनको अमा[५४] मिलती नही, बरबाद रहते है

मुबारकबाद बेवाओ[५५] की हसरत-जा[५६] निगाहो को
असर बख्शा[५७] गया नालो[५८] को फरियादो को आहो को

२२ अन्तत, २३ बाइबिल के अर्थ, २४ रूप मे, २५ धरोहर २६ पूर्णता, २७ अनश्वर, २८ सन्देश, २९ शुभ सूचना, ३० फूल के कान, ३१ मुस्कान, ३२ दृश्य, ३३ लाले के बाग, ३४ लय, सुर, ३५ बहता पानी, ३६ सहसा, ३७ वातावरण, ३८ दर्पण की मूर्ति, ३९ अधरमे, ४० गगन, ४१ प्रकाश, ४२ दया, कृपा, ४३ पक्तियो मे, ४४ प्रतिष्ठा, ४५ प्रकाश का बादल, ४६ ऊचाई, ४७ नीचाई ४८ सातवा आसमान, ४९ खुदा की रहमत का उतरना, ५० स्वागत, ५१ काबा, ५२ बधाई, ५३ अत्याचार, ५४ शाति, ५५ विधवा, ५६ हसरत भरी, ५७ प्रदान किया, ५८ आर्तनाद ।

ज़ईफ़ों[५९] बेकसों[६०] आफ़त नसीबों[६१] को मुबारक हो
यतीमों[६२] को गुलामों[६३] को ग़रीबों को मुबारक हो

मुबारक ठोकरें खा खा के पैहम[६४] गिरने वालों को
मुबारक दश्ते-ग़ुर्बत[६५] में भटकते फिरने वालों को

मुऐय्यन[६६] वक़्त आया, जोरे-बातिल[६७] घट गया आख़िर
अंधेरा मिट गया, ज़ुल्मत[६८] का बादल छट गया आख़िर

मुबारक हो कि दौरे-राहत-ओ-आराम[६९] आ पहुँचा
निजाते-दाईमी[७०] की शक्ल[७१] में इस्लाम आ पहुँचा

निदा[७२] हातिफ़[७३] की गूंज उट्ठी ज़मीनों आसमानों में
ख़मोशी[७४] दब गई अल्लाहो - अकबर की अज़ानों में

हरमे-क़ुद्स[७५] से मीठे तरानों[७६] की सदा[७७] गूँजी
मुबारकबाद बनकर शादियानों की सदा गूँजी

बहरसू[७८] नग़मः-ए-सल्ले-अला[७९] गूंजा फ़ज़ाओं[८०] में
ख़ुशी ने ज़िन्दगी की रूह[८१] दौड़ा दी हवाओं में

सलाम अय आमना के लाल,[८२] अय महबूबे-सुब्हानी[८३]
सलाम अय फ़ख़्रे-मौजूदात,[८४] फ़ख़्रे-नौ-ए-इंसानी[८५]

सलाम अय सिर्रे-वहदत[८६] अय सिराजे-बज़्मे-ईमानी[८७]
ज़िहे[८८] यह इज्ज़त-अफ़ज़ाई[८९] ज़िहे तशरीफ़े-अर्ज़ानी[९०]

५९. वृद्ध, ६०. निर्बल, ६१. किस्मत के मारे, ६२. अनाथ, ६३. दास, ६४. लगातार, ६५. विदेश का जंगल, ६६. निश्चित, ६७. झूठ का बल ६८. अन्धकार, ६९. सुख और शांति का दौर, ७०. अमर मुक्ति, ७१. रूप, ७२. आवाज़, ७३. फ़रिश्ता, ७४. मौन, ७५. काबे की पवित्र चारदीवारी, ७६. गीत, ७७. आवाज़, ७८. हर तरफ़, ७९. सल्ले अला (उस पर रहमत हो) का गीत, ८०. वातावरण, ८१. आत्मा, ८२. पुत्र, ८३. ख़ुदा के प्रिय, ८४. संसार का गर्व, ८५. मानवता का गर्व, ८६, अद्वैत का रहस्य, ८७. ईमान की बज़्म का चराग़, ८८. अहो, ८९. मान बढ़ाना, ९०. सबको मान देने वाले।

तिरे आने से रौनक[९१] आ गई गुलजारे-हस्ती[९२] मे
शरीके-हाले-किस्मत[९३] हो गया फिर फज्ले - रब्बानी[९४]

तिरी सूरत, तिरी सीरत[९५] तिरा नक्शा तिरा जलवा[९६]
तबस्सुम[९७], गुफ्तुगू[९८], बन्दा नवाजी[९९], खन्दा पेशानी[१००]

जमाना मुन्तजिर[१०१] है अब नयी शीराजाबन्दी[१०२] का
बहुत कुछ हो चुकी अज्जा-ए-हस्ती[१०३] की परेशानी[१०४]

'हफीजे'-बेनवा[१०५] भी है गदा-ए-कूच-ए-उलफत[१०६]
अकीदत[१०७] की जबीं[१०८] तेरी मुरव्वत से है नूरानी[१०९]

सलाम अय आतिशी जंजीरे-बातिल[११०] तोड़ने वाले
सलाम अय खाक[१११] के टूटे हुए दिल जोड़ने वाले

शब बरात

'नजीर' अकबरावादी

क्योकर करे न अपनी नमूदारी[१] शब बरात
चलपक चपाती हल्वे में है भारी शब बरात
जिन्दों[२] की है 'जबाँ[३] की मजेदारी[४] शब बरात
मुर्दों की रूह[५] की है मददगारी[६] शब बरात
लगती है सबके दिल को गरज[७] प्यारी शब-बरात

९१ शोभा, ९२ अस्तित्व का उपवन, ९३ किस्मत के हाल में शरीक, ९४ खुदा का फजल, ९५. चरित्र, स्वभाव, ९६ दर्शन, ९७ मुस्कुराहट, ९८ बातचीत, ९९ बन्दों पर मेहरबानी, १०० विनम्रता, १०१ प्रतीक्षा मे, १०२ तरतीब, १०३ अस्तित्व के तत्त्व, १०४ अस्तव्यस्तता, १०५ बे आवाज, मूक, १०६ प्रेम-गली का भिक्षुक, १०७ श्रद्धा, १०८ ललाट, १०९ प्रकाशमान, ११० झूठ की आग की जंजीर, १११ धूल।

शब बरात

१. प्रकट होना, २. जीवित, ३. जबान, ४. स्वादिष्टता, ५ आत्मा, ६ सहायता, ७ अर्थात्।

शक्कर का जिनके हल्वा हुआ वो तो पूरे हैं
गुड़ का हुआ है जिनके वो उनमे अधूरे हैं
शक्कर न गुड़ का जिनके वो परकट लंडूरे हैं
औरों के मीठे हल्वे चपाती को घूरे हैं

उनकी न आधी पाव न कुछ मारी शब बरात

मुल्ला जो देने फातेहा घर घर को जाते है
हल्वा कहीं कहीं वो चपाती उड़ाते हैं
मुफलिस[८] कोई बुलावे तो मुह को छुपाते है
शक्कर का हल्वा सुनत ही बग दौड़े आते हैं

कहते हुए यह दिल में अहा हारी शब बरात

आकर किसी के सर पे छछूदर लगी कड़ी
ऊपर से और हवाई की आकर पड़ी छड़ी
... गई गले का हार पटाखे की हर लड़ी
पाओ मे लिपटी शोर[९] मचाकर कलमतड़ी[१०]

करती है फिर तो ऐसी सितमगारी[११] शब बरात

चेहरा किसी का जल गया आखें झुलस गयीं
छाती किसी की जल गई बाहें झुलस गयी
टागें बची किसी की तो रानें झुलस गयी
मूंछें किसी की फुक गई पलकें झुलस गयी

रक्खे किसी की दाढ़ी पे चिगारी शब बरात

कोई दोस्तो को दिल मे समझता है अपने गैर[१२]
कोई दुश्मनो से दिल का निकाले है अपना बैर[१३]
कहता है वा 'नजीर' भी आतिश[१४] की देख सैर
यारब[१५] तू सबकी कीजिओ बरसा बरस की खैर[१६]

बेतरह[१७] कर रही है नुमूदारी शब बरात

८. गरीब, ६. कोलाहल, १०. एक प्रकार की आतशबाजी, ११. अन्याय, १२. दुश्मन, १३. दुश्मनी, १४. आग, १५. या खुदा, १६. कुशल, १७. बुरी तरह ।

ईदुलफ़ित्र

'नजीर' अकबराबादी

है आबिदो[1] को ताअत-ओ-तजरीद[2] की खुशी
और जाहिदो[3] को जुहद[4] की तमहीद[5] की खुशी
रिन्द[6] आशिको[7] को है कई उम्मीद[8] की खुशी
कुछ दिलबरो[9] के वस्ल[10] की, कुछ दीद[11] की खुशी

ऐसी न शब बरात, न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल मे है इस ईद की खुशी

रोजे की खुश्कियो[12] से जो है जर्द जर्द[13] गाल
खुश हो गये वो देखते ही ईद का हिलाल[14]
पोशाके[15] तन मे जर्द, सुनहरी, सफेद, लाल
दिल क्या कि हस रहा है पडा तन का बाल बाल

ऐसी न शब बरात, न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल मे है इस ईद की खुशी

पिछले पहर मे उठके नहाने की धूम है
शीर-ओ-शकर[16], सिवैया पकाने की धूम है
पीर-ओ-जवा[17] को नेमते[18] खाने की धूम है
लडको को ईदगाह[19] के जाने की धूम है

ऐसी न शब बरात, न बकरीद की खुशी
जैसी हर एक दिल मे है इस ईद की खुशी

१ इबादत करने वाला, २ इबादत और सयम, ३. विरक्त, पारसा, ४ सयम, ५ भूमिका, ६. शराबी, ७. प्रेमी, ८ आशा, ९. प्रेमिका, १० मिलन, ११ दर्शन, १२ शुष्कता १३. पीले, १४. चांद, १५. वस्त्र, १६ दूध और शकर, १७ बूढ़े और जवान, १८. स्वादिष्ट पदार्थ, १९. ईद की नमाज पढ़ने का स्थान ।

क्या ही मुआनक़े[२०] की मची है उलट पलट
मिलते हैं दौड़ दौड़ के बाहम[२१] झपट झपट
फिरते हैं दिलबरों[२२] के भी गल्लियों में ग़ट के ग़ट[२३]
आशिक़[२४] मज़े उड़ाते हैं हर दम लिपट लिपट

ऐसी न शब बरात, न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

जो जो कि उनके हुस्न[२५] की रखते हैं दिल में चाह[२६]
जाते हैं उनके साथ लगे ता-ब ईदगाह
तोपों के शोर और दोगानों[२७] की रस्म-ओ-राह[२८]
म्याने, खिलौने, सैर, मज़े, ऐश[२९] वाह वाह

ऐसी न शब बरात, न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

रोज़ों की सख्तियों[३०] में न होते अगर असीर[३१]
तो ऐसी ईद की न ख़ुशी होती दिलपज़ीर[३२]
सब शाद[३३] हैं गदा[३४] से लगा शाह[३५] ता वज़ीर[३६]
देखा जो हमने ख़ूब, तो सच है मियां 'नज़ीर'

ऐसी न शब बरात, न बक़रीद की ख़ुशी
जैसी हर एक दिल में है इस ईद की ख़ुशी

२०. आलिंगन, २१. परस्पर, २२. सुन्दरियां, २३. झुण्ड, २४. प्रेमी, २५. सौंदर्य, २६. मुहब्बत, २७. नमाज़, २८. रीति-रिवाज, २९. विलासिता, ३०. कठिनाइयों, तकलीफ़ों, ३१. गिरफ़्तार, ३२. मोहक, ३३. ख़ुश, ३४. रंक, ३५. राजा, ३६. मंत्री।

ईद की धूम

'बेनजीर' शाह

शफक[1] मे सरे-बाम[2] चर्खे-कुहन[3]
अभी जगमगाती है कुछ कुछ किरन

बसेरों को जाने लगे वो तुयूर[4]
अंधेरा भी छाने लगा दूर दूर

उफुक[5] की तरफ गौर से बार बार
नजर कर रहा है हर एक रोजादार[6]

चढे थे फसीलों[7] पे जो पहले सोम[8]
पुकारे खलाइक[9] को वो फख़्रे-कौम[10]

मुबारक[11] हो अय तालिबाने-विसाल[12]
दिखाता है वो तेगे-अबरू[13] हिलाल[14]

यह सुनकर हुए शाद[15] पीर-ओ-जवां[16]
मसर्रत[17] का हर सिम्त[18] छाया समा[19]

मिहर[20] तो हुआ जलवागर[21] दहर[22] में
वो बजने लगी नौबतें[23] शहर में

१ लाली, २. छत पर, ३ बूढ़ा आकाश, ४ पक्षी, ५ क्षितिज, ६ रोजे रखने वाला, ७ प्राचीर, ८. रोजे रखने वाले, ९ जनसाधारण, १० जिस पर कौम को गर्व हो, ११. बधाई हो, १२ मिलन के इच्छुक, १३. भौंओं की तलवार, १४. चन्द्रमा, १५. खुश, प्रसन्न, १६. जवान और बूढ़े, १७. खुशी, १८ हर तरफ, १९ वातावरण, २० सूर्य, २१. प्रकट, २२ संसार, २३. नक्कारा ।

°सलामी की आवाज़ आने लगी
शहाने की धुन क्या रिझाने लगी

है अफ़तार[24] की हर तरफ़ धूमधाम
अजानों[25] से गूंज उट्ठी बस्ती तमाम

महे-नौ[26] की ख़ातिर[27] बहुत देर तक
बिछाये रहा सुर्ख़[28] अतलस[29] फ़लक[30]

महे-नौ[31] की किश्ती[32] पे होकर सवार
उतरने लगी शाम क़ुल्ज़ुम[33] के पार

फ़रीज़े[34] से फ़ारिग़[35] हुए पाकबाज़[36]
उठाने लगा चर्ख़[37] भी जानमाज़[38]

बलाक़द्र हैसीयत[39] अहले-दुवल[40]
सजाने लगे अपने अपने महल

२४. रोज़ा खोलना, २५. बांग, २६. नया चांद, २७. के लिए, २८. लाल, २९. रेशमी कपड़ा, ३०. आकाश, ३१. नवचन्द्र, ३२. नाव, ३३. दरिया, ३४. धर्म, ३५. निवृत्त, ३६. पवित्र, ३७. आकाश, ३८. वह कपड़ा जिस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जाती है, ३९. पात्रता के अनुसार, प्रतिष्ठा, ४०. धनवान ।

ईद का चांद देखकर

'अख्तर' शीरानी

उफुक[1] पे मसजिद[2] के पास है चाद ईद का महवे-जलवाबारी[3]
कि बहरे-नीली[4] पे तैरती फिर रही है जरी[5] एक अमारी[6]
शफक[7] की सुर्खी[8] से मस्त-ओ-मदहोश[9] हो रही है फजायें[10] सारी
जमी[11] का एक-एक जर्रा[12] है महवे-शाने-जमाले-बारी[13]

जहाने-हस्ती[14] का चप्पा चप्पा[15] फजा-ए-दामाने-रग-ओ-बू[16] है
जमी से ता चर्ख[17] आज हर सिम्त[18] साज-ओ-सामाने-रग-ओ-बू[19] हे

खुशी के जलवे[20] है मुन्तशिर[21] चार सू[22] तरबजारे-गुलिस्ता[23] है
जहा तहा मौजहा-ए-खुशबू-ए-लाला-ओ गुल[24] रवा दवा[25] है
घनेरी शाखो[26] पे जिस तरफ देखो बुलबुले मस्त-ओ-नग्मा रुवा[27] है
हसीन[28] कलिया खुशी से फूली नही समाती हे शादमा[29] है

चमन[30] का एक एक गुचः-ओ-गुल[31] बहार[32] के गीत गा रहा हे
हिलाल[33] है महवे-जलवाकारी[34], जमाना[35] खुशिया लुटा रहा हे

१ क्षितिज, २ मस्जिद, ३ दर्शन देने मे लीन, ४ नीला समुद्र, ५ सुनहरी, ६ मुकुट, हौदा, ७. अरुणिमा, ८ लाली, ९ मदोन्मत्त, १० वातावरण, ११ धरती, १२ कण, १३ खुदा के जमाल की शान मे लीन, १४ अस्तित्व का ससार, १५. कोना-कोना, १६ रग और सुगध के, दामन का वातावरण, १७. धरती से आकाश तक, १८ ओर, १९ रग और सुगध का उपकरण, २०. दृश्य, २१ बिखरे हुए, २२. चारो ओर, २३ आनन्द का उपवन, २४ लाले और गुलाब के फूलो की सुगध की लहरें, २५ प्रवाहित, २६. डालिया, २७. गीत गाती हुई, २८ सुन्दर, २९. प्रसन्न, ३० उपवन, ३१. कलिया और फूल, ३२ बसन्त, ३३. चन्द्रमा, ३४ दर्शन देने में तल्लीन, ३५. ससार।

इलाही[36] तेरा हज़ार शुक्र[37] आज फिर खुशी का ज़माना[38] आया
हिलाले-ईद[39] एक बरस के बाद आज तूने फिर आंख से दिखाया
हर एक ज़र्रे[40] पे हो रहा है मुहीत[41] तेरे करम[42] का साया[43]
खुशी से है महवे-हम्द[44] दुनिया में आज हर अपना पराया

ज़माने भर को खुशी मुबारक यह दौरा-ए-फ़रुख्री[45] मुबारक
जो दिल शिकस्ता[46] हैं ग़म से उनको यह आलमे-खुशदिली[47] मुबारक

हर एक को क़ैदे-रंज-ओ-दर्द-ओ-अलम[48] से आज़ाद कर इलाही[49]
ग़रीब नाशाद[50] हस्तियों को करम[51] से फिर शाद[52] कर इलाही
सितमगरों[53] की सितमगरी को खराब-ओ-बरबाद[54] कर इलाही
जहां के उजड़े हुए दिलों के घरों को आबाद कर इलाही

दिलों की बस्ती में हो फ़रोज़ां[55] खुशी की यह रोशनी हमेशा
जहां के एक-एक ज़र्रे के लब[56] पे हो इलाही हंसी हमेशा

छमावनी[1]

'नज़ीर' बनारसी

दिल में नये अरमान[2] बसाने का दिन आया
ग़ुंचे[3] की तरह दिल को खिलाने का दिन आया
फूलों की तरह हंसने हंसाने का दिन आया

३६. भगवान, खुदा, ३७. धन्यवाद, ३८. समय, ३९. ईद का चांद, ४०. कण, ४१. छाया हुआ, ४२. दया, ४३ छांव, ४४. स्तुति में लीन, ४५. खुशी का दौर, ४६. टूटे हुए दिल वाले, ४७. खुशी का अवसर, ४८. शोक और कष्ट की कैद, ४९. भगवान, खुदा, ५०. दुखी और दरिद्र, ५१. दया, ५२. प्रसन्न, ५३. अत्याचारी, ५४. नष्ट, ५५. प्रज्वलित, ५६. होंठ।

छमावनी

१. जैन सम्प्रदाय के लोग साल में एक दिन एकत्र होकर एक-दूसरे से सालभर की कहा सुनी के लिए क्षमा मांगते हैं और गले मिलते हैं। इसलिए इसका नाम छमावनी (क्षमावाणी) रखा गया है, २. अभिलाषाएं, ३. कली।

आपस में गले मिलने मिलाने का दिन आया
इक साल के बाद आज ठिकाने[४] का दिन आया

यह चम्पा, वो बेला है, यह जूही, वो चमेली
हँस हँस के सब आपस मे बुझाती है पहेली
है एक जगह आज सखी और सहेली

बादल की तरह झूम के छाने का दिन आया
मुस्कान की बरखा मे नहाने का दिन आया

कलियो से हर इक आँख हया[५] माग रही है
गुचो[६] से खमोशी[७] की अदा माग रही है
हर चूक[८] मुहब्बत से छमा[९] माँग रही है

मुह अपना सफ़ाई से दिखाने का दिन आया
हर परदे को आईना[१०] बनाने का दिन आया

पाकीजा[११] तसव्वुर[१२] पे है तस्वीर[१३] की कृपा
तक़दीर पे है मालिके-तक़दीर[१४] की कृपा
फिर क्यो न हो भगवान महावीर की कृपा

आँखो की तरह सर को झुकाने का दिन आया
आदाबे-वफा[१५] सबको सिखाने का दिन आया

हिरदय से हर आकार के झाके है निराकार
हर एक कला मे नजर आता है कलाकार
इस वर्ष की आशाओ के सपने हुए साकार

जो सब मे है उसके नजर आने का दिन आया
भगवान के भी दर्शन दिखाने का दिन आया

४. उचित ढग का, ५. लज्जा, ६. कलिया, ७. मौन, ८. गलती, ९. क्षमा, १०. दर्पण, ११. पवित्र, १२. कल्पना, १३. चित्र, १४. भाग्य का मालिक, १५ प्रेम-निर्वाह का शिष्टाचार।

फूल वालों की सैर

गोपीनाथ 'अम्न' लखनवी

दिलफ़िज़ा[१] बरसात का मौसम है और फूलों की सैर
हैं कहीं मुतरिब[२] की तानें और कहीं झूलों की सैर

है कभी धूप और कभी ठंडी हवा, बरसात है
वाह क्या मौसम है, कैसा दिन है कैसी रात है

योग माया का है मन्दिर, क़ुतब की दरगाह है
दोनों फ़िरक़ों[3] की यहां देरीना[४] रस्म-ओ-राह[५] है

यह वो दिल्ली है कि है मशहूर[६] जिसकी सरज़मीन[७]
यह वो दिल्ली है कि दिलवालों के दिल लेती है छीन

यह वो दिल्ली है हज़ारों ज़ख़्म[८] जिसमें सिल गये
यह वो दिल्ली है जहां पंजाब यू० पी० मिल गये

सब ज़माने[९] भरके दुखड़े[१०] आज के दिन भूलिये
फ़लसफ़ा[११] बाला-ए-ताक़,[१२] अब गाइये और झूलिए

वाज़[13] के दिन और भी आयेंगे हज़रत[१४] आइये
झूलिये पेंगें बढ़ाकर, बारहमासे गाइये

क़हक़हों से ही इलाजे-दर्द-ओ-ग़म[१५] पैदा करें
कड़वे पानी के बिग़ैर इक नश्शा हम पैदा करें

१. आकर्षक, २. गायक, ३. सम्प्रदाय, ४. पुरानी, ५. जान-पहचान, ६. प्रसिद्ध, ७. धरती, ८. घाव, ९. संसार, १०. दुख-दर्द, ११. दर्शन शास्त्र, १२. ताक़ पर, १३. धर्मोपदेश, १४. महाशय, १५. कष्ट और शोक का उपचार।

छठा अध्याय

हमारे शहर और इलाक़े

कलकत्ता

मिर्ज़ा ग़ालिब

कलकत्ते का जो ज़िक्र[1] किया तूने हमनशीं[2]
इक तीर मेरे सीने में मारा कि हाय हाय

वो सब्ज़ाज़ारहा[3]-ए-मुतर्रा[4] कि है ग़ज़ब[5]
वो नाज़नीं[6] बुताने-ख़ुदआरा[7] कि हाय हाय

सब्र-आज़मा[8] वो उनकी निगाहें कि हफ़ नज़र[9]
ताक़त-रुबा[10] वो उनका इशारा कि हाय हाय

वो मेवाहा-ए-[11]-ताज़ा-ओ-शीरीं[12] कि वाह वा
वो बादाहा-ए-नाब-ओ-गवारा[13] कि हाय हाय

१. चर्चा, वर्णन, २. मित्र, ३. हरा-भरा मैदान, ४. ताज़ा, ५. .कोप, ६. सुंदरी, ७. खुद को सजाने वाली, ८. धैर्य को आज़माने वाली, ९. व्याकुल कर देने वाली, १०. निःशक्त करने वाली ११. सूखे फल, १२. ताज़े और मीठे, १३. बढ़िया और रुचिकर मदिरा।

कलकत्ता

हुरमतुल इकराम

लैलाओं के जज़ीरे[१], दिलआराओं[२] के दयार[३]
हर हर कदम पे फ़िक्र-ओ-नजर[४] के तिलिस्मजार[५]
हल्क़े[६] तजल्लियात[७] के, ज़ुल्मात[८] के हिसार[९]
लेकर कहा कहां न फिरी रूहे-बेक़रार[१०]

दिल को मज़ाके-खाम[११] का इनआम[१२] मिल गया
काँटे चुभे जो पाँव में आराम मिल गया

थी रहगुजर[१३] तवील[१४] मगर छाव वो मिली
दिल ने कहा, गुजार लूँ[१५] या भी दो इक घड़ी
गुजरी जो चंद[१६] घड़ियाँ तो दुनिया ही और थी
जैसे उफ़ुक[१७] पे एक किरन जगमगा उठी

कलकत्ता एक मोड इसी रहगुजर[१८] का है
इक संगे-मील[१९] रहरवे-जां[२०] के सफर[२१] का है

इस मोड पर हयात[२२] बरंगे-दिगर[२३] मिली
दिलदार[२४] साअतों[२५] की नजर से नजर मिली
सौ निकहतें[२६] लुटाती नसीमे-सहर[२७] मिली
फ़र्दा नवाज[२८] ख्वाबों[२९] की दिल को खबर मिली

चेहरों पे बाम-ओ-दर[३०] के तबस्सुम[३१] बिखर गया
जैसे फजा[३२] मे कोई तरन्नुम[३३] बिखर गया

१. द्वीप, टापू, २. मन-मोहिनी, ३. घर, ४. खयाल और दृष्टि, ५. इद्रजाल, ६. परिधियां, ७. प्रकाश, ८ अंधकार, ९. चारदीवारी, १०. व्याकुल आत्मा, ११ अपक्व अभिरुचि, १२. पुरस्कार, १३. मार्ग, १४ लम्बा, १५ व्यतीत कर लूं, १६. कुछ पल, १७. क्षितिज, १८. सड़क, रास्ता, १९. मील का पत्थर, २०. पथिक, २१. यात्रा, २२. जीवन, २३. किसी और ही रंग में, २४. मनमोहक, २५. क्षण, पल, २६. सुगध, खुशबूए, २७. प्रात:-समीर, २८. आनेवाली कल को नवाजने वाले, २९. स्वप्नो, ३०. छत और दरवाजे, ३१. मुस्कुराहट, ३२. वातावरण, ३३. स्वर-माधुर्य ।

'हुगली' की मौज मौज[३४] थी पैमाना-ए-सुरूर[३५]
विक्टोरिया की छांव में लौ[३६] दे उठा शऊर[३७]
आग़ोश[३८] थी ईडन की शबिस्ताने-रंग-ओ-नूर[३९]
कहता था सर झुका के यह नज़्ज़ारों[४०] का ग़ुरूर[४१]

हमको वफ़ा-ओ-मिहर[४२] से क़ासिर[४३] न जानिए
इस सरज़मीं[४४] पे ख़ुद को मुसाफ़िर[४५] न जानिए

चौरंगी पेशलफ़्ज़[४६] है कलकत्ता इक किताब
चौरंगी एक नग़मा[४७] है, कलकत्ता इक रबाब[४८]
कलकत्ता मद्द-ओ-जज़रे[४९]-हक़ाइक़[५०] का एक ख़्वाब[५१]
कलकत्ता ख़ुद सवाल है, कलकत्ता ख़ुद जवाब

यह एक शहर सारे जहाँ की कमाई है
यह इक ग़ज़ल है जिसका हर इक शेर इकाई है

टैगोर का दयार यह वहशत[५२] की सरज़मीं[५३]
यह नज़रुल और सुभाष की अज़मत[५४] की सरज़मीं
यह इल्म-ओ-फ़न[५५] की, दानिश-ओ-हिकमत[५६] की सरज़मीं
यह गेसुओं[५७] का शहर, मलाहत[५८] की सरज़मीं

वो शहर जिसने शाहे-अवध[५९] को पनाह[६०] दी
अपना बना के वज़अ[६१]-ए-मुरव्वत[६२] निबाह दी

३४. लहर, ३५. मस्ती का जाम, ३६. ज्योति, ३७. चेतना, ३८. गोद, ३९. रंग और प्रकाश का शयनागार, ४०. दृश्य, ४१ घमण्ड, ४२. प्रेम-निर्वाह और दया, ४३. विवश, ४४. धरती, ४५. यात्री, ४६. भूमिका, प्राक्कथन, ४७. संगीत, ४८. वीणा, सितार, ४९. ज्वारभाटा, उतार-चढ़ाव, ५०. वास्तविकता, यथार्थ, ५१. स्वप्न, ५२. उर्दू शाइर 'वहशत' कलकतवी, ५३. धरती, ५४. महानता, ५५. ज्ञान और कला, ५६. ज्ञान और विज्ञान, ५७. केश, लटें, ५८. लावण्य, सलोनापन, ५९. अवध का बादशाह (वाजिद-अली शाह), ६०. शरण, ६१. तरहदारी, ६२. लिहाज़।

बिरलाओ का यह शहर, यह मेहनतकशो[६३] का शहर
कारो का शहर, रिक्शो, टिरामो, बसो का शहर
यह शाइरो, सहाफियो,[६४] दानिशवरो[६५] का शहर
यह शहर दिलरुबाओ[६६] का यह कसबियो[६७] का शहर

इक यादगार, हिकमते-अफरग[६८] की लिये
यह शहर जलता रहता है रुख[६९] पर हँसी लिये

इक खुशगवार[७०] कर्ब[७१] मे खोया हुआ यह शहर
जागा हुआ कभी, कभी सोया हुआ यह शहर
कातिल[७२] लताफतो[७३] मे डुबोया हुआ यह शहर
हगामो[७४] की लडी मे पिरोया हुआ यह शहर

यह शहर एक आईनाखाना[७५] हयात[७६] का
कहता है रोज ताजा फसाना[७७] हयात का

हौडा ब्रिज की कामते-बाला[७८] का बाकपन[७९]
जैसे कोई बुजुर्ग[८०] ऋषि जाप मे मगन
सकते[८१] मे जैसे दपअतन[८२] आ जाये अहरमन[८३]
या नागदेव खुद को समेटे, उठाये फन

फौलाद का यह मोजिजा[८४] हिक्मत[८५] की सान[८६] पर
अर्जुन हो जैसे तीर चढाये कमान पर

कलकत्ता, अर्जे-मगरिबी[८७] बगाल का सिगार
ऊँची अटारियो की तब-ओ-ताब[८८] का दयार[८९]

६३ मजदूर, श्रमिक, ६४ पत्रकार, ६५. बुद्धिजीवी, ६६. सुन्दरियो, ६७ वेश्या, ६८. अंग्रेजो की कूटनीति, ६९. चेहरा, ७० आनन्दप्रद, ७१. वेदना, ७२. कत्ल करनेवाली, ७३. कोमलता, ७४ उपद्रव, ७५ शीशे का घर, ७६. जीवन, ७७ कहानी, ७८ ऊंचाई, ७९. अकड, ८० वयोवृद्ध, ८१. स्तब्धता, ८२. सहसा, ८३ शैतान, ८४ चमत्कार, ८५ विज्ञान, ८६. धार निकालने का पत्थर, ८७ पश्चिम बगाल की धरती, ८८ वैभव, ८९. घर।

कलबों, सिनेमा हाउसों, बारों[९०] का हश्रज़ार[९१]
इस शहर में कि हिन्द के माथे का है वकार[९२]

शाम आती है तो जिन्दगी बेदार[९३] होती है
रात अपने गेसुओं[९४] में उजाले पिरोती है

कलकत्ता, मेरी आर्ज़ुओं[९५] का नशातज़ार[९६]
कलकत्ता, मेरे ख्वाबों[९७] का कनआने-नौबहार[९८]
कलकत्ता, मेरे हुस्ने-तमन्ना[९९] का शालामार[१००]
कलकत्ता, मेरे प्यार की फ़िर्दौसे-गीर-ओ-दार[१०१]

बुझते हुए शरारों[१०२] को जिसने जगा दिया
फिर एक बार दिल को धड़कना सिखा दिया

अय जादुओं के शहरे-दिल-आरा[१०३] तिरी क़सम
हिम्मत-शिकन[१०४] है लाख जमाने के पेच-ओ-ख़म[१०५]
ताक़िन सजा सजा के तेरी याद के सनम[१०६]
रक्खा है दिल ने रिश्त:-ए-इख़्लास[१०७] का भरम[१०८]

माना कि तुझ से दूर, मैं अपने वतन में हूँ
हर रंग मे शरीक[१०९] तिरी अंजुमन[११०] में हूँ

९०. शराबखाना, ९१. हश्र का मैदान, ९२. महिमा प्रतिष्ठा, ९३. जागना, ९४. जुल्फ़ें, बाल, ९५. आकांक्षाओं, ९६. आनन्द घर, ९७. स्वप्नो, ९८. नयी बहार का वतन, ९९. आकांक्षा का सौंदर्य, १००. कश्मीर का एक बाग, १०१. जन्नत, १०२. चिंगारी, १०३ मोहक शहर, १०४. साहस तोड़ने वाला, १०५. मोड़, १०६. मूर्ति, बुत, १०७. निष्ठा का संबंध, १०८. इज्जत, १०९. शामिल, सम्मिलित, ११०. महफ़िल।

जौनपुर

'सफी' लखनवी

जोनपुर अय मौलि[1]द-ए-सुल्तान आदिल[2] शेरशाह
तेरे आसारे-कदीमा[3] तिरी अजमत[4] के गवाह
कह रहा है किलअ-ए-शाही[5] यह बाहाले-तबाह[6]
मुद्दतों[7] तक हिन्द की हम भी रहे ह तख्तगाह[8]

एक गाफिल[9] कौम[10] की खोई हुई अजमत[11] है हम
हमसे इबरत[12] का सबक लो मजरे-इबरत[13] है हम

जौनपुर ! अरबाबे-इल्म-ओ-फज्ल के[14] दारुस्सुरूर[15]
कहते थे शीराजे-हिन्द[16] अक्सर तुझे अहले-शुऊर[17]
तुझ मे थे शाहाने-शर्की[18] के इमारात-ओ कुसूर[19]
खुद तिरी तारीखे-आबादी[20] है 'शहरे जौनपुर'[21]

अब कहा वो बाम-ओ-दर[22] सब हो गये जेर-ओ-जबर[23]
नाम तक मे है तिरे रगे-तगैयुर[24] का असर[25]

अय महम्मद शाह जौना की मुकम्मल[26] यादगार[27]
क्या हुए वो फल जिनसे इस चमन[28] की थी बहार[29]

१ जन्मभूमि, २ न्यायी, ३ प्राचीन खण्डहर, ४ महानता, ५ शाही किला, ६ नष्ट-भ्रष्ट दशा मे, ७ लम्बे समय तक, ८ राजधानी, ९ बेखबर, १० राष्ट्र, ११ प्रतिष्ठा, १२. शिक्षा, नसीहत, १३. इब्रत के द्योतक, दृश्य, १४. ज्ञानियो-विज्ञानियो, १५ मदिरालय, १६. हिन्द का शीराज, १७ ज्ञानी, १८. पूर्वी बादशाह, १९. इमारते और महल, २० बसने की तारीख, २१ इन शब्दो के अको का जोड, २२ छते और दरवाजे, २३ ऊपर-नीचे, नष्ट-भ्रष्ट, २४ परिवर्तन का रग, २५ प्रभाव, २६ सम्पूर्ण, २७ स्मृति, २८. उपवन, २९ बसत ।

आह वो तेरे मुशाहिर[30] इंतिख़ाबे-रोज़गार[31]
तेरी बस्ती जिनके ग़म[32] में आज तक है सोगवार[33]

चल बसे यूँ मदफ़नों[34] का भी निशां[35] मिलता नहीं
एक यूसुफ़[36] ! कारवां का कारवां मिलता नहीं

क़िलअ-ए-संगी[37] बना दिखला रहा है शाने-तूर[38]
हर जगह है क़ुदरते-हक़[39] के करिश्मों[40] का ज़ुहूर[41]
जब निगाहे-शौक़[42] कर जाती है ख़न्दक़[43] से उबूर[44]
बह रही है गोमती दक्खन की जानिब थोड़ी दूर

आज तक जब इक ज़रा चढ़ता है आबे-गोमती[45]
क़िलए के पाबोस[46] को बढ़ता है आबे-गोमती

वो यहीं के फल थे उनका यहीं था ख़ाना बाग़[47]
समझे जाते थे जो मुल्के-हिन्द[48] में रौशन दिमाग़[49]
क़द्रदां[50] भी पाये थे वैसे ही हासिल[51] था फ़राग़[52]
इन चराग़ों से जला करते थे और अकसर चराग़

क्या हुए वो सूफ़ियाने[53]-पाक[54] तीनत[55] क्या हुए
क्या हुए वो ख़ादिमाने-इल्म-ओ-हिकमत[56] क्या हुए

३०. प्रसिद्ध लोग, ३१. ज़माने के चुने हुए, ३२. शोक, ३३. शोकातुर, ३४. क़ब्र, ३५. चिह्न, ३६. एक पैग़म्बर जो अपने क़ाफ़ले से बिछुड़ गये थे, ३७. पत्थर का क़िला, ३८. तूर की शान (तूर पहाड़ पर हज़रत मूसा को ख़ुदा का दीदार हुआ था), ३९. ख़ुदा की क़ुदरत, ४०. चमत्कार, ४१. प्रकटन, ४२. लालसा की नज़र, ४३. खाई, ४४. पार करना, ४५. गोमती का पानी, ४६. चरण-स्पर्श, ४७. घर और बाग़, ४८. भारत देश, ४९. उज्ज्वल मस्तिष्क ५०. क़द्र करनेवाले, मान देनेवाले, ५१. प्राप्त, ५२. अवकाश, ५३. सूफ़ीगण, ५४. पवित्र, ५५. प्रकृति, स्वभाव, ५६. ज्ञान-विज्ञान के सेवक।

यह असर[५७] खुश खुल्क़ियों[५८] का है इन्हीं की हमनशीं[५९]
इत्र[६०] ऐसा फूल ऐसे जो नहीं होते कहीं
सैंकडों ही दफ़्न[६१] इस खित्ते[६२] में हैं ज़ेरे-ज़मी[६३]
खन्दा[६४]रू-ओ-दिल[६५]शिगुफ़्ता[६६],नाज़ुकअन्दाम[६७]-ओ-हसी[६८]

'सब कहाँ कुछ लाल:-ओ-गुल[६९] में नुमायां[७०] हो गई
खाक में क्या सूरतें होगी कि पिन्हां[७१] हो गईं'

इलाहाबाद

'सफ़ी' लखनवी

अय इलाहाबाद अयजौलां गहे[१]-गग-ओ-जमन[२]
तेरा दामन[३] तीन त्रिबेनी की है इक अंजुमन[४]
सीखते है तुझसे फ़िरक़े[५] मेल मिल्लत[६] का चलन[७]
इत्तिहादे-बाहमी[८] संगम से तेरे मोजज़न[९]

जोशे-हमदर्दी[१०] से है लबरेज़[११] पैमाना[१२] तिरा
खस्ताहालों[१३] का शफ़ाखाना[१४] है मैखाना[१५] तिरा

५७. प्रभाव, ५८ मिलनसारी, शील, ५९. मित्र, दोस्त, ६० सुगंध, पुष्पसार, ६१. जमीन में गड़े हुए, ६२. कइला, क्षेत्र, ६३. धरता के नीचे, ६४. प्रफुल्ल, ६५. मुह और दिल, ६६. ताज़ा, ६७. कोमल शरीर, ६८. सुन्दर, ६९. लाले और गुलाब के फूल, ७० प्रकट, ७१. विलीन ।

इलाहाबाद

१. दौड़ का मैदान, २. गंगा और यमुना, ३. आंचल, ४. महफिल, ५. सम्प्रदाय, ६. प्रेम और एकता, ७. रिवाज, ८. परस्पर एकता, ९ मौजें मारती हुई, १०. सहानुभूति का जोश, ११. भरा हुआ, १२. प्याला. जाम, १३. दरिद्र, १४. अस्पताल, १५. मदिरालय ।

अय ज़ियारतगाहे[१६]-खुल्क़[१७] अय मजम-उल-बहरीने-हिन्द[१८]
माघ में मेला तिरा मशहूर[१६] है मावैने-हिन्द[२०]
अकबरी क़िलअ सरफ़राज़ी[२१] में नस्बुलअैने-हिन्द[२२]
और खुसरो बाग़[२३] से दो चन्द[२४] ज़ेब-ओ-ज़ीने-हिन्द[२५]

रंग-ओ-बू[२६] और ज़ायक़ा[२७] वो तेरे अमरूदों में है
सेबे-कश्मीरी[२८] सरे बाज़ार[२६] मरदूदो[३०] में है

जिसकी खुशबू[३१] मंज़िलों[३२] फैली है वो गुलशन[३३] है तू
ताज़ा रस गुलहा-ए-रंगारग[३४] का खिरमन[३५] है तू
बज़लासंजो[३६] का जवाहर खेज़[३७] एक मादन[३८] है तू
हज़रते-अकबर[३६] लसानुल-अस्र[४०] का मसकन[४१] है तू

नुत्क़[४२] तेरे सिक्क:-ए-राइज[४३] से मालामाल[४४] है
हिन्द में नक़्दे-ज़राफ़त[४५] की यही टकसाल[४६] है

आज तक क़ायल[४७] है इसके साकिनाने[४८] - हर दयार[४६]
थी नुमाइशगाह[५०] तेरी इनिखावे-रोजगार[५१]
अहले-दौलत[५२] थे हवा-ए-शौक़[५३] मे वेइख्तियार[५४]
मनचले[५५] पहुँचे तमाशा देखने लेकर उधार

गोशा-गोशा[५६] मंज़िले[५७]-तफरीहे[५८]-अहले-होश[५६] था
क़िलए का दामन[६०] ज़ियाफ़तगाहे[६१]-चश्म-ओ-गोश था[६२]

१६ दर्शन-स्थल, १७. शिष्टता, शील, १८ सगम, १६ प्रसिद्ध, २० भारत-भर मे, २१ ऊचाई, २२. भारत का उद्देश्य, २३ इलाहाबाद मे एक मशहूर बाग, २४. अधिक, दुगना, २५ भारत की शोभा, २६. रग और सुगध, २७ स्वाद, २८ कश्मीर के सेब, २६ खुले आम, बाजार में, ३०. अस्वीकृत, बहिष्कृत, ३१. सुगध, ३२ दूर तक, ३३. उपवन, बाग, ३४ रगबिरगे रसभरे फूल, ३५ खलियान, ३६ विनोदप्रियता, ३७ हीरो मे पूर्ण ३८ खान, ३६. अकबर इलाहाबादी (प्रसिद्ध शाइर), ४०. जमाने की जबान, ४१ निवास-स्थान, ४२ वाणी, ४३. प्रचलित सिक्का, ४४. धनी, समृद्ध, ४५ हास्य के सिक्के, ४६. टकशाला, ४७ सहमत, ४८. निवासी, ४६. हर जगह, ५०. प्रदर्शनी का स्थल, ५१. ससार की चुनी हुई, ५२. धनवान, ५३. अभिलाषा, ५४. विवश, ५५. दिलफेंक, नवयुवक, ५६. कोना-कोना, ५७. पड़ाव, ५८. मनोरजन, ५६. होशमन्द, ६०. क़िले का आगन, ६१. दावत की जगह, ६२. आखें और कान ।

इस निगारिस्तान[६३] का जो नक्श[६४] था वो दिलपजीर[६५]
सैर करने मंजिलो[६६] से आये थे बरना-ओ-पीर[६७]
सीगा[६८] जाते-मुखतलिफ[६९] मे थे सनाए[७०]-बेनजीर[७१]
जम्अ[७२] हर सू[७३] खुशनुमा[७४] खेमो[७५] मे इक जम्मेगफीर[७६]

सब तिलिस्मी[७७] कारखाना था, यहाँ पर क्या न था
'ख्वाब[७८] था जो कुछ कि देखा जो सुना अफसाना[७९] था'

बनारस

'सफी' लखनवी

अय बनारस हम सवादे[१] - सुरम -ए-चश्मे-बुता[२]
देख तेरा बुतकदा[३] है काब -ए-हिन्दोस्ता[४]

रू-ए-गंगा[५] जिस पे काशी खुशनुमा[६] तामीर[७] है
खत्ते-कौसी[८] मे सरे - जदवल[९] यही तहरीर[१०] है

पुल हिलाले-ईद,[११] गंगा साफ जू-ए-शीर[१२] है
या बुतो के अबरु-ए-पैवस्ता[१३] की तस्वीर[१४] है

६३. चित्रशाला, ६४. बेलबूटा, ६५ मनमोहक, ६६ दूर-दूर, ६७ बच्चे और बूढे, ६८ स्रोत, विभाग, ६९ विभिन्न, ७० कारीगर, ७१ बेमिसाल, अद्वितीय, ७२ एकत्रित, ७३. हर तरफ, ७४ सुन्दर, ७५ तम्बू, ७६ जन-समूह, ७७ मायाजाल, ७८ स्वप्न, ७९. कहानी।

बनारस

१ काला, २. सुन्दरियो की आखों का सुर्मा, ३ मन्दिर, ४. हिन्दुस्तान का काबा, ५ गगा का किनारा, ६. सुन्दर, ७. निर्मित, ८. चन्द्राकार, ९ किनारे-किनारे, १० लेखनी, ११. ईद का चांद, १२. दूध की नहर, १३. पैठी हुई भौंव, १४. चित्र।

आसमां[१५] था फ़ित्नाबाज़ी[१६] में जो मशहूरे-जहां[१७]
सरज़मीने-हुस्न[१८] ने खेंची है ग़मज़े[१९] की कमां[२०]
अय हिसारे-आफ़ियत[२१] की पुश्तबां[२२] इस पुल की नेव[२३]
सीना ताने, या है मस्ते-ख्वाबे-राहत[२४] कोई देव

पैकरे-काशी[२५] पे है क्या खुशनुमा[२६] आड़ा जनेऊ
है कहीं 'हर हर' लबे-साहिल[२७] कहीं पर शिव-शिव
है हिलाली खत[२८] में आबादी बनारस की तमाम[२९]
घाट मन्दिर सब लबे-दरिया[३०] बहुस्ने[३१]-इंतिज़ाम[३२]

नाव पर चढ़कर उन्हें देखो जो हैं नामी मुक़ाम[३३]
माहरुओं[३४] का मिलेगा हर जगह पर अज़दहाम[३५]
सदक़े[३६] इतनी गुलज़मीं[३७] पर सौ गुलिस्तां की बहार[३८]
आग पानी में लगाती है चराग़ां[३९] की बहार

चश्मे-बद्दूर[४०] उफ़ बनारस क्या ही बांका शहर है
हर अदा[४१] महवश[४२] हसीनों[४३] की यहां के क़हर[४४] है
ग़ैरते-कशमीर[४५] है यह इंतिखाबे-दहर[४६] है
हर गली कूचे में जारी[४७] हुस्न[४८] की इक नहर है

साफ़ हैं शफ़्फ़ाफ़[४९] हैं कितने यहां के बुतकदे[५०]
रहते हैं हरदम दुल्हन की तरह फूलों से लदे
वो धुधलका[५१] सुब्ह का, वो दूर तक गंगा के पाट
वो कगारों[५२] से नुमायां[५३] जा बजा पानी की काट

१५. गगन, १६. उपद्रव करना, १७. जग-प्रसिद्ध, १८. सौंदर्य की धरती, १९. कटाक्ष, २०. धनुष, २१. कुशलता की चारदीवारी, २२. पीठ, २३. बुनियाद, २४. चैन की नींद में मस्त २५. काशी का आकार, २६. सुन्दर, २७. किनारे पर, २८. चन्द्राकार, २९. सब, ३०. नदी के किनारे, ३१. सौंदर्य के साथ, ३२. व्यवस्था, ३३. प्रसिद्ध स्थान, ३४. चन्द्रमुखी, ३५. समूह, ३६. न्योछावर, ३७. फूलों की धरती, ३८. सैकड़ों उपवनों का वसन्त, ३९. दीपावली, ४०. ख़ुदा बुरी नजर से बचाये, ४१. हावभाव, ४२ चन्द्रमुखी, ४३. सुन्दरी, ४४. प्रलय, प्रकोप, ४५. कश्मीर का आत्मसम्मान, ४६. दुनिया में श्रेष्ठ, ४७. प्रवाहित, ४८. सौंदर्य, ४९. स्वच्छ, ५०. मन्दिर, ५१. झुटपुटा, ५२. किनारा, ५३. प्रकट ।

वो परीज़ादो[५४] के जमघट से परिस्ता[५५] राजघाट
दिल बहल जाये जो इंसा[५६] की तबीअत हो उचाट
उतरे पानी मे गजरदम[५७] रोज का मामूल[५८] है
हर हसी[५९] नाज़ुक बदन[६०] गोया कंवल का फूल है

(माखज)

बनारस

रईस अमरोहवी

काशी के जलवे[१] जलवे नही बस
क्या इनको समझे नाफहम[२]-ओ-नाकस[३]
क्या गुचा[४] क्या गुल[५] क्या खार[६] क्या खस[७]
शादाब-ओ[८]-रगी नौखेज-ओ-नौरस[९]
सुब्हे - बनारस, सुब्हे - बनारस[१०]

वो रोदे - गंगा[११] इक - नज्मे - मौज्[१२]
आसूदा[१३] जिससे दिलहा-ए-महज्[१४]
साहिल[१५] की बदिश[१६] क्या खूब मजमूं[१७]
वो शशजिहत[१८] का खामोश[१९] अफमूं[२०]
शाईर का जैसे कोई मुसद्दस[२१]

५४. अप्सराओ की सतान, सुन्दरियाँ, ५५ परियो का देश, ५६ इसान, मानव, ५७ सुबह के समय ५८ नियम, ५९ सुन्दरी, ६० कोमलागिनी।

बनारस

१. दर्शन, २ नासमझ, ३ नालायक, ४ कली, ५ फूल, ६ काटा, ७ घास, ८ हराभरा और रगीन, ९ नौजवान और नवपक्व, १० बनारस की सुबह, ११ गगानदी, १२ सतुलित कविता १३. सतुष्ट, १४. उदास, १५. किनारा, १६. बध, १७. विषय, १८. छ दिशाए, (उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम, आकाश, पाताल), १९ मौन, २० जादू, २१. नज्म।

ख़ामोश-ओ-रख़्शां[२२] पानी का मंज़र[२३]
आबे-रवां[२४] की फैली है चादर
सब्ज़े[२५] पे शबनम पाकीज़ा[२६] गौहर[२७]
मखमल पे जैसे मोती की झालर
बुर्राक़[२८] रेती, शफ़्फ़ाफ़[२९] अतलस[३०]

सुब्हे - बनारस दिल का सहारा
गंगा का मंज़र[३१] वो प्यारा प्यारा
सोने की लहरें, चाँदी का धारा
हो गर मुयस्सर[३२] फिर वो नज़ारा[३३]
उम्रे - गुज़श्ता[३४] आ जाये वापस
सुब्हे - बनारस, सुब्हे - बनारस।

बनारस

'रविश' बनारसी

अय मिरे अच्छे बनारस, काबः-ए-अहले-हुनूद[१]
एक दुनिया के लिए तेरी ज़मी[२] जा-ए-सुजूद[३]
तेरी गलियां जन्नते[४]-आदम की वो राहे-हसी[५]
अप्सराएं रात की जिस जा[६] झुकाती हैं जबी[७]
ये मनाज़िर[८], ये मसाजिद[९], ये मुसलमां ये हुनूद[१०]
कारगह[११] में जिस तरह होते है रंगे-तार-ओ-पोद[१२]
ये खुले बाज़ार, ये ऊँचे मकां, ये तेरे घाट
यह फ़ज़ा[१३], यह सब्ज़ाजार[१४], और यह हसी[१५] गंगा का घाट

२२. मौन और चमकदार, २३. दृश्य, २४. प्रवाहित जल, २५. हरियाली, २६. पवित्र, २७. मोती, २८. उज्ज्वल, २९. स्वच्छ, ३०. रेशमी कपड़ा, ३१. दृश्य, ३२. प्राप्त, ३३. दृश्य, ३४. गुज़री हुई उम्र।

बनारस

१. हिन्दुओं का काबा, २. धरती, ३. सज्दा करने की जगह, ४. स्वर्ग, ५. सुन्दर मार्ग, ६. जगह, ७. ललाट, ८. दृश्य, ९. मस्जिदें, १०. हिन्दू, ११. कारखाने, १२. ताने-बाने के रंग, १३. वातावरण, १४. हरे-भरे मैदान, १५. सुन्दर।

तेरे कदमो[१६] पर तिरी गगा की यह मौजे-रवा[१७]
माहे-नौ[१८] के पास जैसे आ गई। हो कहकशा[१९]
यह तुलू-ए-आफताबे-सुब्ह,[२०] यह माहे-तमाम[२१]
काश मेरे दिल से पूछे कोई लुत्फे-सुब्ह-ओ-शाम[२२]
है हसी[२३] फूलो से नाजुक[२४] जिनका जिस्मे-मरमरी[२५]
जिनके जल्वो[२६] से है रौशन[२७] सुब्हे-काशी[२८] की जबी[२९]
जिनसे बुतखानो[३०] की जीनत,[३१] जिनसे काशी का सिघार
दम कदम[३२] से जिनके कायम[३३] हे बनारस की बहार[३४]
यात्री कुल हिन्द के इस ज्ञान के रस्ते मे है
फूल सारे गुलिस्ता[३५] के एक गुल-दस्ते मे है
सादगी इन्सान[३६] की हे देवता के रूप मे
हर कवल खिलता है दिल का मारिफत[३७] की धूप मे
अय वतन[३८] तू हुस्ने[३९] - खुदआरा[४०] मे मालामाल[४१] है
सगरेजा[४२] भी तिरे दामन गोया लाल[४३]

१६ चरणो, १७ प्रवाहित लहर, १८. नवचन्द्र, १९. आकाशगगा, २०. सुबह का सूर्योदय, २१ चौदहवी का चांद, पूरा चांद, २२. सुबह-शाम का आनन्द, २३. सुन्दर, २४ कोमल, २५. सगेमरमर जैसा शरीर, २६ दर्शन, २७. प्रकाशमान, २८ काशी का प्रात काल, २९ ललाट, ३० मन्दिर, ३१ शोभा, ३२. ज्ञान और चरण ३३ स्थिर, ३४ बसत, ३५. उपवन, ३६ मानव, ३७. ब्रह्मज्ञान, ३८. देश ३९ सौदर्य, ४०. खुद को सवारने वाला, ४१ सम्पन्न, ४२ कण, ४३. रत्न।

आगरा

'सीमाब' अकबराबादी

यह अर्ज़े-नाज[1] यानी अकबराबाद[2]
अमीने - अज़मते - हिन्दोस्तां[3] है

इसी के सर पे है वो मरमरी[4] ताज
जो नाज़िशगाहे-अक़वामे-जहां[5] है

शबे-महताब-ओ-ताज[6] अल्लाहो-अकबर[7]
यहा रातो को भी दिन का गुमा[8] है

यहा अकबर है महवे-ख्वाबे[9]-नौशी[10]
यहा खिल्वतगहे[11] - शाहेजहा है

गयासउद्दीन ईरानी का मदफ़न[12]
क़दीमी[13] सनअतो[14] का तर्जुमा[15] है

यह जामा मस्जिद और यह लाल किला
मुगल शाहशही[16] का इक निशा[17] है

यह शाही बाग, यह चीनी का रौजा[18]
बहारे - यादगारे - वास्ता[19] है

यहा शाहे विलायत[20] का है दरबार
जनाबे - बुलअला[21] का आस्ता[22] है

१. ताज की धरती, २ आगरा, ३. भारत की महानता का अमानतदार, ४. संगमरमर का, ५ ससार के राष्ट्रो के लिए गर्व का स्थान, ६. चादनी रात और ताज, ७. वाह-वाह (जब किसी चीज की प्रशसा करनी हो तो 'अल्ला हो अकबर' कहते है), ८ शक, ६. निद्राग्रस्त १०. सुन्दर, ११. शाहजहा का शयनागार, १२. कब्र, १३. प्राचीन, १४. उद्योग, १५. प्रतिनिधि, १६. सल्तनत, १७. प्रतीक, १८. मजार, क़ब्र, १९. प्राचीनकाल की यादगार का बसन्त, २०. एक औलिया, २१. एक औलिया, २२. चौखट ।

यहा उर्दू बनी भी और पली भी
यह अब तक मरकजे-अहले-जबा[23] है

यह मसकन[24] है मुशाहीरे-अदब[25] का
यहा 'मीर' और 'गालिब' का मका[26] है

यहा बहती है जमना शान्ती से
यहा हम्वारि-ए-आबे-रवा[27] है

हर इक पत्थर यहा है इक फसाना[28]
यहा हर ईट मे इक दास्ता[29] है

यह है वो यादगारे-अहदे-माजी[30]
कि दुनिया अब तक इसकी कद्रदा[31] है

जो इन आसार[32] को नुकसान पहुचा
तो यह तारीखे-आलम[33] का जिया है[34]

(माखूज)

अय सरज़मीने-गुजरात

'अख्तर' शीरानी

अय सरज़मीने-गुजरात ! अय खुल्दजारे[1]-उलफत[2]
फूलो मे तेरे रक्सा,[3] रूहे - बहारे - उलफत[4]
तेरा हर एक जर्रा[5] है राजदारे[6]-उलफत
अय यादगारे-उलफत[7], अय सरज़मीने गुजरात

हुस्न-ओ-हिजाब[8] का इक गहवारा[9] कहिये तुझको
शेर-ओ-शबाब[10] का इक शहबारा[11] कहिये तुझको

२३ जबान जानने वालो का केन्द्र, विद्वानो का केन्द्र, २४ निवास-स्थान, २५ प्रसिद्ध साहित्यकार, २६ घर, २७ बहते हुए पानी की सतह, २८ कहानी, २९ कहानी, ३० भूतकाल की यादगार, ३१ गुणग्राही, ३२ चिह्न, खण्डहर, ३३ ससार का इतिहास, ३४ नुकसान।

अय सरजमीने गुजरात

१ स्वर्ग का बाग, २ प्रेम ३ नृत्य करते हुए, ४ प्रेम के बसन्त की आत्मा, ५ कण, ६ प्रेम का राज जानने वाला, ७ प्रेम की यादगार, ८ सौदर्य और लज्जा, ९ पालना १० शेर और यौवन, ११ श्रेष्ठ नमूना।

फ़ितरत[12] का एक रंगीं[13] नज़्ज़ारा[14] कहिये तुझको
गुलपारा[15] कहिये तुझको, अय सरज़मीने-गुजरात

अय सरज़मीने-गुजरात तू काने-आशिक़ी[16] है
पंजाब के बदन[17] में तू जाने-आशिक़ी है
हां जाने-आशिक़ी है, अर्माने-आशिक़ी[18] है
ईमाने-आशिक़ी[19] है, अय सरज़मीने-गुजरात

वो सोहनी महिवाल, दो इश्क़बाज़[20] तेरे
दो रूहे-आशिक़ी[21] के आवारा राज़[22] तेरे
सोज-ओ-गुदाज़[23] से दो लबरेज[24] साज़[25] तेरे
नग़्मा[26] तराज़[27] तेरे, अय सरज़मीने-गुजरात

मातम[28] सरा[29] है जिनके गम[30] में चिनाब अब भी
बेताब[31] जिनकी ख़ातिर[32] है माहताब[33] अब भी
और जिनको ढूंढती है हर मौजे-आब[34] अब भी
चश्मे-हबाब[35] अब तक, अय सरजमीने-गुजरात

मौजों की धीमी-धीमी आवाज आ रही है
या रूह मोहनी की दरपर्दा[36] गा रही है
और दर्दे-आशिक़ी[37] के नग्मे[38] सुना रही है
आँसू बहा रही है, अय सरजमीने-गुजरात

उरियां[39] है हुस्न[40], तेरे सरसब्ज़[41] गुलशनों[42] में
आवारा इश्क़,[43] तेरे शादाब[44] दामनों में
फ़ितरत[45] बरहना[46] तेरे पुर नूर[47] ऐमनों[48] में
रंगीन[49] मसकनों[50] में अय सरज़मीने - गुजरात

१२. प्राकृतिक, १३. सुन्दर, १४. दृश्य, १५. फूल का टुकड़ा, १६. प्रेम की खान, १७. शरीर, १८. प्रेम का अरमान, १९. आशिक़ी का ईमान, २०. प्रेमी, २१. प्रेम की आत्मा, २२. रहस्य, २३. जलन और पिघलाहट, २४. परिपूर्ण, २५. वाद्य, २६. गीत, २७. गायक, २८. शोकालाप, २९. घर, ३०. शोक, ३१. व्याकुल, ३२. के लिए, ३३. चन्द्रमा, ३४. पानी, ३५. बुलबुला, ३६. पर्दे के पीछे, ३७. प्रेम का दुख, ३८. गीत, ३९. नग्न, ४०. सौंदर्य, ४१. हरे-भरे, ४२. उपवन, ४३. प्रेम, ४४. हराभरा, ४५. प्रकृति, ४६. नग्न, ४७. प्रकाश-४८. सुरक्षित स्थान, मान, ४९. सुन्दर, ५०. घर।

लखनऊ

'अख्तर' शीरानी

अर्श सामां[1] क्यों न हो खाके-दयारे-लखनऊ[2]
है बहारे-खुल्द[3] से बढ़कर बहारे-लखनऊ[4]

मशरिकी[5] रंगे-तमद्दुन[6] की है खालिस[7] यादगार
क्यों न हो हर मशरिकी,[8] दिल से निसारे-लखनऊ[9]

यह महल अस्लाफ[10] की तहजीब[11] का गहवारा[12] है
हिन्द में बाकी है यह तनहा[13] वकारे-लखनऊ[14]

यह फलक[15] रुत्बा[16] मकां[17], यह खुल्द सामां[18] गुलसितां[19]
रश्के-मिह्र-ओ-माह[20] है नक्श-ओ-निगारे[21]-लखनऊ

माहे-दर-आगोश[22] है हर जर्रा[23] इसकी खाक[24] का
अय जहे हुस्ने[25]-तरबगाहे[26] - दयारे-लखनऊ[27]

चौंककर ख्वाबे-लहद[28] से अपने वीरानों को देख
जाने-आलम[29]! आह ओ[30] जाने-बहारे-लखनऊ[31]

अगली[32] अजमत[33] याद आती है यह रौनक[34] देखकर
हम तो 'अख्तर' अब भी हैं मातमगुसारे-लखनऊ[35]

१ आकाश का सामान, २ लखनऊ की धूल, ३ स्वर्ग का बसन्त, ४ लखनऊ का बसन्त, ५ पूर्वी, ६ सभ्यता का रंग, ७ विशुद्ध, ८ पूर्व का रहने वाला, ९ लखनऊ पर न्योछावर। १० पुराने बुजुर्ग, ११ संस्कृति, १२ पालना, १३ अकेला, १४ लखनऊ की प्रतिष्ठा, १५ गगन, १६ दरजा, १७ घर, १८ स्वर्ग का सामान, १९ उपवन, २० जिस पर चाँद और सूरज रश्क करें, २१ बेल-बूटे, २२ चाँद की गोद में, २३ कण, २४ धूल, २५ सौंदर्य, २६ आनंद-स्थल, २७ लखनऊ की धरती, २८ कब्र की नींद, २९ एक बादशाह, ३० हाय, ३१. लखनऊ की बहार की जान, ३२ प्राचीन, ३३ प्रतिष्ठा, ३४ शोभा, ३५ लखनऊ की बर्बादी पर रोने वाले।

अलीगढ़

इसरारुल हक़ 'मजाज़'

सरशार[1] निगाहे-नरगिस[2] हूँ पाबस्त-ए-गेसू-ए-सुम्बुल[3] हूँ
यह मेरा चमन[4] है मेरा चमन, मैं अपने चमन का बुलबुल हूँ

हर आन[5] यहाँ सहबा-ए-कुहन[6] इक सागरे-नौ[7] में ढलती है
कलियों से हुस्न[8] टपकता है फूलों से जवानी उबलती है

जो ताके-हरम[9] में रौशन[10] है वो शम्अ यहाँ भी जलती है
इस दश्त[11] के गोशे[12] गोशे से इक जू-ए-हयात[13] उबलती है

इस्लाम के इस बुतखाने[14] में असनाम[15] भी है और आजर[16] भी
तहज़ीब[17] के इस मैखाने[18] में शमशीर[19] भी है और सागर[20] भी

या हुस्न[21] की बर्क[22] चमकती है या नूर[23] की बारिश होती है
हर आह[24] यहां इक नग़मा[25] है हर अश्क[26] यहां इक मोती है

हर शाम है शामे-मिस्र[27] यहाँ, हर शब[28] है शबे-शीराज[29] यहाँ
है सारे जहाँ का सोज[30] यहाँ और सारे जहाँ का साज[31] यहाँ

यह दश्ते-जुनूं[32] दीवानों[33] का, यह बज्मे-वफा[34] परवाना[35] की
यह शहरे-तरब[36] रूमानों का यह खुल्दे-बरीं[37] अरमानों[38] की

१ सन्तुष्ट, २ नरगिस की दृष्टि ३ सुम्बुल की लटों से बंधा हुआ, ४ उपवन, ५ घड़ी, ६ पुरानी शराब, ७ नया सागर, ८ सौंदर्य ९ हरम का ताक, १० प्रकाशमान, ११ जंगल, १२ कोना, १३ जीवन-सरिता, १४ मंदिर, १५ मूर्तियां, १६ मूर्तिकार, १७ सभ्यता, १८ मदिरालय, १९ तलवार, २० प्याला, २१ सौन्दर्य, २२ बिजली, २३ प्रकाश, २४ आर्त-नाद, २५ गीत, २६ आंसू, २७ मिस्र की शाम, २८ रात, २९ शीराज (शहर) की रात, ३० जलन, ३१ वाद्य, ३२ उन्माद का जंगल, ३३ पागल, ३४ प्रेम-निर्वाह की महफिल, ३५ पतंगा, ३६ आनन्द का नगर, ३७ स्वर्ग, ३८ आकांक्षाओं।

फ़ितरत[३९] ने सिखाई है हमको उफ़ताद[४०] यहाँ परवाज़[४१] यहाँ
गाये हैं वफ़ा[४२] के गीत यहाँ छेड़ा है जुनूं[४३] का साज़[४४] यहाँ

इस फ़र्श[४५] से हमने उड उडकर अफलाक[४६] के तारे तोडे हैं
नाहीद[४७] से की है सरगोशी, [४८] परवीन[४९] से रिश्ते[५०] जोडे हैं

इस बज़्म[५१] में तेग़ें[५२] खेंची हैं इस बज्म में साग़र[५३] तोडे हैं
इस बज़्म में आँख बिछाई है इस बज़्म में दिल तक[५४] जोड़े हैं

इस बज़्म मे नेज़े[५५] फेंके है इस बज़्म में खंजर[५६] चूमे हैं
इस बज़्म में गिरकर तड़पे हैं इस बज़्म में पीकर झूमे हैं

आ आ के हज़ारों बार यहाँ खुद आग भी हमने लगाई है
फिर सारे जहाँ[५७] ने देखा है यह आग हमी ने बुझाई है

यां हमने कमन्दें[५८] डाली हैं यां हमने शबखूं[५९] मारे है
यां हमने क़बायें[६०] नोची है यां हमने ताज[६१] उतारे हैं

हर आह[६२] है खुद तासीर[६३] यहाँ हर ख्वाब[६४] है खुद ताबीर[६५] यहाँ
तदबीर[६६] के पा-ए-संगी[६७] पर झुक जाती है तक़दीर[६८] यहाँ

ज़र्रात[६९] का बोसा[७०] लेने को सौ बार झुका आकाश यहाँ
खुद आँख से हमने देखी है बातिल[७१] की शिकस्ते-फ़ाश[७२] यहाँ

इस गुलकद:-ए-पारीना[७३] में फिर आग भड़कनेवाली है
फिर अब्र[७४] गरजनेवाले है फिर बर्क़[७५] कड़कनेवाली है

३९. प्रकृति, ४०. पतन, ४१. उठान, ४२. प्रेम-निर्वाह, ४३. उन्माद, ४४. वाद्य, ४५. धरती, ४६. गगन, (ब० व०), ४७. शुक्र ग्रह, ४८. कानाफूमी, ४९. कृत्तिका, (छः छोटे-छोटे तारों का गुच्छा) ५०. संबंध, ५१. महफ़िल, ५२. तलवार, ५३. प्याला, ५४. दिल भी, ५५. भाला, ५६. कटार, ५७. संसार, ५८. फंदा, पाश, ५९. निशाक्रमण, ६०. एक विशेष प्रकार का लंबा चोग़ा, ६१. मुकुट, ६२. आर्तनाद, ६३. असर, ६४. स्वप्न, ६५. स्वप्न-फल, ६६. उपाय, ६७. मज़बूत पैरों पर, ६८. भाग्य, ६९. कण, ७०. चुंबन, ७१. झूठ, ७२. शर्मनाक पराजय, ७३. फूलों का प्राचीन घर, ७४. बादल, ७५. बिजली ।

जो अब्र यहां से उट्ठेगा, वो सारे जहां पर बरसेगा
हर जू-ए-रवां[76] पर बरसेगा, हर कोहे-गरां[77] पर बरसेगा

हर सर्व-ओ-समन[78] पर बरसेगा, हर दश्त-ओ-दमन[79] पर बरसेगा
खुद अपने चमन पर बरसेगा, ग़ैरों के चमन पर बरसेगा

हर शहरे-तरब[80] पर गरजेगा, हर क़स्रे-तरब[81] पर कड़केगा
यह अब्र[82] हमेशा बरसा है, यह अब्र हमेशा बरसेगा

बम्बई

अली सरदार जाफ़री

न जाने क्या कशिश[1] है बम्बई तेरे शबिस्तां[2] में
कि हम शामे-अवध[3], सुब्हे-बनारस[4] छोड़ आये हैं

पपीहे बोलते हैं, कूकती हैं कोयलें जिनमें
हमारे दिल पे उन गाते हुए बाग़ों के साये हैं

हमारे जिस्म[5] कुन्दन हो गये हैं तेरी किरनों से
तिरे चश्मों[6] की चांदी ने हमारे मुंह धुलाये हैं

७६. प्रवाहित नदी, ७७. पहाड़, ७८. सरो और चमेली, ७९. जंगल और पूरा, ८०. आनंद-नगर, ८१. आनंद-महल, ८२ बादल ।

बम्बई

१. आकर्षण, २. शयनगार, ३. अवध की शाम, ४. बनारस की सुबह, ५. शरीर, ६. स्रोत ।

तिरे जिन्दा[7] की तारीकी[8] मे राते हमने काटी है
तिरी सड़को पे सोये तेरी बारिश मे नहाये है

कभी अश्कों[9] के तारे यास[10] की पलको से टूटे है
कभी उम्मीद[11] के दामन मे मोती जगमगाये है

कभी निकली है आहे[12] लेके मिशअल[13] जुलमते-शब[14] मे
कभी नारो ने परचम[15] आसमानो[16] तक उडाये है

अदा-ए-सरकशी[17] दी है गुरूरे-सरफरोशी[18] को
तिरी सफ्फाकियो[19] ने कितने खजर[20] आजमाये है

मगर फिर भी हमारा आलमे-मिहर-ओ-वफा[21] यह है
कि तुझको लखनऊ की तरह सीने से लगाये है

उतारी जा रही है चश्म-ओ-दिल[22] मे आरती तेरी
चरागे-शौक[23] गीतो की हथेली पर जलाये है

मुबारक[24] हमरकाबे[25]-गर्दिशे[26]-शाम-ओ-सहर[27] होना
मुबारक हम मे आजादो का तुझको हमसफर[28] होना

७ कैदखाना, ८ अंधकार, ९ आंसू, १० निराशा ११ आशा १२ आर्तनाद, १३ मशाल, १४ रात का अंधकार, १५ झंडा, १६ आकाश १७ विद्रोह का साहस १८ सर कटाने का गर्व १९ निर्दयता, २० कटार, २१ दया, और प्रेम निर्वाह का आलम, २२ आंख और दिल, २३ शौक का चिराग, २४ बधाई, २५ पाद-धारिणी, २६ चक्र, २७ सुबह-शाम, २८ सहयात्री ।

हैदराबाद

सिकन्दर अली 'वज्द'

फजा[1] जाफिजा[2] जर्रा जर्रा[3] हसीं[4] है
हकीकत[5] में मुल्के-दकन[6] गुल जमीं[7] है

हर इक नक्शे-तहजीब[8] जो दिलनशीं[9] है
दिले-हैदराबाद[10] उसका अमीं[11] है

अगर मिहर-ओ-उल्फत[12] की जन्नत[13] कहीं है
तो बेशक यही है यही है यही है

उरूसे-वफा[14], होश आया है जब से
तिरा आस्ताना[15] है मेरी जबीं[16] है

बहिश्ते-नजर[17], मुर्गजारे-गजाला[18]
हवा तेरी मौजे-मय-ओ-अंगबीं[19] है

जमाना[20] दिल आजार[21] है भी तो क्या गम
मुझे तेरी दिलदारियों[22] का यकीं[23] है

तिरे लुत्फ[24] का मोजिजा[25] है कि मेरी
जबां गुलफिशां[26] है सुखन[27] आतिशीं[28] है

१ वातावरण २ जीवनदायक ३ कण कण ४ सुन्दर ५ सच्चाई ६ दक्षिण प्रदेश ७ फूलों की धरती, ८ सभ्यता के निशान, ९ दिल में घर करने वाली १० हैदराबाद का दिल ११ अमानतदार, १२ दया और प्रेम, १३ स्वर्ग १४ वफा की दुल्हन १५ चौखट १६ ललाट १७ नजर का स्वर्ग १८ हिरनों से भरा जंगल १९ शराब और शहद की मौज, २० समय २१ हृदय विदारक, २२ दिल रखना, २३ विश्वास, २४ मेहरबानी, २५ चमत्कार, २६ फूल बरसाना, २७ कलाम, २८ आग जैसा।

नफासत[२६] बरसती है दीवार-ओ-दर[३०] से
तिरी खाक[३१] मे निकहते-यासमी[३२] है

बहुत खुशनुमा[३३] शहर देखे है मैंने
मगर तेरा जादू कही भी नही है

औरंगाबाद दकन

सिकन्दर अली 'वज्द'

तिरी हर सुब्ह[१] पैगामे[२]-हयाते-ताजा[३] लाती है
तिरी वीरानियो मे रूहे-फर्दा[४] मुस्कुराती है

नसीमे-जाफिजा[५] चलती है तेरे सब्जाजारो[६] मे
शराबे-हुस्न[७] बल खाती है तेरे आबशारो[८] मे

दिलो को मस्त करती है तिरी बदमस्त[९] बरसाते
हवाओ मे लुटाती हे जवानी, चाँदनी राते

दकन की सरज़मी[१०] पर मोजजन[११] है जू-ए-खू[१२] तेरी
उगलती है हजारो लाल[१३] खाके-तीरागू[१४] तेरी

तिरे जुगनू गिरा देते है क़िस्मत[१५] माहताबो[१६] की
तिरी मट्टी के जर्रो[१७] मे चमक है आफताबो[१८] की

२९ पवित्रता, ३० दीवारे और दरवाजे, ३१ धूल, ३२ चमेली की सुगंध, ३३ सुंदर।

औरंगाबाद दकन

१. प्रात काल, २ सदेश, ३ नवजीवन, ४ कल की सुबह आने वाले, ५ जीवनदायक, ६ हरे-भरे मैदान, ७ सौन्दर्य की मदिरा, ८ जलप्रपात, ९ नशीली, १० धरती, ११ मौजे मार रही है, १२. खून की नदी, १३. रत्न, १४. अंधकार की धूल, १५ भाग्य, १६ चांद, १७. कण, १८. सूरज ।

तिरी पायन्दगी[१९] यूँ हंस रही है इंक़िलाबों[२०] पर
समुन्दर जैसे हंसता है हिक़ारत[२१] से हबाबों[२२] पर

ज़माने[२३] में तिरे आसार[२४] की तौक़ीर[२५] होती है
तिरी आग़ोश[२६] में तहज़ीबे-अहले-हिन्द[२७] सोती है

तिरे कुहसार[२८] में है अज़्मे-ख़िलजी[२९] बेक़रार[३०] अब तक
फ़ज़ा[३१] में हिम्मते-तुग़लक़[३२] का उड़ता है ग़ुबार[३३] अब तक

तिरे ज़रख़ेज़[३४] मैदानों पे क़ब्ज़े[३५] के लिए अक्सर[३६]
हुआ है, इम्तिहाने[३७]-बुर्रिशे-तेग़े-मलक[३८] अम्बर[३९]

तिरे दामन में 'आलमगीर'[४०] मीठी नीन्द सोता है
जलाले-क़ुतबशाही[४१] अपनी बरबादी पे रोता है

हिसारों[४२] में तिरी निकला नतीजा[४३] सइ-ए-पैहम[४४] का
[illegible] मशरिक़[४५] मे पहला आफ़ताबे-आसिफ़ी[४६] चमका

'वली'[४७] के नग़्म-ए-जांसोज़[४८] गूंजे तेरी महफ़िल[४९] में
'सिराजे'-बज़्मे-इरफ़ां[५०] से उजाला है तेरे दिल मे

तिरे ही साज़[५१] पर मैंने सुने नग़में[५२] जवानी के
तिरे माहौल[५३] में सीखे है गुर[५४] जादू बयानी[५५] के

१९. अनश्वरता, २०. क्रांति, २१. तिरस्कार, २२. बुलबुला, २३. ससार २४. अवशेष, २५. मान, २६. गोद, २७. हिन्दुस्तान के लोगों की सभ्यता, २८. पहाड़ी इलाक़ा, २९. ख़िलजी का साहस, ३०. व्याकुल, ३१. वातावरण, ३२. तुगलक़ की हिम्मत, ३३. धूल, ३४. उपजाऊ, ३५. अधिकार, ३६. प्रायः, ३७. परीक्षा, ३८. फ़रिश्तो की तलवार की धार, ३९. आकाश, एक सुगन्धित द्रव्य, ४०. औरंगज़ेब, ४१. कुत्ब शाही का प्रताप, ४२. चारदिवारी, ४३. फल, ४४. लगातार कोशिश, ४५. पूर्व, ४६. आसिफ़ ख़ानदान का सूर्य, ४७. शाइर (वली दकनी), ४८. दर्द-भरे गीत, ४९. अंजुमन, ५०. ज्ञान की गोष्ठी, ५१ वाद्य, ५२. गीत, ५३. वातावरण, ५४. रहस्य, ५५. वाक्-पटुता ।

तखैयुल[५६] पर मिरे मनकूश[५७] है तेरी बहार[५८] अब तक
मिरे आँसू तिरी उलफत[५९] के है आईनादार[६०] अब तक

तिरे दर पर बहारे-नौजवानी[६१] छोड आया हूँ
नियाज-ओ-नाज[६२] की पहली कहानी छोड आया हूँ

औरंगाबाद

युसुफ 'नाजिम'

अय शहर[1] तेरा नाम है अजमत[1] का शाहकार[2]
तेरे जसद[3] मे अजमते-मशरिक[4] है बेकरार[5]

अहले-नजर[6] के पाक कदम[7] का निशान[8] है
तू खाक[9] की जमीन[10] नही आसमान[11] है

आती है तुझको देख के आवाजे-दो जहा[12]
'जरबख्श[13] जर जरी' का रहा है तू आस्ता[14]

'बुरहान[15] दी गरीब' की मसनद[16] है यह जमी[17]
'हमोई शाह' .नूर[18] की मर्कद[19] है यह जमी[20]

५६. कल्पना, ५७ अंकित, ५८ बसन्त, ५९. प्रेम, ६० आईना दिखाने वाले, ६१. जवानी की बहार, ६२ आकाक्षा और गर्व ।

औरंगाबाद

१ महानता, २ अद्वितीय नमूना ३ शरीर, ४ पूर्व की महिमा, ५. व्याकुल, ६. नजरवाले, बुद्धिमान, ७. चरण, ८ चिह्न, ९ धूल, १० धरती, ११ आकाश, १२. दोनो जहान की आवाज, १३. एक बुजुर्ग, १४ चौखट, १५ एक बुजुर्ग, १६ गद्दी, १७. धरती, १८ एक बुजुर्ग, १९ समाधि, २० धरती ।

सीने में तेरे दफ़्न[21] हैं कितने अज़ीम[22] दिल
तू क़ालिबे-हसी[23] है 'अय किश्ते-आब-ओ-गिल[24]

खिलजी का खून तेरी रगों[25] में रवां दवा[26]
तारीखे-आसिफ़ी[27] का जिगर[28] तुझमे खूंफ़िशां[29]

इक राबिआ[30] का मक़बर:-ए-दिलनशीं[31] है तू
फ़र्शे-ज़मी[32] पे चाँद है ज़ुहरा[33]-जबीं है तू

अम्बर[34] की रूह तेरी फ़ज़ा[35] में समाई है
इस सरज़मी[36] पे अहले-हुनर[37] की खुदाई[38] है

खुल्दाबाद

मीर महम्मद अली खां 'मैकश' हैदराबादी

है कौसर-ओ-नसनीम[1] की मौजें[2] हवाओं में तिरी
जन्नत[3] की आसूदा[4] फ़ज़ायें[5] है फ़ज़ाओं में तिरी

आँखों मे जन्नत का तसव्वुर[6] है तिरी तामीर[7] से
रौशन[8] हुआ है तू चराग़े-अर्श[9] की तनवीर[10] से

२१. गड़े हुए, २२. महान, २३. सुन्दर शरीर, २४ मिट्टी और पानी की खेती, २५. धमनियों में, २६. प्रवाहित, २७. आसिफ शाह के खानदान का इतिहास, २८. कलेजा, २९. खून में डूबा हुआ, ३०. एक तपस्विनी और साध्वी स्त्री, ३१. दिल मे जगह करने वाली कब्र, ३२. धरती, ३३. शुक्र तारे जैसा ललाट, ३४. एक सुगन्धित बहुमूल्य आकाश, द्रव्य ३५. वातावरण, ३६. धरती, ३७. कलाकार, ३८. दुनिया।

खुल्दाबाद

१. स्वर्ग की नहर और सरोवर, २. लहरें, ३. स्वर्ग, ४. तृप्त, ५. हवा, ६. कल्पना, ७. निर्माण, ८. प्रकाशित, ९. आकाश का चिराग़, १०. आभा।

फूलों से आती है तिरे जन्नत के फूलों की महक[११]
धोती है ज़र्रों[१२] को तिरे मासूम[१३] तारों की चमक

है क़ल्ब[१४] में तेरे तक़द्दुस[१५] रूहे-आलमगीर[१६] से
फ़िर्दौस[१७] भी मांगेगी बेदारी[१८] तिरी तकदीर[१९] से

अय जन्नते-अर्ज़ी[२०] ! है तू खुल्दे-नज़र[२१] मेरे लिए
जन्नत के बाम-ओ-दर[२२] है तेरे बाम-ओ-दर मेरे लिए

दुनिया की दोज़खगीर[२३] हदबन्दी से दिल आज़ाद है
जब तक है तू आबाद इस दुनिया मे खुल्द[२४] आबाद है

लाहौर

जगन्नाथ 'आज़ाद'

खित्तः - ए - लाहौर[१] मंज़िलगाहे[२] - तहज़ीब[३] - ओ - अदब[४]
इल्म[५] के अनवार[६] से रौशन[७] हैं जिसके रोज-ओ-शब[८]

सीनः-ए-पंजाब[९] का दिल बल्दः[१०]-ए-मीनू सवाद[११]
खाक[१२] जिसकी अहले-दिल[१३] के वास्ते अंजुम नजाद[१४]

११. सुगंध, १२ कणों, १३. निष्पाप, १४. दिल, १५. पवित्रता, १६. आलमगीर की रूह, १७. स्वर्ग, १८. जागृति, १९. भाग्य, २० स्वर्ग की भूमि, २१. स्वर्ग की दृष्टि, २२. छत और दरवाज़े, २३. नार्कीय, २४. स्वर्ग।

लाहौर

१. लाहौर की धरती, २. पड़ाव. ३. सभ्यता, ४. साहित्य, ५. ज्ञान, ६. प्रकाश, ७ प्रकाशमान, ८. दिन-रात, ९. पंजाब का सीना, १०. नगर, ११. स्वर्ग जैसा सुन्दर, १२ धूल, १३ दिलवाले, १४. तारों के वंश ।

जिसको बख्शी[१५] है तमद्दुन[१६] ने निराली ज़िन्दगी[१७]
जिसके बाम-ओ-दर[१८] पे है तहज़ीब[१९] की ताबिन्दगी[२०]

किशवरे-महबूब तालिब[२१], सरज़मीने[२२]-बिरहमन
जिनकी मौजे-नुत्क़[२३] से महका[२४] गुलिस्ताने-सुखन[२५]

मोलिद[२६]-ओ-मंशा-ए-रूफ़ी[२७] मसकने[२८]-मसऊद साद[२९]
अज़मतें[३०] यह कौन समझेगा अब इस काफ़िर[३१] के बाद

जन्नते-दीगर[३२] जिसे नूरेजहां कहती रही
जिसकी दुनिया को वो अकसर अपनी जां[३३] कहती रही

पीरे-मश्रिक़[३४] ने बसर[३५] की जिसमें सारी ज़िन्दगी[३६]
पीरे-मश्रिक़ वो सरापा[३७] पैकरे-ताबिन्दगी[३८]

जिसकी बादे-सुब्ह[३९] में पिन्हां[४०] है तासीरे-शराब[४१]
जिसके ज़र्रों[४२] में निहां[४३] है बिजलियों की आब-ओ-ताब[४४]

जिसका हर ज़र्रा[४५] मिरे जज़्बात[४६] की तस्वीर[४७] है
जिसके हर ज़र्रे पे मेरे नाम की तहरीर[४८] है

१५. प्रदान की, १६. सभ्यता, १७. जीवन, १८. छत और दरवाज़े, १९. संस्कृति, २०. आभा, २१. प्रेमिका के देश का इच्छुक, २२. धरती, २३. वाणी की मौज, २४. सुगंधित हुआ, २५. कलाम का उपवन, २६. जन्मभूमि, २७. फ़ारसी का शाइर, २८. निवास, २९. एक शहर, ३०. महानताएं ३१. विधर्मी, ३२. दूसरा स्वर्ग, ३३. प्राण, ३४. डा० इक़बाल, ३५. व्यतीत, ३६. जीवन, ३७. सम्पूर्ण, ३८. साकार प्रकाश, ३९. प्रातः-समीर, ४०. छुपी हुई, ४१. शराब की तासीर, ४२. कण, ४३. निहित, ४४. चमक, ४५. कण, ४६. भावना, ४७. चित्र, ४८. लिखावट।

दिल्ली

नरेश कुमार 'शाद'

पूछा गया जब उससे वो है शहर कौन सा।
जिसको न इंक़िलाबे-जमाना[1] मिटा सका
मिट-मिट के और भी जो उभरता चला गया

तारीख़े-रोज़गार[2] ने हंसकर दिया जवाब
'दिल्ली जो एक शहर है आलम[3] मे इन्तिख़ाब[4]'

तस्वीरे[5]-हुस्न-ओ-रंग[6] है इसकी गली गली
इसकी रविश रविश[7] में बला[8] की है दिलकशी[9]
इसके जमाल[10] में है गज़ब की शिगुफ़्तगी[11]

इसके जलाल[12] में है क़यामत[13] की आब-ओ-ताब[14]
'दिल्ली जो एक शहर है आलम में इन्तिख़ाब'

जमना सी नेक नाम का फर्ज़न्दे-नेक ख़ू[15]
शाहाने-मुगलिया[16] के तदब्बुर[17] की आबरू[18]
ग़ालिब की शाइरी का छलकता हुआ सुबू[19]

इल्म-ओ-अदब[20] के बाग[21] का हंसता हुआ गुलाब
'दिल्ली जो एक शहर है आलम मे इन्तिख़ाब'

१. समय की क्रांतिलाब, २. ज़माने का इतिहास, ३. संसार, ४. चुना हुआ, ५. चित्र, ६. सौंदर्य, ७. क्यारियों के बीच का मार्ग, ८. अधिक, ९. आकर्षण, १०. सौंदर्य, ११. ताज़गी, १२. प्रताप, १३. प्रलय, बहुत अधिक, १४. तेज, चमक, १५. आज्ञाकारी पुत्र, १६. मुग़ल बादशाह, १७. दूरदर्शिता, १८. इज़्ज़त, सम्मान, १९. शराब का मटका, २०. ज्ञान और साहित्य, २१. उपवन ।

दिलचस्प[२२]-ओ-दिलनवाज़,[२३] दिलआरा[२४]-ओ-दिलपिज़ीर[२५]
शाहों[२६] का हमसफ़ीर[२७] फ़क़ीरों का दस्तगीर[२८]
सारे जहां में इसकी नहीं है कोई नज़ीर[२९]

सारे जहां में इसका नहीं है कोई जवाब
'दिल्ली जो एक शहर है आलम में इन्तिख़ाब'

मिहर-ओ-वफ़ा[30] के फूल की ख़ुशबू[31] कहें जिसे
दश्ते-ख़ुलूस-ओ-ख़ुल्क़[32] का आहू[33] कहें जिसे
रूहे-रवाने-मुस्लिम-ओ-हिन्दू[34] कहें जिसे

तहज़ीब[35] के सेपहर[36] का ताबिन्दा[37] आफ़ताब[38]
'दिल्ली जो एक शहर है आलम में इन्तिख़ाब'

माज़ी[39] की सरगुज़श्त[40] का उनवाने[41]-दिलनशीं[42]
सदियों की शानदार रिवायात[43] का अमीं[44]
लेकिन कोई अलामते[45] -बोसीदगी[46] नहीं

दम ख़म[47] वही, शुकोह[48] वही, और वही शबाब[49]
'दिल्ली जो एक शहर है आलम में इन्तिख़ाब'

जो ज़र्रा[50] है यहां का वो इक कोहे-तूर[51] है
इक जलवागाहे[52]-अहले-निगाह-ओ-शुऊर[53] है
मुस्तक़बिले-हयात[54] के चेहरे का नूर[55] है

वाबस्ता[56] इससे है नये हिन्दोस्तां के ख़्वाब[57]
'दिल्ली जो एक शहर है आलम में इन्तिख़ाब'

२२. रोचक, २३. महबूब, २४. दिल को सजाने वाला, २५. दिल लुभाने वाला, २६. बादशाह, २७. मित्र, २८. हाथ थामने वाला, २९. उदाहरण, ३०. दया और प्रेम-निर्वाह ३१. सुगंध, ३२. शील और निष्ठा का जंगल, ३३. मृग, ३४. हिन्दू और मुसलमानों का प्राण, ३५. संस्कृति, ३६. तीसरा पहर, ३७. चमकदार, ३८. सूरज, ३९. भूतकाल, ४०. कहानी, ४१. शीर्षक, ४२. दिल में बैठ जाने वाला, ४३. परम्परा, ४४. अमानतदार, ४५. लक्षण, ४६. जीर्णता, ४७. साहस, ४८. प्रताप, ४९. यौवन, ५०. कण, ५१. तूर पहाड़, जहां हज़रत मूसा को ख़ुदा का जलवा दिखाई दिया था, ५२. दर्शन स्थल, ५३. निगाह और चेतना वाला ५४. जीवन का भविष्य, ५५. प्रकाश, ५६. सम्बन्धित, ५७. स्वप्न ।

झील की सत्ह पर बिछी चादरे-सीम[८७] देखिये
शीश:-ए-आब[८८] पर रवां[८९] क़स्र-ओ-हरीम[९०] देखिये
रंगे-निशात[९१] देखिये हुस्ने - नसीम[९२] देखिये
जन्नते-राह्-ओ-रौह्-ओ-रूह्[९३] खुल्दे-नसीम[९४] देखिये

उठके फ़राज़े-कोह[९५] से डल[९६] पे शुआ-ए-आफ़ताब[९७]
उफ़ रे फ़रोग़े-इर्तिआश[९८] उफ़ रे जमाले - इज्तिराब[९९]

सुब्ह तेरी बयाज़े-नूर[१००] शाम तिरी है ज़ुल्फ़े-हूर[१०१]
जिस पे फ़िदा[१०२] सवादे-खुल्द[१०३] जिसपे फ़िदा रियाज़े-तूर[१०४]
रू-ए-उफ़ुक़[१०५] पे चारसू[१०६] चादरे-सुर्ख़[१०७] का ज़हूर[१०८]
जल्वानुमा[१०९] सहर[११०] हुई ओढे हुए रिदा-ए-नूर[१११]

बर्ग-ओ-शजर[११२] है जल्वाबार[११३] गर्क़े-शफ़क़[११४] है कोहसार[११५]
छाई हुई है हर तरफ़ यानी बहारे-नूर-ओ-नार[११६]

अय मिरी खुल्दे-रंग-ओ-बू[११७] अय मिरी जन्नते-वतन[११८]
यह तिरा आब-ओ-रंग[११९] है बाइसे-ज़ीनते-वतन[१२०]
तुझ से है इज्ज़ते-वतन[१२१] तुझ से है अजमते-वतन[१२२]
है तिरे दम से गुल्शने-दहर[१२३] मे शोहरते-वतन[१२४]

तेरी रगों में है रवा[१२५] किसकी बहार[१२६] का लहू
किसके चमन[१२७] का फ़ैज़[१२८] है यह तेरा हुस्ने-रग-ओ-बू[१२९]

८७. चांदी की चादर, ८८. पानी का शीशा, ८९. प्रवाहित, ९०. घर और महल, ९१. हर्ष का रग, ९२. प्रातः समीर का सौंदर्य, ९३ रग और सुगध से परिपूर्ण जीवनदायक स्वर्ग, ९४. समीर का स्वर्ग, ९५. पहाड़ की ऊचाई, ९६, डल झील, ९७. सूर्य की किरणे, ९८. कम्पन की चमक, ९९. व्याकुलता का सौदर्य, १००. प्रकाश की बयाज, १०१. अप्सरा की लटें, १०२. क़ुर्बान, न्योछावर, १०३. स्वर्ग की सीमा, १०४ तूर की तपस्या, १०५. क्षितिज, १०६. चारों ओर, १०७. लाल चादर, १०८. प्रकटन, १०९ प्रदर्शन, ११०. प्रभात, १११. प्रकाश की चादर, ११२. पत्ते और पेड, ११३. दर्शन देती हुई, ११४. लाली मे डूबा हुआ, ११५. पहाड़, ११६. प्रकाश और आग का बसन्त, ११७ रग और सुगध का स्वर्ग, ११८. देश का स्वर्ग, ११९. पानी और रग, १२०. देश की शोभा का कारण, १२१. देश का मान, १२२. देश की महानता; १२३. दुनिया का उपवन, १२४. देश की प्रसिद्धि, १२५. प्रवाहित, १२६. बसंत, १२७. उपवन, १२८. दया, १२९. रग और सुगंध का सौंदर्य।

तेरा जमाल[130] रूकशे-खुल्दे-हसीने-हिन्द[131] है
तेरा वुजूद[132] अस्ल[133] में नक्शे-नगीने-हिन्द[134] है
रोजे-अज़ल[135] से तेरी खाक[136] ताजे-ज़मीने-हिन्द[137] है
ज़ेवरे-रंग-ओ-बू[138] तिरा ज़ेबे-जबीने-हिन्द[139] है

गुलकद:-ए-वतन[140] से है तुझको जो निस्बते-हुसीं[141]
गर्दिशे-रोज़गार[142] से होती है खत्म वो कहीं

वादि-ए-कश्मीर

'नाज़िश' परतापगढ़ी

सलाम वादि-ए-कश्मीर[1] अय उरूसे-ज़मीं[2]
तिरा दयार[3] है या ज़िन्दगी[4] का ख्वाबे-हसीं[5]
जहां[6] हसीन[7] है लेकिन तिरा जवाब नहीं
बजा[8] कहा तुझे जिसने कहा बहिश्ते-बरीं[9]

तिरे वुजूद[10] से क़ायम[11] है नाज़े-मासूमी[12]
तिरे शुहूद[13] पे खुद रूहे-ईतिक़ा[14] झूमी

१३०. सौदर्य, १३१. भारत की सुन्दरियों के स्वर्ग को लुभाने वाला, १३२. अस्तित्व, १३३. वास्तव, १३४. भारत के रत्नों का चिह्न, १३५. अनादिकाल, १३६. धूल, १३७. भारत की धरती का ताज, १३८. रंग और सुगंध का आभूषण, १३९. भारत के ललाट की शोभा, १४०. देश का उपवन, १४१. सुन्दर रिश्ता, १४२. समय का चक्र ।

वादि-ए-कश्मीर

१. कश्मीर की घाटी, २. धरती की दुल्हन, ३. आंगन, घर, ४. जीवन, ५. सुन्दर स्वप्न, ६. संसार, ७. सुन्दर, ८. सही, ठीक, ९. स्वर्ग, १०. अस्तित्व, ११. स्थिर, १२. मासूमियत का गर्व, १३. ज़ाहिर होना, १४. विकास की आत्मा ।

ये आबशार[15] हसीनों[16] के गेसुओ[17] की तरह
ये चाके-कोह[18] है खुलते हुए लबो[19] की तरह
ये वादियां[20] किसी गुलरू[21] के आरिजो[22] की तरह
वसीअतर[23] है जो माओं के आंचलों की तरह

बरगे-नग्मा[24] तिरी नद्दियो का यह बहना
कि बज रहा है किसी नौबहार[25] का गहना

यह गोशे गोशे[26] मे बिखरी सी मुश्कबू-ए-खुतन[27]
यह जर्रे जर्रे[28] मे घुलती हुई सी चन्द्रकिरन
तिरे कनार[29] मे ख्वाबीदा[30] रंग-ओ-बू[31] की दुल्हन
तिरा जवार[32] है या सास ले रहा है चमन[33]

ये जगमगाते चिकारे यह साफ सीनः-ए-डल[34]
यह हुस्ने-वादि-ए-गुलमर्ग[35] है कि जाने-गजल[36]

इक एक मोड पे यह जू-ए[37]-बारे-मस्ते-खराम[38]
कि जैसे कृष्ण की नजरों मे प्रीत का पैगाम[39]
कुछ इस निखार मे आती है इस दयार[40] मे शाम[41]
कि जैसे जुहद[42] के लब[43] पर रुबाइ-ए-खैयाम[44]

यह रंग-ओ-नूर[45] यह नग्मा[46] यह जिन्दगी की तरग[47]
कि जैसे रक्से-बहारा[48] मे इक हसी[49] की उमग[50]

१५. जल-प्रपात, १६. सुन्दरियो के, १७. लट, बाल, १८. घाटिया, १९. होठ, २० घाटिया, २१. फूल जैसे चेहरे वाला, २२ कपोल, २३ विस्तृत, २४ गीत के समान, २५. नवयौवना, २६. कोने-कोने, २७. कस्तूरी की गध, २८ कण कण, २९ गोद, पहलू, ३० सोयी हुई, ३१ रग और सुगध, ३२, पडोस, ३३ उपवन ३४. डल झील का सीना (सतह), ३५. गुलमर्ग की वादी का सौंदर्य, ३६. गजल की जान, ३७ नदी की, ३८ मद गति, ३९ सदेश, ४०. आंगन, ४१. संध्या, ४२. सयम, ४३. होठ, ४४. खैयाम की रुबाई, ४५. प्रकाश और रग, ४६. गीत,. ४७. उमंग, ४८. बसंत का नृत्य, ४९ सुन्दर, ५० अभिलाषा।

सलाम वादि-ए-कश्मीर रश्के-ख़ित्त:-ए-नूर[५१]
तिरा जवार[५२] हसीं[५३] है जवान तेरे जमहूर[५४]
तुझी से ख़ाक[५५] की ज़ीनत[५६] तू ही ज़मीं[५७] का ग़ुरूर[५८]
तुझी को कहते हैं धरती की मांग का सिंदूर

सलाम तुझ पे कि मेरे वतन[५९] का ताज[६०] है तू
सलाम तुझ पे कि हिन्दोस्तां की लाज है तू

तुझे ख़िज़ां[६१] के हर इक वार[६२] मे बचा लेंगे
तिरे क़दम[६३] पे हम अपना लहू[६४] उछालेंगे
बुरी निगाह जो अग़ियार[६५] तुझ पे डालेंगे
हम अहले-हिन्द[६६] दिलों में तुझे बिठा लेंगे

दराज़[६७] उम्र[६८] हो मैख़ान:-ए-जमाल[६९] तिरा
यह मेरी नज्म है नज़रान:-ए-जमाल[७०] तिरा

ब्रज

मुंशी बनवारीलाल 'शोला'

यह वो है जमी[१] जिसको ज़मीं कह नहीं सकते
ऊँचा सही पर अर्शेबरी[२] कह नहीं सकते
ताबां[३] सही पर मह की जबीं[४] कह नहीं सकते
चुप है कि चुनां और चुनी कह नहीं सकते

रौशन[५] है कि यह सिज्दा[६] गहे - अहले-यक़ीं[७] है
जो ज़र्रा[८] है यां ख़ातिमे-क़ुदरत[९] का नगीं[१०] है

५१. प्रकाश के क्षेत्र, ५२. पड़ौस, ५३. सुन्दर, ५४. जनता, ५५. धूल, ५६. शोभा, ५७. धरती, ५८. गर्व, ५९. देश, ६०. मुकुट, ६१. पतझड़, ६२. हमला, ६३. चरण, ६४. रक्त, ६५. दुश्मन, ६६. भारतवासी, ६७. लम्बी, ६८ आयु, ६९. सौदर्य का मदिरालय, ७० सौदर्य का नज़राना।

ब्रज

१. धरती, २. आकाश, ३. चमकदार, ४. चन्द्र का ललाट, ५. प्रकट, ६. माथा टेकने की जगह, ७. विश्वास रखने वाले, ८. कण, ९. प्रकृति की अंगूठी, १०. नगीना, रत्न।

उट्ठा है यहीं आके निकाबे-रुखे-तौहीद[11]
हर वक्त नजर आता है या जलव:-ए-जावीद[12]
छुपता नही है शाम को भी बिर्ज[13] का खुर्शीद[14]
इक माह[15] मे या तीस निकलते है महे-ईद[16]

आती है हंसी जर्रो[17] को तारो का झलक[18] पर
यह वो है जमी[19] पाव न रखे जो फलक[20] पर

वो साफ जमी है कि जो मैली हो नजर[21] से
जारूबकशी[22] होती है जिबरील[23] के पर[24] से
हर मन्दिर मुरस्सा[25] जर[26]-ओ-याकूत[27]-ओ-गुहर[28] से
खुर्शीद[29] मगसरा[30] है शुआओ[31] की चवर से

वो भूमि है यह जिस पे फलक[32] झूम रहा है
नीलम का है इक छत्र कि जो घम रहा है

अब तक है जमी[33] बिर्ज[34] का गुलजारे-हकीकत[35]
हर कुज मे है हुस्ने[36]-पुरआशोब[37] की खिलवत[38]
गुचे[39] मे वही बू है वही फूल मे रगत
हर शाख है सिजदे[40] मे झुकी बहरे-इबादत[41]

सिक्का[42] लबे-शीरी[43] का है इक एक समर[44] पर
है दस्तखते[45]-खास हर इक बर्गे-शजर[46] पर

११ अद्वैतवाद के चेहरे का आवरण, १२ अमर दर्शन, १३ ब्रज, १४. सूरज, १५ चाद, १६ ईद का चाद, १७. कण, १८ चमक, १६ धरती, २० आकाश, २१ दृष्टि, २२ झाड़ू देना, २३. एक फरिश्ता, २४. पख, २५ जटित, २६ स्वर्ण, २७. लाल रग का कीमती पत्थर, २८. मोती, २६ सूर्य, ३० मक्खी उड़ाना, ३१ किरणे, ३२ गगन, ३३ धरती, ३४. ब्रज, ३५. यथार्थ का उपवन, ३६ सौदर्य, ३७. कोलाहलपूर्ण, ३८ एकात, ३६ कली, ४० माथा टेकना, ४१. आराधना के लिए, ४२ मुहर, ४३ मधुर होठ, ४४ फल, ४५ हस्ताक्षर विशेष, ४६. पेड का पत्ता।

इस हुस्ने-ज़मीं[४७] का है मगर आब-ओ-नमक[४८] और
खुर्शीद[४९] यहां और है मह[५०] और फ़लक[५१] और
मिट्टी की दमक[५२] और है ज़र्रे की चमक[५३] और
सब्ज़े[५४] की लहक[५५] और है पानी की झलक और

फीके हैं मह-ओ-मिहर[५६] के काशाने[५७] के जलवे[५८]
हैं आंख में बृन्दाबन-ओ-बरसाना के जलवे

अवध की ख़ाके-हसीं[१]

सरदार जाफ़री

गुज़रता बरसात, आते जाड़ों के नर्म लम्हे[२]
हवाओं में तितलियों के मानिन्द[३] उड़ रहे हैं
मैं अपने सीने में दिल की आवाज़ सुन रहा हूँ
रगों[४] के अन्दर लहू[५] की बूंदें मचल रही हैं

मिरे तसव्वुर[६] के ज़ख़्मख़ुर्दा[७]
उफ़क़[८] से यादों के कारवां यूं गुज़र रहे हैं
कि जैसे तारीक[९] शब[१०] के तारीक आसमां में
चमकते तारों के मुस्कुराते हुजूम[११] गुज़रें

४७. धरती का सौंदर्य, ४८ नमक और पानी, ४९ सूरज, ५० चांद, ५१ आकाश, ५२. चमक, ५३ आभा, ५४. हरियाली, ५५. छवि, शोभा, ५६. चांद-सूरज, ५७. घर, ५८. दर्शन।

अवध की ख़ाके-हसीं

१. सुन्दर धूल, २. क्षण, ३. तरह, समान, ४. धमनियां, ५. रक्त, ६. कल्पना, ७. घायल, ८. क्षितिज, ९. अंधेरी, १०. रात, ११. जमघट, समूह।

मैं क़ैदख़ाने में इश्क़पेचां[१२] की सब्ज़[१३] बेलों को ढूंडता हूँ
जो फैल जाती हैं अपने फूलों के नन्हे नन्हे चिराग़ ले कर
कहां हैं वो दिलनवाज़[१४] बांहें
वो शाख़े-सन्दल[१५]
कि जिस पे अंगड़ाइयों ने अपने हसी[१६] नशेमन[१७] बना लिये हैं
मैं अपनी मां के सफ़ेद आँचल की छांव को याद कर रहा हूँ
मिरी बहन ने मुझे लिखा है
नदी के पानी में बेद की झाड़ियां अभी तक नहा रही हैं
पपीहे रुख़सत[१८] नहीं हुए हैं
अभी वो अपनी सुरीली आवाज़ से दिलों को लुभा रहे हैं
मैं रात के वक़्त अपने ख़्वाबों[१९] में चौंक पडता हूँ
जैसे मुझ को
अवध की मिट्टी बुला रही है
हसीन[२०] झीलें कंवल के फूलों की चादरों में ढकी हुई हैं
फज़ाओं में मेघदूत परवाज़[२१] कर रहे हैं
न जाने कितनी मुहब्बतों के पयाम[२२] लेकर
घटाओं की अप्सरायें अपनी
घनेरी ज़ुल्फ़ों[२३] में आख़िरी बार मुस्कुराकर
ख़लीजे-बंगाल[२४] और बहरे-अरब[२५] के मोती पिरो रही हैं
हरे परों और नीले फूलो के मोर ख़ुश होके नाचते है
क़दीम[२६] गंगा का पाक[२७] पानी ज़मीं[२८] के दामन को धो रहा है
वो खेतिया धान से भरी है
जहां हवायें अज़ल[२९] के दिन से सितार अपने बजा रही है
हिमालिया की बुलन्दियां[३०] वर्फ़ से ढकी है
उन आसमां-बोस [३१] चोटियों को

१२. एक बेल, १३. हरी, १४. मनमोहक, १५. चन्दन की डाल, १६. सुन्दर, १७. घोसला, १८. बिदा, १९. स्वप्न, २०. सुन्दर, २१. उड़ान, २२. सदेश, २३. लटें, बाल, २४. बगाल की खाड़ी, २५. अरब सागर, २६. प्राचीन, २७. पवित्र, २८. धरती, २९. अनादिकाल, ३०. ऊंचाइयां, ३१. गगनचुम्बी ।

सहर[32] के सूरज ने सात रंगों की क़लग़ियों[33] से सजा दिया है
शफ़क़[34] की सुर्ख़ी में मेरी बहनों की मुस्कुराहट घुली हुई है
मिरे तसव्वुर[35] में साक़ियों का ख़िरामे-रंगीं[36]
न जाम-ओ-मीना[37] की गर्दिशें[38] हैं
न मैकदे[39] हैं न शोरिशें[40] हैं
मैं छोटे छोटे घरों की छोटी-सी ज़िन्दगी में घिरा हुआ हूँ
अंधेरे क़स्बों को याद करके तड़प रहा हूँ
वो जिनकी गलियों में मेरे बचपन की यादें अब तक भटक रही हैं
जहां के बच्चे पुराने कपड़े की मैली गुड़ियों से खेलते हैं
वो गांव जो सैकड़ों बरस से बसे हुए है
किसानों के झोंपड़ों पे तरकारियों की बेलें चढ़ी हुई हैं
पुराने पीपल की जड़ में पत्थर के देवता बेख़बर[41] पड़े हैं
क़दीम[42] बर्गद के पेड़ अपनी जटायें खोले हुए खड़े है

ये सीधे सादे ग़रीब इन्सान[43] नेकियों के मुजस्समे[44] हैं
ये मेहनतों के ख़ुदा ये तख़लीक़[45] के पयम्बर[46]
जो अपने हाथों के खुरदरेपन से ज़िन्दगी को संवारते हैं
लुहार के घन के नीचे लोहे की शक्ल तब्दील[47] हो रही है
कुम्हार का चाक चल रहा है
सुराहियां रक़्स[48] कर रही है
सफ़ेद आटा सियाह[49] चक्की से राग बनकर निकल रहा है
सुनहरे चूल्हों में आग के फूल खिल रहे हैं
पतीलियां गुनगुना रही हैं

३२. प्रभात, ३३. मुर्गे की केसर, ३४. लाली, ३५. कल्पना, ३६. मोहक मंद गति, ३७. सुराही और प्याला, ३८. चक्र, दौर, ३९. मदिरालय, ४०. कोलाहल, हंगामा. ४१. बेसुध, ४२. प्राचीन, ४३. मानव, ४४. मूर्तियां, ४५. सृष्टि, ४६. नबी, संदेशवाहक, ४७. परिवर्तित, ४८. नृत्य, ४९. काली।

धुएं से काले तवे भी चिंगारियों के होंठों से हंस रहे हैं
दुपट्टे आंगन में डोरियों पर टंगे हुए है
और उनके आंचल से धानी बूंदें टपक रही हैं
सुनहरी पगडण्डियों के दिल पर
सियाह[५०] लहंगों की सुर्ख गोटें मचल रही है

यह सादगी किस कदर[५१] हसी[५२] है
मैं जेल में बैठे बैठे अकसर यह सोचता हूं
जो हो सके तो अवध की प्यारी जमी को गोद मे उठा लूं
और इसकी शादाब[५३] लहलहाती हुई जबी[५४] को
हजार बोसों[५५] से जगमगा दूं

(इन्तिखाब)

५०. काले, ५१. कितनी, ५२. सुन्दर, ५३. हरी-भरी, ५४. ललाट, ५५. चुम्बन।

सातवां अध्याय

हमारी तामीरात

नालन्दा के खंडर

'नसीम' सहारनपुरी

अजनबी[1] कौन सी बस्ती है तुम्हारा मस्कन[2]
किसलिए आये हो इस माबदे-दानिश[3] की तरफ़
ये खंडर देख के क्या सोच रहे हो दिल में
क्या कभी ध्यान गया वक़्त[4] की गर्दिश[5] की तरफ़

मैं वही दर्स-गहे-इल्म-ओ-अदब[6] हूँ देखो
रूहे-इंसा[7] ने जहां मंजिले-तस्की[8] पाई
मैंने इस बहरे-हकीकत[9] के चुने है मोती
फ़लसफ़ा[10] पा न सका जिसकी कभी गहराई

मेरे पेड़ों के तले बैठ के अरबाबे-नज़र[11]
जिन्दगी[12] को नये उस्लूब[13] दिया करते थे
गेरुवे कपड़े में मलबूस[14] हजारों भिक्षु
दर्स[15], अखलाक-ओ-मुहब्बत[16] का लिया करते थे

साक्य वंश के इस राहिबे-मासूम[17] के बोल
आज भी गूंजते रहते है मिरे कानो मे
आदमी अंजुमे-उल्फ़त[18] से हटाकर नजरें[19]
खुद को महबूस[20] किया करता है गमखानो[21] मे

१ महात्मा बुद्ध, अनजान, २ निवासस्थान, ३. ज्ञान का आराधनागृह, ज्ञान-मंदिर, ४. समय, ५ चक्र, ६. ज्ञान और साहित्य की पाठशाला, ७ मानव की आत्मा, ८. धैर्य की मंज़िल, ९. यथार्थ का समुद्र, १०. दर्शनशास्त्र, ११. ज्ञानी, १२. जीवन, १३. प्रणाली, शैली, १४. सुसज्जित, १५. पाठ, १६. नैतिकता और प्रेम, १७ निष्पाप वैरागी, १८. प्रेम-नक्षत्र, तारे, १९ दृष्टि, २०. बंदी, २१. शोकालय ।

मेरे होटों पे यही अम्न[22] का पैगाम[23] रहा
जिह्ने-इंसा[24] में परेशान[25] सवालों के लिए
दुश्मनी[26] सिर्फ़ अंधेरों को जनम देती है
प्यार का दीप है आधार उजालो के लिए

यही पैगाम यही प्यार का अमृत था जिसे
दूर देसों से तरसती[27] हुई प्यासी रूहे[28]
मेरे इस दामने-फिर्दौसे-निशा[29] तक पहुची
ताकि दो घूट पियें और तसल्ली[30] कर लें

इन्हीं बेताब[31] तरसती हुई रूहो[32] मे कभी
एक सैयाह[33] गमे-जीस्त[34] मे घबराया हुआ
ज़र्द[35] खेतों से जहा महम[36] उगा करती है
मेरे आगोशे-मुहब्बत[37] मे चला आया था

बज्मे-अफकार[38] है पुरनूर[39] जिया[40] से जिनकी
फहम-ओ-इदराक[41] के वो दीप जलाये मैंने
जिन्दगी जाग उठी जिनका सहारा लेकर
उसको वो जीस्त[42] के आदाब[43] सिखाये मैंने

अर्जे-चीन[44] आज भी मरहूने-करम[45] है मेरी
मेरे सूरज ने उसे नूरे-सहर[46] बख्शा[47] था
इससे बढकर किसी तहजीब[48] का एहसा[49] क्या हो
सोजे-एहसासे-दरू,[50] हुस्ने-नजर[51] बख्शा था

२२ शान्ति, २३. सदेश, २४ मानव-मस्तिष्क, २५ उद्विग्न, २६. शत्रुता, २७ बेचैन, २८ आत्माएँ, २९ स्वर्ग समान दामन, ३० सन्ताप, ३१ व्याकुल, ३२. आत्माओ, ३३. पर्यटक, ३४ जिन्दगी का गम, ३५ पीले, ३६ भय, ३७. प्रेम-पाश, ३८. चिन्तन-गोष्ठी, ३९. प्रकाशमान, ४०. चमक, तेज, ४१ ज्ञान और विवेक, ४२. जीवन, ४३ शिष्टाचार, ४४. चीन की धरती, ४५. दया की बधक, ४६ प्रात काल का प्रकाश, ४७. प्रदान किया, ४८ सस्कृति, सभ्यता, ४९. एहसान, ५०. छुपे हुए एहसास की जलन, ५१. नजर का सौदर्य ।

अजनबी[52] तुम मिरी बातो मे परेशा[53] क्यो हो
जर्द[54] माथे पे पसीने के ये कतरे[55] कैसे
क्या सितम[56] करके सितम से यह पशेमानी[57] है
दोश[58] पर बारे-मलामत[59] के जनाज़े[60] कैसे

अर्ज़-नालन्दा[61] मिरे दीद-ओ-दिल[62] की तमकी[63]
'जाग'[64] अब फिर मिरे कदमो[65] मे चला आया है
दिल मे भी दाग[66] लिये रूह[67] मे नासूर[68] लिये
मुनफइल[69] होके गुनहगारे-वफा[70] आया है

मादरे-इल्म[71] मुझे रिफअते-गौतम[72] दे दे
मेरे रिसते हुए जख्मो को तू मरहम दे दे

अजन्ता

मिकन्दर अली 'वज्द'

जहा खूने-जिगर[1] पीते रहे अहले-हुनर[2] बरसो
जहा घुलती रहा रगो मे आहो[3] का असर बरसो
जहा खिचता रहा पत्थर पे अक्से[4]-खैर-ओ-शर[5] बरसो
जहा कायम[6] रहेगी जन्नते[7]-कल्ब-ओ-नजर[8] बरसो

जहा नग्मे[9] जनम लेते है रग्नाई बरसती है
दकन[10] की गोद मे आबाद वो ख्वाबो[11] की बस्ती है

५२ अनजान ५३ व्याकुल, ५४ पीत ५५ बूद, ५६ अत्याचार ५७ लज्जा, शर्मिन्दगी, ५८ कधा, ५९ पश्चाताप का बोझ, ६० अरथी ६१ नालन्दा की भूमि, ६२ आखे और हृदय, ६३ शान्ति, ६४ चीनी पर्यटक, ६५ शरण, ६६ जख्म का निशान, ६७ आत्मा, ६८, रिसता हुआ जख्म ६९ लज्जित, ७० प्रेम-निर्वाह न करने का अपराधी, ७१ विद्या की मा, ७२ गौतम की महानता।

अजन्ता

१ जिगर का खून, २ कलाकार, ३ आर्तनाद, ४ प्रतिबिम्ब, ५ नेकी और बदी, ६ स्थापित, ७ स्वर्ग, ८ दिल और दृष्टि, ९ गीत, १० दक्षिण, ११ स्वप्न।

शराब-ओ-शेर[१२] की तासीर[१३] है ठंडी हवाओ मे
बहारे-जिन्दगी[१४] गलता[१५] है सब्ज़े[१६] की अदाओ[१७] मे
नवा-ए-सरमदी[१८] आती है झरनो की सदाओ[१९] मे
बया[२०] मुम्किन[२१] नही वो लुत्फ[२२] आता है दुआओ[२३] मे

यहा सदियो[२४] से राइज[२५] पुरसुकू[२६] शीरी[२७] मकाली[२८] है
यहा का ज़र्रा ज़र्रा[२९] मजहरे-शाने-जमाली[३०] है

तजल्ली जारे[३१]-इरफा[३२], शाहकारे-इब्ने-आदम[३३] है
सरे-फितरत[३४] अमल[३५] की बारगाहे-हुस्न[३६] मे खम[३७] है
तमद्दुन[३८] मुनअकिस[३९] हो जिसमे ऐसा सागरे-जम[४०] है
जमाले-ज़िन्दगी[४१] रहने[४२]-जलाले-अज्मे-गौतम[४३] है

उमीदे-जाने-ताजा[४४] फिर दिले-बिस्मिल[४५] मे आई थी
तलाशे-अम्न[४६] मे तहजीब[४७] इस मजिल[४८] मे आई थी

कही पैदा हे सारी कैफियत[४९] सेहने-गुलिस्ता[५०] की
कही रौनक[५१] नजर आती है बाज़ार-ओ-शबिस्ता[५२] की
कही हैरत[५३] जबाने-हाल[५४] है हाले-परीशा[५५] की
लकीरे[५६] है कि शिरियाने[५७] दिले-इन्सान-ओ-हैवा[५८] की

कही जुल्मत[५९] के पीछे रौशनी[६०] महसूस[६१] होती है
कही तो मौत मे भी जिन्दगी[६२] महसूस होती है

१२ मदिरा और काव्य, १३ अमर प्रभाव १४ जीवन का बसन्त, १५ लोट रही है, १६ हरियाली, १७ हावभाव, १८ अनश्वर आवाज, १९ आवाजो, २० विवरण, २१ सम्भव, २२ आनन्द, २३ प्रार्थना, २४ शताब्दियो २५ प्रचलित, २६ शान, २७ मीठी, २८ बात-चीत, २९ कण-कण, ३० सौंदर्य की शान का द्योतक ३१ प्रकाश घर, ३२ ज्ञान, ३३ इन्सान का शाहकार, ३४ प्रकृति का मस्तक, ३५ व्यवहार, ३६ सौंदर्य का दरबार, ३७ झुका हुआ, ३८. सभ्यता, ३९ प्रतिबिम्बित, ४० एक रिवायती प्याला जिसमे ससार का हाल दिखायी देता है, ४१ जीवन का सौंदर्य, ४२ बधक, आभारी, ४३ गौतम के इरादे का तेज, ४४ जीने की आशा, ४५ घायल हृदय, ४६ शान्ति की खोज, ४७ सभ्यता, ४८ स्थान, ४९ हालत, ५०. उपवन का आगन ५१ शोभा, ५२ बाज़ार और शयनागार, ५३. आश्चर्य, ५४ वक्त की जबान, ५५ परेशान हाल, ५६ रेखाए, ५७. धमनिया, ५८ इसान और हैवान का दिल, ५९ अधकार, ६० प्रकाश, ६१ अनुभव, ६२ जीवन ।

हरीफे[६३]-नग्म:-ए-जाबख्श[६४] यह खामोश[६५] गोयाई[६६]
कमाले[६७]-फिक्र-ओ-फन[६८], हुस्ने-तनासुब[६९], शाने-ज़ेबाई[७०]
हकीकत[७१] बन गई जज़्बात[७२] की सदरग[७३] रानाई[७४]
लबो[७५] पर जौफिगन[७६] है नूरे-एजाजे-मसीहाई[७७]

निगाहो मे अजब[७८] अन्दाज[७९] है गुदाज[८०] गुदाजी[८१] का
दिलो पर नक्श[८२] रह जाता है जिनकी बेनियाजी[८३] का

करिश्मा[८४] है यह अरबाबे हिमम[८५] की सअइ-ए-पैहम[८६] का
जिन्हे एहसास[८७] भी होता न था कुछ शादि-ओ-गम[८८] का
दिलो पर अक्स[८९] खिंच आया था जिनके, हुस्ने-आलम[९०] का
कलम को नक्श[९१] अजबर[९२] हो गया था इस्मे-आजम[९३] का

चटानो पर शबाब-ओ-हुस्न[९४] की मौजे[९५] रवा[९६] कर दी
फुसकारो[९७] ने रगो मे मुकैयद[९८] बिजलिया कर दी

हरीमे-काब[९९]-ए-फन[१००], माबदे[१०१]-नाजुकख़याला[१०२] है
जहाने-नूर-ओ-निकहत[१०३], मसकने-आशुफ्ताहाला[१०४] है
जुनू-अफशा[१०५] फजा[१०६] मे मस्ति-ए-चश्मे गज़ाला[१०७] है
लबे-जू-ए-कुहिस्ता[१०८] जल्वागाहे - खुशजमाला[१०९] है

मिला है जिन्दगी को बाकपन[११०] इन कजकुलाहो[१११] मे
नजर वालो पे शमशीरे[११२] बरसती है निगाहो से

६३ शत्रु, ६४ जीवनदायक गीत, ६५ मौन, ६६ वाक्‌शक्ति, ६७ पूर्णता, ६८. चिंतन और कला, ६९ अनुपात का सौंदय ७० सदरता की शान ७१ यथार्थ, ७२ भावनाए, ७३ सौ रग की, ७४ सुदरता, ७५ होठो पर ७६ प्रकाशमान, ७७ मसीहाई के चमत्कार का प्रकाश, ७८ विचित्र, ७९ ढग, ८० पत्थर का पिघलाने वाला, ८१. मृदुलता, ८२ अंकित, चिह्न, ८३ निस्पृहता, ८४ चमत्कार, ८५. साहसी लोग, ८६ लगातार प्रयत्न, ८७. अनुभव, ८८ खुशी और गम ८९ प्रतिबिम्ब ९० ससार का सौंदर्य, ९१ चित्र, ९२ मुखाग्र, ९३ खुदा का नाम ९४. यौवन और सौंदर्य ९५ लहरे, ९६ प्रवाहित, ९७ जादूगर, ९८ कैदी, बदी, ९९ काबे की चारदीवार., १०० कला का काबा १०१ आराधनाघर, १०२ कोमल कल्पना वाले, १०३ प्रकाश और सुगध, १०४ खस्ताहालो का निवास, १०५ बिखरा हुआ, १०६ वातावरण, १०७ मृगो की आखो की मस्ती, १०८ पहाड़ी नदी के किनारे १०९ सुन्दरियो का दर्शन स्थल, ११०. अदा, १११ टेढ़ी टोपी वाले, ११२ तलवारे।

जिगर के ख़ून[113] से खीचे गये हैं नक़्श[114] लाफ़ानी[115]
तसद्दुक़[116] जिनके हर ख़त[117] पर तहैयुरख़ान:-ए-'मानी'[118]
मुशक्कल[119] है शबाब-ओ-हुस्न[120] में तख़ईले-इंसानी[121]
तक़द्दुस[122] के सहारे जी रहा है ज़ौक़े - उरियानी[123]

हसीनाने-ख़ुदआरा[124] का जुनूं[125] सरताज[126] है गोया
यहां जज़्बात[127] के इज़्हार[128] की मेराज[129] है गोया[130]

हुनरमन्दों[131] ने तस्वीरों[132] में गोया जान[133] भर दी है
तराज़ू दिल में हो जाती है वो काफ़िर[134] नज़र दी है
अदाओं[135] से अयां[136] है लज़्ज़ते-दर्दे-जिगर[137] दी है
खुलेंगे राज़[138], इस डर से दहन[139] पर मुहर[140] कर दी है

ये तस्वीरें[141] बज़ाहिर[142] साकित-ओ-ख़ामोश[143] रहती हैं
मगर अहले-नज़र[144] पूछे तो दिल की बात कहती हैं

गुलिस्तां[145] में जो गुज़रा क़ाफ़िला[146] फ़स्ले-बहारी[147] का
बहाना मिल गया अहले-जुनूं[148] को हुस्नकारी[149] का
चटानों पर बनाया नक़्श[150] दिल की बेक़रारी[151] का
सिखाया गुर उसे जज़्बात[152] की आईनादारी[153] का

अमानत[154] सीनः-ए-कुहसार में[155] इक दास्तां[156] रख दी
जिगरदारों[157] ने बुनियादे[158]-जहाने-जाविदां[159] रख दी

१११३. रक्त, ११४. चित्र, ११५ अनश्वर, ११६ न्योछावर, ११७. रेखा ११८ 'मानी' नामक चित्रकार की आश्चर्यचकित कर देने वाली चित्रशाला, ११९ साक्षात, १२०. यौवन और सौदर्य, १२१ मानव-कल्पना, १२२. पवित्रता, १२३. नग्नता की अभिरुचि, १२४. स्वय को सजानेवाली सुदरियां, १२५ उन्माद, १२६. मुकुट, १२७. भावनाए, १२८. प्रकटन, १२९. पराकाष्ठा, १३०. अर्थात्, १३१. कलाकार, १३२. चित्र, १३३. प्राण, १३४. अधर्मी, १३५. हाव-भाव, १३६ प्रकट, १३७ जिगर के दर्द का आनद, १३८. रहस्य, १३९. मुह, १४०. छाप, १४१ चित्र, १४२ प्रत्यक्ष, १४३ निश्चल, और मौन, १४४. नज़रवाले, १४५ उपवन १४६ कारवा, १४७ बसन्त, १४८. उन्मत्त, १४९. सौंदर्यकारी, १५० चिह्न, १५१. बेचैनी, व्याकुलता, १५२. भावनाए, १५३. दर्पण-कारी, शीशागरी, १५४. धरोहर, १५५. पहाड़ का सीना, १५६. कहानी, १५७. साहसी, १५८. नींव, आधार-शिला, १५९. अनश्वर ससार।

जहां छोडा खुशी से जाविदां[160] पैगाम[161] की खातिर[162]
सफ-आरा[163] थे शिकस्ते-गर्दिशे-अयाम[164] की खातिर
झुकाया सर न अपना शोहरत-ओ-इनाम[165] की खातिर
जिये भी काम की खातिर, मरे भी काम की खातिर

जमाने की जबी[166] पर अक्स[167] छोडे है निगाहो[168] के
रहेगे नक्श[169] इनके, नाम मिट जायेगे शाहो[170] के

एलौरा

सिकन्दर अली 'वज्द'

मै-ए-खयाल[1] है मगीन[2] आबगीनो[3] मे
दिलो का सोज[4] निहा[5], पत्थरो के सीनो मे
छुपाये नूरे-अजल[6] बुत[7] है आस्तीनो मे
हयात[8] जज्ब[9] है इन बेशिकन[10] जबीनो[11] मे

यहा जो सैर को फिक्रे-रसा[12] निकलती है
वफूरे-शौक[13] मे पत्थर की सॉस चलती है

१६० अमर, १६१ सदेश, १६२ के लिए १६३ सगठित १६४ समय-चक्र, १६५ प्रसिद्धि और पुरस्कार १६६ ललाट १६७ प्रतिबिम्ब, १६८ दृष्टि, १६९ चित्र, आकार, १७० बादशाहो।

एलौरा

१ कल्पना की मदिरा, २ मजबूत, दृढ ३ प्याले, ४ जलन, ५ छुपा हुआ, ६. अनादिकाल का प्रकाश, ७ मूर्तिया, ८ जीवन, ९. डबी हुई, १० साफ, जिस पर बल न हो, ११ ललाट, १२ दूर तक जाने वाला चिन्तन, १३ शौक की अधिकता।

अयां[१४] हैं अर्सः-ए-हस्ती[१५] के सब नशेब-ओ-फ़राज़[१६]
हुई है रू-ए-हक़ीक़त[१७] से दूर गर्दे-मजाज़[१८]
मिली जो ज़ौक़े-अमल[१९] को ख़याल[२०] की परवाज़[२१]
नशाते - कार[२२] ने कर दी हयाते-कार[२३] दराज़[२४]

कमंदे[२५]-गर्दिशे-ऐयाम[२६] के असीर[२७] नहीं
नक़ूशे[२८] - दस्ते - अक़ीदत[२९] फ़ना[३०]पिज़ीर नहीं

अज़ीम[३१] अज़्म[३२] थे जांबाज़[३३] नक़्शकारों[३४] के
ख़िज़ां[३५] की फ़िक्र[३६] न अरमान[३७] थे बहारों[३८] के
दिलों में ख़्वाब[३९] थे बेदार[४०] कोहसारों[४१] के
नज़र उक़ाब[४२] की, तेशे[४३] थे बर्क़पारों[४४] के

तसव्वुरात[४५] के पैकर[४६] तराश[४७] डाले हैं
दिये वो दिल जो हमेशा धड़कने वाले है

बनाई तेशावरों[४८] ने ख़याल[४९] की दुनिया
खुली हुई है उरूजो - ज़वाल[५०] की दुनिया
जुनू-नवाज़[५१] जलाल - ओ - जमाल[५२] की दुनिया
रहीने - मिन्नते - माज़ी[५३] है हाल[५४] की दुनिया

नुजूम[५५] डूब गये जल्वः-ए-सहर[५६] के लिए
हुआ है ख़ूने-दिल[५७] इस जन्नते - नज़र[५८] के लिए

१४. प्रकट, १५. जीवन का मैदान, १६. उतार-चढ़ाव, १७ सत्य का चेहरा, १८. माया की धूल, १९. कार्य की अभिरुचि, २०. कल्पना, २१. उड़ान, २२. काम का आनन्द, २३. काम का जीवन, २४. लम्बी, २५. पाश, फन्दा, २६. समय का चक्र, २७. क़ैदी, बधक, २८ निशान, २९ श्रद्धा के हाथ, ३०. नश्वर, ३१. महान, ३२. इरादे, ३३. जान पर खेल जाने वाले, ३४. कलाकार, ३५. पतझड़, ३६. चिन्ता, ३७. अभिलाषा, ३८. बसन्त, ३९. स्वप्न, ४०. जाग्रत, ४१. पर्वतीय देश, ४२. गिद्ध, ४३. कुदाल, ४४. बिजली के टुकड़े, ४५. कल्पना, ४६. आकार, ४७. काटना, खोदना, ४८. तेशा चलाने वाले, ४९. कल्पना, ५०. उत्थान-पतन, ५१. उन्माद को सहारा देने वाली, ५२. प्रताप और सौंदर्य, ५३. भूतकाल के परिश्रम की आभारी, ५४. वर्तमान, ५५. तारे, ५६. प्रभात का दर्शन, ५७. दिल का ख़ून, ५८. नज़र का स्वर्ग।

निगारखान:-ए-आलम[५६] का अक्स[६०] यह वादी[६१]
हजार हश्र बदामां[६२] खमोश[६३] आबादी[६४]
हुनरवरों[६५] को थी अर्जे-हुनर[६६] की आजादी
यहा नहीं है कोई नक्श,[६७] नक्शे-फ़रियादी[६८]

गुलामे[६९] - मर्जि-ए-हालात[७०] हुस्नकार[७१] नही
कमाले-फ़िक्र[७२] के शहकार[७३] इश्तिहार[७४] नही

सुकूने-रूह[७५] इस आगोशे-कोहसार[७६] मे है
यह जिन्दा ख्वाब[७७] किसी चश्मे-इन्तिजार[७८] मे है
जिमामे-शाम-ओ-सहर[७९] दिल के इख्तियार[८०] मे है
जमाना महव[८१] यहा जुस्तुजू-ए-यार[८२] मे है

निगाह[८३] ढूढ रही है निशा[८४] नही मिलता
गुबार[८५] सामने है कारवा[८६] नही मिलता

शाहंशाह हुमायूं का मक़बरा†

'जोश' मलीहाबादी

अय शहंशाहे-हुमायू की मुकद्दस[१] ख्वाबगाह
देखती है तुझ मे इक दुनिया-ए-गम[३] मेरी निगाह

५९ ससार की चित्रशाला, ६० प्रतिबिम्ब, ६१ घाटी ६२ दामन मे प्रलय लिये हुए, ६३ मौन ६४ बस्ती ६५ गणी, कलाकार, ६६ कला को पेश करना, ६७, चित्र निशान, ६८. फरियाद करनेवाला चित्र, ६९ दास, ७०. समय की इच्छा, ७१ कलाकार, ७२ चिन्तन की पराकाष्ठा, ७३ श्रेष्ठ नमूने, ७४. विज्ञापन, ७५ आत्मा की शान्ति, ७६ पर्वतो की गोद, ७७. स्वप्न, ७८ प्रतीक्षा करती हुई आखे, ७९. सुबह और शाम की लगाम, ८०. अधिकार, ८१ लीन, डूबा हुआ, ८२. प्रेमिका की खोज, ८३. दृष्टि, ८४. निशान, चिह्न ८५ धूल का भवर, ८६ काफला।

शाहंशाह हुमायूं का मक़बरा

† देहली के आखिरी ताजदार की गिरफ्तारी यही अमल मे आई थी।
१ पवित्र, २. शयनागार, ३. शोक-ससार।

आँसुओ से तेरे सक्फ-ओ-बाम[४] धोने के लिए
तुझ मे आया था कोई पोशीदा[५] होने के लिए

झिलमिलाई थी तिरी मेहराब मे कंदीले-शाह[६]
मौत के दामन मे ली थी जिन्दगानी[७] ने पनाह[८]

उस तरफ अगियार[९] की फौजे कतार अन्दर कतार[१०]
इस तरफ गुम्बद मे इक बीमार बूढा ताजदार[११]

बार[१२] इधर फर्क - जहाबानी[१३] पे ताजे-सरवरी[१४]
चुस्त[१५] उधर ठोकर लगाने के लिए 'सौदागरी'[१६]

आसमा[१७] था जलजले[१८] मे और तलातुम[१९] मे जमी[२०]
इसके आगे क्या हुआ ? मुझसे कहा जाना नही

इस तिरे गुम्बद के नीचे अय जहाने-इज्तिराब[२१]
ऐसी दो कब्रे है, दुनिया मे नही जिनका जवाब

इक मजारे-कजकुलाह[२२], इक कजकुलाही[२३] का मजार[२४]
शाह की तुर्बत[२५] के पहलू[२६] मे है शाही[२७] का मजार

उफ भरे आते है आँसू चश्मे-ग़मनाक[२८] मे
दफ्न है तातारियो[२९] का ताज[३०] तेरी खाक[३१] मे

४ छत और अट्टालिका, ५ छुपना, ६ शाही चिराग, ७ जीवन, ८ शरण, ९ दुश्मन, १० अनेक पंक्तियों मे, ११ सम्राट् बहादुरशाह जफर, १२ बोझ, १३ बादशाहत, १४ राजमुकुट, १५ तैयार, १६ अंग्रेज (जो व्यापारी बनकर आये थे), १७ आकाश, १८ कम्पन, १९ तूफान, २० धरती, २१ व्याकुलता का संसार, २२ टेढे मुकुट वाले की कब्र, २३ बादशाहत, २४ कब्र, २५ कब्र, २६ बगल मे, पास, २७ बादशाहत, २८. शोकातुर आखे, २९. तातार वंश, ३०. राजमुकुट, ३१ धूल ।

सिकन्दरा

'सीमाब' अकबराबादी

है यह किस शाह शहे जी-मरतबत[1] की ख़्वाबगाह[2]
ले रहा है जिसमें अंगड़ाई जलाले-बेपनाह[3]
ज़र्रे ज़र्रे[4] में है जिसके इर्तिआशे[5]-मिह्र-ओ-माह[6]
बारयाबी[7] के तसव्वुर[8] में लरज़ती[9] है निगाह[10]

सितवत[11]-ओ-अज़मत[12] की इबरतख़ेज़[13] इक तस्वीर[14] है
हामिले[15]-सद जल्वः-ए-माज़ी[16] यह इक तामीर[17] है

इसकी ख़िल्वत[18] में है ख़्वाबीदा[19] वो बज़्म आरा-ए-हिन्द[20]
गूँजते थे जिसकी अज़मत[21] में कभी अक्नाफ़-ए-हिन्द[22]
जिसके फ़ैज़े-मरहमत[23] से तंग था पहना-ए-हिन्द[24]
हिन्द आज उस फ़ैज़[25] से महरूम[26] है, अय वाय हिन्द[27]

गोशे गोशे[28] में है पैदा अह्दे-अनवर[29] की सदा[30]
आ रही है आज तक अल्लाहो अकबर[31] की सदा

१ प्रतिष्ठित, २ शयनागार ३ असीम प्रताप ४ कण-कण, ५ कम्पन ६ चाँद और सूरज ७ हुज़ूरी पाना, ८ कल्पना ९ काँपती है १० नज़र, दृष्टि, ११ दबदबा १२ महानता १३ शिक्षा देने वाले, १४ चित्र, १५ ग्राहक १६ भूतकाल के सैकड़ों जल्वे १७ निर्माण १८ एकांत, १९ सोया हुआ, २० हिन्द को महफ़िल सजाने वाला, २१ महानता २२ हिन्द की दिशाएँ, २३ दया की दानशीलता, २४ हिन्द का विस्तार, २५ दया, २६ वंचित, २७ हाय हिन्दुस्तान, २८ कोना-कोना २९ अति प्रकाशमान युग, ३० आवाज़, ३१ अल्लाह महान् है।

गो[३२] किया गर्दिश[३३] ने इस रौज़े[३४] को वीरां[३५] बार बार
सनअ्रतें[३६] इसकी मगर अ्रब भी हैं फ़ख़्रे-रोज़गार[३७]
रोज़[३८] करती है तवाफ़[३९] ईरान-ओ-काबुल की बहार[४०]
हर गुले-नौ[४१], अ्रहदे-अ्रकबर[४२] का है इक आईनादार[४३]

इसके पाईं बाग़[४४] से नुज़हत[४५] टपकती है हनोज़[४६]
नाम लेकर अंदलीब[४७] इसका चहकती है हनोज़

सबसे पहली आगरा की यह वही तामीर[४८] है
हर इमारत जिसकी इक उतरी हुई तस्वीर है
इसके मीनारों पे फ़ितरत[४९] माइले-तकबीर[५०] है
इसकी दीवारों पे इक हंगामः-ए-तनवीर[५१] है

इसका अ्रक्से-मरमरीं[५२] बढ़कर जो नूरअ्रफ़शां[५३] न हो
आफ़ताबे-सुब्ह[५४] ऐसी शान से ताबां[५५] न हो

सितवते-हिन्दोस्तां[५६], अय अ्रकबरे-आली वक़ार[५७]
मर्ज[५८]-ए-इंस[५९] - ओ-मलायक[६०] आज है तेरा मज़ार[६१]
फूल रहमत[६२] के हुआ करते हैं रोज इस पर निसार[६३]
तू है ज़िन्दा, अ्रज़मत[६४] बाक़ी है तेरी ज़िन्दादार[६५]

जब तिरे रौज़े[६६] की जानिब[६७] रुख़[६८] किया करते हैं हम
इक 'सलामे-इज्ज़'[६९] तुझ को कर लिया करते हैं हम

३२. यद्यपि, ३३. चक्र, ३४. क़ब्र, ३५. वीरान, ३६. कला, उद्योग, ३७. जिस पर ज़माना गर्व करे, ३८. प्रतिदिन, ३९. परिक्रमा, ४०. बसन्त, ४१. ताज़ा फूल, ४२. सम्राट् अकबर का युग, ४३. आईना दिखाने वाला, ४४. गृहोद्यान, ४५. ताज़गी, ४६. अभी तक, ४७. बुलबुल, ४८. निर्माण, ४९. प्रकृति, ५०. अल्लाह् अकबर कहने के लि प्रवृत्त, ५१. प्रकाश का कोलाहल, ५२. मरमर का प्रतिबिम्ब, ५३. प्रकाश फैलाने वाला, ५४. प्रभात का सूर्य, ५५. प्रकाशमान, ५६. भारत का प्रताप, ५७. प्रतिष्ठित अकबर, ५८. शरणस्थल, ५९. मानव, ६०. फ़रिश्ते, ६१. क़ब्र, ६२. दया, ६३. न्योछावर, ६४. महानता, ६५. बहुत जागने वाला, ६६. मज़ार, ६७. ओर, ६८. मुह, ६९. विनम्र सलाम।

एतमादुद्दौला

'सीमाब' अकबराबादी

देख इस तामीरे-रौशन[1] की दरख्शानी[2] भी देख
इस तजल्लीगाह[3] के आसारे-कैवानी[4] भी देख
अब भी मुत्लक[5] शाइरी[6] है इसके लाफानी[7] नुकूश[8]
इनमे सगीनी[9]-ओ-रगीनी[10] की अर्जानी[11] भी देख
इक फरिश्ता है खडा, ओढे हुए रगी रिदा[12]
खामुशी[13] भी देख इसकी और हैरानी[14] भी देख
वज्द[15] मे आता है दिल यह नक्शे - अजमत[16] देखकर
माद्दी तरकीब[17] का यह कस्रे-रुहानी[18] भी देख
तूने तस्वीरे बहुत बरबाद देखी है मगर
इक मुरक्का[19] यादगारे-महफिले-फानी[20] भी देख

शाम को जिस वक्त रुख्सत[21] हो रहा हो आफताब
और हो हर मौज[23] मे दरिया[24] की पैदा इंकिलाब[25]
दस्तबरदिल[26] बैठ जा इस ख्वाबगह[27] के सामने
गौर से फिर देख इसकी हर अदा-ए-कामयाब[28]
यह दर-ओ-दीवार[29] पर रगी सितारो का हुजूम[30]
यह जमाले - मरमरी[31], जैसे फरिश्तो का शबाब[32]

१ प्रकाशमान निर्माण, २ आभा, ३ शुभ दर्शन स्थल, ४ शाही चिह्न, ५ स्वच्छद, ६. कविता, ७ अनश्वर, ८ चित्र, ६ दृढता, १० सुन्दरता, ११. अधिकता, १२ चादर, १३ मौन, १४ व्याकुलता, १५ झूमना, १६ महानता के चित्र, १७. भौतिक विधि, १८. आध्यात्मिक भवन, १६ चित्र, २० नश्वर महफिल की यादगार, २१. बिदा, २२ सूर्य, २३. लहर, २४. नदी, २५ विद्रोह, क्राति, २६. दिल पर हाथ रखकर, २७ शयनागार, २८. सफल अदा, २६ दीवार और दरवाजे, ३० जमघट, ३१ सगेमरमर का सौदर्य ३२. यौवन।

जेरे-साहिल[३३] थरथराता है चरागाने-बहार[३४]
अक्स[३५] इसका जब कभी करता है अज्मे-पा तराब[३६]
इसके जल्वों[३७] से मिला करता है मौजो[३८] को करार[३९]
देखने इसको ठहर जाते है दरिया मे हुबाब[४०]

इत्र सा बरसा हुआ है इसकी लौहे - नूर[४१] पर
गुलकदा[४२] जैसे बनाया हो किसी ने तूर[४३] पर
इक सितारा सा है लरज़ा[४४] तश्ते-रंगारग[४५] मे
शम्अ सी रक्खी हुई हे दस्ते - नाजे - हूर[४६] पर
हो गया है मुरतसिम[४७] औराक़े-गुल[४८] पर रंगे-सुब्ह[४९]
मौजे-मय[५०] गोया है रक्सा[५१] सागरे-बिल्लूर[५२] पर
संगे-अबयज[५३] पर बने है इस अदा से सुर्ख[५४] फूल
लाल[५५] गोया[५६] जड दिये है तख़्त:-ए-काफ़ूर[५७] पर
इसके रंग-ओ-आब[५८] में मख्रूज[५९] है ताबानियां[६०]
चाँदनी छिटकी है या अफशुर्दा-ए-अगूर पर[६१]
फितरतन[६२] तर्जीह[६३] है तखईले-'मानी'[६४] पर इसे
नाज[६५] है अपनी हयाते - जाविदानी पर[६६] इसे

३३. साहिल के नीचे, ३४ चमन की दीपावली, ३५ प्रतिबिम्ब, ३६ शगुन के लिए किसी चीज को अलग करने का इरादा, ३७ दमक, ३८ लहरें, ३९ सन्तोष, ४० बुलबुला, ४१ प्रकाश का पट्ट, ४२. फूलों का घर, ४३. एक पहाड (जहां हजरत मूसा को खुदा का जल्वा दिखाई दिया था), ४४ कम्पायमान, ४५ रंगबिरंगी थाली ४६ अप्सरा के कोमल हाथ पर, ४७. लिखे हुए, ४८. फूल के पन्नो पर, ४९. प्रभात का रंग, ५० शराब की मौज, ५१ नृत्य करती हुई, ५२. स्फटिक का प्याला, ५३ सफेद पत्थर, ५४. लाल, ५५ रत्न, ५६ मानो, ५७. काफ़ूर का तख्ता, ५८ पानी, ५९. निकलती हुई, ६०. चमक, ६१ अंगूर के रस पर, ६२. क़ुदरती तौर पर ६३. श्रेष्ठता ६४ 'मानी' नामक चित्रकार की कल्पना, ६५. गर्व ६६ अनश्वर जीवन ।

ताजगंज का रौज़ा

'नज़ीर' अकबराबादी

आगे जो ताजगंज यहाँ आशकार[1] है
मशहूर इसका नाम व शहरो-दयार[2] है
खूबी[3] में सब तरह का इसे एतबार[4] है
रौज़ा जो इस मकान में दरिया[5] किनार है

नक्शे में अपने यह भी अजब खुशनिगार[6] है

रू-ए-ज़मीं[7] पे यूँ तो मकाँ[8] खूब[9] हैं जहाँ
पर इस मकाँ की खूबियाँ[10] क्या-क्या करूं बयाँ[11]
संगे-सफ़ेद[12] में जो बना है क़मर निशाँ[13]
ऐसा चमक रहा है तजल्ली[14] से यह मकाँ

जिससे बिल्लूर[15] की भी चमक शर्मसार[16] है

गुम्बद है इसका जोरे-बलन्दी[17] से बहरामन्द[18]
गिर्द[19] इसके गुमजियाँ[20] भी चमकती हुई हैं चन्द
और वो कलस जो है सरे-गुम्बद[21] पे सर बलन्द[22]
ऐसा हिलाल[23] उसमें सुनहरा है दिलपसन्द

हर माह जिसके खम[24] पे महे-नौ[25] निसार[26] है

१ प्रकट, २ शहरों और मुल्कों में, ३. गुण, विशेषता, ४. विश्वास ५ नदी, ६ सुन्दर चित्र, ७ धरती, ८ घर, ९ बहुतेरे, सुन्दर, १० गुण, ११. बयान, १२. सफेद पत्थर, १३ चांद की तरह, १४ प्रकाश, १५. स्फटिक, १६. लज्जित १७. ऊंचाई का बल, १८ लाभ उठानेवाला, १९. आसपास २०. छोटी बुर्जियां, २१ गुम्बद की चोटी, २२ ऊंचा, २३. अर्धचन्द्र, २४ मोड़, गोलाई, २५ नवचन्द्र, २६ न्योछावर, कुर्बान।

जो सहन[२७] बाग का है वह ऐसा है दिलकुशा[२८]
आती है जिसमें गुलशने-फ़िर्दौस[२६] की हवा
हर सू नसीम[३०] चलती है और हर तरफ़ हवा
हिलती हैं डालियां सभी हर गुल[३१] है झूमता

क्या क्या रविश रविश[३२] पे हुजूमे-बहार[३३] है

सर्व[३४]-सही खड़े हैं क़रीने[३५] मे नस्तरन[३६]
कू कू करे है कुमरियां[३७] होकर शकर शिकन[३८]
राबेल[३६] सेवती से भरे हैं चमन चमन
गुलनार[४०] लाल:-ओ-गुल-ओ-नसरीनो-नस्तरन[४१]

फ़व्वारे छुट रहे है रवा[४२] जू-ए-आर[४३] है

वो ताजदार[४४] शाहजहा साहबे-सरीर[४५]
बनवाया है उन्होने लगा सीम-ओ-जर[४६] कसीर[४७]
जो देखता है उसके यह होता है दिलपिजीर[४८]
तारीफ़[४६] इस मकां[५०] की मै क्या-क्या करूं 'नजीर'

इसकी सिफन[५१] तो मुश्तहरे - रोजगार[५२] है

२७ आगन, २८ आनन्ददायक, २६ स्वर्ग का बाग, ३०. प्रात-समीर, ३१ फूल, ३२. पुश्ते-पुश्ते पर, ३३. बसन्त का जमघट, ३४. सरो, ३५. ढग से, ३६. सेवती, सफेद गुलाब, ३७. फाख्ता की एक किस्म, ३८ शकर खानेवाली, ३६. मोगरा, बेला, ४०. सुर्ख़ फुलवारी, ४१. आहे पुष्प और सेवती, ४२ प्रवाहित, ४३. झरना, ४४. सम्राट, ४५ सिंहासन, ४६. सोना-चांदी, ४७ बहुत अधिक, ४८ दिलपसद, मोहक, ४६. प्रसमा, ५०. घर, मकान, ५१. गुण, ५२. जग-प्रसिद्ध ।

ताजमहल

'सीमाब' अकबराबादी

आ तुझे मैं अपने फ़िर्दौस-वतन[1] में ले चलूं
जिसमें हूरें[2] बाग़बां[3] हैं उस चमन में ले चलूं

इक मुकम्मल[4] आईनाख़ाना[5] दिखाऊं मैं तुझे
इक मुजस्सम[6] रंग-ओ-बू[7] की अंजुमन[8] में ले चलूं

जल्वागाहे[9]-लाल:-ओ-गुल[10] की मैं दावत[11] दूं तुझे
सुब्ह-जारे-नस्तरीनो-नस्तरन[12] में ले चलूं

ज़िन्दगी की जिसके गोशों[13] से उबलती है शराब
जो नई अब भी है उस बज़्मे-कुहन[14] में ले चलूं

ले यह नक़्शे-साद[15]-ए-ख़ाकस्तरे[16] - बरबाद[17] देख
आंख बनकर दुर्रेनुमाजे[18]-ख़राबआबाद[19] देख

पुरसुकूं[20] हुस्न-ओ-मुहब्बत[21] का यह इक तूफ़ान[22] देख
जिसके हुस्न-ओ-इश्क़[23] दो उनवां[24] है वो अरमान[25] देख

१. देश की जन्नत, २. अप्सराए, ३ माली, ४ पूर्ण, ५ शीशे का घर, ६. साकार, ७. रंग और सुगंध, ८. महफ़िल, गोष्ठी, ९ दर्शन स्थल १०. लाला और गुलाब के फूल ११. निमंत्रण, १२. फूलों से भरी सुबह, १३. कोना, १४. पुरानी महफ़िल, १५. सादा तस्वीर, १६ राख से बनी हुई, १७ जो मिट चुकी है, १८. ताज का मोती, १९. मिटी हुई सल्तनत २०. शांत, २१. सौंदर्य और प्रेम, २२. बाढ़, २३. सौंदर्य और प्रेम, २४. शीर्षक, २५. अभिलाषा।

यह मुसव्विर[२६] का तखैयुल[२७] और ख्वाबे-मरमरी[२८]
रूह[२९] में होता है जिसको देखकर हैजान[३०] देख

देख इसके फ़र्श[३१] पर है अर्श[३२] कितने जल्वागर[३३]
देख इक अफ़सानः-ए-मुमताज़[३४] का उन्वान[३५] देख

सब्ज़ा दर सब्ज़ा[३६] गुल अन्दर गुल[३७] बहार अन्दर बहार[३८]
कर नज़र माहौल[३९] पर इसके, फिर इसकी शान[४०] देख

तकमिला[४१] सनअत[४२] का है इसका हर इक नक़्श-ओ-निगार[४३]
आ गया है खिंच के इक नुक़्ते[४४] में हिन्दुस्तान देख

क्या मता-ए-दोजहां[४५] से यह गिरा-क़ीमत[४६] नही ?
पूछता हूँ कि यह क्या है अगर जन्नत[४७] नही ?

काश[४८] दुनिया और इक शाहेजहा पैदा करे
काश फिर हो खाक से जिस्मे-मुहब्बत[४९] जल्वगर[५०]

दीदः-ए-सैयाह[५१] मे गर हो बसीरत[५२] की चमक[५३]
अब भी सूरज देख ले, जर्रों[५४] के सीने चीरकर

यह बहारे-ज़ाहिरी[५५] यह इक नशाते[५६]-आशकार[५७]
जो बहर उन्वान[५८] है हैरतफिजा[५९]-ए-हर नजर[६०]

२६. चित्रकार, २७. कल्पना, २८ संगेमरमर का स्वप्न, २९. आत्मा, ३० हलचल, ३१. धरती, ३२. आकाश, ३३. दर्शन देते हुए, ३४. मुम्ताज़ की कहानी, ३५. शीर्षक, ३६. हरियाली ही हरियाली ३७. फूल ही फूल, ३८. बहार ही बहार, ३९. वातावरण, ४०. वैभव, ४१. पूर्णता, ४२. कला, ४३. निशान, बेलबूटे, चित्र, ४४. बिंदु, ४५. दोनों जहान की धन-दौलत, ४६. महंगी, ४७. स्वर्ग, ४८. क्या ही अच्छा होता, ४९. प्रेम का शरीर, ५०. प्रकट, ५१. पर्यटक की आंख, ५२. दानाई, ५३ आभा, ५४. कणो, ५५. ऊपरी बहार, ५६. हर्ष, आनन्द, ५७. प्रकट, ५८. शीर्षक, ५९. आश्चर्य बढ़ाने वाला, ६०. दृष्टि ।

इसका बातिन[61] है कुछ इससे भी ज़ियादा रूहकश[62]
किसने देखे है अभी वो जल्व हा-ए-मुस्ततिर[63]

जब मुहब्बत गौर से इम पर करेगी नज्मिरा[64]
रूह[65] के पर्दे नजर आयेगे यह बाम और दर[66]

इश्क[67] उस महफिल[68] मे है सद नाला,[69] सद काविश[70] हनोज[71]
हुस्न[72] हे इन चिलमनो[73] मे महवे-आराइश[74] हनोज

ताजमहल

'उन्वान' चिश्ती

यह दिलआवेज[1] फजा[2] और यह दिलकश[3] मजर[4]
जैसे आईन-ए-फितरत[5] मे सवरता[6] हो कोई
यह हमी[7] नहर, यह सब्जा,[8] यह चमन[9] का मजर
रग जैसे किसी तस्वीर[10] मे भरता हो कोई

बुततराशी[11] हो कि नक्काशी[12]-ओ-आईनागरी[13]
या वो रगो से बनाई हुई तस्वीरे हो
साज[14] की मधभरी[15] आवाज हो या प्यार की लै
शोख[16] गजले हो कि सजीदा[17] तहरीरे[18] हो

६१ अन्तकरण, ६२ आकर्षक, ६३ गुप्त, पाशीदा, ६४ आलोचना ६५ आत्मा, ६६. छत और दरवाजे, ६७ प्रेम, ६८ बज्म गोष्ठी ६९ सैकडा आर्तनाद ७० सैकडो चिताए, ७१ अभी तक, ७२ सौदर्य, ७३ पर्दे, ७४ शृगार मे लीन ।

ताजमहल

१ आकर्षक, २ वातावरण, माहौल ३ मनमोहक ४ दृश्य, ५ प्रकृति का दर्पण, ६ सजता, शृगार करता, ७ सुन्दर, ८ हरियाली, ९ उपवन, १० चित्र, ११ मूर्तिकला, १२ चित्रकारी, १३ शीशागरी, १४ वाद्य, १५ मधुर, १६ चचल, १७ गभीर, १८ लेख ।

जिन्दगी झूम के जब साज़ उठा लेती है
कैफ़[१६] ही कैफ बरसता है गज़ल की सूरत[२०]
खूने-दिल[२१] इसमें तास्सुर[२२] को बढ़ा देता है
बोलने लगता है फ़न[२३] ताजमहल की सूरत[२४]
दस्ते-जमना[२५] मे मुहब्बत के कंवल की सूरत

ख्वाबे-मुमताज़[२६] की ताबीरे-मुजस्सम[२७] की क़सम
हिन्द-ओ-ईरान की तहज़ीब[२८] का संगम है यह
कितना बेदार[२९] नजर आता है एहसासे-जमाल[३०]
इश्क़[३१] का राज[३२] है यह हुस्न[३३] का महरम[३४] है यह

अय मिरी मूनिम-ओ-दमसाज[३५] इसे शौक से देख
इक शहंशाह के ख्वाबो[३६] का जजीरा[३७] है यह
फन[३८] की मेराज[३९] है यह, प्यार की मेराज के साथ
हुस्ने-दिल,[४०] हुस्ने-नजर[४१], हुस्ने-तमन्ना[४२] है यह
इश्क[४३] का बारगहे-हुस्न[४४] मे सजदा[४५] है यह

(माख्ज)

१९ नशा, २०. रूप में, २१ दिल का खून, २२ असर लेना, २३. कला, २४. रूप मे, २५. जमुना का हाथ, २६ मुम्ताज़ का स्वप्न, २७ साकार स्वप्न-फल, २८. संस्कृति, २९ जाग्रत, ३०. सौंदर्य की अनुभूति, ३१. प्रेम, ३२. रहस्य. ३३. सौदर्य, ३४. राज़दार, परिचित, ३५. साथी, ३६. स्वप्न, ३७ द्वीप, ३८. कला, ३९. पराकाष्ठा, ४० दिल की सुन्दरता, ४१. नज़र की सुन्दरता, ४२. अभिलाषा की सुन्दरता, ४३. प्रेम, ४४. सौदर्य के दरबार में, ४५. माथा टेकना ।

जामा मस्जिद देहली

जगन्नाथ 'आजाद'

अय जज्बे[1]-तहारत[2] की अमी[3] मस्जिदे जामा[4]
रौशन दिल[5]-ओ-ताबिन्दा जबीं[6] मस्जिदे जामा
अय जल्व-ए-अनवारे-यकीं[7] मस्जिदे जामा
अय खातिमे-देहली[8] की नगीं[9] मस्जिदे जामा

है आज भी तस्कीने-नजर[10] तेरा नजारा[11]
तू आज भी है रूह[12] की दुनिया का सहारा

दामन में संभाले हुए सदियों[13] की अमानत[14]
पाकीजगि-ए-कल्ब-ओ-नजर[15] रूह की इफ्फत[16]
शाही में फकीरी की दरख्शिन्दा[17] रिवायत[18]
एहसास[19] का इक जज्ब:-ए-सरशारे-हकीकत[20]

इस दौर में तू मम्ब:-ए-अनवार[21] है अब भी
तारीकि-ए-आलम[22] में जियाबार[23] है अब भी

१ भावना, २ पवित्रता. ३ अमानतदार ४ जामा मस्जिद, ५ प्रकाशमान दिल, ६ सतेज ललाट, ७ विश्वास के प्रकाश का दर्शन, ८ दिल्ली की अंगूठी, ९ रत्न, १० दृष्टि को तृप्त करने वाली, ११ दृश्य, १२ प्राण, आत्मा, १३ सैकड़ों वर्षों, १४ धरोहर, १५. नजर और दिल की पवित्रता, १६ इज्जत, १७ प्रकाशमान, १८ परम्परा, १९ अनुभूति, २० सच्चाई से परिपूर्ण भावना, २१ प्रकाश का स्रोत, २२ संसार का अंधकार, २३ प्रकाश बरसाने वाली।

इक नक्शे-दिलआवेज[२४] है तू खूने-जिगर[२५] का
जल्वा[२६] तिरा नज्जारा[२७] है अनवारे - सहर[२८] का
तू फन[२९] की है तस्वीर नमूना है हुनर[३०] का
शहपारः-ए-जावेद[३१] है तू जौके - नजर[३२] का

रक्सा[३३] तिरी दुनिया मे है आयाते-तजल्ली[३४]
अल्लाह रे तेरे ये मकामाते-तजल्ली[३५]

तू फक्र[३६] की तस्वीर है वो जेरे-समावात[३७]
है जिससे अया[३८] सीन-ए-आदम[३९] के कमालात[४०]
दुनिया को दिखा आज कोई हुस्ने-करामात[४१]
तू चश्म.-ए-हैवा[४२] है जहा[४३] आलमे-जुल्मात[४४]

तू आज है इक सोजे-मुहब्बत[४५] का नमना
अय आदमे-खाकी[४६] की करामत[४७] का नमूना

अय माबदे-अनवारे-यकी[४८] ! हासिले-इदराक[४९]
अय मजिले-अनवारे-कुहन[५०] जलवागहे-पाक[५१]
हस्ती-ए-दवामी[५२] से इबारत[५३] है तिरी खाक[५४]
क्या गर्दिशे-अय्याम[५५] है क्या गर्दिशे-अफलाक[५६]

दुनिया है तेरी नूरफिजा[५७] रोजे-अबद[५८] तक
. है साज[५९] तिरा नग्मा[६०] मरा रोजे-अबद तक

२४. मनमोहक नक्श, २५ जिगर का खून, २६ शुभ दर्शन, २७ दृश्य, २८ प्रभात का प्रकाश, २९ कला, ३० गुण, ३१ अमर कृति, ३२ दृष्टि की अभिरुचि, ३३ नृत्य करती हुई, ३४ प्रकाश की आयतें, ३५ शुभदर्शन स्थल, ३६ फकीरी, ३७ बराबरी के अन्तर्गत, ३८ प्रकट, ३९. मानव का सीना, ४०. चमत्कार, कर्तब, ४१ चमत्कार का सौंदर्य, ४२ अमृत-कुंड, ४३ समार, ४४ अंधकार की दुनिया, ४५ प्रेम की जलन, ४६. मिट्टी का पुतला, ४७ चमत्कार, ४८ विश्वास के प्रकाश का आराधनाघर, ४९ ज्ञान का प्रतिफल, ५० पुराने प्रकाश की मंजिल, ५१. पवित्र दर्शन स्थल ५२ अमर अस्तित्व, ५३. समान, ५४. धूल, ५५. समय का चक्र, ५६ गगन का चक्र, ५७ प्रकाश बढाने वाली, ५८. अनतकाल, ५९. वाद्य, ६०. गीत ।

जामा मस्जिद आगरा

'सीमाब' अकबराबादी

देख यह असलाफ़े[1]-मुस्लिम[2] का इबादतख़ाना[3] है
फ़र्क़े-शाही[4] जिस पे झुकता था, यह वो काशाना[5] है

रिफ़अते-इस्लाम[6] थी रिफ़अत से इसकी आशकार[7]
आह, वो रिफ़अत जो इक भूला हुआ अफ़साना[8] है

वक़्ते-मग़रिब[9] सैकड़ों फ़ानूस जलते थे जहां
अब वहां इक शमअ, तस्कीने - दिले - परवाना[10] है

आह यह मीनार-ओ-गुम्बद[11] की नुमूद[12] इस दौर में
गर्दिशे-अय्याम[13] की तसबीह[14] का इक दाना है

मिल्लते-मरहूम[15] की तस्वीरे-रूहानी[16] है यह
अज़मते-इस्लाम[17] का इक नक़्शे-लाफ़ानी[18] है यह

१. पूर्वज, २. मुसलमान, ३. आराधनाघर, ४. बादशाहों के सर, ५. चौखट, ६. इस्लाम की ऊंचाई, ७. परिचित, ८. कहानी, ९. शाम के समय, १०. परवाने के दिल की शांति, ११. मीनार और गुम्बद, १२. बढ़वार, १३. समय का चक्र, १४. माला, १५. स्वर्गीय राष्ट्र, १६. अध्यात्म का चित्र, १७. इस्लाम की महानता, १८. अनश्वर चित्र, निशान।

जोधाबाई का मन्दिर

'सीमाब' अकबराबादी

बुतशिकन[1] भी हिम्मते-इस्लाम[2] है, बुतगर[3] भी है
क़िलअ-ए-शाही[4] मे मस्जिद है जहा, मन्दर भी है

फिक्र[5] की यकसूई[6] है बहरे-इताअत[7] लाजमी[8]
अक़्ल मे गुजाइश[9] तअय्युने[10]-बाम-ओ-दर[11] भी है

मावरा[12] कैदे-तअय्यु[13] से है नैरंगे[14] - जमाल[15]
मजहर[16] इसका आग भी है, खाक भी, पत्थर भी है

अय अबूदीयत,[17] नजर[18] मे वुसअते[19] दरकार है
बुतकदा[20] कहते है जिसको वो खुदा का घर भी है

बिरहमन और शैख है पाबन्दे-औहाम-ओ-रसूम[21]
इक परस्तिश[22] का तरीक़ा[23] इसमे बालातर[24] भी है

होती है आगोशे-बातिल[25] मे हकीकत[26] की नुमूद
जो खलीलुल्लाह है, परवर्दः-ए-आजर[28] भी

क्यों मसावात[29] अब नही पैराय:-ए-इस्लाम[30] मे
कुफ्र[31] बरसों पल चुका है साय:-ए-इस्लाम[32] मे

१. मूर्ति भजक, २. इस्लाम का साहस, ३. मूर्तिकार, ४. शाही किला, ५ चिन्तन, ६. एकाग्रता, ७. आज्ञापालन के लिए, ८. अनिवार्य, ९ स्थान, १०. निश्चय, ११. छत और दरवाजे, १२. परे, १३. जीवन-सीमा, १४ चित्र, १५. सौंदर्य, १६ प्रकट करने वाला, १७. खुदा की बन्दगी, १८. दृष्टि, १९. विस्तार, फैलाव, २० मन्दिर, २१. रीति-रिवाजो के पाबद, २२. आराधना, २३. ढग, २४. ऊचा, २५. झूठ की गोद, २६. सत्य, २७ बढ़वार, २८. मूर्ति-भंजक का पालनेहार, २९. बराबरी, ३०. इस्लाम का ढग, ३१. विधर्म ३२. इस्लाम की छत्रछाया ।

भाकड़ा नंगल

जगन्नाथ 'आजाद'

आजाद निगाहों में जो है खित्त:-ए-नंगल[1]
कल तक था यह खित्ता कहीं सहरा[2] कहीं जंगल
हिम्मत[3] के तुफैल[4] आज इसी जंगल में है मंगल

सहरा कि जो थे कुश्त-ए-अन्दोहे-निहानी[5]
मचली हुई अब उनमें है खेतों की जवानी
य इल्म[6] के हाथों में है दरिया की रवानी[7]

कब का था यह अरमान[8] कि इसां[9] ने निकाला
इस तरह चटानों को फजाओं[10] में उछाला
लरजे[11] में है बुनियादे-कुहिस्ताने-हिमाला[12]

मट्टी की चटानें थीं कि पत्थर की चटानें
जब इन पे तराज[13] हुई हिम्मत की सनानें[14]
कुछ और ही नक्शा था यह मानें कि न मानें

पहले तो किया सीनः-ए-दरिया[15] को दोपारा[16]
दोनों को फिर इस तरह सुरंगों से गुजारा
हर दीद-ए-मुश्ताक[17] था कुर्बाने-नजारा[18]

१ नंगल की धरती, २. कानन, ३. साहस, ४. फलस्वरूप, ५ छुपा हुआ दुख, ६. विद्या, ज्ञान, ७ नदी का प्रवाह, ८. आकांक्षा, ९ मानव, १०. वातावरण, ११ कम्पन, १२ हिमालय का पहाड़ी क्षेत्र, १३. तन गई, १४ भाले, १५ नदी का सीना, १६. दो टुकड़े, १७ इच्छुक आंखें, १८ दृश्य पर न्योछावर।

दरिया का जिगर[१९] चीर गई अक़्ल बशर[२०] की
तफ़्सील[२१] कहे कौन अब इस राहगुजर[२२] की
जुल्मत[२३] पे मुसल्लत[२४] हुई तनवीर[२५] सहर[२६] की

सब्जा तिरे[२७] माहौल[२८] का है मख़मल-ओ-बानात[२९]
हीरो से फ़ुजूतर[३०] तिरे पहलू के है जर्रात[३१]
क़तरे[३२] तिरे दामन के दरख़्शिंदा[३३] फ़िलिज्जात[३४]

तामीर[३५] तिरी काब:-ए-अरबाबे-नजर[३६] है
तस्वीर तिरी जलव-ए-अनवारे-सहर[३७] है
तू शब[३८] के अंधेरे मे तजल्ली-ए-कमर[३९] है

क़ायम[४०] है तिरी जज्ब-ए-इख्लास[४१] पे बुनियाद
सरगर्मे-अमल[४२] तुझ पे है इस दौर के फरहाद[४३]
तेरे लिए उट्ठी है दुआ-ए-दिले-'आजाद'[४४]

पैदा हो तिरी ख़ाक[४५] मे ख़ासीयते-इकसीर[४६]
किरदार[४७] तिरा मिहरे-मुनव्वर[४८] की हो तनवीर[४९]
दुनिया मे हो इकमाय-ए-रहमत[५०] तिरी तामीर[५१]

इदराक[५२] के अनवार[५३] मे ताबां[५४] है यही ख़ाक[५५]
तनवीर[५६] अजाइम[५७] से फरोजा[५८] है यही ख़ाक
अय दर्दे-वतन[५९] हामिले-अरमां[६०] है यही ख़ाक

१९. नदी का कलेजा, २०. मानव, २१ विवरण, २२ मार्ग, २३ अंधकार, २४. छा गयी, २५. आभा, चमक, २६ प्रभात, २७ हरियाली, २८. वातावरण, २९. एक नर्म कपड़ा, ३० बढ़े हुए, ३१ कण, ३२. बूंदें, ३३ चमकते हुए, ३४ ऐटम, ३५ निर्माण, ३६ नजर वालों का काबा, ३७ प्रभात के प्रकाश का दर्शन, ३८ रात, ३९ चन्द्रमा का प्रकाश, ४०. स्थिर, ४१ निष्ठा की भावना, ४२ काम मे रत, ४३ एक प्रसिद्ध प्रेमी, जिसने अपनी प्रेमिका के लिए पहाड खोदकर दूध की नहर निकाली थी, ४४ आजाद के दिल की दुआ, ४५. धूल, ४६. रामबाण की विशेपता, ४७ चरित्र, ४८ प्रकाशमान चाद, ४९. आभा, चमक, ५०. दया की सम्पत्ति, ५१ निर्माण, ५२. ज्ञान, ५३ प्रकाश, ५४. चमकदार, ५५. धूल, ५६. चमक, ५७. हौसला, साहस, ५८ प्रकाशमान, ५९. देश का दुख, ६०. अभिलाषा का फल ।

दी इसको हयात[६१] अपनी अजीजाने-वतन[६२] ने
जां इस पे फ़िदा[६३] की है मुहिब्बाने-वतन[६४] ने
सींचा है इसे खू से शहीदाने - वतन ने[६५]

६१. जीवन, ६२. देशवासी, ६३. न्योछावर, ६४. देशभक्त. ६५ देश पर शहीद होने वाले।

आठवां अध्याय

हमारे फ़ुनूने-लतीफ़ा

(ललित कलाएं)

सरस्वती

जगन्नाथ 'खुश्तर'

अजब[1] है नाजनीनों[2]-नाजुक अन्दाम[3]
नजाकत[4] में गुल-तर[5] और दिल आराम[6]

रुखे - पुरनूर[7] मिस्ले - वर्के - ताबा[8]
गुले - सुम्बुल,[9] निसारे - जुल्फे - पेचा[10]

खजिल[11] नूरे-जहा[12] नूरे-जबी में[13]
बनी कौसेकजह[14] अजब[15] की चीं[16] में

(माखूज अज रामायण मुनजिम खुश्तर)
जगन्नाथ खुश्तर द्वारा अनूदित
रामायण से लिया गया

१. अदभुत, २ सुन्दरी ३ कोमल शरीरवाली, ४ कोमलता ५ ताजा फूल, ६ दिल का चैन, ७. प्रकाशमान चेहरा, ८ चमकदार बिजली की तरह, ९. सुम्बुल का फूल, १०. घुघराली जुल्फो पर न्योछावर, ११ शर्मिन्दा, १२ ससार का प्रकाश, १३. ललाट का प्रकाश, १४. इन्द्रधनुष, १५ भौ, १६. बल, सिलवट ।

मुजरा

मीर हसन

लगे बजने क़ानून[१]-ओ-बीन[२]-ओ-रबाब[३]
बहा हर तरफ़ जू-ए-इशरत[४] का आब[५]

लगी थाप तबलों की मृदग की
सदा[६] ऊँची होने लगी चग[७] की

लगा मोम तारों पे मोचंग के
मिला सुर तंबूरों के मृदग के

सितारों के पर्दे बनाकर दुरुस्त[८]
बजाने लगे सब वो चालाक-ओ-मुस्त[९]

गई बायें की आसमां[१०] तक गमक[११]
उठा गुम्बदे-चर्ख़[१२] सारा धमक

खुशी की ज़िबस[१३] हर तरफ़ थी बिसात[१४]
लगे नाचने इस पे अहले-नशात[१५]

किनारी के जोड़[१६] चमकते हुए
वह पाओं के घुंघरू झनकते हुए

वो बाले चमकते हुए कान में
फड़कना वो नयनों का हर आन[१७] में

१. एक बाजा, २. वीणा, ३. सितार, ४. आनन्द की नहर, ५. पानी, ६. आवाज, ७. सितार के आकार का एक बाजा, ८. ठीक, ९. चालाक और आलसी, १०. गगन, ११. गूंज, १२. आकाश का गुम्बद, १३. बहुत, १४. बैठक, १५. आनन्दमग्न, १६. कपड़े, १७. पल ।

वो घटना वो बढना अदाओं[18] के साथ
दिखाना वो रग रख के छाती पे हाथ

कभी दिल को पाव से मल डालना
अदा से कभी देखना भालना

दिखाना कभी अपनी छब मुस्कुरा
कभी अपनी अगिया को लेना छुपा

किसी प चमकते हुए नौ रतन
किसी के वो मुखडे पे नथ की फबन

चमकना गुलों[19] का सफा[20] के सबब[21]
वो गर्दन क डोरे, कयामत[22], गजब[23]

कभी मुह के तइ फेर लेना उधर
कभी चोरी चोरी मे करना नजर

दुपट्टे को करना कभी मुह की ओट
कि पर्दे मे हो जाय दिल लोट पोट

कोई फन[24] मे सगीत के शोला-रू[25]
बरम जोग लछमी लिये पुरमिलू[26]

कोई ढीट गत ही मे पाव तले
खडी आशिको[27] के दिलो को मले

(माखूज अज मसनवी 'सहरुलबयान')

१८ हाव-भाव, १९ फूल, २० पवित्रता, २१. कारण, २२. प्रलय, २३ आफत, २४. कला, २५ दहकता हुआ मुख २६ एक प्रकार का नृत्य, २७. प्रेमियो।

राग रंग

मीर हसन

करू राग और नाच का क्या बयां
क़दीमी[1] किसी वक़्त का सा समां[2]

वो एमन की तानें इधर और उधर
मिले सुर तंबूरों के बायक दिगर[3]

और इस सफ़[4] से इक छोकरी का निकल
जताना[5] हुनर[6] अपना पहलेपहल

उलटना वो ठोकर को दे देके चाल
वो बूटा[7] सा क़द[8] और कहरवे[9] की चाल

कभी पुरमिलू[10] की दिखाती अदा[11]
कि जूं टूटकर होवे बिजली जुदा[12]

कभी खटमरी[13] नाचना जौक़[14] से
कि त्योरा[15] के आशिक[16] गिरे शौक़[17] से

(माखूज अज़ 'सहरुलबयान')

१. प्राचीन, २. वातावरण, ३. एक-दूसरे से, ४. पंक्ति, ५. दिखाना, ६. गुण, ७. छोटा-पा, ८. लम्बाई, ९. तबले का एक स्टाइल, १०. एक नृत्य, ११. हाव-भाव, १२. अलग, १३. एक नृत्य, १४. शौक़ से, १५. चकराकर, १६. प्रेमी, १७. प्रेम से ।

रक़्स

'जोश' मलीहाबादी

हा उठा ले रूहे-मूसीकी[1] रबाबे[2]-जर्रफिशा[3]
रक्स[4] की तशरीह[5] पर माइल[6] है शाइर की जबा[7]

रक्स क्या है ? ख़ाक[8] के दिल मे खरोशे[9]-कायनात[10]
पैकरे-फानी[11] मे गर्मे-नाज[12], लाफानी[13] हयात[14]

जल्व-ए-महदूद[15] के दिल मे वईमा-ए-शवाब[16]
हुस्ने-लामहदूद[17] बन जाने का शीरी[18] पेच-ओ-ताब[19]

चादनी म जू-ए-शीरी[20] जैसे थम थमकर[21] बहे
अखडियो की शेरगोई[22], माअदो[23] के ज़मजमे[24]

महफिले मूरत[25] मे लैला-ए-मआनी[26] का वहाव
चश्मके-बेबाक[27] मे सय्याल[28] नग्मो का बहाव

खून मे लहरो प लहरे लहन[29]-बेआवाज़ की
लगजिशो पर लगजिशे[30] मश्के-खिरामे-नाज[31] की

खैर समझा दू, जरा लाना तो मीना-ए-शराब[32]
रक्स[33] किस मौके[34] पे चेहरे से उलटता है निकाब[35]

१ सगीत की आत्मा, २ सितार, वीणा, ३ जिससे सोना झडे, ४ नृत्य, ५ व्याख्या, ६ उद्यत, तैयार, ७ वाणी, ८ धूल, ९. कोलाहल, १० दुनिया, ११ नश्वर शरीर, १२ गर्व से उठी हुई, १३ अविनाशी, १४ जीवन, १५ सीमित दर्शन, १६ यौवन के इशारे पर, १७ असीम सौदर्य, १८ मधुर १९ आवेग, उलझाव, २०. मीठी नहर, २१ रुक-रुक कर, २२ शेर कहना, २३ बाहु, कलाई, २४ गाना, राग, २५ रूप की महफिल, २६ अर्थ की प्रेमिका, २७ नजर के बेबाक इशारे, २८ तरल, द्रव, २९ ध्वनि, ३० डगमगाहट, ३१ गर्व की मदगति का अभ्यास, ३२ शराब की सुराही, ३३. नृत्य, ३४. अवसर, ३५ मुखपट।

जब सबा[३६] की सनसनाहट और साग़र[३७] की खनक
क़ामते-मौज़ूं[३८] में बन जाती है, हल्की सी लचक

रक़्स है दरअस्ल[३९] बर्नाई[४०] का लह्ने-बेख़रोश[४१]
क़ल्बे-नाज़ुक[४२] में तमन्ना-ए-हमआग़ोशी[४३] का जोश[४४]

जुम्बिशे-मिज़गां[४५] की रंगीं,[४६] मस्त, शीरीं[४७] दास्तां[४८]
अशवः-ए-तुर्काना[४९] की सहरआफ़रीं[५०] अंगड़ाइयां

ख़ून की गर्दिश[५१] में रह रहकर बरंगे[५२]-ज़ीर-ओ-बम[५३]
हौसलों[५४] की बेकरारी,[५५] वलवलों[५६] का पेच-ओ-ख़म[५७]

जू-ए-तूफ़ांख़ेज़[५८] के साचे में ढलने की उमंग
भिच के आग़ोशे-तमन्ना[५९] में मचलने की उमंग

ख़ाल[६०]-ओ-ख़द[६१]की नग़मारेज़ी,[६२] अबरूओं[६३] की गुफ़्तगू[६४]
नर्गिसे-मख़मूर[६५] में तुग़ियाने-शर्ह[६६] की आरज़ू[६७]

जज़्ब-ए-बेदार[६८] का पाला हुआ ख़्वाबे-गिरां[६९]
जुम्बिशे-मिज़गां[७०] की गोयाई[७१], इशारो की ज़बां[७२]

एक ऐसा साज़,[७३] माबैने[७४]-यक़ीन-ओ-इश्तिबाह[७५]
पा सके जिसको न कान और सुन सके जिसको निगाह[७६]

'जोश' ! बस ख़ामोश[७७] हो पैमाना[७८] भरने दे मुझे
झूमकर बरबत[७९] उठा और रक़्स[८०] करने दे मुझे

३६. समीर, हवा, ३७. प्याला, जाम, ३८. मुनासिब कद, ३९. वास्तव में, ४०. जवानी, ४१. बिना कोलाहल की ध्वनि, ४२. कोमल दिल, ४३. आलिंगन की अभिलाषा, ४४. आवेग, ४५. पलकों का हिलना, ४६. रगीन, ४७. मधुर, ४८. कहानी, ४९. तीखी अदा, ५०. जादू जगाने वाली, ५१. रक्त का चक्कर, ५२. की तरह, ५३. स्वर का उतार-चढ़ाव, ५४. साहस, हिम्मत, ५५. व्याकुलता, ५६. जोशोख़रोश, ५७. मोड़, घुमाव, ५८. तूफ़ानी नदी, ५९. अभिलाषा का आलिंगन. ६०. तिल, ६१. कपोल, गाल, ६२. गीत छेड़ना, ६३. भौ, ६४. बातचीत, ६५. मस्त आंखें, ६६. तूफ़ान की व्याख्या, ६७. आकाक्षा, ६८. जाग्रत भावना, ६९. बेहोशी की नींद, ७०. पलकों का इशारा, ७१. वाणी, ७२. इशारो की जबान, ७३. बाजा, वाद्य, ७४. बीच में, ७५. विश्वास और सन्देह, ७६. दृष्टि, ७७. चुप, मौन, ७८. प्याला, जाम, ७९. वाद्य का नाम, ८०. नृत्य।

रक़्क़ासा[1]

मिकन्दर अली 'वज्द'

बदन[2] जिन्दगी[3] का छलकता पियाला
चमन की बहारो ने फूलो मे पाला
जुनू[4] को नजाकत[5] के कालिब[6] मे ढाला
उमंगो की लहरो पे बाहर निकाला
निगाहों की जन्नत,[7] दिलो का उजाला
जमाले-अजन्ता[8] जलाले-हिमाला[9]
उठी मौजे-मै[10] की तरह अंजुमन[11] मे
तडपने लगी बिजलिया जान-ओ-तन[12] मे

कदे - दिलरुबा[13], हुस्न - बेबाक[14], चचल
हिलाली भवे[15] रू-ए-रौशन[16] पे बेकल[17]
मदीरा भरे नैन मस्ती[18] मे बोझल[19]
लताफत[20] मुजस्सम[21], जवानी मुकम्मल[22]
नजर[23] शेर रफ्तार[24] नग्मा मुसलसल[25]
छनकते है घुघरू, झनकती है पायल
अजब रंग मे रूठ कर मन रही है
सरे - बज्म[26] कौसे - कुजह[27] बन रही है

१. नर्तकी, २. शरीर, ३. जीवन, ४ उन्माद, ५. कोमलता, ६. गोलम्बर, ७. स्वर्ग, ८. अजन्ता का सौंदर्य, ९. हिमालय का तेज, १० शराब की लहर, ११. महफिल, १२. प्राण और शरीर, १३. आकर्षक कद, १४ निडर सौदर्य १५. चन्द्राकार भवे, १६ प्रकाशमान चेहरा, १७. व्याकुल, १८. नशा, १९. झुकी हुई, २०. कोमलता, २१ साकार, २२. पूर्ण, २३ दृष्टि, २४. गति, २५. निरतर गीत, २६ महफिल में, २७ इन्द्रधनुष ।

कभी जोशे-मस्ती[२८] में ताऊसे-रक़्सां[२९]
कभी चश्मे-र्नागिस[३०] के मानिन्द[३१] हैरां[३२]
कभी सूरते-गुल[३३] सरासर[३४] परेशां[३५]
कभी दुर्रे-ग़लतां,[३६] कभी मौजे - तूफ़ां[३७]
कभी मस्त[३८] बादल, कभी बर्क़े-जौलां[३९]
कभी सर्वे-सरकश,[४०] कभी तेग़े-उरियां[४१]
हर इक जल्वा[४२] कुछ इस क़दर[४३] मुख़्तसर[४४] है
तम्राक़्क़ुब[४५] से आजिज़[४६] उक़ाबे-नज़र[४७] है

अंधेरे में शबताब[४८] मशअल[४९] जली है
मुख़ालिफ़[५०] हवाओं की ज़द[५१] पर पली है
अभी खिलने वाली महकती कली है
जवानी के सांचे में बिजली ढली है
शफ़क़[५२] रंग चेहरे पे आफ़शां[५३] मली है
दमे-साज़[५४] पर जगमगाती चली है
यह भटकी हुई लहर है चाँदनी की
तजल्ली[५५] में है दिलकशी[५६] राज़[५७] की सी

ख़याल - आफ़रीं[५८] शाहकारे-जवानी[५९]
सरापा ख़ुमारे[६०] - मै - ए - अर्ग़वानी[६१]
अदाओं से जज़्बात[६२] की तर्जुमानी[६३]
निगाहों में गंजीनः[६४]हा-ए-मआनी[६५]

२८. नशे का आवेग, २९. नाचता हुआ मोर, ३०. नरगिसी आंख, ३१. तरह, प्रकार, ३२. आश्चर्यचकित, ३३. फूल की तरह, ३४. बिलकुल, ३५. व्याकुल, ३६. चमकता हुआ मोती, ३७. तूफ़ान की मौज, ३८. मदोन्मत्त, ३९. तेज बिजली, ४०. बाग़ी सरो, ४१. नगी तलवार, ४२. दर्शन, ४३. इतना, ४४. संक्षिप्त, ४५. पीछा, ४६. विवश, ४७. गिद्ध की दृष्टि, ४८. चन्द्रमा, ४९. मशाल, ५०. विरुद्ध, ५१. लक्ष्य, निशाना, ५२. लाल, ५३. चमकी, ५४. साज की लय पर, ५५. प्रकाश, ५६. आकर्षण, ५७ रहस्य, ५८. कल्पना जगाने वाली, ५९. जवानी का शाहकार, ६०. टूटता हुआ नशा, ६१. लाल रंग की शराब, ६२. भावनाएँ, ६३. प्रतिनिधित्व, ६४. ख़ज़ाना, कोष, ६५. अर्थ।

हर अन्दाज[66] 'पर दमबखुद[67] नुक्तादानी[68]
खमोशी[69] तकल्लुम[70], तबस्सुम[71] कहानी
छिडा राग, धारे[72] मिले हुस्न-ओ-फन[73] के
चली नाव सगम पे गंग-ओ-जमन[74] के

कमर ताल के साथ बल खा रही है
नजर[75] शौक[76] की आग भडका रही है
अदा - ए - तबस्सुम[77] गजब ढा रही है
सरे-तूरे-दिल[78] बर्क[79] लहरा रही है
हवा नग्म - ए - सरमदी[80] गा रही है
यहा अक्ल[81] को नीन्द सी आ रही है
सरापा हकीकत[82] बनी है फसाना[83]
निशाने-कदम[84] चूमता है जमाना[85]

उदय शंकर

'अख्तर' असारी

किसी नग्मे[1] की लय है तेरा जिस्म[2]
या सितारो की कापती तस्वीर

किसी सन्नाअ[3] की हसी[4] सनअत[5] ?
किसी बुतगर[6] के ख्वाब[7] की ताबीर[8] ?

६६ अदा, ६७. स्तब्ध ६८ गुणग्राहकता, ६९ मौन, ७० बातचीत, ७१. मुस्कराहट, ७२ धाराए, ७३ सौदर्य और कला, ७४ गगा और यमुना, ७५. दृष्टि, ७६. प्रेम, ७७ मुस्कराहट, ७८ दिल के तूर पर, ७९. बिजली, ८० शाश्वत गीत, ८१. बुद्धि, ८२ यथार्थ, ८३ कहानी, ८४ कदमो के निशान, पदचिह्न, ८५. ससार ।

उदय शंकर

१. गीत, २. शरीर, ३ शिल्पकार, ४ सुदर, ५. कलाकृति, ६ मूर्तिकार, ७. स्वप्न, ८. स्वप्न-फल ।

था मगर इक वुजूदे-रूमानी[९]
जिसकी हो शेरियात[१०] से तामीर[११]

नर्म[१२] आज़ा[१३] की जांगुदाज़[१४] लचक
दिल पे रह रह के मारती है तीर

हाथ की सहर-आफ़रीं[१५] जुम्बिश[१६]
खींचती है हवा पे इक तस्वीर[१७]

भरते आते है आंख में आंसू
हाय रक़्स[१८] और इस क़दर[१९] दिलगीर[२०]

हर अदा-ए-जमील[२१] है गोया
दर्द की शरह[२२], सोज़[२३] की तफ़सीर[२४]

फिर भी रक़्क़ास[२५] ! जी मलूल[२६] नही
है तेरे फ़न[२७] से रूह[२८] लज़्ज़तगीर[२९]

९. रूमानी अस्तित्व, १०. कविता, ११. निर्माण, १२. कोमल, १३. अंग-प्रत्यंग, १४. कष्टदायक, १५. जादू जगाने वाली, १६. हिलना-डुलना, १७. चित्र, १८. नृत्य, १९. इतना, २०. उदास, २१. सुन्दर हाव-भाव, २२. व्याख्या, २३. जलन, २४. टीका २५. नर्तक, २६. दुखी, उदास, २७. कला, २८. आत्मा, २९. आनन्दप्रद ।

सरगम

'मुख्तार' सिद्दीक़ी

लब[1] पे आ जाते संगीत सहारे साक़ी[2]
वलवले[3] दिल के अगर गम[4] से संवरना सीखें
वो जबां[5]—जो है शफ़क[6], फूल सितारे साक़ी
हम भी पा लेते हैं गर जिन्दगी करना[7] सीखें

बात बन जाती है तरकीब[8] सुरों की साक़ी
हर तास्सुर[9] मे नये रूप में ढल जाती है
फिर कोई बात नही रहती है बाक़ी साक़ी
और हर बात पे तरकीब[10] बदल जाती है

ग़म जज्बों[11] की उठानें यही है साक़ी
लफ़्ज[12]-ओ-मआनी[13] के तिलिस्मात[14] से जो हैं आगे
उन खयालों[15] की उडानें भी यही है साक़ी
यूं, कही अनकही हर बात से जो है आगे

नाजुक[16] एहसास[17] की रजूरिया[18] सारी साक़ी
और तन्नाज[19] तमन्ना[20] के तक़ाज़ों[21] की चुभन
नये अरमानों[22] की वो लाग[23] हटीली साक़ी
और वो सांझ सवेरे की दुआओं[24] का चलन

१. होंठ, २. शराब पिलानेवाला, ३. जोश, ४. शोक, ५. वाणी, ६ लाली, ७. जीना, ८. क्रम, ९. प्रभावित होना, १०. क्रम, ११. भावना, १२. शब्द, १३. अर्थ, १४. जादू, इन्द्रजाल १५. कल्पना, १६. कोमल, १७. भावना, १८. उदासिया, १९. उल्लासमय २०. आकांक्षा, २१. मांग, २२. तमन्ना, २३. लगन, २४. प्रार्थना ।

रोज़-ओ-शब[25] रोते हुए दिल की पुकारें साक़ी
रुत[26] के गहवारों[27] में पलते हुए लाखों फ़ितने[28]
और ये सजती संवरती हुई नारें साक़ी
जिनकी सरमस्ति[29]-ओ-रानाई[30] के पहलू इतने

ये सुरें रखती हैं ऐसे कई आलम[31] साक़ी
वो भी हैं जो किसी तखलीक़[32] की हद[33] मे भी नहीं
है वो पहनाई[34] लचकती हुई सरगम साक़ी
वुसअतें[35] जिसकी अज़ल[36] क्या है अबद[37] में भी नहीं

ख़याल दरबारी

'मुख़्तार' सिद्दीक़ी

उनके गाने में है प्रकाश ज़रा देखो तो
एक इक तान से हैं नूर[1] के सोते[2] जारी[3]
तीन सदियों[4] के शब-ओ-रोज़[5] जिलौ[6] में लेकर
सीकरी[7] लाई है गंभीर, सजिल दरबारी[8]

२५. दिन-रात, २६. मौसम, २७. पालना, २८. उपद्रव, २६. उन्मत्तता, ३० शृंगार, ३१. संसार, ३२. सृष्टि, ३३. सीमा, ३४. गहराई, ३५. फैलाव, ३६. अनादिकाल, ३७. अनंतकाल।

ख़याल दरबारी

१. प्रकाश, २ स्रोत, ३. प्रवाहित, ४. शताब्दियों, ५. रात-दिन, ६. दामन, ७. फतेहपुर सीकरी, ८. एक राग।

ये दर-ओ-बाम[९] हैं मावंत मुगल का परतौ[१०]
है सुतूनों[११] की नफासत[१२] मे अया[१३] संगीनी[१४]
ऊंची मेहराबों[१५] के घेरे मे कुशादा[१६] ऐवा[१७]
जिसने बेबाक[१८] इरादो मे बलन्दी[१९] छीनी

इसी ऐवान[२०] मे है अकबरे-आज़म[२१] का जुलूस
सोने चाँदी के सितारे मे छते है आकास
अनगिनत झाड, दमकती[२२] हुई लाखो शमए[२३]
खिलअतें[२४] जिनकी है बिल्लूर[२५] के शफ्फाफ[२६] लिबास[२७]

अहले-दरबार[२८]! खबरदार निगाहे नीची!
इन सदाओं[२९] मे वो हैबत[३०] है कि दिल थर्राये
हाथ बाधे है हुजरी[३१] मे अमीराने-कबीर[३२]
आई आवाज कि तशरीफ शहंशाह लाये
हजरते-गेती पनाह[३३] अकबरे - आजम आये!
कोई नजरे न उठाने पाये!
अकबरे-आजम आये!

स्थाई

तुर्कमा[३४] हजरते-अकबर आयो!
उप बली,[३५] तप बली,[३६] दुनिया मे खुदा का साया
जिनका दम भरता है इसा,[३७] मुल्क,[३८] चौपाया[३९]
उनके हम आप न बलि बलि जइये?
मरने-जीने का अगर इनसे बन्धनवा[४०] बाधो

९ दरवाजे और छते, १० अक्स, प्रतिबिम्ब, ११ खम्बा १२ स्वच्छता, १३ प्रकट, १४ दृढता, १५ दरवाजो की गोलाई १६ लम्बे-चौडे, १७ प्रासाद, महल, १८ निडर, १९ ऊँचाई, २० महल, २१ महान अकबर, २२ चमकती, २३ चराग, २४ लिबास, २५ स्फटिक, २६ स्वच्छ, २७ वस्त्र, २८ दरबारी, २९ आवाजो ३० डर, भय, ३१. सेवा, ३२ धनी-मानी, श्रीमान, ३३. ससार को शरण देने वाला, ३४. तुर्की वश के, ३५ गीत का बोल, ३६ गीत का बोल, ३७ मानव, ३८. देश, ३९ पशु, ४०. बधन।

पार बेड़ा हो कि है पीर[४१] हमारा सांचो ![४२]
तुर्कमां हजरते-अकबर आयो—हजरते-अकबर आयो !!

अन्तरा :

आले-तैमूर[४३] के सूरज की तजल्ली[४४] फैली
दुख दलिद्दर[४५] के घटाटोप[४६] अन्धेरे भागे
वो उजाला कि जुग जुग के नसीबे[४७] जागे
एरी जुग जुग के नसीबे जागे
दो जहां[४८] मतल:-ए-अनवार[४९] हुए है देखो
तुर्कमां हजरते-अकबर आयो—हजरते-अकबर आयो !

फैलाव

रौशनी[५०] तेज हुई
रौशनी तेज हुई शम्ओं[५१] की
रौशनी तेज़ हुई शम्ओं की, फ़ानूसों[५२] की
रौशनी तेज हुई शम्ओं की, फ़ानूसों की और शब[५३] की दुल्हन
रौशनी तेज़ हुई शम्ओं की फ़ानूसों की और शब की दुल्हन
शरमाई

रौशनी तेज़ हुई, शम्ओं की, फ़ानूसों की और शब
की दुल्हन शरमाई, लजाकर सिमटी
रौशनी तेज़ हुई, शम्ओं की, फ़ानूसों की और शब
की दुल्हन शरमाई, लजाकर सिमटी, सिमट कर बैठी
इन्ही शम्ओं ने दिया चांद का झूमर उसको
दो जहां मतल:-ए-अनवार हुए, देखो तो
तुर्कमां हजरते-अकबर आयो—हजरते-अकबर आयो !!

४१. मुर्शिद, ४२. सच्चा, ४३. तैमूर की औलाद, ४४. प्रकाश, ४५. दरिद्रता, ४६. गहरे, ४७. भाग्य, ४८. दोनों जहान, ४९. प्रकाशमान, ५०. प्रकाश, ५१. चराग़, ५२. शीशे का बना हुआ चराग़दान, ५३. रात ।

जोत[54] गानो की बुझी, बीते जमाने[55] भागे
खेच ली तीन सौ बरसो ने तनावे[56] अपनी
कस्रे-वीरा[57] मे कही बूम[58] का नौहा[59] गूजा
सौप दी राग ने इस नौहे को ख्वाबे[60] अपनी

बेकरा[61] रात से मेहराब[62] की रिफअत[63] दूनी[64]
और मे साय-ए-मेहराब[65] म हूँ उफ्तादा[66]
खुश्क[67] खन्दक[68] से उधर कोहे-गिरा[69] दीवारे
अब कहा जाऊ कि रहबर[70] न निशाने-जादा[71]
किस खराबे[72] मे मुझे छोड गई दरबारी ?

ख़याल एमन कल्यान

'मुख्तार' सिद्दीकी

विलबित :

दौडते जाते हे हर सिम्त[1] धुदलको[2] के नकीब[3]
सुरमई[4] धूल मे हर शै[5] है न पिन्हा[6] न अया[7]
बेकरा[8] साये घुले जाते है सन्नाटे मे
कोई तारा भी अभी निकला नही—चॉद कहा !

५४. ज्योति, ५५ समय, ५६ तम्बू की रस्सी, ५७ वीरान महल ५८ उल्लू, ५९. शोकालाप, ६० नींदे ६१ असीम, ६२ दरवाजे की गोलाई, ६३ ऊचाई, ६४. दोगुनी, ६५ मेहराब का साया, ६६ पडा, ६७ सूखी, ६८ खाई, ६९ भारी पहाड, ७०. मार्ग-दर्शक, ७१ रास्ते का निशान, ७२ खण्डहर।

ख़याल एमन कल्यान

१ दिशा, २. हल्का अधेरा, ३. चोबदार, ४ सुरमे के रग की, ५. वस्तु, ६ गुप्त, ७ प्रकट, ८. असीम।

उफ़ यह बेपायां[9] सियाही[10] की तहों की तरतीब[11]
किश्ते-मग़रिब[12] के खिले फूल न यूं कुम्हलायें
कोई तारा भी नहीं, चांद नहीं, वो भी नहीं
इन अंधेरों से कहूं, अब तो सजन घर आयें
ग़म की मारी को न यूं तरसायें
अब तो सजन घर आयें

काकुलें[13] खोल के बालों को झटकती हुई शाम
मुझसे कहती है कि मैं हूं तो कहीं रात न दिन
शब[14] की वुसअत[15] मेरे सीने के ख़ला[16] से लिपटी
एरी आली[17] न पड़े चैन मुझे तो पी बिन
बेकली[18] डसती है पल पल, छिन छिन
एरी आली पी बिन!

हल्क़ा दर हल्क़ा[19] सियाही,[20] वो हुई पाब रकाब[21]
करवटें लेता है हर सिम्त[22] अंधेरों का सराब[23]
ऐरी आली यह अंधेरों का सराब
चार आंखें कभी इनसे न करेगा महताब[24]
उफ़ ख़लाओं[25] को यह रक़्से-बेताब[26]
कैसी बेताबी[27] इन्हें डसती है पल पल छिन छिन
ऐरी आली न पड़े चैन उन्हें भी पी बिन
एरी आली पी बिन

द्रुत :

छट गई तारों की अफ़शां[28] तो पिया घर आये
मोरे पिया घर आये

९. असीम, १०. कालक, अंधेरा, ११. क्रम, १२. पश्चिम की खेती, १३. लटें, बाल, १४. रात, १५. विस्तार, फैलाव, १६. शून्य, १७. सखी, १८. व्याकुलता, बेचैनी, १९. घेरे के अंदर घेरा, २०. अंधकार, २१. पांव रकाब में, चलने को तैयार, २२. चारो ओर, २३. मरीचिका २४. चन्द्रमा, २५. शून्य, २६. बेचैन नृत्य, २७. बेचैनी, २८. चमक।

अब किसी वादे[२९] की उलझन न हमे तडपाये
मोरे पिया घर आये
आ गये मोरे पिहरवा, मैं गयी बलिहारी
नेक नजर पर वारी
अब किसी वादे की उलझन न हमे तडपाये
मोरे पी आये, मै औलादे-अली[३०], आले-नबी[३१] पर वारी
आले-नबी पर वारी

केदारा का एक रूप

'मुख्तार' सिद्दीकी

रात भीगी, ओट मे कुहसार[१] की निकला है चाँद
चाक दामानो के सीने भी रुना[२] होगे अभी
खिलती रुत[४] के नर्म[५] झोको को थपकता है सुकूत[६]
मिटते तारे जुगनुओ के अर्मगा[७] होगे अभी
सोजे-गम[८] मे बस चली है, सीमबर[९] रानाइया[१०]
दिल के अरमा[११] दास्ता दर दास्ता[१२] होगे अभी

२९ वचन, ३० हजरत अली की सतान, ३१ नबी की सतान।

केदारा का एक रूप

नोट —केदारा चाँदनी का राग है जिसमे बुनियादी जज्बा शिकायत है, इसकी पेशकश मे हुस्ने-तरकीब (शृगार रस) का खास खयाल रखा जाता है।

१ पर्वत, २ जिनके दामन फट चुके, ३ विच्छेद, ४ मौसम, ५ कोमल, ६ निस्तब्धता, ७ उपहार, भेट, ८ शोक की जलन, ९ चादनी जैसा शरीर, १० सुन्दरता, ११ अभिलाषा, १२ कहानियो के अन्दर।

आलाप :

और सीमा-ए-जहां[13] का अब तो दिल है चाँदनी
दमबखुद[14] पेड़ों को, साकित[15] झील को, बेगाना[16] सब्ज़े[17] को है
मदहोशी[18] का सामां[19] चाँदनी
रात की रानी की मतवाली, घनी खुशबू[20] को मखमूरी[21] का उनवां[22]
चाँदनी
शहर-ओ-सहरा[23] में भटक कर, मुज़महिल[24] है चाँदनी
और—नीदों की गिरांबारी[25] मे आसूदा[26] हुई
खस्ता[27] सामा चाँदनी
इस खमोशी[28] के फ़ुसू,[29] फैले सुकू[30] की अब है गोया
जाने-जाना[31] चाँदनी

स्थाई ‡ :

आज सब मुब्हम[32] उमंगें, गुग[33] शिकवो[34] मे निहाल[35]
चाँद ने छीना है, अरमानो[36] के मुह मे यह सवाल
हम तो महरूमी[37] की राहें तकते तकते मर चले
मुन्तज़िर[38] है कौन ? जानां[39] तुम जो बन-ठनकर चले !
जानां तुम जो बन-ठनकर चले !!

उजड़े उजड़े दिन, अंधेरी कोर[40] रातें भी वबाल[41]
चाँदनी के खेत में भी हाल तुझ बिन है यही
कोई रुत[42] हो, हम हैं और यह खुद कलामी[43] का अज़ाब[44]

१३. संसार, १४. स्तब्ध, १५. स्थिर, १६. अपरिचित, १७. हरियाली, १८. मदोन्मत्तता, १९. सामान, २०. मुग्ध, २१. नशा, २२. शीर्षक, २३. जगल, २४. शिथिल, २५. बोझल, २६. तृप्त, संतुष्ट, २७. घायल, थकित, २८. मौन, २९. जादू, ३०. शांति, ३१. प्राण, ३२. अस्पष्ट, ३३. गूंगे, ३४. शिकायतें, ३५. मालामाल, ३६. आकांक्षा, ३७. दुर्भाग्य, ३८. प्रतीक्षा में, ३९. प्यारी, ४०. ज्योतिहीन, ४१. बोझ, कठिन, ४२. मौसम, ४३. स्वयं से बात करना, ४४. यातना ।

‡ इस सारे बन्द में, सा, मा, की सुरों यानी इन आवाजों का ख़ास इलतिज़ाम किया गया है ।

जैसे इन हालों[45] जियें जाने[46] का ज़ामिन[47] है यही
हम जो हैं मजबूर,[48] यह भी खूबि-ए-तकदीर[49] है
तुम गुरेज़ां[50] हो, गुरेज़ो-नाज़[51] का सिन[52] है यही !!

फैलाव :

और अब पेड़ों की ऊंची कोपलें भी हो रही हैं ज़र-निगार[53]
चाँद औजे-आसमां[54] पर आ चुका, हर शै[55] हुई आईनादार[56]
साये सिमटे, शाखों[57] और पत्तों में छनती आ रही है चांदनी
हुस्न[58] की जोहरावशी[59] का रूप, बेमेहरी[60] का रंगे-नाज[61] बनती
जा रही है चाँदनी
हम इसी आलम[62] में महरूमी[63] की राहें तकते तकते मर चले
मुन्तज़िर[64] है कौन ? जानां[65] तुम जो बन-ठनकर चले
जानां तुम जो बन-ठनकर चले

रसूलन बाई की नज़्र[1]

हसन नईम

रागिनी इस्मत-दरीदा,[2] राग ख़ंजर-दर-गुलू[3]
जितने सुर थे ताल का दामन पकड़ कर सो गये
कौन इस आलम[4] में सुनता नग़्म-ए-ख़ूने-रवां[5]
शाम के कदमों पे कटकर सुब्ह का बाज़ू[6] गिरा

४५. दशा, ४६ जीवित रहना, ४७. प्रतिभू, ४८ असमर्थ, विवश, ४९. भाग्य, ५०. विरक्त, ५१ विरक्ति और गर्व, ५२ उम्र, ५३. स्वर्णजटित, ५४. गगन की ऊंचाई, ५५ वस्तु, ५६ जिससे आईना दिखाने की सेवा ली जाए, ५७ डालियां, ५८. सौंदर्य, ५९. शुक्रग्रह जैसी, ६० बेवफाई, ६१ सौंदर्य का रंग, ६२. दशा. ६३. दुर्भाग्य, ६४. प्रतीक्षा में, ६५. प्यारी ।

रसूलन बाई की नज़्र

१. भेंट, २. जिसका सतीत्व लूट लिया गया हो, ३. जिसके गले पर छुरी रखी हो, ४. दशा, दुनिया, ५. बहते हुए रक्त का गीत, ६. बाहु, बांह ।

दोपहर का जिस्म[७] झुलसा[८]
वक़्त[९] सहन - ओ - बाम[१०] पर नंगा फिरा
कूच:-ओ-बाज़ार[११] से बू-ए-रिफ़ाक़त[१२] लौट कर आयी नहीं
वो विलंबित हो कि ध्रुपद, सबसे मक़तल[१३] की फ़ुगा[१४]
बेनवा[१५] की रूह[१६] आवारा हवा से पूछने को चल पड़ी
किस समय का राग गाऊँ ?
किन धुनों में ग़म[१७] कहूँ ?
किस कवि का पांव पकड़ूं ?
किस कथा में जा छुपूं ?
कौन आहो[१८] की लपक[१९] से, हड्डियों के सोज[२०] से
देखना है अब जलाता है दिये
क़ातिलों[२१] को हाथ पकड़े साज़[२२] बैठे है अभी

लता मंगेशकर

'अख़्तर' अंसारी

जैसे इक हुजरा[१] कि हो तारीक[२] और ठिठरा हुआ
नाचते रहते हों दिन मे जहां रातों के साये
खुल पड़े उसमें दरीचा[३] जानिबे[४]-मश्रिक़[५] कोई
और सूरज बनके रंग-ओ-नूर[६] का तूफ़ा[७] दर आये[८]

७. शरीर, ८. जल गया, ९. समय, १०. आगन और छत, ११. गलिया और बाज़ार, १२. मैत्री की गंध, १३. बधस्थल, १४. आर्तनाद, १५. बेआवाज़, १६. आत्मा, १७. शोक, १८. आर्तनाद, १९. आंच, २०. जलन, २१. बधिक, २२. वाद्य।

लता मंगेशकर

१. कोठरी, २. अंधेरा, ३. खिड़की, ४. ओर, ५. पूर्व, ६. रग और प्रकाश, ७. तूफ़ान, ८. घुस आये ।

जैसे सावन की कोई बेहद अन्धेरी रात हो
इक भयानक तीरगी[9] हो हर तरफ डेरा जमाये[10]
और इस पुरहौल[11] आलम[12] मे फराजे-चर्ख[13] पर
इक शरारा[14] यानी इक नन्हा सा तारा जगमगाये

जैसे एहसासे-तअल्लुम[15] की फरावानी[16] के वक्त
जिह्न[17] मे हो यक ब यक[18] रंगी[19] खयालो[20] का गुजर[21]
और दिल मे बारिशे-अनवार[22] सी होने लगे
दौड जाये इक उजाला सा दर-ओ-दीवार[23] पर

यह हमारे रोज-ओ-शब[24], यह खरखशे[25] यह जद्दोजिहद[26]
जब यह आलम[27] हो तो क्या कोई हसे क्या रो सके
फन[28] की चाहत[29] के लिए दरकार[30] है गम[31] से फराग[32]
सच तो यह है जी[33] ठिकाने हो तो सब कुछ हो सके

फिर भी तेरी जोहरा आहगी[34] नशाते-गोश[35] है
दरखुरे-तौसीफ[36] है गाना तेरा हर हाल मे
जिसकी धुन पर वज्द[37] करना है मजाके-सामिआ[38]
लायके-तहसी[39] है वो नग्मा[40] तिरा हर हाल मे

एक जादू है वो नग्मा जो कनार अन्दर कनार[41]
इम्बिसात[42]-ओ-कैफ[43]-ओ-बहजत[44] के दिये रौशन करे[45]
एक अफसू[46] है वो लय जो कारवा दर कारवा
लज्जते-फन[47] की मुहब्बत[48] के दिये रौशन करे

९ अधकार, १० छाई हुई, ११ भयानक, १२ दशा, १३ गगन की ऊचाई, १४ चिंगारी, १५ पीडा का अनुभव, १६ अधिकता, १७ बुद्धि, मस्तिष्क, १८ सहसा, १९ सुन्दर, २० विचारो, २१ प्रवेश, २२ प्रकाश (ब० व०), २३ दरवाजे और दीवार, २४. दिन-रात, २५ विघ्न, परेशानी, २६ सघर्ष, २७ हालत, दशा, २८ कला, २९. प्रेम, ३० आवश्यक, ३१ शोक, ३२ अवकाश, ३३. दिल, ३४ वानस जैसी आवाज, ३५. कानो का सुख, ३६ प्रशसा के योग्य. ३७ झूमना, ३८ सुननेवालो का जौक, ३९. सराहना योग्य, ४० गीत, ४१ पक्तियो के अन्दर, ४२ आनन्द, ४३ मस्ती, ४४ खुशी, आनन्द, ४५. जलाय, ४६. जादू, ४७ कला का आनन्द, ४८ प्रेम ।

इक बशारत[४९] है वो लहने-दिलफ़रेब[५०]-ओ-दिलरुबा[५१]
लाखों ज़िह्नों[५२] पर जो फेंके सहरे-मूसिक़ी[५३] का जाल
लाखों ज़िह्नों को जो बख़्शे[५४] एक ख़ुशआयन्द[५५] ख़याल[५६]
एक पाक़ीज़ा[५७] तहैयुर[५८], एक मासूम[५९] इंफ़आल[६०]

जिससे लाखों ख़ुफ़्ता[६१] रूहें[६२] चौंक कर बेदार[६३] हों
लाखों ख़्वाबीदा[६४] दिमाग अंगड़ाइयां लेने लगें
लाखों सीनों में सुलग उट्ठें तमन्नाओं[६५] की आंच
लाखों दिल इस तरह जल उट्ठें कि लौ देने लगें

जिसके दम से लाखों इंसानी घरों में रात दिन
बेशुमार[६६] इंसान, ग़म[६७] के बोझ को हल्का करें
अनगिनत आबादियां[६८] इंसान की सुब्ह-ओ-मसा[६९]
जिसकी दिलआवेज़[७०] गूंजों से पड़ी छलका करें

सहर[७१] है वो साज़[७२] जिसके पर्दे में यह ज़िन्दगी
इक सुहानी दास्तां[७३] कहती हुई मालूम हो
वो नवा[७४] एजाज़[७५] है जिसके असर में कायनात[७६]
गीत के तूफ़ान में बहती हुई मालूम हो

४९. ख़ुशख़बरी, ५० आकर्षक आवाज़, ५१. मोहक, ५२. मस्तिष्क, ५३ संगीत का जादू, ५४. प्रदान करे, ५५. नेक, अच्छा, ५६ कल्पना, ५७ पवित्र, ५८ विस्मय, आश्चर्य, ५९. निष्पाप, ६०. लज्जा, शर्म, ६१. सुप्त, ६२. आत्माएं, ६३. जाग्रत, ६४. नींद में डूबे हुए, ६५. आकांक्षा, ६६. अनगिनत, ६७ शोक, ६८ बस्तियां, ६९ सुबह-शाम, ७० मनमोहक, ७१. जादू, ७२. वाद्य, ७३. कहानी, ७४. आवाज़, ७५ चमत्कार, ७६. ब्रह्माण्ड ।

लता मंगेशकर के नाम

'मजरूह' सुल्तानपुरी

मुझसे चलता है सरे-बज़्म[1] सुख़न[2] का जादू
चाँद लफ़्ज़ों[3] के निकलते हैं मिरे सीने से
मैं दिखाता हूँ ख़यालात[4] के चेहरे सबको
सूरतें[5] आती हैं बाहर मिरे आईने से

हां मगर आज मिरे तर्ज़े-बयां[6] का यह हाल
अजनबी[7] कोई किसी बज़्मे-सुख़न[8] में जैसे
वो ख़यालों के सनम[9] और वो अल्फ़ाज़[10] के चांद
बेवतन हो गये अपने ही वतन[11] में जैसे

फिर भी क्या कम है जहां रंग न ख़ुशबू[12] है कोई
तेरे होंठों से महक[13] जाते हैं अफ़कार[14] मिरे
मेरे लफ़्ज़ों[15] को जो छू लेती है आवाज़ तिरी
सरहदें[16] तोड़ के उड़ जाते हैं अशआर[17] मिरे

तुझको मालूम नहीं या तुझे मालूम भी हो
वो सियहबख़्त[18] जिन्हें ग़म[19] ने सताया बरसों
एक लम्हे[20] को जो सुन लेते हैं नग़्मा[21] तेरा
फिर उन्हें रहती है जीने की तमन्ना[22] बरसों

१. महफिल में, २. शाइरी, ३ शब्द, ४ विचार, ५ रूप, ६ बयान का ढग, ७. अपरिचित. ८. कवियो की गोष्ठी, ९. मूर्तिया, बुत, १०. शब्द, ११. देश, १२. सुगध, १३. सुगंध, १४. विचार, खयाल, १५. शब्दो, १६ सीमाए, १७ शेर (ब० व०), १८. अभागे, १९. शोक, दुख,. २०. क्षण, २१. गीत, २२. अभिलाषा ।

जिस घडी डूब के आहग[23] मे तू गाती है
आयते[24] पढती है साजो[25] की सदा तेरे लिए
दम ब दम[26] खैर मनाते है तिरी चग-ओ-रबाब[27]
सीना-ए-नै[28] से निकलती है दुआ तेरे लिए

नग्म-ओ-साज[29] के जेवर से रहे तेरा सिगार
हो तिरी माग मे तेरे ही सुरो की अफशा[30]
तेरी तानो से तिरी आख मे काजल की लकीर
हाथ मे तेरे ही गीतो की हिना[31] हो रखशा[32]

इकतारे का जादू

'जोश' मलीहाबादी

बर्क[1] पर्वर[2] जिन्दगी वाबस्ता-ए-सद पेच-ओ-ताब[3]
अब्र[4] की बारीक चादर, दोपहर का आफताब[5]

हाशिये[6] पर शहर के, इक बाग, वीरान-ओ-तबाह[7]
बाग के दामन मे इक उजडी हुई सी शाहराह[8]

गामजन[9] इस रास्ते पर एक पीरे-नातवा[10]
हात मे 'इकतारा' लब[11] पर रागिनी की सिसकिया

२३ आलाप, २४ कुरआन का वाक्य, २५ वाद्य, २६ हर वक्त, २७ चग और वीणा, २८ बासुरी का सीना, २९ गीत और वाद्य, ३० चमक, ३१ मेहदी, ३२ चमकीला ।

इकतारे का जादू

१. बिजली, २ पालनेवाला, ३ सैकडो मोडो मे उलझी हुई, ४ बादल, ५ सूर्य, ६ किनारा, ७. नष्ट-भ्रष्ट, ८ राजमार्ग, ९ गतिशील, १० दुर्बल वृद्ध, ११ होठ ।

तुन्दरौ[12] झोकों के आने[13] पर हरारत[14] का दबाव
जिनमें इकतारे की आवाज़ों का बे परवा बहाव

लर्ज़िशों[15] से तार की फीकी फ़ज़ा[16] में इक कसक[17]
इब्तिदा-ए-इश्क़[18] में जिस तरह नब्ज़ों[19] की धमक[20]

दे तो दूं तश्बीह[21], लेकिन किसको आयेगा यक़ीं[22]
आँसुओं की रागिनी से अंजुमन[23] वाक़िफ़[24] नहीं

इस मज़े[25] के साथ जाँ-अफ़रोज़[26] तानें मुज़महिल[27]
करवटें सीने में ले जिस कर्ब[28] से शाइर का दिल

यूँ लरज़ने[29] साज़[30] के बेचैन गोशे[31] दिलनशीं[32]
पेंग ले जिस तरह कोई फ़ितन.[33]-ए-दुनियां-ओ-दीं[34]

अंतरों में झुटपुटे के वक़्त की सी आबे:-जू[35]
ज़ीर-ओ-बम[36] के लोच[37] में रफ्तारे-नब्ज़े-आरज़ू[38]

रागिनी की नर्म लहरें, जागती सोती हुई
बह रही है पर्दाहा-ए-दिल[39] से मस[40] होती हुई

ज़र्रा ज़र्रा[41] इक नये साँचे में ढलने के क़रीब[42]
आलमे-असबाब[43] है गोया पिघलने के करीब

१२. तेज़, वेगशील, १३ कधे,१४. बुख़ार, गर्मी, १५ कम्पन, १६. वातावरण, १७. दर्द, चुभन, १८. प्रेम का आरम्भ, १९. नाड़ी, २०. गति, २१. उपमा, २२. विश्वास, २३. महफ़िल, २४. परिचित, २५. आनन्द के, २६. प्रकाशमान करनेवाला, २७. शिथिल, सुस्त, २८ कष्ट, २९. कांपते, ३०. वाद्य, ३१. विभाग, ३२. मनमोहक, ३३. उपद्रव, ३४. दीन और दुनिया, ३५. नदी, ३६. उतार-चढ़ाव, ३७. लचक, ३८. आरज़ू की नाड़ी की गति, ३९. दिल के पर्दे, ४०. छूना, स्पर्श, ४१. कण-कण, ४२. निकट, ४३. संसार।

ढोलक का गीत

'अख़्तर' अंसारी

यह गीत वो दिलकश[1] सावन है
हो जिससे रवायत[2] दिल की बहार
तख़ईल[3] के ताइर[4] की चहकार
नाज़ुक[5] से हसीं[6] बोलों की फुआर
यह गीत वो दिलकश सावन है

यह गीत वो रंगीं दामन है
जिसमें हों भरे रूमान[7] के फूल
अश्कों[8] के गुहर[9] अरमान[10] के फूल
इदराक[11] के गुल[12], इरफ़ान[13] के फूल
यह गीत वो रंगीं दामन है

यह गीत वो बजता झांझन है
हो जिसमें निहां[14] इक ज़मज़मा-ज़ार[15]
इठलाती जवानी की रफ़्तार[16]
बदमस्त[17] अदाओं[18] की झंकार
यह गीत वो बजता झांझन है

१. आकर्षक, २. वर्णन, ३. कल्पना, ४ पक्षी, ५ कोमल, ६ सुन्दर, ७. मुहब्बत, ८ आंसू, ९. मोती, १०. आकांक्षा, ११. ज्ञान, बुद्धि, १२ फूल, १३. ब्रह्मज्ञान, १४ गुप्त, छुपे हुए, १५. गीतों-भरा उपवन, १६. गति, १७. नशे में मस्त, १८ हाव-भाव।

यह गीत वो कातिल[19] चिलमन[20] है
मस्तूर[21] हो जिसमें कोई हीर
नाहीद खिसाल[22]-ओ-माहे-मुनीर[23]
इक बांकी छुरी तीखी शमशीर[24]
यह गीत वो कातिल चिलमन है

यह गीत वो ताबां[25] गुलशन[26] है
हो जिसमें बहारों की रौनक[27]
रावी के नज़ारों[28] की शोभा
झेलम के किनारों की रौनक
यह गीत वो ताबां गुलशन है

पंजाब के दिल की धड़कन है
यह अहले-ग़िना[29] की चीज़ नहीं
यह साज़[30] नहीं संगीत नहीं
यह गीत नहीं यह गीत नहीं
पंजाब के दिल की धड़कन है

हुसैन का आर्ट

सिकन्दर अली वज्द

बेहिजाब[1] तस्वीरें बेपनाह[2] शमशीरें[3]
दिलफ़रेब[4] ख़्वाबों[5] की बेलिहाज[6] ताबीरें[7]

१९ वधिक, कत्ल करनेवाला, २० परदा, २१. पोशीदा, छुपी हुई, २२. जोहरा तारे की तरह ख़ूबसूरत, २३. प्रकाशमान चाँद, २४. तलवार, २५ उज्ज्वल, चमकदार, २६ उपवन, २७ शोभा, २८ दृश्य, २९ संगीतज्ञ, ३० वाद्य।

हुसैन का आर्ट

१ बेपर्दा, २ अत्यधिक, ३ तलवारें, ४ आकर्षक, ५ स्वप्न, ६ निस्संकोच, ७ स्वप्न-फल।

शहरे-शादि-ओ-ग़म[८] के शानदार[९] वीराने
फ़िक्र-ओ-फ़न[१०] की महफ़िल[११] के जानदार अफ़साने[१२]

आरज़ू[१३] का हंगामा[१४], पैकरों[१५] की बेदारी[१६]
परफ़शां[१७] अदाओं[१८] में सादगी-ओ-पुरकारी[१९]

मिस्ले-सुब्ह[२०] रौशन[२१] है रम्ज़-ओ-राज़[२२] फ़ितरत[२३] के
रंग-ओ-ख़त[२४] में लर्ज़ां[२५] हैं रूप देखे अनदेखे

नग्माख़्वां[२६] लकीरों से दिलकशी[२७] बरसती है
ताबनाक[२८] रंगों में रक़्से-रूहे-हस्ती[२९] है

फूल का तबस्सुम[३०] है, निफ़्ल[३१] का तकल्लुम[३२] है
शेर का तरन्नुम[३३] है, सैल[३४] का तलातुम[३५] है

दिलनशीं[३६] निगाहों[३७] में, दिलफिगार[३८] आहें[३९] हैं
मंज़िले-तमन्ना[४०] की दिलनवाज़[४१] राहें[४२] हैं

नक़्श[४३] हैं नये अरमां[४४], नौबहार[४५] चेहरों पर
लोचदार[४६] जिस्मों[४७] में जज़्बे[४८]-वस्ल[४९] का जौहर[५०]

वलवलों[५१] की रंगीनी[५२], हौसलों[५३] की बरनाई[५४]
इस तिलिस्मे-हैरत[५५] में दमबख़ुद[५६] है दानाई[५७]

८. हर्ष और शोक का नगर, ९. भव्य, १० चिन्तन और कला, ११. गोष्ठी, १२. कहानिया, १३. आकांक्षा, १४. कोलाहल, १५. आकार, १६ जागना, १७. पर फैलाए हुए, १८. हाव-भाव, १९. चालाकी, २०. सुबह की तरह, २१. प्रकाशमान, २२. रहस्य और भेद, २३. कुदरत, प्रकृति, २४. रंग और रेखाएँ, २५. कम्पायमान, २६. गाती हुई, २७. आकर्षण, २८. आभा-युक्त, २९. अस्तित्व की आत्मा का नृत्य, ३०. मुस्कराहट, ३१. शिशु, ३२. बातचीत, ३३. माधुर्य, ३४. प्रवाह, बहाव, ३५. वेग, बाढ़, ३६. दिल में घर जानेवाली, ३७. नज़र, ३८. हृदय-विदारक, ३९. आर्तनाद, ४०. आकांक्षा की मंजिल, ४१. मोहक, आकर्षक, ४२. मार्ग, रास्ते, ४३. अंकित, ४४. आकांक्षाएं, ४५. नये, ताज़ा, ४६. लचकदार, ४७. शरीर, ४८. भावना, ४९. मिलन, ५०. रत्न, ५१. जोश, ५२. सुन्दरता, ५३. साहस, ५४. जवानी, यौवन, ५५. आश्चर्य का जादू, ५६. सांस रोके हुए, ५७. बुद्धिमत्ता ।

खैर - ग्रो-शर[५८] की ग्रावेज़िश[५९], दास्ताने-बेपायां[६०]
गुलफ़िशां[६१] कई मंज़र[६२], खूंचकां[६३] कई उनवां[६४]

दर्द-ग्रो-ग़म[६५] के जादे[६६] पर उम्र[६७] का सफ़र[६८] तनहा[६९]
हर क़दम पे हंगामा[७०], ग्रादमी मगर तनहा

सैकड़ों मग्रानी[७१] हैं सरसरी[७२] इशारों में
हुस्नकार[७३] करता है बात इस्तग्रारों[७४] मे

ज़िन्दगी की नक़्क़ाली, एक शग़्ले-तिफ़लां[७५] है
जिन्दगी की तब्दीली[७६] सिर्फ कारे-मर्दां[७७] है

५८. कल्याण ग्रौर उपद्रव, ५९. लागडाट, संघर्ष, ६०. ग्रसीम कहानी, ६१. फूल बरसानेवाले, ६२. दृश्य, ६३. खून टपकानेवाले, ६४. शीर्षक, ६५. कष्ट ग्रौर शोक, ६६, राह, मार्ग, ६७. ग्रायु, ६८. यात्रा, ६९. ग्रकेले, ७०. कोलाहल, ७१. ग्रर्थ, ७२. मामूली, ग्राम, ७३. सौंदर्य का ज्ञाता, ७४. इशारों, ७५. बच्चों का खेल, ७६. परिवर्तन, ७७. मर्दों का काम।

नवां अध्याय

हमारे धार्मिक नेता

शंकर-दर्शन

मुंशी द्वारका प्रसाद 'उफ़ुक़' लखनवी

ओम रुद्राय नमः नोके-ज़ुबाँ[1] से निकले
बम महादेव लबे-किल्के-रवाँ[2] से निकले
जय सतीपत की सदा नुत्क[3]-ओ-दहाँ[4] से निकले
शब्द शिव-शिव का हर अन्दाजे-बयाँ[5] से निकले

जागते सोते लगे कंठ को रट हर हर की
साथ हर साँस के आवाज हो जयशंकर की

वाह-वाह क्या है किस शान का अरधंग सरूप
जगत् मात एक तरफ एक तरफ है सर भूप
रात शिव, गौर है दिन, छाँव है शिव, गौर है धूप
इनका अन्दाज निराला है तो सजधज है अनूप

कहें अफ़ज़ल[6] किसे, है हुस्न में ग़ालिब[7] दोनों
एक क़ालिब[8] में है यकजान-ओ-दो क़ालिब[9] दोनों

जिस्म[10] का रंग चमकते हुए नीलम की मिसाल
चाँद की रुख़[11] में चमक चेहरे पे सूरज का जलाल[12]
चाँद पेशानि-ए-रौशन[13] पे ज़ियाबख़्श[14] हिलाल[15]
जा-ए-मलबूसे-बदन[16] बैल हिरन शेर की खाल

नाज़[17] कानों को है आवेज़ा[18]-ए-नूरानी[19] पर
बन्द एजाज़[20] भरी आँख है पेशानी[21] पर

१ ज़बान की नोक, २. गतिशील कलम के होठ, ३ वाणी, ४ मुख, ५. बयान का अन्दाज, ६. श्रेष्ठ, ७. छाये हुए, ८. शरीर, ९. एक प्राण दो शरीर, १० शरीर, ११. चेहरा, १२. प्रताप, तेज, १३. प्रकाशमान ललाट, १४. ज्योतिर्मय, १५. नवचन्द्र, १६. वस्त्र, १७. गर्व, १८. बुन्दे, १९. चमकते हुए, २०. चमत्कार, २१. ललाट।

हैं श्री पार्बती जुज़्वे-बदन[22] जान के पास
चाँद से मुखड़े की ज़ौ[23] से है मुनव्वर[24] कैलास
नूर[25] बरसाता है ज़रकार[26] उरूसाना लिबास[27]
ज़ेवरों में है जड़े नीलम-ओ-लाल-ओ-अलमास[28]

चांदनी छिटकी हुई चेहर:-ए-पुरनूर[29] में है
शफ़क़े-शाम[30] अयां[31] मांग के सिंदूर में है

क्या कहें मोजिज़ा[32] क्या जिन-ओ-बशर[33] देखते हैं
एक ही वक़्त बहम[34] शाम-ओ-सहर[35] देखते हैं
इस तरफ़ देखते हैं ख़्वाह[36] उधर देखते हैं
क़ुदरते-लैल-ओ-निहार[37] अहले-नज़र[38] देखते हैं

परतवे-रुख़[39] से सफ़ेदी बनी गौर आभा की
अक्स[40] से शिव के सियाही बढ़ी और आंखों की

अब्र[41] शिव पार्वती साइक़:[42]-ए-नूरफ़िशां[43]
रुख़[44] यह वो गेसू-ए-शबरंग[45] यह शोला[46] वो धुआं
क़ुदरतें[47] दोनों की, एजाज़[48] हैं दोनों के अयां[49]
महे-शाम[50] इनमें तो मिहरे-सहर[51] उनमें ताबां[52]

क्यों न मालिक हों सफ़ेद और सियह[53] के दोनों
मस्त-ओ-मसरूर[54] हैं कैलास में रह के दोनों

२२. शरीर का अंग, २३. प्रकाश, २४ प्रकाशमान, २५. प्रकाश, २६ सुनहरी काम का, २७. शादी का जोड़ा, २८. हीरा, २९. प्रकाश से पूर्ण चेहरा, ३०. सायंकाल की लाली, ३१. प्रकट, ३२. चमत्कार ३३. जिन्न और इंसान, ३४. परस्पर, एकसाथ, ३५. सायं और प्रातःकाल, ३६. चाहे, ३७. रात-दिन, ३८. समझदार, पैनी दृष्टिवाले, ३९ चेहरे का प्रतिबिम्ब, ४०. प्रतिबिम्ब, ४१. बादल, ४२. बिजली, ४३. प्रकाश देनेवाला, ४४. चेहरा, ४५. काले बाल, ४६. ज्वाला, ४७. शक्ति, सामर्थ्य, ४८. विलक्षणता, ४९. प्रकट, ५०. शाम का चन्द्रमा, ५१. सुबह का सूरज, ५२. प्रकाशमान, ५३. काला, ५४. मदोन्मत्त और प्रफुल्ल।

शिवजी की तारीफ़ में

'मुनव्वर' लखनवी

चाँद आधा है नमूदार[1] जबीं[2] पर जिनकी
क़ौसे-ज़रीं[3] है जौबार[4] जबी पर जिनकी

जान है जिनकी बडी नाम बड़ा है जिनका
बात है जिनकी बडी काम बड़ा है जिनका

सबसे मुम्ताज़[5] जो है जिनसे बड़ा कोई नही
जिनसे तौकीर[6] मे अज़मत[7] मे सिवा[8] कोई नही

जिनकी अजमत का ठिकाना नही नामी जो हैं
जगत ईश्वर है जो, संसार के स्वामी जो है

खुर्द[9] से खुर्द है बारीक से बारीक जो है
दूर से दूर है नजदीक से नजदीक[10] जो है

जामः-ए-खाक[11] मे है जल्वानराजी[12] जिनकी
है तमाशः-ए-नजर[13] शोब्दाबाजी[14] जिनकी

सूरते जेब-दहे-आलमे-इमका[15] है कई
एक अफसाना-ए-तौहीद[16] के उनवा[17] है कई

१. प्रकट, २. ललाट, माथा, ३ स्वर्ण धनुष, ४. प्रकाशमान, ५. श्रेष्ठ, ६. प्रतिष्ठा, ७ महानता, ८. अधिक, ९. छोटा, १०. निकट, ११. भभूत, १२. दर्शन, १३. नज़र का खेल, १४. चमत्कार, १५ ससार को विभूषित करनेवाली, १६. अद्वैतवाद की कहानी, १७. शीर्षक ।

है इसी रब्त[१८] का मोहताज[१९] क़यामे-दुनिया[२०]
मुनहसिर[२१] है इन्हीं शक्लों[२२] पे निज़ामे-दुनिया[२३]

जिनकी तहरीक[२४] से चलता है यह दिलचस्प[२५] निजाम[२६]
जिस तरह हाथ में थामे हुए घोड़ों की लगाम

रथ को अपने कोई रथवान रवां[२७] रखता है
उसकी रफ़्तार[२८] पे चश्मे-निगरां[२९] रखता है

ऐशे-जावेद[३०] के अस्बाब[३१] हैं पैदा जिनसे
इशरताबाद[३२] है दिल अहले-सफ़ा[३३] का जिनसे

जिनके दीदार[३४] की रखते हैं तमन्ना[३५] जोगी
ध्यान करते हैं बड़े शौक से जिनका जोगी

जल्वा - अफ़रोज[३६] पसे-परदा-ए-बातिन[३७] जो है
हर नफस[३८] आलमे-असरार[३९] में साकिन[४०] जो है

मोक्ष जो मोक्ष के तालिब[४१] को अता[४२] करते हैं
रूह को कैदे-तनासुख[४३] में रिहा[४४] करते हैं

हमातन लुत्फ[४५] हैं मसरूफे-करम[४६] रहते हैं
मग़फ़िरतबख़्श[४७] जिन्हें अहले - नजर[४८] कहते हैं

(कालिदासकृत 'कुमारसंभव' का अनुवाद)

१८. सम्बन्ध, १९. जरूरतमन्द, २० दुनिया का अस्तित्व, २१ अवलम्बित, निर्भर, २२. रूप, २३. संसार का विधान, २४. प्रेरणा, २५. रोचक, २६. विधान, २७. गतिशील, २८. गति, २९. निरीक्षक की आंख, ३०. शाश्वत सुख, ३१. सामान, ३२. रतिगृह, ३३. पवित्र आत्मा, ३४. दर्शन, ३५. अभिलाषा, ३६. दर्शन दे रहे हैं, ३७. अन्तरात्मा के पर्दे के पीछे, ३८. सांस, ३९. रहस्यमय संसार, ४०. निवासी, ४१. इच्छुक, ४२. प्रदान, ४३. आवागमन, ४४. छुटकारा, ४५. साकार प्रेम, ४६. दयादान में व्यस्त, ४७. मुक्ति दिलानेवाला, ४८. समझदार।

राम

डाक्टर मुहम्मद इकबाल

लबरेज[1] है शराबे-हकीकत[2] से जामे-हिन्द[3]
सब फलसफी[4] है खित्त-ए-मगरिब[5] के रामे-हिन्द[6]

यह हिन्दियो की फिक्रे-फलकरस[7] का है असर[8]
रिफअत[9] मे आसमा से भी ऊँचा है बामे-हिन्द[10]

इस देस मे हुए है हजारो मलक[11] सिरिश्त[12]
मशहूर जिनके दम से है दुनिया मे नामे-हिन्द

है राम के वजूद[13] पे हिन्दोस्ता को नाज[14]
अहले-नजर[15] समझते है उसको इमामे-हिन्द[16]

एजाज[17] इस चिरागे-हिदायत[18] मे है यही
रौशनतर[19] अज सहर[20] है जमाने मे शामे-हिन्द[21]

तलवार का धनी था शुजाअत[22] मे फर्द[23] था
पाकीजगी[24] मे, जोशे-मुहब्बत[25] मे फर्द था

१ भरा हुआ, २ सत्य की मदिरा, ३ भारत का प्याला, ४ दार्शनिक, ५. पश्चिमी क्षेत्र, ६. हिन्द के राम, ७ गगनचुम्बी चिन्तन, ८ प्रभाव, ९ ऊंचाई, १० अट्टालिका, ११ देवता, १२ पैदा, १३ अस्तित्व, १४ गर्व, १५ नजर वाले, १६ भारत का नेता, १७ चमत्कार १८. उपदेश, १९ प्रकाशमान, २०. प्रातःकाल से भी अधिक, २१ भारत की शाम, २२. बहादुरी, साहस, २३ अद्वितीय, २४ पवित्रता, २५. प्रेम-उत्साह ।

श्रीरामचन्द्र

ज़फ़र अली खां

न तो नाक़ूस[1] से है और न असनाम[2] से है
हिन्द की गर्मि-ए-हगामा[3] तिरे नाम से है

मैं तिरे शेवः-ए-तसलीम[4] पे सर धुनता हूँ
कि यह इक दूर की निसबत[5] तुझे इस्लाम से है

हो वो छोटों की इताअ़त[6] कि बड़ों की शफ़कत[7]
ज़िन्दा दोनों की हक़ीकत[8] तिरे पैग़ाम[9] से है

तेरी तालीम[10] हुई नज्रे-खुराफाते-फ़िरग[11]
बिरहमन को यह गिला[12] गर्दिशे-अय्याम[13] से है

नक़्शे-तहज़ीबे-हुनूद[14] अब भी नुमाया[15] है अगर
तो वो सीता से है, लक्ष्मण से है और राम से है

१. शंख, २. मूर्तियां, ३. समय का जोश, धूमधाम, ४. आज्ञाकारिता, ५. सम्बन्ध, रिश्ता, ६. आज्ञापालन, ७. वात्सल्य, दया, ८. वास्तविकता, ९. संदेश, १०. शिक्षा, ११. अंग्रेज के झूठ की भेंट, १२. शिकायत, १३. समय का चक्र, १४. हिन्दू सभ्यता के निशान, १५. प्रत्यक्ष, ज़ाहिर।

राम

'सागर' निजामी

जिसका दिल था एक शम्आ-ताके-ऐवाने-हयात[1]
रूह जिसकी आफताबे - सुब्हे - इरफाने - हयात[3]

जिन्दगी की रिफअतों[4] में मंजिलों[5] ऊंचा था वो
आस्माने-मारिफत[6] का एक सय्यारा[7] था वो

सामने जिसके लरज[8] उट्ठा शुकोहे-सरवरी[9]
वो बहादुर जिसने बातिल[10] को शिकस्ते-फाश दी[11]

जिसका हर जल्वा[12] शोआ-ए-हक[13] का मजहर[14] हो गया
जर्रा जर्रा[15] जिसके परतव[16] से मुनव्वर[17] हो गया

हिन्दियों के दिल में बाकी है मुहब्बत राम की
मिट नहीं सकती कयामत[18] तक हुकूमत[19] राम की

जिन्दगी की रूह[20] था, रूहानियत[21] की शान था
वो मुजस्सम,[22] रूप में इन्सान के, इरफान[23] था

१ जीवन-भवन के ताक का चिराग २ आत्मा, ३ जीवन-ज्ञान के प्रात का सूर्य, ४ ऊंचाइयों ५. अत्यधिक, ६ अध्यात्म का आकाश, ७ नक्षत्र, ८. कांप उठा, ९ अधिपति का प्रताप, १०. झूठ, ११. पराजय, १२ दर्शन, १३ सत्य की किरणें, १४ द्योतक, १५ कण-कण, १६. अक्स, प्रतिबिम्ब, १७ प्रकाशमान, १८ प्रलय, १९ सत्ता, २० आत्मा, २१ अध्यात्म २२. साकार, २३ ब्रह्मज्ञान ।

श्रीकृष्ण

मुशी बनवारीलाल 'शोला'

श्री जगदीश बृन्दाबन बिहारी
श्री राधारमन माधव मुरारी

श्री गोबिन्द राधा कृष्ण गोपाल
मदनमोहन श्री घनश्याम नन्दलाल

श्री मुरली मनोहर श्याममुन्दर
श्री भगवान गोपीनाथ गिरिधर

मुकुटधारी मदनगोपाल मोहन
नवल सुन्दर छबीले लाल मोहन

तु ही है हुस्ने - रुखसारे - हकीकत[1]
तु ही है परदा बरदारे - हकीकत[2]

तु ही है काशिफे - असरारे - अजली[3]
तु ही है रुनुमा - ए - हुस्ने - अबदी[4]

तु ही है जल्वाफरमा-ए-दो आलम[5]
तु ही है खुद तमाशा - ए - दो आलम[6]

तु ही लौहे तिलिस्मे - जान - ओ - तन है[7]
तु ही बख्शिन्दा - ए - रुह - ओ - बदन है[8]

१ सत्य के कपोलों का सौदर्य, २. सत्य का झडा ऊचा करने वाला, ३. अनादिकाल के रहस्य खोलने वाला, ४. शाश्वत सौदर्य को प्रकट करने वाला, ५. दोनो आलम में जल्वा दिखाने वाला, ६ दोनों लोको का तमाशा, ७. शरीर और प्राण का जादू, ८ आत्मा और शरीर प्रदान करने वाला।

तु ही वहशत[9] फ़िज़ा - ए - इश्क़े - रुसवा[10]
तु ही नक़्शो - निगारे - हुस्ने - ज़ेबा[11]

तु ही है मूजिदे - ईजादे - कौनैन[12]
तु ही है बानि-ए-बुनियादे - कौनैन[13]

तु ही है रौनक़े - गर्मि - ए- बाज़ार[14]
तु ही ख़ुद जिंस[15] तू ही ख़ुद ख़रीदार

तु ही है नग़म:-ए-बुलबुल[16] चमन में
तु ही गुंचा[17] तू ही है गुल[18] चमन[19] में

तू ही परवाना[20] तू ही शम्ए-महफ़िल[21]
तू ही गुलबन[22] तु ही शोरे - अनादिल[23]

तू ही लक्ष्मण तू ही सीता तू ही राम
तू ही गोपी तू ही राधा तू ही श्याम

जमीन[24]-ओ-चर्ख़[25]-ओ-मिहर[26]-ओ-माह[27] तेरे
दो आलम[28] हैं तमाशागाह[29] तेरे

फ़ना[30] तर्जे-ख़रामे - नाज़[31] की आन[32]
बक़ा[33] है एक लब[34] की तेरे मुस्कान[35]

बुते[36] - चितचोर माखन के लुटेरे
हयात - ओ - मौत[37] दोनों खेल तेरे

९. घबराहट, १०. बदनाम इश्क़ का वातावरण, ११. सुशोभित सौंदर्य के बेलबूटे, १२. संसार की सृष्टि का आविष्कारक, १३ संसार की बुनियाद रखने वाला, १४. बाज़ार की गर्मी की रौनक, १५. वस्तु, पदार्थ, १६. बुलबुल का संगीत, १७. कली, १८. फूल, १९. उपवन, २० पतंगा, २१ महफ़िल की शमा, २२. सुर्ख़ गुलाब, २३ बुलबुल का कोलाहल, २४. धरती, २५. आकाश, २६ सूरज २७. चांद, २८. दोनों लोक, २९. क्रीड़ास्थल, ३०. मृत्यु, ३१. सौंदर्य की मंद गति, ३२. इज़्ज़त, ३३ अस्तित्व, ३४. होंठ, ३५. मुस्कराहट ३६. मूर्ति, ३७. जीवन-मृत्यु ।

नुमूदे - आफ़रीनश[३८] है तुझी से
वुजूदे - आफ़रीनश[३९] है तुझी से

तू ही ख़ल्लाक़[४०] है कौन - ओ - मकां[४१] का
तू ही रज़्ज़ाक़[४२] है हर इंस - ओ - जां[४३] का

अलग कब तुझसे तेरी गुफ़्तुगू[४४] है
ग़रज़[४५] इक तू ही तू है तू ही तू है

कृष्ण

'हसरत' मोहानी

मथुरा कि नगर है आशिक़ी[१] का
दम भरती है आरज़ू[२] इसी का

हर ज़र्रः-ए-सरज़मीने-गोकुल[३]
दारा[४] है जमाले - दिलबरी[५] का

बरसाना - ओ - नन्दगांव में भी
देख आये हैं जल्वा[६] हम किसी का

पैग़ामे - हयाते - जाविदां[७] था
हर नग़मा[८] कृष्ण बांसुरी का

वो नूरे - सियाह[९] या कि 'हसरत'
सरचश्मा[१०] फ़रोग़े-आगही[११] का

३८. सृष्टि को बढ़ाने वाला, ३९. सृष्टि का अस्तित्व, ४०. स्रष्टा, ४१. संसार, ४२. अन्न-दाता, ४३. मानव जाति, ४४. वार्तालाप, बातचीत, ४५. अर्थात, यानी।

कृष्ण

१. प्रेम, २. अभिलाषा, ३. गोकुल की धरती का हर कण, ४. बादशाह, ५. मोहक सौन्दर्य, ६. दर्शन, ७. शाश्वत जीवन का संदेश, ८. संगीत, ९. सांवला प्रकाश, १०. स्रोत, ११. चेतना का प्रकाश।

श्रीकृष्ण

'सीमाब' अकबराबादी

हुआ तुलूअ[1] सितारों की दिलकशी[2] लेकर
सुरूर[3] आँख में, नज़रों में ज़िन्दगी[4] लेकर
खुदी[5] के होश उड़ाने बसद नियाज़[6] आया
नये प्यालों में सहबा-ए-बेखुदी[7] लेकर
फ़ज़ा-ए-दहर[8] में गाता फिरा वो प्रीत के गीत
नशातखेज़[9] - ओ - सुकूरेज़[10] बासुरी लेकर

जहाने-क़ल्ब[11] सरापा[12] गुदाज़[13] बन ही गया
हर एक ज़र्रा[14] मुहब्बत का साज़[15] बन ही गया

जमाल-ओ-हुस्न[16] के क़ाफ़िर[17] निखार से खेला
रियाज़े - इश्क़[18] की रंगी[19] बहार से खेला
पयम्बरों[20] की कभी रस्म की अदा उसने
ग्वाला बनके कभी सब्ज़ाज़ार[21] से खेला
बहा दिये कभी ठोकर से प्रेम के चश्मे[22]
कभी जमन, कभी गंगा की धार से खेला

हंसी हंसी में वो दुख दर्द झेलता ही रहा
करिश्माबाज़[23], ज़माने में खेलता ही रहा

१ उदय, २ मोहकता, ३ नशा, मस्ती, ४ जीवन, ५ अह, ६ सैकड़ो विनम्रताए लेकर, ७ बेखुदी की शराब, ८ ससार का वातावरण, ९ आनन्ददायक, १० शातिप्रद, ११. दुनिया का हृदय, १२ सर से पाव तक, १३ मृदुल, १४ कण, १५ बाजा, १६ सौन्दर्य, १७ जालिम, निर्दयी, १८ प्रेम तपस्या, १९ रगीन, सुन्दर, २० ईश्वर-अवतार, सन्देशवाहक, २१ हरे-भरे मैदान, २२ स्रोत, २३ चमत्कार दिखाने वाला।

किया ज़माने को मामूर[२४] अपने नग़्मों[२५] से
सिखाये इश्क़[२६] के दस्तूर[२७] अपने नग़्मों से
सदाक़त[२८] और मुहब्बत की उसने दी तालीम[२९]
अंधेरियों में भरा नूर[३०] अपने नग़्मों से
लताफ़तों[३१] से किया अर्ज़े-हिन्द[३२] को लबरेज़[३३]
कसाफ़तों[३४] को किया दूर अपने नग़्मों से

फ़लक[३५] को याद है उस अहदे-पाक[३६] की बातें
वो बांसुरी, वो मुहब्बत की सांवली रातें

दिलों में रंगे-मुहब्बत[३७] को उस्तुवार[३८] किया
सवादे-हिन्द[३९] को गीता से नग़्माबार[४०] किया
जो राज़[४१] कोशिशे-नुत्क़-ओ-ज़बां[४२] से खुल न सका
वो राज़ अपनी निगाहों से आश्कार[४३] किया
उदासियों को नई ज़िन्दगी अता[४४] कर दी
हर एक ज़र्रे[४५] को दिल देके बेक़रार[४६] किया

जो मशरब[४७] उसका न इस तरह आम हो जाता
जहां से महव[४८] मुहब्बत का नाम हो जाता

२४. परिपूर्ण, २५. गीत, २६. प्रेम, २७. रीति-रिवाज, २८. सच्चाई, २९. शिक्षा, ३०. प्रकाश, ३१. पवित्रता, ३२. भारत की धरती, ३३. परिपूर्ण, ३४. अपवित्रता, ३५. आकाश, ३६. पवित्र युग, ३७ प्रेम का रंग, ३८. दृढ़, मज़बूत, ३९. भारत की बस्ती, ४०. संगीतमय, ४१. रहस्य, ४२ ज़बान और वाणी का प्रयत्न, ४३. प्रकट, ज़ाहिर, ४४. प्रदान, ४५. कण, ४६. बेचैन, ४७ धर्म, ४८. लुप्त ।

श्रीकृष्ण

'निहाल' स्योहारवी

इंतिजारे - जल्वः - ए-हक़[1] मे था तूरे - ज़िन्दगी[2]
दीने - आदम[3] भूल बैठा था शुऊरे - ज़िन्दगी[4]

आगही[5] मे हल न होता था मुअम्मा - ए - हयात[6]
तिश्नः-ए-अब्रे - करम[7] था यानी सेहरा-ए-हयात[8]

कतरगी[9] को दावा-ए-पहनाइ-ए-दरिया[10] न था
ज़ह्ने - इंसा[11] मानि - ए - तौहीद[12] से बेगाना[13] था

पैकरे - बेरूह[14] सा यह आलमे - अस्बाब[15] था
दीदावर[16] के वास्ते हुस्ने - जहां[17] बेताब[18] था

आ गया फिर हुस्न[19] दुनिया - ए - अजल आबाद[20] पर
जिन्दगी मथुरा मे बरसी आलमे - ईजाद[21] पर

कायनाते - जुज्व - ओ - कुल[22] का राज़दां[23] पैदा हुआ
मुख्तसर[24] यह है कि आका - ए - जहां[25] पैदा हुआ

१. भगवान के दर्शन की प्रतीक्षा, २. ज़िन्दगी का तूर (पर्वत), ३. ससार का धर्म, ४. जीवन की चेतना, ५. बुद्धि, ६. जीवन का पहेली. ७. दया के बादलो का प्यासा, ८. जीवन का जगल, ९. बूंद, १०. दरिया की गहराई का दावा, ११. मानव-मस्तिष्क. १२. अद्वैतवाद का अर्थ. १३. अनभिज्ञ, १४. निष्प्राण आकार, १५. ससार, १६. आख वाला, पारखी, १७ ससार का सौन्दर्य, १८. व्याकुल, १९ सौन्दर्य, २०. मौत से भरी हुई दुनिया, २१. दुनिया-ससार, २२. सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, २३. रहस्य जानने वाला, २४. सक्षिप्त, २५. ससार का मालिक।

नूर[२६] से मामूर[२७] जुल्मतख़ानः - ए - आदम[२८] हुआ
किस तजम्मुल[२९] से तुलू - ए - नय्यरे - आज़म[३०] हुआ

जिस क़दर[३१] परदे जहालत[३२] के थे सारे हट गये
जुल्म - ओ - इस्तब्दाद[३३] के तारीक[३४] बादल छट गये

क़तरा[३५] उसकी बारिशे - अल्ताफ़[३६] से तूफ़ां[३७] हुआ
फ़ाश[३८] इंसानों पे राज़े - हस्ति - ए - इंसां[३९] हुआ

उसने समझा था कि बहरे - बेकरां[४०] है ज़िन्दगी
आरज़ी[४१] इसको न कहना, जाविदां[४२] है ज़िन्दगी

रिश्तः - ए - अनफ़ासे - हस्ती[४३] टूटने वाला नही
जिसके दाने हों परागन्दा[४४] यह वो माला नही

वहमे - बातिल[४५] नक़्शबन्दे - हल्क़ः - ए - सैयाद[४६] है
ज़िन्दगी वर्ना[४७] फ़ना[४८] से मुत्लक़न[४९] आज़ाद है

रहनुमा - ए - जुल्मते - आफ़ाक़[५०] है क़न्दीले - फ़र्ज़[५१]
ज़िन्दगी की गायत - ओ - मक़सूद[५२] है तकमीले - फ़र्ज़[५३] .

है बक़ा - ए - आलमे - इम्कां,[५४] बक़ा - ए - फ़र्ज़[५५] से
ज़िन्दगी की शान खिलती है अदा-ए - फ़र्ज़[५६] से

२६. प्रकाश, २७. परिपूर्ण, २८. मानव का अंधकारपूर्ण घर, २९ वैभव, शानो-शौकत, ३०. महान सूर्य का उदय, ३१. जितने, ३२. अज्ञान, ३३. अत्याचार, ३४. काले, अंधेरे, ३५. बूंद, ३६. दया की वर्षा, ३७. तूफान, ३८. प्रकट, ३९. इंसान की हस्ती का रहस्य, ४०. अथाह समुद्र, ४१. अस्थायी, ४२. शाश्वत, ४३. सांसों का रिश्ता, ४४. अस्त-व्यस्त, ४५. झूठ का वहम, ४६. बहेलिया के जाल के फंदे, ४७. अन्यथा, ४८. मृत्यु, ४९. बिल्कुल, ५०. आकाश के अंधेरे में मार्गदर्शक, ५१. कर्तव्य का चराग़, ५२. अभिप्राय और उद्देश्य, ५३. कर्तव्य-पालन, ५४ संसार का अस्तित्व, ५५. कर्तव्य की नित्यता, ५६. कर्तव्य-पालन ।

मौत के खतराते - बातिल[५७] में न आना चाहिये
मौत से आँखे मिलाकर मुस्कराना चाहिये

क्यो हिरासा[५८] है फना[५९] से तू, फना कुछ भी नही
मौत इक नक्ले - मकानी[६०] के सिवा कुछ भी नही

कौन कहता है रहीने - खतर: - ए - सय्याद[६१] रह
कारगाहे - दहर[६२] मे आजाद रह, आजाद रह

इश्क है आफतगहे - दौरा[६३] से सामाने - नजात[६४]
इश्क वालो ही को कुछ हासिल है इरफाने - नजात[६५]

चश्मे-बीना[६६] हो तो इस आफाक[६७] मे उरिया[६८] है हुस्न[६९]
इन्तिहा - ए - हुस्न[७०] है यह, जल्व -ए-यजदा[७१] है हुस्न

छोडकर जर्रों[७२] को मोती रोल अय हिन्दोस्ता
सोयेगा ताचद[७३], आखे खोल अय हिन्दोस्ता

बेकरा[७४] हो अपनी ही मौजो मे बहना सीख ले
सीख ले कुलजुमसिफत[७५] आजाद रहना सीख ले

५७ झूठे खतरे, ५८ निराश, ५९ मौत, ६० गृह-परिवर्तन, ६१ बहेलिया के खतरे से भयभीत, ६२ दुनिया, ६३. जमाने की विपत्तिया, ६४ मुक्ति का सामान, ६५ मोक्ष का ज्ञान, ६६ पारखी आख, ६७ क्षितिज (ब० व०), ६८. नग्न, ६९ सौंदय, ७० सौंदर्य की अधिकता, ७१ खुदा का जलवा, ७२ धूल के कण, ७३ कब तक, ७४ असीम, ७५ दरिया की तरह ।

गौतम बुद्ध

'सीमाब' अकबराबादी

हुस्न[1] जब अफ्सुर्दा[2] फलो की तरह पामाल[3] था
जब मुहब्बत का गलत दुनिया मे इस्तेमाल[4] था

बेखुदी[5] के नाम पर जब दौरे-जामे बादा[6] था
तब तजल्ली-ए-हकीकत[7] से हर इक दिल सादा[8] था

जीस्त[9] का और मौत का इदराक[10] दुनिया को न था
जुल्म[11] का एहसास[12] जब बेबाक[13] दुनिया को न था

बन्द आखे करके इस दुनिया के मकरूहात[14] मे
तू ने हासिल[15] की जिया-ए-दिल[16], तजल्लीयात[17] से

बर्फजारो[18] को तिरे अनफास[19] ने गरमा दिया
तेरे इस्तगना[20] ने तख्ने-सल्तनत[21] ठुकरा दिया

याद तेरी आज भी हिन्दोस्ता मे ताजा है
चीन, जापान और तिब्बत तक तिरा आवाजा[22] है

रौशनी[23] जिसकी न होगी माद[24], वो मशअल है तू
सरजमीने-हिन्द[25] का इरफानि-ए-अव्वल[26] है तू

१ सौन्दर्य, २ उदास, ३ नष्ट, ४ उपयोग, ५ मस्ती, ६ शराब के प्याले का दौर, ७ सत्य का प्रकाश, ८ साफ, ९ जीवन, १०. ज्ञान, ११ अत्याचार, १२ अनुभव, १३ निडर, १४ घृणित काम, १५ प्राप्त, १६. दिल की ज्योति, १७ प्रकाश, १८ बर्फ से ढके मैदान, १९ सास, (ब० व०), २० निस्पृहता, २१ राजसिंहासन, २२ आवाज़, उपदेश, २३ प्रकाश, २४. मद्धम, धीमी, २५ भारत की धरती, २६ प्रथम ब्रह्मज्ञानी ।

गौतम बुद्ध

'साग़र' निजामी

अय मुहब्बत के पयामी[1], रहम के पैगाम्बर[2]
तूने पहुँचाई जमाने[3] को हकीकत[4] की खबर

जिन्दगी का राजे-असली[5] तुझ पे उरियां[6] हो गया
शान्ति और हक[7] का हासिल[8] तुझको इरफां[9] हो गया

तेरी ताक़त[10] से हुआ कम इक्तिदारे[11]-बरहमन
टुकड़े टुकड़े हो गया हिस्ने-वकारे[12]-बरहमन[13]

सल्तनत[14] तेरे लिए इक तोद-ए-खाशाक[15] थी
माद्दीयत[16] तेरे नूरानी कदम[17] की खाक[18] थी

जुज्वे-आला[19] तेरे दीने-आशिकी[20] अफरोज[21] का
एतिकादे[22]-नेक-ओ-फेले[23]-नेक-ओ-कौले[24]-नेक था

तेरे सागर[25] में शरावे-इश्के[26]-आलमगीर[27] थी
तेरे मैखान[28] की अदना[29] खाक[30] भी अकसीर[31] थी

सरबसज्दा[32] हो गई दुनिया हुजूरे-एशिया[33]
छा गया तारीकि-ए-आलम[34] पे नूरे-एशिया[35]

१. सदेशवाहक, २ पैगाम देनेवाला, ३ समार, ४ सच्चाई, ५ असली रहस्य, ६ प्रकट, नग्न, ७. सत्य, ८. प्राप्त, ९ ज्ञान, १० शक्ति. ११ हुकूमत, १२. प्रतिष्ठा, १३. ब्राह्मण, १४ राजपाट, हुकूमत, १५ कूड़े-करकट का ढेर, १६. भौतिकता, १७ प्रकाशमान चरण, १८. धूल, १९ श्रेष्ठ अंग, २० प्रेम-धर्म, २१ प्रकाश फैलानेवाला, २२ विश्वास, श्रद्धा, २३ कर्म, २४. वचन, २५ प्याला, २६ प्रेम मदिरा, २७ विश्वव्यापी, २८ शराबखाना, २९ तुच्छ, ३०. धूल, ३१ रामबाण, ३२. नतमस्तक, ३३ एशिया के कदमो मे, ३४. दुनिया का अंधकार, ३५ एशिया का प्रकाश ।

अय मिरे प्यारे वतन[३६] के राहिबे-आली मुक़ाम[३७]
आज भी कलमा[३८] तिरा पढ़ती है दुनिया सुब्हो-शाम[३९]

अम्न[४०], सरनामा[४१] तिरे क़ानूने-अख़्लाकी[४२] का है
रहम[४३] इक उन्वां[४४] तिरी तालीमे-रूहानी[४५] का है

तेरी तालीमात[४६] पर हिन्दोस्तां को नाज़[४७] है
हिंन्द को क्या नाज़ है, सारे जहां[४८] को नाज़ है

तिफ़्ले-मग़रिब[४९] जेह्ल[५०]-ओ-मदहोशी में जब आलूदा[५१] था
सारा मशरिक़[५२] तेरी तालीमात[५३] से आसूदा[५४] था

जाग ख़्वाबे-नाज़[५५] से और अम्न[५६] का इक गीत गा
फिर तिरा मस्कन[५७] निशाना है सितम और ज़ुल्म[५८] का

जिस ज़मीं[५९] से तूने आवाज़े-विला[६०] की थी बलन्द[६१]
जिस ज़मीं से तूने इक बांगे-दरा[६२] की थी बलन्द

वो ज़मीं अग़ियार[६३] के हाथों मे फिर बरबाद है
ज़ुल्म-ओ-बातिल[६४] और निफ़ाक़-ओ-किज़्ब[६५] से आबाद है

कोना कोना, गोशा गोशा[६६], ज़र्रा ज़र्रा[६७] है ग़ुलाम
अय मिरे गौतम ! तिरी आज़ाद दुनिया है ग़ुलाम

कर ग़ुलामी से रिहा[६८] हमको फिर अरमां[६९] है यही
आज हिन्दुस्तान में मफ़्हूमे-निर्वां[७०] है यही

३६. देश, ३७, श्रेष्ठ बैरागी, ३८ तेरे नाम की माला जपती है, ३९. सांझ-सवेरे, ४० शांति, ४१. शीर्षक, ४२. सदाचार का क़ानून, ४३. दया, ४४. शीर्षक, ४५. आध्यात्मिक शिक्षा, ४६. शिक्षा (ब० व०), ४७. गर्व, ४८. संसार, ४९. पश्चिम का बचपन, ५०. अज्ञान, ५१. डूबा हुआ, ५२. पूर्व, ५३. शिक्षा, ५४. सम्पन्न, ५५. घमण्ड की नींद, ५६. शांति, ५७. आवास, ५८. अत्याचार, ५९. धरती, ६०. प्रेम की आवाज़. ६१. ऊंची, ६२. घण्टे की आवाज़, ६३. दुश्मन, ग़ैर (ब० व०), ६४. झूठ और अत्याचार, ६५. झूठ और वैमनस्य, ६६. कोना-कोना, ६७. कण-कण, ६८. छुटकारा, ६९. तमन्ना, ७०. निर्वाण का मतलब ।

तस्वीरे-हक़ीकत

'मुनव्वर' लखनवी

यह किसका पैकरे-जुल्मत-रुबा[1] एजाज[2] फ़रमा है
समाया जा रहा है कौन यह चश्मे-मुनव्वर[3] मे

तसव्वुर[4] किसकी बन्द आंखो को रंगे-ख्वास[5] देता है
निहा[6] है जन्नतें[7] किसके सुकूने[8]-रूहपरवर[9] मे

गुलिस्तां[10] देखकर किसको हुए जाते हैं शर्मिन्दा[11]
हुवैदा[12] यह लताफ़त[13] हो नहीं सकती गुले-तर[14] मे

मशामे-जा[15] मुअत्तर[16] है हवा से किसके दामन की
शिगुफ़्ता[17] फूल है गोया कंवल का हौज़े-कौसर[18] में

जुज़-ओ-कुल[19] का तअल्लुक[20] आईना है ज़ात से किसकी
ये क़तरे[21] मिल रहे है किसकी काविश[22] से समन्दर मे

बदल देता है फ़ितरत[23] आदमी की यह फ़ुसू[24] किसका
यह किसके सहर[25] से राशा[26] सा है दस्ते-सितमगर[27] मे

यह किसके जल्व:[28]-ए-दीदार से पैदा है कैफ़ीयत[29]
जलाले-मिहरे-ताबा[30] मे जमाले-माहे-अनवर[31] मे

१. अंधकार का भगाने वाला, २. चमत्कार करनेवाला, ३. प्रकाशमान आखे, ४. कल्पना, ५. विशेष रंग, ६. गुप्त, छुपा हुआ, ७. स्वर्ग, ८. शान्ति, ९. प्राणदायक, १०. उपवन, ११. लज्जित, १२. प्रकट, १३. कोमलता, १४. ताज़ा फूल, १५ रोम-रोम, १६. सुगंधित, १७. ताज़ा, १८. स्वर्ग की एक नहर, १९. अंग और पूर्ण, २०. सम्बन्ध, २१. बूंद, २२. प्रयत्न, २३. मनुष्य का स्वभाव, २४. अभिचार, २५. जादू, २६. कम्पन, २७. ज़ालिम के हाथ, २८. दर्शन, २९. मस्ती, ३०. चमकदार सूर्य का तेज, ३१. चन्द्रमा के प्रकाश का सौंदर्य ।

ख़ुदा लाखों का है यह देवता है गो[३२] हज़ारों का
न मस्जिद में मुक़ैयद[३३] है न है महबूस[३४] मन्दिर में

यह किसकी जुंबिशे-लब[३५] माने-ए-पैकारे-बाहम[३६] है
यह सन्नाटा सा क्यों छाया है जांबाज़ों[३७] के लश्कर[३८] में

उड़ाई हैं यह किसने धज्जियां मलबूसे-शाही[३९] की
मिला किसको निशाने-ख़ाक-ओ-ख़ूं[४०] देहीमो[४१]-अफ़सर में

तनआसानी[४२] हुई किसके लिए वजहे[४३]-गिरांजानी[४४]
नज़र आये निहां[४५] कांटे किसे फूलों के बिस्तर में

न कर पाया किसे काशी का इल्म-ओ-फ़ज़ल[४६] आसूदा[४७]
किसे उलझन हुई वेदों की तफ़सीरों[४८] के चक्कर में

रुलाया एक मर्दे-ज़ार[४९] ने बरसों लहू किसको
अजब[५०] तासीर[५१] थी बेकस[५२] की बीमारी के मंज़र[५३] में

तड़प उट्ठा मुसीबत देखकर यह कौन पीरी[५४] की
भरी थी मिस्ले-शोला[५५]आग किसके क़ल्बे[५६]-मुज़्तर[५७] में

•जनाज़ा देखना किसके लिए इक दर्से-इब्रत[५८] था
मआले-ज़िन्दगी[५९] से दर्द पैदा हो गया सर में

फ़रिश्ते दस्त बस्ता[६०] किसके गिर्दो-पेश[६१] फिरते हैं
यह हस्ती क्या है वो, सब जिसको गौतम बुद्ध कहते हैं

(माख़ूज़ अज़ 'कायनाते-दिल')

३२. यद्यपि, ३३. क़ैद, ३४. बंदी, ३५. होंठों का कम्पन, ३६. परस्पर युद्ध में बाधक, ३७. जान न्योछावर करनेवाले, ३८. सेना, फ़ौज, ३९. राजकीय लिबास, ४०. धून और रक्त का निशान, ४१. राजमुकुट, ४२. राहत, आराम, ४३. कारण, ४४. सख़्ती, ४५. छुपे हुए, ४६. ज्ञान, ४७. तृप्त, संतुष्ट, ४८. व्याख्या, टीका, ४९. दु:खी व्यक्ति, ५०. विचित्र, ५१. प्रभाव, असर, ५२. बेचारा, ५३. दृश्य, ५४. बुढ़ापा, ५५. अंगारों की तरह, ५६. दिल, ५७. बेचैन, ५८. शिक्षा, ५९. जीवन का परिणाम, ६०. हाथ जोड़े हुए, ६१. आसपास।

रूहे-गौतम

राजनारायण 'राज़'

मैं समझा था बन्धन टूटे
जनम मरन से मैं छूटा हूँ
लेकिन आज मिरी ख्वाहिश[1] है
इन्सां[2] के कालिब[3] मे ढलकर
मैं उनके हमराह[4] चलूं फिर
जिनकी रूह[5] दुखी बेहद[6] है
लेकिन यह इन्सा[7] कैसे है ?
अपने आप में गुम रहते है !
इनको पता कब इसका है कुछ
जिस जा है मेरी तस्वीरें[8]

सजे सजाये है बुत[9] मेरे
और किताबे जिनमे लिखी है
बाते मेरी मेरी गाथा
मेरी जात[10] की एक किरन भी
इनमे नही है, इनमे नही है

मै हू वहा जिस जा[11] होती है
इन्सानी[12] अनवार[13] की बारिश
जिससे कसाफत[14] धुल जाती है
मिलती है राहत[15] इन्सा को
जिससे परेशा[17] कर नही पाते
देव लडाई के झगडे के
मै हूँ वहा, जिस जा[18] सदमे[19] से
आँखे हो जाती है पुरनम[20]
उजड़े जब सिंदूर किसी का

१ इच्छा, २. मानव, ३, रूप, खोल, ४ साथ, ५. आत्मा, ६ अत्यधिक, ७ मनुष्य, ८. चित्र, ९. मूर्तियां, १०. अस्तित्व, ११. जगह, स्थान, १२ मानवीय, १३ प्रकाश, १४ वर्षा, १५. मैल, १६. आराम, १७. व्याकुल, १८. जगह १९. दुख, २०. गीली, अश्रुयुक्त ।

मैं हूँ वहां जिस जा पिघले है
बर्फ़ हज़ारों साल की जब जब
गर्म लहू[२१] इन्सां[२२] का गिरे है

मैं हूँ वहां, जिस जा समझे है
आदम[२३] अपने आप को इन्सां
अपना मसलक[२४] प्यार मुहब्बत

श्रद्धा के फूल

भगवान महावीर के चरणों में

दर्शनसिंह दुग्गल

अय मुहब्बत के पयामी[१], शान्ती के देवता
मंजिले[२]-इरफ़ां के हादी[३], रास्ती[४] के रहनुमा[५]

दिल चमक उट्ठे तिरे हुस्ने-सफ़ा[६] की धूप मे
मिल गया भगवान गोया[७] आदमी के रूप में

सल्तनत[८] को है छोड़कर, ठुकराके तख़्त[९]-ओ-ताज[१०] को
रख लिया तूने जहा में मारिफ़त[११] की लाज को

नौजवानी को है रिश्ता[१२] क्या, ख़ुशी के त्याग से
दिल ने लज़्ज़त[१३] ली मगर इश्क़े-ख़ुदा[१४] की आग से

२१. रक्त, २२. मनुष्य, २३. मानव, २४, धर्म ।

श्रद्धा के फल

१. संदेशवाहक, २. ज्ञान की मंज़िल, ३. नेता, उपदेशक, ४. सत्यता, सच्चाई, ५. मार्गदर्शक, ६. पवित्रता का सौंदर्य, ७. अर्थात्, यानी, ८. राजपाट, ९. सिंहासन, १०. राजमुकुट, ११. अध्यात्म, १२. सम्बन्ध. १३. आनंद, स्वाद, १४. ख़ुदा का प्रेम ।

दुख सहे तन पर तो पाकीजा[१५] तिरा मन हो गया
आग मे इतना तपा सोना कि कुन्दन हो गया

रूहे-पाकीजा[१६] पे नश्शा ज्ञान का तारी[१७] हुआ
फिर तिरी हिक्मत[१८] का दरिया[१९] हर तरफ जारी[२०] हुआ

चाद तारो से सिवा[२१] रौशन[२२] है यह ज़र्री[२३] उसूल[२४]
आदमी काटो मे भी घिर कर रहे जिस तरह फूल

अम्न से इन्सान की रूहो[२५] को मिलता है सुरूर[२६]
और अहिसा दिल को कर देता है इक शोले[२७] से तूर[२८]

एक है खल्के-खुदा[२९] इकरार[३०] करना चाहिए
आदमी को आदमी से प्यार करना चाहिए

आत्मा परमात्मा की ही तो जल्वादार[३१] है
आदमी सब फूल है ससार इक गुलज़ार[३२] है

त्याग क्या ? किस्मत बना लेने की इक तदबीर[३३] है
हाथ मे इन्सा[३४] के खुद इन्सान की तकदीर[३५] है

अम्न के अय देवता है यह घडी आलाम[३६] की
छा गई है सुब्हे-आलम[३७] पर सियाही शाम की

दे सदा-ए-रूहपरवर[३८] इक नयी तजीम[३९] की
फिर जरूरत है जमाने को तिरी तालीम[४०] की

१५ पवित्र, १६ पवित्र आत्मा, १७ छा गया, १८ बुद्धि, विज्ञान, १९ नदी, २० शुरू, २१. अधिक, २२ प्रकाशमान, २३. सुनहरी, २४ नियम, २५ आत्मा, २६ नशा, २७ अगारा, २८ एक पहाड जहा हजरत मूसा को खुदा की तजल्ली नजर आयी, २९. खुदा की सृष्टि, ३० स्वीकार, ३१ दर्शन देनेवाली, ३२ बागीचा, उपवन, ३३. उपाय, ३४ मनुष्य, ३५ भाग्य, ३६ कष्ट (ब० व०), ३७ विश्व का प्रात काल ३८ आत्मा को शात करने वाली आवाज, ३९ सगठन, ४० शिक्षा ।

महावीर स्वामी

'उन्वान' चिश्ती

बहुत दिन हुए इक थी जाते-गिरामी[1]
ज़माने में है जिसकी शोहरत[2] दवामी[3]
जगत का सहारा, अहिंसा पयामी[4]
वो खल्क़े-मुजस्सम[5] मुहब्बत का हामी[6]
अभी तक यह दुनिया है जिसको सलामी[7]
सिधारत का बेटा, महावीर स्वामी
महावीर स्वामी

इन्हीं की विलादत[8] के फ़ैज़-ओ-असर[9] से
हुआ हुक्म यह क़ुदरते-दादगर[10] से
कि अब इस क़दर[11] हुन[12] ज़माने में बरसे
न हरगिज़ कोई माल-ओ-दौलत को तरसे[13]
लिखा है मुवर्रिख़[14] ने भी आबे-ज़र[15] से
हुरूफ़े-जली[16] में वो इस्मे-गिरामी[17]
महावीर स्वामी

लिखा है कि जब आप तशरीफ़[18] लाये
ज़मीं[19] झूम पड़ी, आसमां जगमगाये
एरावत[20] से हाथी का मरकब[21] उड़ाये
हज़ार आँखें चश्मे-तमन्ना[22] बनाये
ज़ियारत[23] को ख़ुद इन्द्र भी जिसकी आये
वो था हुस्न में रश्के-माहे-तमामी[24]
महावीर स्वामी

१. भव्य हस्ती, २. प्रसिद्धि, ३. अमर, सदैव बनी रहनेवाली, ४. संदेश देनेवाला, ५. साकार शिष्टता, ६. समर्थक, ७. सलाम करनेवाली, ८. जन्म, ९. दया और प्रभाव, १०. ख़ुदा की क़ुदरत, ११. इतना, १२. सोना, १३. ललचाये, १४. इतिहासकार, १५. सोने के पानी, १६. बड़े अक्षरों में, १७. पवित्र नाम, १८. पधारे, १९. धरती, २०. इन्द्र का हाथी, २१. यान, २२. अभिलाषा की आंखें, २३. दर्शन, २४. जिससे पूर्णिमा का चांद भी ईर्ष्या करे।

महावीर ही के कदम की बदौलत[25]
चमक उट्ठी गोया[26] जमाने की क़िस्मत
जमीं[27] बनने की आस्मां[28] की थी हसरत[29]
बसद शान-ओ-शौकत,[30] बसद जाह-ओ-हशमत[31]
जिलौ[32] में चले जिसके इन्द्र-ओ-ऐरावत[33]
वो पाडक शिला की तरफ़ खुश खिरामी[34]
महावीर स्वामी

सरअन्दीप कदमों पे सर पे हिमाला
जगत में न हो उसका क्यों बोलबाला
अहिंसा को परमोधरम कहने वाला
यही है वो अरहन्त[35] जग में निराला
जो मशहूर[36] है ज्ञान दर्शन उजाला
उसी का है मुमताज[37] इस्मे-गिरामी[38]
महावीर स्वामी

इब्ने-मरियम

(हजरत ईसा)

दर्शनसिंह दुग्गल

इब्ने-मरियम[1]! रूह[2] की अजमत[3] का आईना है तू
तू अहिंसा का पयामी[4], अम्न का तू राहबर[5]

२५ प्रताप से, २६ यानी, अर्थात्, २७. धरती २८ आकाश, २९ अपूर्ण इच्छा, ३०. सैकड़ो वैभव के साथ, ३१. सैकडो ऐश्वर्य और वैभव के साथ, ३२ दामन, ३३. इन्द्र और उनका हाथी, ३४ मन्द गति से चलना, ३५ अरिहन्त, ३६ प्रसिद्ध, ३७ उच्च, प्रमुख, ३८. पवित्र नाम ।

इब्ने-मरियम

१. मरियम का बेटा, हज़रत ईसा, २ आत्मा, प्राण, ३. महानता, ४ सदेशवाहक, ५. मार्गदर्शक ।

हक़[६] की ख़ातिर[७] अहले-बातिल[८] से कभी खाया न ख़ौफ़[९]
मर्दुमआज़ारी[१०] को तूने जुर्मे-बेपायां[११] कहा

ज़ोरादस्ती[१२] से तुझे हल्का सा भी रिश्ता[१३] न था
कितनी जुरअत[१४] से नवा-ए-हक़[१५] किया तूने बलन्द[१६]

ताज कांटों का तिरे सर के लिये ज़ीनत[१७] बना
तेरी हिम्मत मुस्कराई रंज-ओ-ग़म[१८] के दार[१९] पर

तेरा अज़्मे-सरफ़रोशी[२०] रूह के मैदान में
जिस्मे-इन्सां[२१] को सिखाता है दिल आसाई[२२] की बात

वक़्त की रफ़्तार[२३] से आगे तिरा पैग़ाम[२४] है
सुब्ह[२५] जब बेदार[२६] होगी तो वही हंगाम[२७] है

जिस सहर[२८] को जाग उठेगी रूहे-इन्सां[२९] ख़्वाब[३०] से
आम होगा दहर[३१] में मिहर-ओ-मुहब्बत[३२] का रिवाज

सारी दुनिया रिश्त:-ए-इख़्लास[३३] में गुंध जायेगी
यह ज़मीं इक दिन जवाबे-आसमां हो जायेगी

६. न्याय, सत्य, ७. के लिए, ८. झूठे, ९. भय, १०. सबको कष्ट देना, ११. सबसे बड़ा अपराध, १२. अन्याय, जबरदस्ती, १३. सम्बन्ध, १४. हिम्मत, साहस, १५. सत्य की आवाज, १६. ऊंचा, १७. शोभा, १८. शोक और दुख, १९. फांसी, २०. सर कटाने का संकल्प, २१. मानव शरीर, २२. सबको सुख पहुंचाना, २३. गति, २४. संदेश, २५. सवेरा, प्रातःकाल, २६. जाग्रत, २७. कोलाहल, २८. प्रातः, २९. मानव की आत्मा, ३०. नींद, स्वप्न, ३१. दुनिया, ३२. दया और प्रेम, ३३. निष्ठा का बंधन।

क़सीदा नातिया[1]

'मोहसिन' काकोरवी

मिम्ते-काशी[2] से चला जानिबे-मथरा[3] बादल
अब्र[4] के दोश[5] पे लाती है सबा[6] गंगा जल

घर में अशनान करें सर्वकदाने-गोकुल[7]
जाके जमुना पे नहाना भी है इक तूल अमल[8]

ख़बर उड़ती हुई आई है महाबन मे अभी
कि चले आते है तीरथ को हवा पर बादल

न खुला आठ पहर मे कभी दो चार घडी
पन्द्रह रोज हुए पानी को मंगल मंगल

देखिये होगा श्रीकृष्ण का क्योंकर दर्शन
सीनः-ए-तंग[9] मे दिल गोपियो का है बेकल[10]

राखिया लेके सलोनो[11] की बिरहमन निकले
तार बारिश का तो टूटे कोई साअत[12] कोई पल

डूबने जाते है गगा मे ब..ारस वाले
नौजवानो का सनीचर है यह बुढ़वा मंगल

तहओ-बाला[13] किये देते है हवा के झोंके
बेड़े भादो के निकलते है भरे गंगा जल

१. छदोबद्ध स्तुति, २. काशी की दिशा, ३. मथुरा की ओर, ४ बादल. ५. कधे, ६. हवा, प्रातः-समीर, ७. गोकुल की लबे क़द की नारिया, ८. लम्बा काम, ९ तंग सीने, १०. व्याकुल, ११. रक्षा-बधन, श्रावण-पूर्णिमा, १२. घड़ी, १३. नष्ट, बरबाद ।

जोगिया भेस किये चर्ख[१४] लगाये है भभूत
या कि बैरागी है पर्वत पे बिछाये कम्बल

लहरें लेता है जो बिजली के मुकाबिल[१५] सब्जा[१६]
चर्ख[१७] पे बादला[१८] फैला है जमी[१९] पे मखमल

जुगनू फिरते है जो गुलबन मे तो आती है नजर
मुसहफे-गुल[२०] के हवाशी[२१] पे तिलाई[२२] जदवल[२३]

तख्ते-ताऊसि-ए-गुलशन[२४] पे है साया किये अब्र[२५]
चत्र खोले हुए फ़र्के-शहे-गुल पर[२६] सेमल

कितना बेकैद[२७] हुआ किस कदर आवारा फिरा
कोई मन्दिर न बचा इसमे न कोई स्थल

कभी गगा पे भटकता है कभी जमना पर
घाघरा पर कभी गुजरा कभी सू-ए-चम्बल[२८]

गिरते पडते हुए मस्ताना[२९] कहा रक्खा पाव
कि तसव्वुर[३०] भी वहा जा न सके सर के बल

यानी उस नूर[३१] के मैदान मे पहुँचा कि जहा
खिर्मने[३२]-बर्के[३३]-तजल्ली[३४] का लकब[३५] है बादल

कही तूबा[३६] कही कौसर[३७] कही फिरदौसे[३८]-बरी
कही बहती हुई नहरे-लबन[३९]-ओ-नहरे-असल[४०]

१४. आकाश, १५. सम्मुख, १६ हरियाली, १७ आकाश, १८ चमकीला तार, १९. धरती, २०. फूलो का ग्रथ, २१. हाशिया, २२. सुनहरी, २३ लकीर, २४. उपवन का मोर के आकार का सिहासन, २५. आकाश, २६. फूल के ललाट पर २७ आज़ाद, २८ चबल की ओर, २९. मदोन्मत्त, ३०. कल्पना, ३१. प्रकाश, ३२ खलिहान, ३३. बिजली, ३४. प्रकाश, ३५. उपाधि, ३६ स्वर्ग का एक वृक्ष, ३७. स्वर्ग मे बहने वाली नहर, ३८ स्वर्ग, ३९. दूध की नहर, ४०. शहद की नहर ।

कंजे-मख़फी[४१] के किसी सिम्त[४२] निहां[४३] तहख़ाने
इक तरफ मज़हरे-क़ुदरत[४४] के अयां[४५] शीशमहल

कहीं जिबरील[४६] हुकूमत पे कहीं इसराफ़ील[४७]
कहीं रिज़वां[४८] का कहीं साक़ि-ए-कौसर[४९] का अमल[५०]

बाग़े-तजीह[५१] में सरसब्ज़[५२] निहाले-तश्बीह[५३]
अंबिया[५४] जिसकी हैं शाखें उरफ़ा[५५] हैं कोंपल

गुले-खुशरंग[५६] रसूले-मदनी-ए-अरबी[५७]
जेबे-दामाने[५८] - अबद,[५९] तुर्र-ए-दस्तारे-अज़ल[६०]

न कोई उसका मुशाबा[६१] है न हमसर[६२] न नज़ीर[६३]
न कोई उसका ममासिल[६४] है न मुक़ाबिल[६५] न बदल

औजे-रफ़अत[६६] का क़मर[६७] नख़्ले-दोआलम[६८] का समर[६९]
बहरे-वहदत[७०] का गुहर[७१] चश्म-ए-कसरत[७२] का कँवल

मेहरे-तौहीद[७३] की ज़ौ[७४] औजे-शरफ़[७५] का महे-नौ[७६]
शम्-ए-ईजाद[७७] की लौ बज़्मे-रिसालत[७८] का कँवल

हफ़्त[७९] इक़लीमे-विलायत[८०] में शहे-आलीजाह[८१]
चार अतराफ़[८२] हिदायत[८३] में नबी-ए-मुर्सिल[८४]

जी में आता है लिखूं मतल-ए-बर्जस्ता[८५] अगर
वज्द[८६] में आके क़लम हाथ से जाए न उछल

४१. छुपा हुआ खज़ाना, ४२ ओर, ४३ छुपे हुए, ४४ प्रकृति का द्योतक, ४५ प्रकट, ४६ एक फरिश्ते का नाम, ४७. एक फरिश्ते का नाम, ४८ स्वर्ग का दरोगा, ४९ कौसर का साकी, ५० शासन, ५१ निर्गुण का बाग, ५२. हरा-भरा, ५३. चित्र से भरा वृक्ष, ५४ नबी, पैगम्बर, ५५ ज्ञानी, ५६ सुन्दर फल, ५७ हज़रत मुहम्मद, ५८ शोभा, ५९ अनन्तकाल का दामन, ६०. अनादि काल की पगडी का तुर्रा, ६१ तुल्य, समान, ६२ बराबर, ६३ उदाहरण, ६४ उस जैसा ६५. स्पर्धी ६६ ऊँचाई की चरम सीमा, ६७ चांद, ६८ दोनों लोक का वृक्ष, ६९ फल, ७०. एकत्व का समुद्र, ७१ मोती, ७२. अधिकता का स्रोत, ७३ अद्वैत का सूरज, ७४. प्रकाश, ७५ प्रतिष्ठा की ऊंचाई, ७६. नया चन्द्र, ७७ आविष्कार का चिराग, ७८. पैगम्बरी की महफिल, ७९. सात, ८० दुनियाएं, ८१ बादशाह, ८२. चारों तरफ, ८३. आदेश, ८४ वह नबी जिन पर ख़ुदा ने किताब भेजी, ८५ तुरन्त, ८६ मस्ती, झूमना।

मुन्तख़ब[८७] नुस्ख़ः-ए-वह्‌दत[८८] का यह था रोज़े-अज़ल[८९]
कि न अहमद[९०] का है सानी[९१] न अहद[९२] का अव्वल[९३]

दौरे-ख़ुरशीद[९४] की भी हश्र[९५] में हो जायेगी सुब्ह[९६]
ता अबद[९७] दौरे-मुहम्मद का है रोज़े-अव्वल[९८]

शबे-अस्रा[९९] में तजल्ली[१००] से रुख़े-अनवर[१०१] की
पड़ गयी गर्दने-रफ़रफ़[१०२] में सुनहरी हैकल[१०३]

लुत्फ़[१०४] से तेरे हुई शौकते-ईमां[१०५] मुहकम[१०६]
क़हर[१०७] से सल्तनते-कुफ़्र[१०८] हुई मुस्तासल[१०९]

जिस तरफ़ हाथ बढ़ें कुफ़्र[११०] के हट जायें क़दम
जिस जगह पांव रखे सज्दा करें लात-ओ-हुबल[१११]

है हक़ीक़त[११२] को मजाज़[११३] आपका हैरत[११४] का मुक़ाम[११५]
बेनियाज़ी[११६] को नियाज़[११७] आपका नाज़िश[११८] का महल

रफ़्अ[११९] होने का न था वह्‌दत-ओ-कसरत[१२०] का ख़िलाफ़[१२१]
मीम[१२२] अहमद ने किया आके यह क़िस्सा फ़ैसल[१२३]

'मोहसिन'[१२४] अब कीजिये गुलज़ारे-मुनाजात[१२५] की सैर
कि इजाबत[१२६] का चला आता है घिरता बादल

सबसे आला[१२७] तिरी सरकार है सबसे अफ़ज़ल[१२८]
मेरे ईमाने-मुफ़स्सिल[१२९] का यही है मुजमल[१३०]

८७. चुना हुआ, ८८. अद्वैत का नुस्ख़ा, ८९. पहला दिन, ९०. हज़रत मुहम्मद, ९१. द्वितीय, ९२. अल्लाह, ९३. प्रथम, ९४. सूर्य का चक्कर, ९५. प्रलय, ९६. सवेरा, ९७. अनतकाल तक ९८. प्रथम, ९९. मेराज की रात, १००. प्रकाश, १०१. प्रकाशमान मुख, १०२ बुर्राक़, १०३. ज़ंजीर, १०४. प्रेम, दया, १०५. ईमान की शान, १०६. मजबूत, १०७. प्रकोप, १०८. अधर्म का राज्य, १०९. उन्मूल, ११० अधर्म, १११. इस्लाम से पूर्व के दो अरबी देवता, ११२. सत्य, ११३. अधिकार, ११४. आश्चर्य, ११५. स्थान, ११६. निस्पृहता, ११७. परिचय, ११८. गर्व, ११९. दूर, १२०. एक और अनेक, १२१. मतभेद, १२२. हज़रत मुहम्मद, १२३. फ़ैसला, १२४. एहसान करने वाला, १२५. ख़ुदा की तारीफ़ का उपवन, १२६. स्वीकृति, १२७. श्रेष्ठ, १२८. श्रेष्ठ, १२९. विस्तृत ईमान, १३०. संक्षिप्त ।

है तमन्ना[131] कि रहे नात[132] से तेरी खाली
न मिरा शेर न क़तग्रा[133] न क़सीदा[134] न ग़ज़ल

दीन-ग्रो-दुनिया[135] में किसी का न सहारा हो मुझे
सिर्फ़ तेरा हो भरोसा तिरी क़ुव्वत[136] तिरा बल

ग्रारज़ू[137] है कि रहे ध्यान तिरा तादमे-मर्ग[138]
शक्ल[139] तेरी नज़र ग्राये मुझे, जब ग्राये-ग्रजल[140]

सफ़े-महशर[141] में तिरे साथ हो तेरे मद्दाह[142]
हाथ में हो यही मस्ताना क़सीदा[143] यह ग़ज़ल

कहें जिब्रील[144] इशारे से कि हां बिसमिल्ला[145]
सिम्ते-काशी[146] से चला जानिबे-मथरा[147] बादल

हज़रत मुहम्मद सलग्रम

ग्रल्ताफ़ हुसैन 'हाली'

वो नबियों[1] में रहमत[2] लक़ब[3] पाने वाला
मुरादें[4] ग़रीबों की बर[5] लाने वाला
मुसीबत में ग़ैरों[6] के काम ग्राने वाला
वो ग्रपने पराये का ग़म खाने वाला

फ़क़ारों का मलजा[7] ज़ईफ़ों[8] का मावा[9]
यतीमों[10] का वाली ग़ुलामों का मौला[11]

१३१. इच्छा, १३२. स्तुति, प्रशंसा, १३३. कवित्त, १३४. प्रशंसा-गीत, १३५. दुनिया ग्रौर परलोक, १३६. शक्ति, १३७. ग्राकांक्षा, १३८. मरते समय तक, १३९. सूरत, १४०. मौत, १४१. महशर की सफ़, १४२. प्रशंसक, १४३. प्रशंसा-गीत, १४४. एक फ़रिश्ता, १४५. साथ नाम ग्रल्लाह के, १४६. काशी की ग्रोर से, १४७. मथुरा की ग्रोर।

हज़रत मुहम्मद सलग्रम

१. पैग़म्बरों, २. दया, ३. उपाधि, ४. इच्छाएं, ५. पूरी करने वाला, ६. परायों, ७. रक्षा-स्थान, ८. वृद्ध, ९. शरण, १०. ग्रनाथ, ११. स्वामी।

ख़ताकार[१२] से दर गुज़र[१३] करने वाला
बदअन्देश[१४] के दिल में घर करने वाला
मुफ़ासिद[१५] का ज़ेर-ओ-ज़बर[१६] करने वाला
क़बाइल[१७] को शीर-ओ-शकर[१८] करने वाला

उतर कर हिरा[१९] से सू-ए-क़ौम[२०] आया
और इक नुस्ख़:-ए-कीमिया[२१] साथ लाया

मिसे-ख़ाम[२२] को जिसने कुन्दन बनाया
खरा और खोटा अलग कर दिखाया
अरब जिस पे क़रनों[२३] से था जहल[२४] छाया
पलट दी बस इक आन मे उसकी काया

रहा डर न बेड़े को मौजे-बला[२५] का
इधर से उधर फिर गया रुख़[२६] हवा का

वो बिजली का कड़का था या सौत-ए-हादी[२७]
अरब की ज़मी[२८] जिसने सारी हिला दी
नई इक लगन सबके दिल मे लगा दी
इक आवाज में सोती बस्ती जगा दी

पड़ा हर तरफ़ गुल[२९] यह पैगामे-हक़[३०] से
कि गूंज उट्ठे दश्त-ओ-जबल[३१] नामे हक़[३२] से

सबक़ फिर शरीअत[३३] का उनको पढाया
हक़ीकत[३४] का गुर[३५] उनको इक इक बताया
ज़माने[३६] के बिगड़े हुओं को बनाया
बहुत दिन के सोते हुओं को जगाया

खुले थे न जो राज़[३७] अब तक जहां[३८] पर
वो दिखला दिये एक परदा उठाकर

१२. अपराधी, १३. टाल जाना, १४. बुरा चाहने वाला, १५. उपद्रवी, १६. नष्ट, १७. समुदाय, १८. एक, १९. एक पहाड़, २०. क़ौम की तरफ़, २१. कीमिया का नुस्ख़ा, २२. तांबा, २३. युगों से, २४. अज्ञान, २५. विपत्ति, की मौज, २६. बहाव, २७. मार्गदर्शक की आवाज़, २८. धरती, २९. शोर, कोलाहल, ३०. खुदा का संदेश, ३१. जंगल और पर्वत, ३२. ख़ुदा का नाम, ३३. धर्मशास्त्र, ३४. सत्य, ३५. रहस्य, ३६. समय, ३७. रहस्य, ३८. संसार ।

किसी को अज़ल[39] का न था याद पैमां[40]
भुलाये थे बन्दों ने मालिक के फ़रमां[41]
जमाने में था दौरे-सहबा-ए-बतलां[42]
मै-ए-हक़[43] से महरम[44] न थी बज्मे-दौरां[45]

अछूता था तौहीद[46] का जाम[47] अब तक
ख़ुमे-मारिफ़त[48] का था मुंह ख़ाम[49] अब तक

न वाक़िफ़[50] थे इन्सां[51] क़ज़ा और जज़ा[52] से
न आगाह[53] थे मब्दा-ओ-मुन्तेहा[54] से
लगाई थी एक इक ने लौ[55] मासिवा[56] से
पड़े थे बहुत दूर बन्दे[57] ख़ुदा से

यह सुनते ही थर्रा गया गल्ला[58] सारा
यह राई[59] ने ललकार कर जब पुकारा

कि है जाते-वाहिद[60] इबादत[61] के लायक़[62]
ज़बां और दिल की शहादत[63] के लायक़[64]
उसी के हैं फ़रमान[65] ताअ़त[66] के लायक़
उसी की है सरकार ख़िदमत[67] के लायक़

लगाओ तो लौ[68] उससे अपनी लगाओ
झुकाओ तो सर उसके आगे झुकाओ

३९. अनादिकाल, ४०. वादा. ४१. शाही हुक्म, ४२. झूठ की शराब का दौर. ४३. सत्य की मदिरा, ४४. परिचित, ४५. समय की महफ़िल, ४६. अद्वैतवाद, ४७. प्याला, ४८. अध्यात्म का घड़ा, ४९. अपक्व, ५० परिचित, ५१. मनुष्य, ५२. भाग्य और प्रत्युपकार, ५३. परिचित, ५४. आरम्भ और अंत, ५५. ध्यान, ५६ माया ५७. भक्त ५८. रेवड़, ५९. भेड़े चराने वाला, ६०. एकमात्र अस्तित्व, ६१. आराधना, ६२. योग्य, पात्र, ६३. धार्मिक मनुष्य का बयान, गवाही, ६४. योग्य, ६५. आदेश, ६६. आज्ञापालन, ६७ सेवा, ६८ ध्यान।

उसी पर हमेशा भरोसा करो तुम
उसी के सदा इश्क़[६९] का दम भरो तुम
उसी के ग़ज़ब[७०] से डरो गर[७१] डरो तुम
उसी की तलब[७२] में मरो जब मरो तुम

मुबर्रा है[७३] शिरकत[७४] से उसकी खुदाई
नहीं उसके आगे किसी को बड़ाई

इसी तरह दिल उनका एक इक से तोडा
हर इक क़िबलः-ए-कज[७५] से मुह उनका मोडा
कहीं मासिवा[७६] का इलाका[७७] न छोडा
खुदावन्द से रिश्ता बन्दों का जोड़ा

कभी के जो फिरते थे मालिक से भागे
दिये सर झुका उनके मालिक के आगे

('मद्दो जजरे-इस्लाम' से उद्धृत)

हज़रत मुहम्मद

दर्शनसिंह दुग्गल

रूहे-इन्सा[१] को हकीक़त[२] से मिलाने वाले
मरहबा[३] ! नग़्मः-ए-तौहीद[४] सुनाने वाले

दौर पर दौर चले वाद-ए-इख़लास[५] का फिर
मुन्तज़िर[६] बैठे है सब पीने पिलाने वाले

६९. प्रेम, ७०. प्रकोप, ७१ यदि, ७२. याचना, इच्छा, ७३. पाक, ७४ साझा, ७५ ग़लत क़िब्ला, ७६. माया, ७७. रिश्ता।

हज़रत मुहम्मद

१. इन्सान की रूह, २. सत्य, ख़ुदा, ३. धन्य, ४. अद्वैत का गीत, ५ नि:स्वार्थता का वादा, ६. प्रतीक्षा में।

कर दे बेदार[७] ज़रा फिर से ज़मीरे-इनसां[८]
ख़्वाबे-ग़फ़लत[९] से ज़माने[१०] को जगाने वाले

अह्ले-दिल[११] भूल नहीं सकते हैं एहसां[१२] तेरा
ग़म की मारी हुई दुनिया को हंसाने वाले

क्यों न दम तेरा भरें अह्ले-विला[१३] अह्ले-वफ़ा[१४]
नक़्श[१५] उलफ़त[१६] का हर इक दिल में बिठाने वाले

किश्ति-ए-ज़ीस्त[१७] है तूफ़ां[१८] में बचा ले इसको
डूबती नाव को साहिल[१९] पे लगाने वाले

ख़ाके-पा[२०] को तिरी अय नूरे-ख़ुदा[२१] के हामिल[२२]
सुर्मः-ए-चश्म[२३] बनाते हैं बनाने वाले

हम फ़क़ीरों पे भी हो जाये तिरा लुत्फ़-ओ-करम[२४]
बार[२५] हंस हंस के ग़रीबों का उठाने वाले

लौ[२६] लगाये हुए बैठे हैं गुज़रगाहों[२७] में
नक़्शे-पा[२८] को तिरे आँखों से लगाने वाले

बन्दगी[२९] तेरी करूं मुझको यह तौफ़ीक़[३०] तो बख़्श[३१]
वादः-ए-रोज़े-अज़ल[३२] याद दिलाने वाले

बख़्ते[३३]-'दर्शन' पे भी इक बार नज़र हो जाये
बिगड़ी तक़दीर ज़माने की बनाने वाले

७. जाग्रत, ८. मनुष्य का अंतःकरण, ९. बेहोशी की नींद, १०. संसार, ११. दिलवाले, १२. एहसान, १३. प्रेमी, १४. वफ़ादार, १५. निशान, १६. प्रेम, १७. जीवन-नैया, १८. तूफ़ान, १९. किनारा, २०. पैर की धूल, २१. ख़ुदा का प्रकाश, २२. वाहक, उठाने वाला, २३. आँखों का सुरमा, २४. दया, प्रेम, २५. बोझ, २६. ध्यान, २७. मार्ग, २८. पैरों के निशान, २९. इबादत, आराधना, ३०. साहस, हिम्मत, ३१. प्रदान कर ३२. हश्र के दिन का वादा, ३३. दर्शन का भाग्य।

हुसैन अलैहिस्सलाम

'जोश' मलीहाबादी

तारीख़[1] दे रही है यह आवाज़ दम ब दम[2]
दश्ते-सबात-ओ-अज़्म[3] है दश्ते-बला-ओ-ग़म[4]
सब्रे-मसीह[5]-ओ-जुरअते-सुक़रात[6] की क़सम
इस राह में है सिर्फ़ इक इन्सान का क़दम

जिसकी रगों[7] में आतिशे-बदर-ओ-हुनैन[8] है
जिस सूरमा का इस्मे-गिरामी[9] हुसैन है

जो साहिबे-मिजाजे-नबूवत[10] था वो हुसैन
जो वारिसे-ज़मीरे-रिसालत[11] था वो हुसैन
जो ख़िलवति-ए-शाहिदे-क़ुदरत[12] था वो हुसैन
जिसका वुजूद[13], फ़ख्रे-मशीयत[14] था वो हुसैन

साँचे में ढालने के लिए कायनात[15] को
जो तोलता था नोके-मिज़ा[16] पर हयात[17] को

जो इक निशाने-तिशन: दहानी[18] था वो हुसैन
गेती[19] पे अर्श[20] की जो निशानी था वो हुसैन

१. इतिहास २. हर समय, ३. साहस और दृढ़ता का मैदान, ४. विपत्ति और शोक का मैदान, ५. हजरत ईसा का धैर्य, ६. सुकरात का साहस, ७. धमनियां, ८. इस्लाम की दो बड़ी लड़ाइयाँ, ९. पवित्र नाम, १०. नबियों का स्वभाव रखने वाला, ११. रसूल की अंतरात्मा का उत्तराधिकारी, १२. क़ुदरत का गवाह, १३. अस्तित्व, १४. ईश्वरेच्छा का गर्व, १५. ब्रह्माण्ड, १६. पलक की नोक, १७. जीवन, १८. प्यास का प्रतीक. १९. धरती, २०. आकाश ।

जो खुल्द[21] का ग्रमीरे-जवानी[22] था वो हुसैन
जो इक मने-जदीद[23] का बानी[24] था वो हुसैन

जिसका लहू[25] तलातुमे-पिन्हाँ[26] लिये हुए
हर बूंद मे था नूह[27] का तूफां[28] लिये हुए

जो कारवाने-ग्रज्म[29] का रहबर था वो हुसैन
खुद ग्रपने खून का जो शनावर[30] था वो हुसैन
इक दीने-ताजा[31] का जो पयम्बर[32] था वो हुसैन
जो कर्बला का दावरे-महशर[33] था वो हुसैन

जिसकी नजर पे शेवा-ए-हक[34] का मदार[35] था
जो रूहे-इंकिलाब[36] का परवर्दिगार[37] था

हां, ग्रब भी जो मिनारा-ए-ग्रजमत[38] है वो हुसैन
जिसकी निगाह, मर्गे-हुकूमत[39] है वो हुसैन
ग्रब भी जो महवे-दर्स-बगावत[40] है वो हुसैन
ग्रादम[41] की जो दलीले-शराफत[42] है वो हुसैन

वाहिद[43] जो इक नमूना है जिब्हे-ग्रजीम[44] का
शाहिद[45] है जो खुदा के मजाके-सलीम[46] का

पानी मे तीन रोज[47] हुए जिसके लब[48] न तर[49]
तेग-ग्रो-तबर[50] को सौप दिया जिसने घर का घर
जो मर गया जमीर की ग्रजमत[51] के नाम पर
जिल्लत[52] के ग्रास्तां[53] पे झुकाया मगर न सर

ली जिसने सांस रिश्ता-ए-शाही[54] को तोडकर
जिसने कलाई मौत की रख दी मरोड कर

२१. स्वर्ग, २२ जवानी का सरदार, २३ वर्तमान काल, २४. प्रवर्तक २५ लहू, २६. छुपा हुग्रा तूफान, २७ एक पैगम्बर, २८ तूफान, २९. संकल्प का कारवां, ३०. तैराक, ३१ नया धर्म, ३२ नबी, ३३ हश्र के दिन न्याय करने वाला, ३४. सत्य का चलन, ३५. ग्राधार, ३६ क्रान्ति की रूह, ३७. खुदा, ३८ महानता का मीनार, ३९. हुकूमत की मौत, ४०. बगावत के पाठ मे लीन, ४१ मानव, ४२ शराफत का सबूत, ४३. एकमात्र, ४४. महान् कुरबानी, ४५. गवाह, ४६. श्रेष्ठ ग्रभिरुचि, ४७ दिन, ४८. होठ, ४९. गीले, ५०. तलवार ग्रौर फरसा, ५१ महानता, ५२. ग्रपमान, ५३ चौखट, ५४. राजपाट का सम्बन्ध ।

जिसकी जबीं[५५] पे कज[५६] है खुद अपनें लहू[५७] का ताज[५८]
जो मर्ग-ओ-ज़िन्दगी[५९] का है इक तुरफ़ा[६०] इम्तिज़ाज[६१]
सर दे दिया मगर न दिया ज़ुल्म[६२] को ख़िराज[६३]
जिसके लहू ने रखली तमाम अम्बिया[६४] की लाज

सुनता न कोई दहर[६५] में सिद्क़-ओ-सफ़ा[६६] की बात
जिस मुर्दे-सरफ़रोश[६७] ने रख ली ख़ुदा की लाज

हां अय हुसैन तिश्नः-ओ-रंजूर[६८] 'अस्सलाम[६९]
अय मेहमाने-अर्सा-ए-बेनूर[७०] 'अस्सलाम
अय शम्ए-हल्क़ः-ए-शब आशूर[७१] 'अस्सलाम
अय सीनः-ए-हयात[७२] के नासूर[७३] 'अस्सलाम

अय साहिले-फ़ुरात[७४] के प्यासे, तिरे निसार[७५]
अय आख़िरी नबी[७६] के नवासे,[७७] तिरे निसार

हां अय हुसैन ! इब्ने-अली,[७८] रहबरे-अनाम[७९]
अय मिम्बरे-ख़ुदी[८०] के हयातआफ़री[८१] पयाम[८२]
अय नुत्क़े-ज़िन्दगी[८३] के मुक़द्दसतरीन[८४] नाम
अय चर्खे-इंक़िलाब[८५] के अब्रे-जवां[८६] ख़िराम[८७]

ग़ाज़ा[८८] है तेरा खून, रुखे-कायनात[८९] का
हर क़तरा[९०] कोहे-नूर है ताजे-हयात[९१] का

५५. ललाट, ५६. टेढ़ा, ५७. रक्त, ५८. मुकुट, ५९. जीवन-मृत्यु, ६०. विचित्र, ६१. सम्मिश्रण, ६२. अत्याचार, ६३. लगान, ६४. नबी (ब० व०) पैग़म्बर, ६५. दुनिया, ६६. सच्चाई और पवित्रता, ६७. बहादुर, ६८. प्यासा और बीमार. ६९. नतमस्तक, ७०. अंधेरे मैदान का मेहमान, ७१. इमाम हुसैन के जीवन की आख़िरी रात, ७२. जीवन का वक्षस्थल, ७३. बहता हुआ ज़ख़्म, ७४. फ़ुरात नदी का किनारा, ७५. न्यौछावर, ७६. पैग़म्बर, ७७. नाती, ७८. अली का बेटा, ७९. जन नेता, ८०. अहं का मिम्बर, ८१. जीवनदायक, ८२. संदेश, ८३. जीवनवाणी, ८४. पवित्र, ८५. इंक़लाब का गगन, ८६. जवान बादल, ८७. मंद गति, ८८. पाउडर, ८९. ब्रह्माण्ड का चेहरा, ९०. बूंद, ९१. जीवन का मुकुट ।

फिर हक़[९२] है,' आफ़ताबे-लबे[९३]-बाम अय हुसैन
फिर बज़्मे-आब-ओ-गिल[९४] में है कोहराम[९५] अय हुसैन
फिर ज़िन्दगी है सुस्त-ओ-सुबुकगाम[९६] अय हुसैन
फिर हुर्रियत[९७] है मूरिदे-इल्ज़ाम[९८] अय हुसैन

जौके-फ़साद[९९]-ओ-वल्वल:-ए-शर[१००] लिये हुए
फिर अस्रे-नौ[१०१] के शिम्र[१०२] हैं ख़ंजर[१०३] लिये हुए

अय जानशीने[१०४]-हैदरे-करार[१०५], अलमदद[१०६]
अय मनचलों के क़ाफ़लासालार[१०७] अलमदद
अय अम्रे-हक़[१०८] की गर्मि-ए-बाज़ार[१०९] अलमदद
अय जिन्से-ज़िन्दगी[११०] के ख़रीदार[१११] अलमदद

दुनिया तिरी नज़ीरे-शहादत[११२] लिये हुए
अब तक खड़ी है शम्-ए-हिदायत[११३] लिये हुए

('हुसैन और इंकिलाब' से उद्धृत)

९२. सत्य, ९३. डूबता हुआ सूरज, ९४. पानी और मिट्टी की महफ़िल—दुनिया, ९५. कोलाहल, ९६. मंद गति, ९७. आज़ादी, ९८. अपराधी, दोषी, ९९. फ़साद की रुचि, १००. उपद्रव का जोश, १०१. वर्तमान, १०२. इमाम हुसैन का क़ातिल, १०३. छुरा, १०४. उत्तराधिकारी, १०५. हज़रत अली, १०६. हमारी मदद कर, १०७. क़ाफ़ले का सरदार, १०८. सच्चा काम, १०९. बाज़ार की गर्मी, ११०. जीवन-रूपी वस्तु, १११. ग्राहक, ११२. शहादत की मिसाल, ११३. आदेश का चिराग़।

आवाज़े-हक़

(हज़रत ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती)

दर्शनसिंह दुग्गल

मिली थी ख़ाक[1] के पैकर[2] को रूहे-इश्क[3]-ओ-दिलदारी[4]
ज़मीनो-आसमां[5] से जीस्त[6] रखती थी शनासाई[7]
सलाम अय रूहे-दानाई[8]

तिरे दरबार[9] में घुलती थी गर्दे-जिस्मे-इंसानी[10]
तेरी निकहत[11] से जाग उठता था अरमाने-दिलआसाई[12]
सलाम अय रूहे-दानाई

दयारे-हिन्द[13] के हर फूल में खुशबू[14] मिली तेरी
कि यह धरती हर इक खुशबू को खुद[15] में जज़्ब[16] करती है
इसी बाइस[17] तो है यह सरज़मीं[18] तस्वीरे-रानाई[19]
सलाम अय रूहे-दानाई

यह धरती पाक रूहों[20] की तमन्नाओं[21] का मसकन[22] है
यह धरती गर्म भी है सर्द[23] भी, शोला[24] भी शबनम[25] भी
हज़ारों अहले-दानिश[26] से है बढ़कर या के सौदाई[27]
सलाम अय रूहे-दानाई

१. धूल, २. आकार, ३. प्रेम की आत्मा, ४ धैर्य, दिलासा, ५. धरती और आकाश, ६ जीवन, ७. जान-पहचान, ८. अक़्लमन्दी की रूह, ९ घर, १०. मानव-शरीर की धूल, ११. सुगंध, १२. दिल रखने का अरमान, १३. भारत की धरती, १४. सुगंध, १५. स्वयं, १६. सोख लेना, १७. कारण, १८. धरती, १९. सौंदर्य का चित्र, २०. पवित्र आत्मा, २१. आकांक्षा, २२ घर, निवास-स्थान, २३. ठण्डी, २४. ज्वाला, २५. ओस, २६. बुद्धिमान, विद्वान्, पढ़े-लिखे, २७. पागल।

मुबारक[२८] यह जमीं जिसमे तिरा जिस्म[२९] आरमीदा[३०] है
तिरे मदफन[३१] से है चश्मा[३२] रवा[३३] वहदतपरस्ती[३४] का
तिरे जर्रो[३५] को चूमे, सुब्हे-गर्दू[३६] है तमन्नाई[३७]
सलाम अय रूहे-दानाई

रौशनी की लकीर

'रौनक' दकनी सीमाबी

जबीने[१]-इज्ज पे नख्वत[२] की खिच गई जो लकीर
हुई अंधेरो मे गुम सरजमीने-बर्रे-सगीर[३]

रहा न फिर कोई तमईजे-नेक-ओ-बद[४] बाकी
पडी खिरद[५] के जो पाओ मे जहल[६] की जजीर

हुआ जो माइले-ईजा[७] गुरूरे-फितनातराज[८]
सियाही[९] किब्र[१०] की छाने लगी बरू-ए-जमीर[११]

हुई जो खोखली तकवा[१२] की सारी बुनियादे[१३]
तो जुहद[१४] भी हुआ बेमग्ज[१५] और बेतासीर[१६]

२८ धन्य, २९ शरीर, ३० दफ्न, ३१ कब्र ३२. स्रोत, ३३ जारी, ३४ अद्वैत की पूजा, ३५ कण, ३६ आकाश मे आनेवाली सुबह, ३७. आकांक्षी।

रौशनी की लकीर

१ विनम्र ललाट, २ अहकार, ३ महाद्वीप की धरती, ४ अच्छे-बुरे का बोध ५. बुद्धि, ६ मूर्खता, जहालत, ७ दुख देने की ओर प्रवृ , ८. धूर्त का घमण्ड, ९. अधेरा, १०. अहकार, ११. अन्त करण के चेहरे पर, १२. सयम, १३. जडे, १४ परहेजगारी, निस्पृहता, १५. बिना मस्तिष्क, १६. बेअसर।

गिरी अंधेरों पे बातिल[१७] की बर्क़[१८] आख़िरकार
उफ़ुक़[१९] से उभरी बसदजाह[२०] रौशनी की लकीर

मक़ामे[२१]-हज़रते-ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती
हुआ जो ख़ित्त:[२२]-ए-अजमेर पर ज़हूरपिज़ीर[२३]

फ़ज़ा[२४] में परचमे-इस्लाम[२५] लहलहाने लगा
तो गूंज उट्ठा हर इक सिम्त[२६] नार:-ए-तकबीर[२७]

मिला है क़ुत्बे-मशाइख़[२८] का हक़नवाज़[२९] लक़ब[३०]
लक़ब वो जिसका बमुश्किल है इस जहां में नज़ीर[३१]

रवां[३२] था फ़ैज़े-क़दूमे-बुख़ारी-ओ-मख़दूम[३३]
तुम्हारा फ़ैज़[३४] मगर था बलीग़[३५]-ओ-पुरतासीर[३६]

तुम्हारा सोज़े-दरूं[३७] लाइलाहाइल्ललल्ला[३८]
तुम्हारे दिल का सुकूं[३९] है क़ुरआन की तफ़्सीर[४०]

अता[४१] हुआ वो तुम्हें इक़्तिदारे-रूहानी[४२]
वो इक़्तिदार जो लुत्फ़-ओ-करम[४३] से है ताबीर[४४]

१७. झूठ, १८. बिजली, १९. क्षितिज, २०. सौजगह, २१. स्थान, २२. क्षेत्र, २३. प्रकट, २४. वातावरण, २५. इस्लाम का झण्डा, २६. दिशा, २७. अल्लाहोअकबर का नारा, २८. शेखों का ध्रुवतारा, २९. उपयुक्त, ३०. उपाधि, ३१. उदाहरण, मिसाल, ३२. प्रवाहित, ३३. बुख़ारी और मख़दूम के चरणों का प्रभाव, ३४. प्रताप, ३५. ख़ूब बयान, ३६. प्रभावपूर्ण, ३७. दिल का दर्द, ३८. अल्लाह एक है, ३९. शांति, ४०. व्याख्या, ४१. प्रदान, ४२. आध्यात्मिक प्रभुत्व, ४३. दया, ४४. विवरण।

निज़ामुद्दीन औलिया

डाक्टर मुहम्मद इकबाल

फरिश्ते पढते हैं जिसको वो नाम है तरा
बडी जनाब[1] तिरी, फ़ैज[2] आम[3] है तेरा

तिरे वुजूद[4] मे रौशन[5] है राहे-मंजिले-शौक[6]
दियारे-इश्क[7] का मुसहफ़[8] कलाम[9] है तेरा

निहा[10] है तेरी मुहब्बत मे रगे-महबूबी[11]
बडी है शान, बडा एहतिमाम[12] है तेरा

खरोशे[13]-मैक्दः-ए-शौक[14] है तिरे दम से
तलब[15] हो फ़ुक्र[16] को जिसकी वो जाम[17] है तेरा

सितारे इश्क[18] के तेरी कशिश[19] से है कायम[20]
निजामे-मिहर[21] की सूरत निजाम[22] है तेरा

अगर सियाह दिलम दागे-लालाज़ारे तो अम[23]
वगर कुशादा जबीनम गुले-बहारे तो अम[24]

१ ड्योढी, द्वार, २. उदारता, ३ सबके लिए, ४ अस्तित्व, ५ प्रकाशित ६ अभिलाषा की मंज़िल का मार्ग, ७. प्रेम का घर (ब० व०), ८ धर्म-ग्रथ, ९ कथन प्रवचन, १० गुप्त, ११. प्रेमपात्र का रग, १२. व्यवस्था, १३ कोलाहल, १४ शौक की मधुशाला, १५ प्यास, १६. फकीरी, १७ प्याला १८ प्रेम, १९. आकर्षण, २०. स्थित, २१. सूरज का विधान, २२. व्यवस्था, २३. अगर मेरा दिल काला है तो मैं तेरे बाग़ के लाले के फूलो के दिल का दाग हू, २४ अगर मेरा ललाट चमक रहा है तो मैं तेरी बहार का फूल हू ।

महबूबे-इलाही[१]

(हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया)

दर्शनसिंह दुग्गल

हर एक फ़र्क़[२] की ख़ातिर[३] है आस्ताना[४] तिरा
सभी ने दिल की मुरादें[५] यहा से पाई है
तिरे क़दम की बदौलत[६] ज़मीने-पाके-वतन[७]
दियारे[८]-शम्स-ओ-क़मर[९] से भी सर बुलन्द[१०] हुई
दिया वो रूह[११] का पैग़ाम[१२] अहले-दुनिया[१३] को
कि ज़िन्दगी के अंधेरो में रौशनी[१४] जागी
हयात[१५] क्या है, तबस्सुम[१६] ख़ुलूसे-बातिन[१७] का
ज़माना क्या है, सहर[१८] आरिफ़ाना[१९] मस्ती की
तिरे पयाम[२०] से रौशन[२१] है महफ़िले-हस्ती[२२]
तिरे कलाम[२३] से सरशार[२४] है बशर[२५] की हयात[२६]
कोई तो बात है जिसने दिलों को राम किया[२७]
कोई तो जज़्ब[२८] है जिसने जहान को खींचा

ख़ुदा करे कि दिल उल्फ़त[२९] का जाम[३०] हो जाये
तिरी शराब ज़माने मे आम[३१] हो जाये

१. ख़ुदा का महबूब, २. माथा, ललाट, ३. के लिए, ४. चौखट, ५. अभिलाषाए, ६. प्रताप से, ७. देश की पवित्र धरती, ८. देश, नगर, ९. चाद-सूरज, १०. ऊची, ११. आत्मा, १२. सन्देश, १३. दुनिया वाले, १४. प्रकाश, १५. जीवन, १६. मुस्कराहट, १७. अन्तःकरण की निष्ठा, १८. जादू, १९. ज्ञान की मस्ती, २०. सन्देश, २१. प्रकाशमान, २२. अस्तित्व की महफ़िल, २३. कथन, प्रवचन, २४. परिपूर्ण, २५. इंसान, २६. जीवन, २७. वशीभूत, २८. आकर्षण, २९. प्रेम, ३०. प्याला, ३१. हर एक के लिए।

गुरु नानक

'नजीर' अकबराबादी

है कहते नानक शाह जिन्हें वो पूरे हैं आगाह[1] गुरु
वो कामिल[2] रहबर[3] जग में है, यूं रौशन जैसे माह[4] गुरु
मकसूद[5], मुराद[6], उमीद[7] सभी बर लाते हैं दिलख्वाह[8] गुरु
नित लुत्फ-ओ-करम[9] से करते हैं हम लोगों का निर्वाह गुरु

इस बख्शिश[10] के इस अजमत[11] के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अर्दास[12] करो और हर दम बोलो वाह गुरु

हर आन दिलों बिच पाया[13] अपने जो ध्यान गुरु का धरते हैं
और सेवक होकर उनके ही, हर सूरत[14] बीच कहते हैं
गुरु अपनी लुत्फ-ओ-इनायत[15] से सुख चैन उन्हें दिखलाते हैं
खुश रखते हैं हर हाल उन्हें सब तन मन का काज बनाते हैं

इस बख्शिश के, इस अजमत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अर्दास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

दिन रात जिन्होंने यां दिल बिच है याद गुरु से काम लिया
सब मन के मकसद[16] भर पाये, खुशवक्ती[17] का हंगाम[18] लिया
दुख दर्द में अपने ध्यान लगा जिस वक्त गुरु का नाम लिया
पल[19] बीच गुरु ने आन उन्हें खुशहाल[20] किया और थाम लिया

इस बख्शिश के इस अजमत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अर्दास करो और हरदम बोलो वाह गुरु

१ परिचित, २ पूर्ण, दक्ष, ३ मार्गदर्शक, ४ चांद, ५ उद्देश्य ६. इच्छा, ७ आशा, ८ दिल की ख्वाहिश, ९ दया और प्रेम, १० उदारता ११. महानता, १२ प्रार्थना, १३. दिलों के बीच, दिल में, १४ हर हाल में, १५ प्रेम और कृपा, १६. उद्देश्य, १७ अच्छा वक्त, १८. समय, १९ क्षण-भर में, २०. समृद्ध ।

जो हर दम उनसे ध्यान लगा उम्मीद[२१] करम[२२] की करते हैं
वो उन पर लुत्फ़-ओ-इनायत[२३] से हर आन[२४] तवज्जुह[२५] करते हैं
अस्बाब[२६] ख़ुशी और ख़ूबी के घर बीच उन्हूं के भरते हैं
आनन्द इनायत[२७] करते हैं, सब मन की चिन्ता हरते हैं

इस बख़्शिश के इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अर्दास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

जो लुत्फ़-ओ-इनायत[२८] उनमें हैं कब वस्फ़[२९] किसी से उनका हो
वो लुत्फ़-ओ-करम[३०] जो करते हैं हर चार तरफ़ हैं ज़ाहिर[३१] वो
अल्ताफ़[३२] जिन्हूं पर हैं उनके, सोख़ूबी हासिल[३३] है उनको
हर आन[३४] 'नज़ीर' अब यां तुम भी बाबा नानक शाह कहो

इस बख़्शिश के, इस अज़मत के हैं बाबा नानक शाह गुरु
सब सीस नवा अर्दास करो और हर दम बोलो वाह गुरु

नानक

डाक्टर इक़बाल

क़ौम[१] ने पैग़ामे-गौतम[२] की ज़रा परवा न की
क़द्र[३] पहचानी न अपने गौहरे-यकदाना[४] की

आह, बदक़िस्मत रहे आवाज़े-हक़[५] से बेख़बर[६]
ग़ाफ़िल[७] अपने फल का शीरीनी[८] से होता है शजर[९]

२१. आशा, २२. दया, २३. प्रेम और दया, २४. क्षण, २५. ध्यान, २६. सामान, २७. दया, २८. प्रेम और दया, २९. प्रशंसा, गुणगान, ३०. प्रेम और दया, ३१. प्रकट, ३२. मेहरबानियां, ३३. प्राप्त, ३४. हर पल।

नानक

१. राष्ट्र, २. गौतम का संदेश, ३. मूल्य, ४. अमूल्य मोती, ५. सत्य की आवाज़, ६. अपरिचित, अनभिज्ञ, ७. बेख़बर, ८. मिठास, ९. वृक्ष।

आशकार[10] उसने किया जो जिन्दगी[11] का राज़[12] था
हिन्द को लेकिन ख़याली[13] फ़लसफ़े[14] पर नाज़[15] था

शम्ए-हक[16] से जो मुनव्वर[17] हो यह वो महफ़िल[18] न थी
बारिशे-रहमत[19] हुई लेकिन जमी[20] काबिल[21] न थी

आह शूदर[22] के लिए हिन्दोस्ता गमखाना[23] है
दर्दे-इसानी[24] से इस बस्ती का दिल बेगाना[25] है

बिरहमन सरशार[26] है अब तक मै-ए-पिन्दार[27] मे
शम्ए-गौतम[28] जल रही है महफ़िले-अगियार[29] मे

बुतकदा[30] फिर बाद मुद्दत[31] के मगर रौशन[32] हुआ
नूरे-इब्राहीम[33] से आजर[34] का घर रौशन हुआ

फिर उठी आखिर सदा[35] तौहीद[36] की पजाब मे
हिन्द को इक मर्दे-कामिल[37] ने जगाया ख्वाब[38] मे

१० प्रकट, व्यक्त, ११ जीवन, १२ रहस्य, १३. काल्पनिक, १४ दर्शन, १५ गर्व, १६. सत्य का चिराग, १७ प्रकाशमान, १८ गोष्ठी, १९ दया की वर्षा, २०. धरती, २१. योग्य, २२. शूद्र, २३. दुखो का घर, २४. इसान का दुख-दर्द, २५ अपरिचित, २६ सतुष्ट, तृप्त, २७. अहकार की मदिरा, २८ गौतम बुद्ध की शमा, २९ गैरो की महफ़िल मे, ३०. मन्दिर, ३१. लम्बे समय के बाद, ३२. प्रकाशित, ३३ हज़रत इब्राहीम का प्रकाश, ३४. इब्राहीम के चचा, ३५. आवाज, ३६. अद्वैतवाद, ३७. सिद्धहस्त पुरुष, ३८. नीद, स्वप्न ।

तस्वीरे-रहमत[१]

तिलोकचंद महरूम

तिरी तौक़ीर[२] से तौक़ीरे-हस्ती[३] है गुरु नानक
तिरी तन्वीर[४] हर ज़र्रे[५] में बसती[६] है गुरु नानक
तिरी जागीर में इरफ़ा[७] की मस्ती है गुरु नानक
तिरी तहरीर[८] औजे[९]-हक़ परस्ती[१०] है गुरु नानक
तिरी तस्वीर[११] से रहमत[१२] बरसती है गुरु नानक

जहूरिस्ताने-रहमत[१३] है कि यह तस्वीर है तेरी
कोई नक़्शे-हक़ीक़त[१४] है कि यह तस्वीर है तेरी
अया[१५] सुब्हे-सआदत[१६] है कि यह तस्वीर है तेरी
दिले-मुज़तर[१७] की राहत[१८] है कि यह तस्वीर है तेरी
तिरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु नानक

ख़मोशी[१९] में हुवैदा[२०] है अजब[२१] अन्दाज़े-गोयाई[२२]
कि है मुंह बोलता पैकर[२३] यह नक़्शे-नाज़े-यकताई[२४]
हर इक अज़्वे-बदन[२५] से है अयां[२६] एजाज़े-रानाई[२७]
ज़मीं[२८] पर हैं मगर नज़रों में है परवाज़े-वालाई[२९]
तिरी तस्वीर से रहमत बरसती है गुरु नानक

१. दया की मूर्ति, २. प्रतिष्ठा, ३. संसार की प्रतिष्ठा, ४. आभा, चमक, ५. कण, ६. रहती है, ७. ब्रह्मज्ञान, ८. लेखनी, ९. ऊंचाई १०. ख़ुदा की पूजा, ११. चित्र, १२ दया, कृपा, १३. वह स्थान जहां रहमत का आविर्भाव हो १४. सत्य की मूर्ति, १५. प्रकट, १६. सौभाग्य का सवेरा १७. व्याकुल हृदय, १८. चैन, सुख, १९. मौन, २०. प्रकट, ज़ाहिर, २१. विशेष, २२. बोलने का अंदाज़, २३. आकार, २४. ऐसे गर्व का नक़्श जिसकी मिसाल न मिले, २५. शरीर का अंग-प्रत्यंग, २६. प्रकट, २७. सुन्दरता का चमत्कार, २८. धरती, २९. ऊंची उड़ान ।

शबीहे-पाक[30] है या • इक तिलिस्मे-जाफिजाई[31] है
झलक खुद जल्वः[32]-ए-हुस्ने[33]-अजल[34] ने या दिखाई है
सफा-ए-कल्बे-आरिफ[35] से सिवा[36] इसमें सफाई है
रुखे-अनवर[37] है या महताबे-चर्खे-पारसाई[38] है
तिरी तस्वीर में रहमत बरसती है गुरु नानक

नजर अफरोज[39] है ऐसी अदा-ए-जाँफिजा[40] इसमें
गुले-फिर्दौस[41] का हर रंग गोया भर दिया इसमें
नजर आता है मजमा[42] सरबसर[43] औसाफ[44] का इसमें
कि है सिदक-ओ-सफा,[45] फक्र-ओ-गना,[46] लुत्फ-ओ-अता[47] इसमें
तिरी तस्वीर में रहमत बरसती है गुरु नानक

बाबा गुरु नानक देव

कुँवर महेन्द्रसिंह बेदी 'सहर'

एक जिस्मे-नातवाँ[1] और इतनी वबाओं[2] का हुजूम[3]
इक चरागे-सुब्ह[4] और इतनी हवाओं का हुजूम
मंजिलें[5] गुम, और इतने रहनुमाओं[6] का हुजूम
एतकादे-खाम[7] और इतने खुदाओं का हुजूम

३० पवित्र तस्वीर, ३१ जान को बढाने वाला जादू, ३२ दर्शन, ३३ सौंदर्य, ३४ अनादिकाल, ३५ ब्रह्मज्ञानी के दिल की पवित्रता, ३६ अधिक, ३७. प्रकाशमान चेहरा, ३८ पारसाई के आकाश का चांद, ३९ नजरों को रोशन करनेवाली, ४० जान को बढाने वाली अदा, दिल खुश करनेवाली अदा, ४१. स्वर्ग का फूल, ४२. जमघट, ४३ तमाम, ४४. खूबियां, विशेषताएं, ४५ सच्चाई और पवित्रता, ४६. दरिद्रता और समृद्धि, ४७ दया और बख्शिश ।

बाबा गुरु नानक देव

१. दुर्बल शरीर २. महामारी, ३. जमघट, ४ सवेरे का चराग, ५. गंतव्य, ६ मार्ग-दर्शक ७ कच्चा विश्वास ।

कशमकश[८] में अपने ही माबद[९] से कतराता हुआ
आदमी फिरता था दरदर ठोकरें खाता हुआ

हक़[१०] को होती थी हर इक मैदां में बातिल[११] से शिकस्त[१२]
सरनगूं,[१३] सर दर गरीबां[१४] सरबसर[१५] थे ज़ेर[१६] दस्त[१७]
फ़न[१८] था इक मतलब बरआरी[१९] लोग थे मतलब परस्त[२०]
इस क़दर बिगड़ा हुआ था ज़िंदगी का बन्दोबस्त[२१]

हामि-ए-जौर-ओ-सितम[२२] हर तरह मालामाल था
जिसकी लाठी थी उसी की भैंस थी यह हाल था

क्या खुदा का खौफ़[२३] कैसा जज़्बः-ए-हुब्बे-वतन[२४]
बरसरे-पैकार[२५] थे आपस में शेख-ओ-बिरहमन
बाग़बां[२६] जो थे वो खुद थे महवे-तखरीबे-चमन[२७]
अलग़रज़[२८] बिगड़ी हुई थी अंजुमन की अंजुमन[२९]

मज़हबे-इन्सानियत[३०] का पासबां[३१] कोई न था
कारवां लाखों थे मीरे-कारवां[३२] कोई न था

रूहे-इन्सां[३३] ने खुदा के सामने फ़रियाद[३४] की
जो ज़मीं[३५] पर हो रहा था सब बयां[३६] रूदाद[३७] की
और कहा हद हो चुकी है कुफ़्र[३८] की इलहाद[३९] की
एक दुनिया मुन्तज़िर[४०] है आपके इरशाद[४१] की

तब यह फ़रमाया[४२] खुदा ने सबको समझाऊंगा मैं
आदमी का रूप धारण करके खुद आऊंगा मैं

८. संघर्ष, ९. आराधना-गृह, १०. सच्चाई, ११. झूठ, १२. हार, पराजय, १३. नतमस्तक, १४. उदास, शर्मिन्दा, १५. बिल्कुल, १६. नीचे, १७. हाथ, १८. कला, १९. काम निकालना, २०. स्वार्थी, २१. व्यवस्था, २२. अत्याचार का समर्थक, २३. भय, २४. देशभक्ति की भावना, २५. लड़ने-मरने को तैयार, २६. माली, २७. उपवन को उजाड़ने में व्यस्त, २८. अर्थात् २९. महफ़िल, ३०. मानव-धर्म, ३१. पहरेदार, ३२. कारवां का सरदार, ३३. इंसान की रूह, ३४. आर्तनाद, ३५. धरती, ३६. बयान को, बताई, ३७. कहानी, ३८. अधर्म, ३९. नास्तिकता, ४०. प्रतीक्षक, ४१. आज्ञा, ४२. कहा।

इस तरह आखिर[४३] हुआ दुनिया में नानक का ज़हूर[४४]
फ़र्शे[४५]-तलवंडी पे उतरा अर्श[४६] से रब्बे-ग़फ़ूर[४७]
उठ गया ज़ुल्मात[४८] का डेरा, बढ़ा हर सिम्त[४९] नूर[५०]
मम्बाः-ए-अनवार[५१] से फैली शोआएं[५२] दूर दूर

मेहरे-तावां[५३] ने दोआलम[५४] में उजाला कर दिया
आदमी ने आदमी का बोलबाला कर दिया

गुरु नानक देवजी

दर्शनसिंह दुग्गल

तिरे जमाल[१] से अय आफ़ताबे[२]-ननकाना
निखर निखर गया हुस्ने-शऊरे-रिन्दाना[३]
कुछ ऐसे रंग से छेड़ा रबाबे[४]-मस्ताना
कि झूमने लगा रूहानियत[५] का मैखाना[६]

तिरी शराब मे मदहोश[७] हो गये मैख्वार[८]
दुई मिटा के हमआग़ोश[९] हो गये मैख्वार

तिरा पयाम[१०] था डूबा हुआ तबस्सुम[११] मे
भरी थी रूहे-लताफ़त[१२] तिरे तकल्लुम[१३] में
नवा-ए-हक़[१४] की कशिश[१५] थी तिरे तरन्नुम[१६] मे
यक़ीं[१७] की शम्अ जलाई शबे-तवह्हुम[१८] में

४३. अत मे, ४४. प्रकटन, ४५. धरती, ४६ आकाश, ४७ दयालु परमात्मा, ४८. अधकार, ४९. चारो ओर, ५०. प्रकाश, ५१. प्रकाश का स्रोत, ५२. किरणे, ५३. प्रकाशमान चाद, ५४. धरती और आकाश ।

गुरु नानक देवजी

१. सौदर्य, २. सूरज, ३. रिन्दो की चेतना का सौंदर्य ४. वीणा, ५. अध्यात्म, ६. मदिरालय, ७. मदमस्त, ८. शराबी, ९. लिपट जाना, १०. सदेश, ११ मुस्कराहट, १२. पवित्रता की आत्मा, १३. बातचीत, १४. सच्चाई की आवाज, १५. आकर्षण, १६. स्वर-माधुर्य, १७. विश्वास, १८. भ्रम की रात ।

दिलों को हक़[१६] से हम आहंग[२०] कर दिया, तूने
गुलों को गूध के यकरंग[२१] कर दिया तूने

तिरी नवा[२२] ने दिया नूर[२३] आदमीयत[२४] को
मिटा के रख दिया हिर्स-ओ-हवा[२५] की ज़ुल्मत[२६] को
दिलों से दूर किया सीम-ओ-ज़र[२७] की रग़बत[२८] को
कि पा लिया था तिरे दिल ने हक़[२९] की दौलत[३०] को

हुजूमे-ज़ुल्मते-बातिल[३१] में हक़ पनाही[३२] की
फ़क़ीर होके भी दुनिया में बादशाही की

तिरी निगाह में क़ुरआनो-वेद का आलम[33]
तिरा खयाल था राज़े-हयात[३४] का महरम[३५]
हर एक गुल[३६] पे टपकती थी प्यार की शबनम[३७]
कि बस गया था नज़र में बिहिश्त[३८] का मौसम

नफ़स[३९] नफ़स से कली रंग-ओ-बू[४०] की ढलती थी
नसीम[४१] थी कि फ़रिश्तों की सांस चलती थी

तिरी शराब से बाबा फरीद थे सरशार[४२]
तिरे ख़ुलूस[43] से बेख़ुद[४४] थे सूफ़ियाने-किबार[४५]
कहां-कहां नहीं पहुंची तिरे क़दम की बहार[४६]
तिरे अमल[४७] ने सवारे जहान के किरदार[४८]

तिरी निगाह ने सहबा-ए-आगही[४९] दे दी
बशर[५०] के हाथ में क़न्दीले-ज़िन्दगी[५१] दे दी

१९. सदाक़त, सच्चाई, २०. एक आवाज़, २१. एक रग, २२. आवाज़, २३. प्रकाश, २४. मानवता, २५. लोभ, २६. अंधकार, २७. सोना-चादी, २८ लगाव, प्रेम, २९. सच्चाई, ३०. धन, ३१. झूठ और अंधेरे के जमघट में, ३२. सत्य का साथ, ३३. ससार, ३४. जीवन का रहस्य, ३५. जानकार, ३६. फूल, ३७. ओस, ३८. स्वर्ग, ३९. सांस, ४०. रंग और गंध, ४१. मंद समीर, ४२. मस्त, ४३. निष्ठा, ४४. मदहोश, ४५. बड़े-बड़े सूफ़ी, ४६. बसन्त, ४७. कर्म, व्यवहार, ४८. चरित्र, ४९. चेतना, ५०. इसान, ५१. ज़िन्दगी की क़ंदील।

तिरे पयाम[५२] मे ईसा की थी मसीहाई[५३]
तिरे सुखन[५४] मे हबीबे-खुदा की रानाई[५५]
तिरे कलाम[५६] मे गौतम का नूरे-दानाई[५७]
तिरे नगमे[५८] मे मुरली का लहने-यक्ताई[५९]

हर एक नूर[६०] नजर आया तिरे पैकर[६१] मे
तमाम[६२] निकहते[६३] सिमटी है इक गुले-तर[६४] मे

जहा जहा भी गया तूने आगही[६५] बाटी
अन्धेरी रात मे चाहत[६६] की रोशनी[६७] बाटी
अता[६८] किया दिले-बेदार,[६९] जिन्दगी बाटी
फसाद-ओ-जग[७०] की दुनिया मे शान्ती बाटी

बहार[७१] आई खिली प्यार की कली हर सू[७२]
तिरे नफस[७३] मे नसीमे-सहर[७४] चली हर सू

रजा-ए हक[७५] को नजाते[७६]-बशर[७७] कहा तूने
तअय्युनाते-खुदी[७८] को जरर[७९] कहा तूने
वफा[८०]-निगार को हकीकत[८१]-निगार कहा तूने
जहूरे-इश्क[८२] को सच्ची सहर[८३] कहा तूने

जहाने-इश्क[८४] मे कुछ बेश[८५]-ओ-कम का फर्क न था
तिरी निगाह मे दैर-ओ-हरम[८६] का फर्क[८७] न था

५२ सदेश, ५३ ईसा की तरह बीमार अच्छे और मुर्दे जिन्दा करना ५४. वाणी, ५५ खुदा के हबीब की शोभा, ५६ वाणी, ५७ समझदारी का प्रकाश, ५८, गीत, ५९. मधुर स्वर, ६० प्रकाश, ६१ आकार, ६२ सब, ६३ खुशबू, सुगध ६४ ताजा फूल, ६५ चेतना, ६६. प्रेम, ६७ प्रकाश, ६८ प्रदान, ६९ जाग्रत दिल, ७० उपद्रव और युद्ध, ७१. बसन्त, ७२ हर तरफ, ७३ सास, ७४ प्रात-समीर, ७५ खुदा की मरजी, ७६ मुक्ति, ७७ इसान, ७८ अह के बधन, ७९ हानि, ८० प्रेम-निर्वाह, ८१ सच्चाई, ८२ इश्क का प्रकटन, ८३. प्रात.काल, ८४ प्रेम ससार, ८५ अधिक, ८६. मदिर और काबा, ८७ अन्तर।

बताया तूने कि इरफ़ां[८८] से ग्राशना[८९] होना
कभी न ग्राशिक़े - दुनिया - ए - बेवफ़ा[९०] होना
बदी[९१] से शाम - ग्रो - सहर[९२] जंगग्राज़मां[९३] होना
ख़ुदा से दूर न ग्रय बन्दः-ए-ख़ुदा[९४] होना

नशे में दौलत-ग्रो-ज़र[९५] के न चूर हो जाना
क़रीब ग्राये जो दुनिया तो दूर हो जाना

जो रूह[९६] बनके समा जाये हर रग-ग्रो-पै[९७] में
तो फिर न शहद में लज्ज़त[९८] न साग़रे-मै[९९] में
वही है साज़[१००] के पर्दे में, लहन[१०१] में, लय मे
उसी की ज़ात[१०२] की परछाइयाँ हर इक शै[१०३] में

न मौज है न सितारों की ग्राब[१०४] है कोई
त जल्लियों[१०५] के उधर ग्राफ़ताब[१०६] है कोई

ग्रबद[१०७] का नूर[१०८] फ़राहम[१०९] किया सहर[११०] के लिए
दिया पयाम[१११] बहारों का दश्त[११२]-ग्रो-दर के लिए
दिये जला दिये तारीक[११३] रहगुज़र[११४] के लिए
जिया बशर[११५] के लिए, जान दी बशर के लिए

दुग्रा यह है कि रहे इश्क़ हश्र[११६] तक तेरा
ज़मी[११७] पे ग्राम हो यह दर्दे-मुश्तरक[११८] तेरा

८८. ब्रह्मज्ञान, ८९. परिचित, ९०. बेवफ़ा-दुनिया का प्रेमी, ९१. बुराई, ९२. सुबह-शाम, ९३. लड़ना, ९४. ख़ुदा के बन्दे, ९५. धन-दौलत, ९६. प्राण, ग्रात्मा, ९७. धमनियां ग्रौर गोश्त, ९८. स्वाद, ९९. शराब का प्याला, १००. गाने-बजाने का सामान, १०१. मधुर स्वर, १०२. ग्रस्तित्व, १०३. चीज़, १०४. चमक, १०५. झलक, (ब० व०) १०६. सूर्य, १०७. ग्रनंतकाल, १०८. प्रकाश, १०९. एकत्र, संचित, ११०. सवेरा, प्रात:काल, १११. संदेश, ११२. जंगल, ११३. ग्रंधेरी, ११४. राह, मार्ग, ११५. इंसान, ११६. क़यामत, ११७. धरती, ११८. सम्मिलित ।

खुदा करे कि ज़माना सुने तिरी आवाज़
हर इक जबीं[११९] को मुयस्सर[१२०] हो तिरा अक्से-नियाज़[१२१]
जहां में आम हो तेरे ही प्यार का अन्दाज़[१२२]
खुलूसे-दिल[१२३] से हो पूजा, खुलूसे - दिल से नमाज़
तिरे पयाम[१२४] की बरकत[१२५] से नेक हो जायें
ये इम्तियाज़[१२६] मिटें, लोग एक हो जायें

एक जिस्म[१] दो तुर्बतें[२]

'अख़्तर' बस्तवी

सुब्ह को मैं आज इक मुद्दत[३] पे, साथ अहबाब[४] के
शहर की मशग़ूलियत[५] से भागकर आया यहां

दिन कटा, सैर-ओ-शिकार-ओ-शग़्ले-नाय-ओ-नोश[६] में
शाम के लम्हात[७] गुज़रे क़हक़हों के दर्मियां[८]

अब फ़ज़ाओं[९] पर अन्धेरे और ख़मोशी[१०] का है राज
निस्फ़[११] शब का सहर[१२] है माहौल[१३] पर छाया हुआ

मेरे साथी बेख़बर सोये हैं गहरी नींद में
मैं मगर बैठा हूं तन्हा,[१४] सोच में डूबा हुआ

११९. ललाट, १२०. प्राप्त, १२१. श्रद्धा का प्रतिबिम्ब, १२२. ढंग, १२३. हार्दिक निष्ठा १२४. संदेश, १२५. विभूति, १२६. अन्तर।

एक जिस्म दो तुर्बतें

१. शरीर, २. कब्रें, यह नज़्म कबीर की समाधि पर लिखी गयी है। ३. लम्बा समय, ४. मित्रगण, ५. व्यस्तता, ६. सैर-सपाटे, शिकार खाने-पीने, ७. क्षण, ८. बीच, ९. वाता-वरण, १०. मौन, ११. आधी, १२. जादू, १३. माहौल, १४. अकेला।

पुश्त[१५] पर ग्रामी[१६] की लहरें गुनगुनाती, नाचती
जाने किस मंजिल की जानिब[१७] हौले हौले हैं रवां[१८]

सामने गुमसुम! खडा है इक पुराना मकबरा[१९]
जिसकी खामोशी सुनाती है अजब सी दास्तां[२०]

लोग कहते है कि यह मदफन[२१] है उस फनकार[२२] का
जिसने शेरो मे किया था रूहे-मजहब[२३] को असीर[२४]

शैख से थी जिसको उल्फत[२५] और ब्रहमन से था उस[२६]
प्यार था इंसा[२७] से जिसको, नाम था जिसका कबीर

मकबरे[२८] के पास लेकिन इक इमारत और है
जिसको कुछ लोगो ने बख्शा[२९] है 'समाधि' का लकब[३०]

यह इमारत भी उसी के नाम से मंसूब[३१] है
यह समाधि भी उसी की वजह से जा-ए-अदब[३२]

अजनबी[३३] मुल्कों[३४] के जब सैयाह[३५] आते है यहा
सख्त हैरत[३६] उनको होती है यह मजर[३७] देखकर

सोचते है वो कि यह किस तरह मुम्किन[३८] है भला
एक ही इंसा[३९] के दो मर्कद[४०] हो फर्शे-खाक[४१] पर

मुझको लेकिन यह नजारा[४२] देखकर हैरत[४३] नही
क्योकि मैने परवरिश[४४] पाई है ऐसे देश मे

१५ पीठ, १६ नदी का नाम, १७ ओर, १८ बह रही हैं, १९ कब्र, २० कहानी, २१. कब्र, समाधिस्थान, २२। कलाकार, २३ धर्म के प्राण, २४. कैद, २५ मुहब्बत, २६. प्रेम, २७. मानव, २८ कब्र, २९. प्रदान किया, ३०. उपाधि, ३१. संबंधित, ३२ आदर का स्थान, ३३. अपरिचित, ३४ देशो, ३५. पर्यटक, ३६. आश्चर्य, ताज्जुब, ३७. दृश्य, ३८. सम्भव, ३९. मनुष्य, ४०. कब्रें, ४१. धरती, ४२. दृश्य, ४३. आश्चर्य, ४४. पालन-पोषण।

रूह[४५] जिसकी एक होकर भी कई क़ालिब[४६] में है
हुस्न[४७] जिसका कारफ़र्मा[४८] है हज़ारों भेस में

यह वो महफ़िल[४९] है जहां वहदत[५०] में कसरत[५१] है अयां[५२]
इसका नग़मा[५३] एक है लेकिन धुने हैं बेशुमार[५४]

एक ही मंज़र[५५] में इस गुलशन[५६] के सदहा[५७] रंग हैं
इस चमन में एक खुशबू है मगर गुल[५८] हैं हज़ार

हिन्द के इस वस्फ़[५९] की अक्कास[६०] थी ज़ाते-कबीर[६१]
जिसको हम इक सन्त भी कहते हैं और इक पीर भी

जिसकी आँखों में झलकता था तक़द्दुस[६२] राम का
और जबीं[६३] पर थी खुदा के नाम की तनवीर[६४] भी

अपने पुरतासीर[६५] दोहों की ज़बां[६६] में उम्र भर
इस दुनिया को सुनाई बस यही इक रागनी

ज़र्रे ज़र्रे[६७] से है ज़ाहिर[६८] सरज़मीने-हिन्द[६९] के
इख़्तिलाफ़े-ज़ाहिरी[७०] में इत्तिहादे-बातिनी[७१]

"उसको यह ख़ूबी[७२] थी अपने मुल्क[७३] की बेहद अज़ीज़[७४]
इसलिए बाद-अज़-फ़ना[७५] भी इससे वाबस्ता[७६] रही

एक ही था जिस्म[७७] लेकिन तुर्बतें[७८] दो दो मिलीं
है समाधि में भी वो और मक़बरे[७९] मे भी वही

४५. आत्मा, प्राण, ४६. शरीर, ४७. सौंदर्य, ४८. फैला हुआ, ४९. गोष्ठी, अंजुमन, ५०. एकत्व, ५१. बाहुल्य, ५२. प्रकट, व्यक्त, ५३. संगीत, ५४. असंख्य, ५५. दृश्य, ५६. उपवन, ५७. सैकड़ों, ५८. फूल, ५९. गुण, ६०. प्रतिनिधि, ६१. कबीर का व्यक्त्वि, ६२. पवित्रता, ६३. ललाट, ६४. आभा, चमक, ६५. प्रभावशाली, ६६. वाणी, ६७. कण-कण, ६८. प्रकट, ६९. भारत की धरती, ७०. प्रत्यक्ष विरोध, ७१. दिलों की एकता, ७२. विशेषता, ७३. देश की, ७४. अतिप्रिय, ७५. मृत्यु के बाद, ७६. संबंधित, ७७. शरीर, ७८. क़ब्रें, ७९. कब्र ।

बज़्मे-ख़ुसरौ में

गोपीनाथ 'अम्न'

कोई पीताम्बर या जामः-ए-एहराम[१] में आये
मुहम्मद की गली या कूचः[२]-ए-घनश्याम में आये
ख़ुदा शाहिद[३] कि सर झुकता है अहले-दिल[४] के क़दमों पर
मै-ए-साफ़ी[५] से मतलब है किसी भी जाम[६] में आये

नियाज़-आगीं[७] जबीं[८] लेकर जो बज़्मे - नाज़[९] में आये
न क्यों फिर वो शुमारे[१०]-अहले-सोज़-ओ-साज़[११] में आये
तसव्वुफ़[१२] की निगाहें[१३] तो इसे पहचान ही लेंगी
किसी भी भेस में आये, किसी अन्दाज़ में आये

मुबारक[१४] उसका जीना जो तिरी सरकार में आये
सफ़ा-ए-क़ल्ब[१५] लेकर सिद्क़[१६] से दरबार में आये
निगाहे-अहले-आलम[१७] में जो इज़्ज़त हो तो क्या इज़्ज़त
वो क़िस्मत का धनी है जो निगाहे-यार[१८] में आये

मक़ाम[१९] उनका भी ऊँचा है जो तेरी राह में आये
और उनकी बात ही क्या जो तिरी दरगाह[२०] में आये
इबादत[२१] और सिज्दों[२२] की भी इज़्ज़त दिल में है लेकिन
इबादत वो इबादत है मज़ा[२३] जब आह[२४] में आये

१. हज का लिबास, २. गली, ३. गवाह, ४. दिलवाले, ५. पवित्र शराब, ६. प्याला, ७. विनम्र, ८. ललाट, ९. प्रेमिका की महफ़िल, १०. गिनती, ११. दिलवाले, १२. अध्यात्म, १३. दृष्टि, १४. सफल, अभिनन्दनीय, १५. दिल की पवित्रता, १६. सच्चाई, १७. दुनिया वालों की दृष्टि, १८. प्रेमिका की नज़र, १९. स्थान, २०. चौखट, मज़ार, २१. आराधना, २२. सर टेकना, २३. आनंद, २४. आर्तनाद।

दसवां अध्याय

हमारी हिकायात

(कथा-माला)

पहला भाग

जन्म कन्हैयाजी

'नज़ीर' अकबराबादी

है रीत जनम[1] की यूं होती जिस घर में बाला होता है
उस मंडल में हर मन भीतर सुख चैन दुवाला होता है
सब बात बिथा[2] की भूलें हैं, जब भोला भाला होता है
आनन्द मंदीले बाजत हैं, नित भवन उजाला होता है

यूं नेक निछत्तर[3] लेते हैं, इस दुनिया में संसार जनम
पर उनके और ही लच्छन हैं जब लेते हैं औतार जनम

सुभ साइत से यूं दुनिया में औतार गरभ में आते हैं
जो नारद मुनि[4] वां, पहले ही सब उनका भेद बताते हैं
वो नेक महूरत से जिस दम इस शिष्ट[5] में जनमे जाते हैं
जो लीला रचनी होती है वो रूप यह जा दिखलाते हैं

यूं देखने में और कहने में वो रूप तो बाले होते हैं
पर बाले ही पन में उनके उपकार निराले होते हैं

यह बात कही जो मैंने अब यूं उसको तू अब ध्यान लगा
हैं पंडित पुस्तक बीच लिखा, था कंस जो राजा मथरा का
धन ढेर बहुत, बल[6] तेज[7] निपट, सामान अनेक[8] और डील बड़ा
गज[9] और तुरंग[10] अच्छे नीके, अमबारी हौदे ज़ीन सजा

जब बनठन ऊंचे हस्ती पर वो पापी आन निकलता था
सब साज़ झलाझल करता था और संग कटक दल[11] चलता था

१. ज़माना, २. रंज-ओ-ग़म, ३. साअत, ४. रोशन ज़मीर, ५. मोहज्जब मतवार, ६. ताकत, ७. रोब ८. तरह-तरह, ६. हाथी, १०. घोड़े, ११. बेशुमार फ़ौज ।

इक रोज़[१२] जो अपने भुजबल पर वो कंस बहुत मग़रूर[१३] हुआ
और हंसकर बोला दुनिया में है दूजा कौन बली मुझ सा
इक बान लगाकर पर्वत को, चाहूं तो अभी दूं पल में गिरा
इस देस के बढ़बल जितने हैं, है कौन जो होवे मुझसे सिवा

जो दुष्ट कोई आ युद्ध करे, कब मों पर वा का वार चले
वो सामने मेरे ऐसा हो जूं चींटी हाथी पांव तले

वो ऐसे ऐसे कितने ही जो बोल गरब के कहता था
सब लोग सभा के सुनते थे क्या ताब[१४] जो बोले कोई ज़रा
था एक परख सो यूं बोला, तू भूला अपने बल पर क्या
जो तेरा मारन हारा है सो वो भी जनम अब लेवेगा

तू अपने बल पर हाय मूर्ख इस आन अबस[१५] हुंकार लिया
वो तुझको मार गिरा देगा यूं जैसे भुनगा मार लिया

यह बात सुनी जब कंस ने वां, तब सुनकर उसके होश उड़े
भौ, मन के भीतर आन भरा और बोल गरब सिगरे बिसरे
यूं पूछा वो किस देस मे है और कौन बनों आकर जनमे
कौन उसके मात-पिता होवे जो पालें उसको चाहत[१६] से

वो बोला मथरा नगरी में इक रोज जनम वो पायेगा
जब स्याना होगा तब तुझको इक पल मे मार गिरायेगा

इस बात को सुनकर कंस बहुत तब मन मे अपने घबराया
जब नारद मुनि उस पास गये, तब उनसे उसने भेद कहा
तब नारद मुनि ने उसको भी कुछ और तरह से समझाया
फिर कंस को वां इस बात सिवा कुछ और न मारग बन आया

जो अपनी जान बचाने का कर सोच यह उसनें छंद किया
बुलवा बसुदेव और देवकी को इक मन्दिर भीतर बंद किया

१२. दिन, १३. घमण्डी, १४. साहस, १५. बेकार, व्यर्थ, १६. प्रेम।

भी बैठा था जो कंस के मन में वह भर कर नीन्द न सोता था
कुछ बात सुभाती ना उसको, नित अपनी पलक भिगोता था
उस मन्दिर में उन दोनों के जब कोई बालक होता था
कंस आन उसे छब मारे था, मन मात-पिता का रोता था

इक मुद्दत[17] तक उन दोनों का उस मन्दिर में यह हाल रहा
जो बालक उनके घर जन्मा, सो मारता वो चंडाल रहा

फिर आया वां इक वक़्त ऐसा जो आये गर्भ में मनमोहन
गोपाल, मनोहर, मुरलीधर सीकिश्न, किशोरन कंवल नयन
घनश्याम, मुरारी, बनवारी, गिरधारी, सुन्दर श्याम बरन
प्रभुनाथ बिहारी कान लला, सुखदायी जगत के दुख भंजन

जब साअत परगट होने की वां आई मुकुट धरैया की
अब आगे बात जनम की है, जय बोलो किशन कन्हैया की

था नेक महीना भादों का और दिन बुध गिनती आठन की
फिर आधी रात हुई जिस दम और हुआ निछत्तर रोहनी भी
सुभ साइत नेक महूरत से वा जन्मे आकर किशन जभी
उस मन्दिर के अंधियारे में जो और उजाली आन भरी

बसुदेव से बोलीं देवकीजी मत डर भी मन में ढेर करो
इस बालक को तुम गोकुल मे ले पहुंचो और मत देर करो

जब देवकी ने बसुदेव से वां रो रोकर तब यह बात कही
वो बोले क्योंकर ले जाऊं, है बाहर तो चौकी बैठी
और द्वार लगे हैं ताले कुल, कुछ बात नहीं मेरे बस की
तब देवकी बोलीं ले जाओ मन ईशर की रख आस अभी

वां बालक को जब ले निकले सब सांकर पट पट छूट गये
थे ताले जितने द्वार लगे उस आन झड़ाझड़ छूट गये

१७. लम्बा समय।

जब आये चौकीदारों मे तब वां भी यह सूरत देखी
सब सोते पाये उस साअत, हर आन जो देते थे चौकी
जब सोता देखा उन सबको हो निर्भौ निकले वां से भी
फिर आये जमुना पे जूही, फिर जमुना देखी बहुत चढ़ी

यह सोच हुआ मन बीच उन्हे पैर इस जल मे कैसे धरिये
है रैन अंधेरी, संग बालक, इस बिपता मे अब क्या करिये

यूँ मन मे ठहरा फिर चलिये, फिर आप ही मन मजबूत हुआ
भगवान दया पर आस लगा, वा जमुनाजी पर ध्यान धरा
यह जू जू पाव बढाते थे, वो पानी चढ़ता आता था
यह बात लगी जब होने वा, बसुदेव गये मन मे घबरा

तब पाव बढाये बालक ने जो आपसे और भीगे जल मे
जब जमुना ने पग चूम लिये जा पहुचे पार वो इक पल मे

जब आन बिराजे गोकुल में सब फाटक वा भी पाये खुले
तब वा से चलते चलते वो फिर नन्द के द्वारे आ पहुचे
वा नन्द महल के द्वारे भी सब देखे पट पट दूर खडे
जो चौकी वाले सोते थे, अब कौन उन्हे रोके टोके

जब बीच महल के जा पहुँचे सब सोते वा घर वाले थे
हर चार तरफ़ उजियाली थी जूँ साझ मे दीवे बाले थे

इक और अचभा यह देखो जब जन्म सीकिशन की थी
उस रात जसोदा के घर मे थी जन्मी यारो इक लड़की
वा सोते देख जसोदा को और बदली कर इस बालक की
उस लड़की को वो आप उठा ले निकले, आये मथरा जी

जब लडकी लाये मन्दिर मे, सब ताले मन्दिर लाग उठे
जो चौकी देने वाले थे फिर वो भी उस दम जाग उठे

जब भोर हुई तब घबराकर सुध कंस ने ली उस मन्दिर की
जब तालें खुलवा बीच गया, तब लड़की जन्मी इक देखी
ले हाथ फिराया चक्कर दे तो टपके वो बिन टपके ही
यूँ जैसे बिजली कौदे है, जब छूट हुआ परजा पहुँची

यह कहती निकली अय मूरख क्या तूने सोच बिचारा है
वो जीता अब तो सीस मुकुट जो तेरा मारनहारा है

अब नन्द के घर की बात सुनो, वां एक अचंभा यह ठहरा
जो रात को जन्मी थी लड़की और भोर को देखा तो लड़का
घड़नालें छूटीं, नाच हुआ और नौबत[१८] का गुल[१९] शोर मचा
फिर किशन गरब से नाम रखा, सब कुनबे के मिल बैठे आँ

नन्द और जसोदा और क्वात करने वां हेराफेर लगे
पकवान मिठाई मेवे के हर नारी आगे ढेर लगे

सब नारी आईं गोकुल की और पास पड़ोसन आ बैठीं
कुछ ढोल मजीरे लाती थीं, कुछ गीत जचा के गाती थीं
कुछ हरदम मुख उस बालक का, बलिहारी होकर देख रहीं
कुछ थाल पंजीरी के रखतीं, कुछ सोंठ संठोरा करती थीं

कुछ कहती थीं हम बैठे हैं नेग[२०] आज के दिन का लेने को
कुछ कहतीं हम तो आये हैं आनन्द बधावा देने को

कोई घुट्टी बैठी गर्म करे, कोई डाले अस्पन्द और भूसी
कोई लाये हंसली और खड़वे, कोई कुर्ता टोपी, मेवा घी
कोई देखे रूप उस बालक का, कोई चूमे माथा मेहर भरी
कोई भौओं की तारीफ़ करे, कोई आँखों की, कोई पलको की

कोई कहती उम्र बड़ी होवे अय बीर तुम्हारे बाले की
कोई कहती बियाह बहू लाओ इस आस मुरादों वाले की

कोई कहती बालक खूब हुआ अय भैना तेरी नेक रति
यह बाले उनको मिलते हैं जो दुनिया मे हैं बढ़ भागी
इस कुनबे की भी शान बढ़ी, और भाग बढ़े इस घर के भी
ये बातें सबकी सुन सुनकर यह बात जसोदा कहती थी

अय बीर यह बालक जो ऐसा अब मेरे घर में जन्मा है
कुछ और कहूँ मैं क्या तुमसे भगवान की मो पर किरपा है

थी कोने कोने खुशवक्ती[२१] और तबले ताल खनकते थे
कोई नाच रही कोई कूद रही, कोई हंस हंस के, कोई रूप सजे

१८. नक़्क़ारा, १९. कोलाहल, २०. हक़, २१. आनन्द, हर्ष ।

हर चार तरफ़ आनन्दें थीं वां घर में नन्द जसोदा के
कुछ आंगन बीच बिराजें थीं, कोई बैठी कोठे और छज्जे

सौ खूबी और खुशहाली से दिखलाती थी सामान खड़ी
सच बात है बालक होने की है दुनिया में आनन्द बड़ी

फिर और खुशी की बात हुई जब रीत हुई दोकादों की
रखवाई दूध की मटकी भर और डाली हल्दी बहुतेरी
यह उस पर फेंके भर भर कर वो उस पर डाले घड़ी घड़ी
कोई पोंछे मुख और बाहन को, कोई सखरनी[22] फेंके और मठडी

उस दूध की रंगरलियों में रूप और हुआ हर नारी का
और तन के अबरन यूं भीगे जो रंग हो केसर क्यारी का

जो नेगी जोगी थे उनको उस आन निपट खुशहाल किया
पहराये बागे रेशम के और जर[23] भी बख्शा[24] बहुतेरा
और जितने नाचने वाले थे अस्बाब[25] उन्हें भी खूब दिया
मेहमान जो घर में आये थे, सब उनका भी अरमान[26] रखा

दिन रात छटी के होने तक मन खुश किया लोग लुगाई का
भर थाल रुपये और मोहरें दी जब नेग चुकाया दाई का

नन्द और जसोदा बालक को वा हाथों छांव में थे रखते
नित प्यार करें, तन मन वारें, सुथरी अबरन, गहने तन के
जी बहलाते, मन परचाते, और खूब खिलौने मंगवाते
हर आन झुलाते पालने में वो ईधर और ऊधर बैठे

कर याद 'नज़ीर' अब हर साअत उस पालने और उस झूले की
आनन्द से बैठो, चैन करो, जय बोलो कान्ह झंडूले की

२२. खूरबूजे, केले और दही से शक्कर और चन्द मसाले मिलाकर बनाई जाती है, २३. सोना
२४. प्रदान किया, २५. सामान, २६. आकांक्षा।

हरि की तारीफ़ में

'नज़ीर' अकबराबादी

मैं क्या क्या वस्फ़[1] कहूं यारो उस श्यामबरन[2] औतारी के
सीकिशन, कन्हैया, मुरलीधर मनमोहन, कुंजबिहारी के
गोपाल, मनोहर, सांवलिया, घनशाम, अटल बनवारी के
नन्दलाल दुलारे सुन्दर छब, ब्रज चन्द मुकुट झलकारी के
कर घूम, लुटइया दूध माखन अझवार नवल गिरधारी के
बन कुंज फिरैया, रास रचन, सुखदाई कान्ह मुरारी के
हर आन दिखैया रूप नये, हर लीला न्यारी न्यारी के
पति लाज रखइया, दुखभंजन हरि भगती भगताधारी के

नित हरि भज हरि भज रे बाबा, जो हरि से ध्यान लगाते हैं
वो हरि की आसा रखते हैं, हरि उनकी आस पुजाते हैं

जो भगती हैं सो उनको तो नित हरि का नांव सुहाता है
जिस ज्ञान में हरि से नेह बढ़े वो ज्ञान उन्हें खुश आता है
नित मन में हरि हरि भजते हैं हरि भजना उनको भाता है
सुख मन में उनके लाता है, दुख उनके जी से जाता है
मन उनका अपने सीने में दिन रात भजन ठहराता है
हरि नाम की सुमिरन करते हैं, सुख चैन उन्हें दिखलाता है
जो ध्यान बँधा है चाहत का, वो उनका मन बहलाता है
दिल उनका हरि हरि कहने से हरि आन नया सुख पाता है

हरि नाम के जपने से मन को खुश नेह जतन से रखते हैं
नित भगत जतन में रहते हैं और काम भजन से रखते हैं

१. गुण, २. सांवला रंग।

सीकिशन की जो जो किरपा हैं कब मुझसे हो उनकी गिनती
हैं जितनी उनकी किरपायें, इक यह भी किरपा है उनकी
मज़कूर[3] करूं जिस किरपा का वो मैंने है इस भांत सुनी
जो इक बस्ती है जूनागढ वां रहते थे मेहता नरसी
थी नरसी की उस नगरी में दूकान बड़ी सर्राफ़ी[4] की
ब्योपार बड़ा सर्राफ़ी का था, बस्ता लेखन और बही
था रूप घना और फ़र्श बिछा, परतीत बहुत और साख बडी
थे मिलते-जुलते हरइक से और लोग थे उनसे बहुत खुशी

कुछ लेते थे कुछ देते थे, और बहिया देखा करते थे
जो लेन और देन की बातें है, नित उनको लीखा करते थे

दिन कितने में फिर नरसी का सीकिशन चरण का ध्यान लगा
जब भगती हर के कहलाये, सब लेखा-जोखा भूल गया
सब काज बिसारे, काम तजे हरि नाव भजन से मन लागा
जा बैठे साधु और संतों में, नित सुनते रहते किशन कथा
था जो कुछ दूकां बीच रखा वो दूब जमा और पूजी का
मध प्रेम के होकर मतवाले, सब साधो को हरि नाव दिया
हो बैठे हरि के द्वारे पर सब मीत कुटुम से हाथ उठा
सब छोड़ बखेड़े दुनिया के, नित हरि सुमिरन का ध्यान लगा

हरि सुमिरन से जब ध्यान लगा फिर और किसी का ध्यान कहां
जब चाहत की दूकान हुई फिर पहली वो दूकान कहां

नित मन में हर की आस धरे खुश रहते थे वां यू नरसी
इक बेटी आंख जन्मी थी, सो दूर कहीं वह ब्याही थी
और बेटी के घर जब शादी[5] वां ठहरी बालक होने की
तब आई ईधर ऊधर से सब नारिया उसके कुनबे की
मिल बैठीं, घर में ढोल बजा, आनन्द खुशी की धूम मची
सब नाचीं गाईं आपस में है रीत जो शादी की होती
कुछ शादी की खुशवक़्ती[6] थी, कुछ सोंठ संठोरे की ठहरी
कुछ चमक झमक थी अबरन की, कुछ खूबी[7] काजल मेंहदी की

३. ज़िक्र ४. सुनार, ५. खुशी, ६. अच्छा समय, ७. विशेषता ।

है रस्म[८] यही घर बेटी के जब बालक मुँह दिखलाता है
तब बालक उसकी छूछक का ननिहाल से भी कुछ जाता है

वां नारियां जितनी बैठी थीं समध्याने में आ नरसी के
जब नरसी की वां बेटी से यह बोलीं हँसकर ताना[९] दे
कुछ रीत नहीं आई अब तक अय लाल तिहारे मैके से
और दिल में थीं यह जानती सब वह क्या हैं और क्या भेजेंगे
तब बोली बेटी नरसी की उन नारियों के आकर आगे
वो भगती हैं, बैरागी हैं, जो घर में था सो खो बैठे
वो बोलीं कुछ तो लिख भेजो, यह बोली क्या उनको लिखिये
कुछ उनके पास धरा होता तो आप ही वह भिजवा देते

जो चिट्ठी मैं लिख भेजूंगी, वो वाँच उसे पछतावेंगे
इक दमड़ी उनके पास नहीं, वो छूछक क्या भिजवावेंगे

उन नारियों को तो करनी थी उस वक़्त हँसी वां नरसी की
बुलवाके लिखइया जल्दी से, यह बात उन्होंने लिखवा दी
सामान हैं जितने छूछक के सब भेजो चिट्ठी पढ़ते ही
वो चीज़ें इतनी लिखवाईं बन आये न उनमें एक कभी
कुछ जेठ जिठानी का कहना, कुछ बातें सास और नन्दों की
कुछ देवरानी की बात लिखी, कुछ उनके जो, जो थे नेगी
थी एक टहलनी घर की जो सब बोलीं 'तू भी कुछ कहती'
वो बोली उनसे हँसकर वां, मँगवाऊँ मैं आ पत्थर जी

वो लिखना क्या था वां, लोगों मन चुहल हँसी पर धरना था
इन चीज़ों के लिख भेजने से शर्मिन्दा[१०] उनको करना था

जब चिट्ठी नरसी पास गई तब बांचते ही घबराय गये
लजियाये मन में और कहा, यह हो सकता है क्या मुझसे
यह एक नहीं बन आता है, हैं जो जो चिट्ठी बीच लिखे
है यह तो काम कठिन इस दम, वां क्यों कर मेरी लाज रहे

८. रिवाज, ९. व्यंग, १०. लज्जित।

वो भेजे इतनी चीज़ों को यां कुछ भी हो मक़दूर[११] जिसे
कुछ छोटी सी यह बात नहीं, इस आन भला किससे कहिये
इस वक़्त बड़ी लाचारी है, कुछ बन नहीं आता क्या कीजै
फिर ध्यान लगा हरि आसा पर और मन को धीरज दे अपने

वो टूटी सी इक गाड़ी थी चढ़ उस पर बे बिस्वास चले
सामान कुछ उनके पास न था, रख श्याम की मन में आस चले

हरि नाम भरोसा रख मन में चल निकले वाँ से जब नरसी
गो पल्ले में कुछ चीज़ न थी, पर मन में हरि की आसा थी
थी सिर पर मैली सी पगड़ी और चोली जामे की मसकी
कुछ जाहिर[१२] में अस्बाब[१३] न था, कुछ सूरत भी लजियाई सी
थे जाते रसते बीच चले थी आस लगी हरि किरपा की
कुछ इस दम मेरे पास नहीं, वां चाहियें चीजें बहुतेरी
वां इतना कुछ है लिख भेजा, मैं फ़िक्र करूं अब किस किसकी
जो ध्यान में अपने लाते थे, कुछ बात नहीं बन आती थी

जब उस नगरी में जा पहुंचे, सब बोले नरसी आते है
और लाने की जो बात कहो, इक टूटी गाड़ी लाते हैं

कोई बात न आया पूछने को जब जाके देखा नरसी को
और जितना जितना ध्यान किया, कुछ पास न देखा उनके तो
जब बेटी ने यह बात सुनी कह भेजा क्या क्या लाये हो
जो छूछक के सामान किये सब घर में जल्दी भेजवा दो
दो हंस हंस अपने हाथों से यां देना है अब जिस जिसको
यह बोले तब उस बेटी से, हरि किरपा ऊपर ध्यान धरो
था पास हमारे क्या बेटी, अब लाने की कुछ मत पूछो
कुछ ध्यान जो लाने का होवे सीकिशन कहो सीकिशन कहो

इस आन जो हरि ने चाहा है, इक पल में ठाठ बना देंगे
है जो जो यां से लिख भेजा इक आन में सब भिजवा देंगे

११. सामर्थ्य, १२. प्रकट. १३. सामान।

सीकिशन भरोसे जब नरसी यह बात जो मन में कह बैठे
क्या देखते हैं वां आते ही सब ठाठ वो उस जा आ पहुँचे
कुछ छकड़ों[१४] पर अस्बाब[१५] कसे, कुछ भैंसों पर कुछ ऊंट लदे
थे हसुली खड़वे सोने के, और ताश की टोपी और कुर्ते
कुल कपड़ों का अमबार हुए, और ढेर किनारी गोटे के
कुछ गहने झुमके चार तरफ़, कुछ चमकें चीर झलाझल के
था नेग मे देना एक जिसे सो उसको बीस और तीस दिये
अब वाह वाह की इक धूम मची, और शोर[१६] आ हा हा के ठहरे

थी वो जो टहलनी उसकी मा वह भोली जिस दम ध्यान पड़ी
सो उसके लिए फिर ऊपर से, इक सोने की सिल आन पड़ी

वा जिस दम हरि की किरपा ने यूं नरसी की तब लाज रखी
उस नगरी भीतर घर घर मे तब नरसी की तारीफ[१७] हुई
बहुतेरे आदर-मान हुए और नाम बड़ाई की ठहरी
जो लिख भेजी थी ताने से हरि माया से वो साच हुई
सब लोग कुटुम के शाद[१८] हुए खुशवक़्त[१९] हुई फिर बेटी भी
वो नेगी भी खुशहाल हुए तारीफें कर कर नरसी की
वां लोग सब आये देखने को, और द्वारे ऊपर भीड लगी
यह ठाठ जो देखे छूछक के, सब बस्ती भीतर धूम पडी.

जो हरि से काम रखे उनका फिर पूरा क्यों कर काम न हो
जो हर दम हरि का नाम भजें, फिर क्योंकर हरि का नाम न हो

सीकिशन ने वां जब पूरी की सब नरसी की मन की आसा
इक पल में कर दी दूर सभी जो उनके मन की थी चिन्ता
यह ऐसी छूछक ले जाते सो उनमे था मक़दूर[२०] यह क्या
यह आदर-मान वहां पाते, यह उनसे कब हो सकता था

१४. गाड़ी, १५. सामान, १६. कोलाहल, १७. प्रशंसा, १८. प्रसन्न, १९. समृद्ध, २०. सामर्थ्य।

जो हरि किरपा ने ठाठ किया, वो एक न उनसे बन आता
यह इतनी जिसकी धूम मची सो ठाठ वो था हरि किरपा का
यह किरपा उन पर होती है जो रखते है हरि की आसा
हरि किरपा का जो वस्फ[२१] कहूँ वो बाते है सब ठीक बजा[२२]

है शाद[२३] 'नजीर' अब हरदम वो जो हरि के नित बलिहारी है
सीकिशन कहो सीकिशन कहो, सीकिशन वडे औतारी है

रामायण का एक सीन

ब्रज नारायण 'चकबस्त'

(राजा रामचन्द्र का मा से रुखसत होना)

रुख्सत[1] हुआ वो बाप से लेकर खुदा का नाम
राहे-वफा[2] की मंजिले[3]-अव्वल[4] हुई तमाम[5]
मंजूर[6] था जो मा की जियारत[7] का इन्तिजाम[8]
दामन से अश्क[9] पोछ के दिल से किया कलाम[10]

इज्हारे-बेकसी[11] से सितम[12] होगा और भी
देखा हमे उदास तो गम[13] होगा और भी

दिल को सभालता हुआ आखिर वो नौनिहाल[14]
खामोश[15] मा के पास गया सूरते-खयाल[16]

२१ गुण, २२ सच, २३ खुश।

रामायण का एक सीन

१. बिदा, २ प्रेम-मार्ग, ३ पड़ाव, ४. शुरू मे, ५ समाप्त, ६ मान्य, ७ दर्शन, ८. व्यवस्था, ९. आंसू, १० बातचीत, ११. बेचारगी प्रकट करना, १२. अत्याचार, १३ दुख, १४. बालक, १५. मौन, १६. ध्यान के रूप मे।

देखा तो एक दर[१७] में है बैठी वो ख़स्ताहाल[१८]
सक्ता[१६] सा हो गया है यह है शिद्दते - मलाल[२०]

तन में लहू का नाम नहीं ज़र्द[२१] रंग है
गोया[२२] बशर[२३] नहीं कोई तस्वीरे - संग[२४] है

क्या जाने किस ख़याल[२५] में गुम[२६] थी वो बेगुनाह[२७]
नूरे - नज़र[२८] पे दीदः - ए - हस्रत[२६] से की निगाह[३०]
जुम्बिश[३१] हुई लबो[३२] को, भरी एक सर्द[३३] आह[३४]
ली गोशाहा-ए-चश्म[३५] से अश्कों[३६] ने रुख़[३७] की राह

चेहरे का रंग हालते - दिल[३८] खोलने लगा
हर मू-ए-तन[३६] ज़बां[४०] की तरह बोलने लगा

आख़िर[४१] असीरे - यास[४२] का क़ुफ़्ले[४३] - दहन[४४] खुला
अफ़सान. - ए - शदायदे - रंज - ओ - मुहन[४५] खुला
इक दफ़्तरे - मज़ालिमे - चर्ख़े - कुहन[४६] खुला
वा[४७] था दहाने - जख़्म[४८] कि बाबे - सुख़न[४६] खुला

दर्दे - दिले - गरीब[५०] जो सर्फ़े - बयां[५१] हुआ
ख़ूने - जिगर[५२] का रंग सुख़न[५३] से अयां[५४] हुआ

रोकर कहा ख़मोश[५५] खड़े क्यों हो मेरी जां[५६]
मैं जानती हूँ जिस लिए आये हो तुम यहां
सब की ख़ुशी यही है तो सहरा[५७] को हो रवा[५८]
लेकिन मैं अपने मुँह से न हर्गिज़ कहूँगी हां

१७. दरवाजा, १८. दुर्दशाग्रस्त, १६. मूर्च्छारोग, २०. दुख की अधिकता, २१. पीला, २२. अर्थात, २३. इंसान, २४. पत्थर की मूर्ति, २५. ध्यान, विचार, २६. डूबी हुई, २७. निष्पाप, २८. आखों की ज्योत, पुत्र, २६. अपूर्ण अभिलाषा भरी आंख, ३०. नजर, दृष्टि, ३१. कम्पन, ३२. होठ, ३३. ठण्डी, ३४. आर्तनाद, ३५. आंख का कोना, ३६. आंसुओं ने, ३७. चेहरा, ३८. हृदय की दशा, ३६. शरीर का रोम-रोम, ४०. ज़बान, वाणी, ४१. अन्त में, ४२. निराशा का क़ैदी, ४३. ताला, ४४. मुंह, ४५. दुख और दर्द की अधिकता की कहानी, ४६. आसमान के अत्याचारों का विवरण, ४७. खुला, ४८. घाव का मुंह, ४६. बातचीत का द्वार, ५०. ग़रीब के दिल का दर्द, ५१. बयान में ख़र्च, ५२. जिगर का ख़ून, ५३. बातचीत, ५४. प्रकट, ५५. मौन, ५६. प्राण, ५७. जंगल, ५८, रवाना।

किस तरह बन में आँखों के तारे को भेज दूं
जोगी बना के राजदुलारे को भेज दूं

दुनिया का हो गया है यह कैसा लहू[५६] सपेद[६०]
अन्धा किए हुए है जर - ओ - माल[६१] की उमेद[६२]
अंजाम[६३] क्या हो कोई नहीं जानता यह भेद
सोचे बशर[६४] तो जिस्म[६५] हो लरजां[६६] मिसाले - बेद[६७]

लिक्खी है क्या हयाते - अबद[६८] इनके वास्ते
फैला रहे हैं जाल यह किस दिन के वास्ते

लेती किसी फ़कीर[६९] के घर में अगर जनम
होते न मेरी जान को सामान यह बहम[७०]
डसता न सांप बनके कुछ शौकत - ओ - हशम[७१]
तुम मेरे लाल थे मुझे किस सल्तनत[७२] से कम

मैं खुश हूँ फूक दे[७३] कोई इस तख्त-ओ - ताज[७४] को
तुम ही नहीं तो आग लगाऊँगी राज को

किन किन रियाज़तों[७५] से गुजारे हैं माह-ओ - साल[७६]
देखी तुम्हारी शक्ल[७७] जब अय मेरे नौनिहाल[७८]
पूरा हुआ जो ब्याह का अरमान[७९] था कमाल
आफ़त[८०] यह आई मुझ पे हुए जब सफ़ेद बाल

छुटती हूँ उनसे जोग लिया जिनके वास्ते
क्या सब किया था मैंने इसी दिन के वास्ते

५९. रक्त, ६०. सफ़ेद, श्वेत, ६१. धन-सम्पत्ति, ६२. आशा, ६३. अंत, ६४. इंसान, ६५. शरीर, ६६. कम्पायमान्, ६७. बेंत की तरह, ६८. अमर जीवन, ६९. भिखारी, ७०. मुहैया, प्राप्त, ७१. वैभव और नौकर-चाकर, ७२. राजपाट, ७३. आग लगा दो, ७४. सिंहासन और राजमुकुट, ७५. तपस्या, ७६. महीने और वर्ष, ७७ सूरत, ७८. बालक, ७९. अभिलाषा, ८०. विपत्ति ।

ऐसे भी नामुराद[८१] बहुत आयेंगे नज़र
घर जिनके बेचिराग़[८२] रहे आह उम्र भर
रहता मिरा भी नख़्ले - तमन्ना[८३] जो बेसमर[८४]
यह जा-ए-सब्र[८५] थी कि दुआ[८६] में नहीं असर[८७]

लेकिन यहां तो ,बन के मुक़द्दर[८८] बिगड़ गया
फल फूल लाके बाग़े - तमन्ना[८९] उजड़ गया

सरज़द[९०] हुए थे मुझसे ख़ुदा जाने क्या गुनाह[९१]
मंझधार में जो यूं मिरी किश्ती[९२] हुई तबाह[९३]
आती नज़र नहीं कोई अम्न - ओ - अमां[९४] की राह[९५]
अब यां से कूच हो तो अदम[९६] मे मिले पनाह[९७]

तक़सीर[९८] मेरी ख़ालिक़े - आलम[९९] बहल[१००] करे
आसान मुझ ग़रीब की मुश्किल अजल[१०१] करे

सुनकर ज़बां[१०२] से मां की यह फ़रियाद[१०३] दर्दख़ेज़[१०४]
इस ख़स्त:जां[१०५] के दिल पे चली ग़म[१०६] की तेग़े-तेज़[१०७]
आलम[१०८] यह था क़रीब[१०९] कि आँखें हों अश्करेज़[११०]
लेकिन हज़ार ज़ब्त[१११] से रोने से की गुरेज़[११२]

सोचा यही कि जान से बेकस[११३] गुज़र न जाये
नाशाद[११४] हमको देख के मां और मर न जाये

फिर अर्ज़[११५] की यह मादरे - नाशाद[११६] के हुज़ूर[११७]
मायूस[११८] क्यों हैं आप अलम[११९] का है क्यों वफ़ूर[१२०]

८१. अभागे, ८२. औलाद से वंचित, ८३. आशाओं का वृक्ष, ८४. बिना फल का ८५. सतोष की जगह, ८६. प्रार्थना, ८७. प्रभाव, ८८. भाग्य, ८९. अभिलाषाओं का उपवन, ९०. घटित, ९१. पाप, अपराध, ९२. नाव, ९३. बरबाद, ९४. शांति, ९५. मार्ग, ९६. परलोक, ९७. शरण, ९८. अपराध, ९९. ससार का स्रष्टा, १००. माफ़, १०१. मृत्यु, १०२. ज़बान, वाणी, १०३. आर्तनाद, १०४. दु:खभरा, १०५. जर्जर शरीर, १०६. दु:ख, १०७. तेज तलवार, १०८. दशा, हालत, १०९. निकट, ११०. आंसुओं से पूर्ण, १११. सहनशीलता, ११२. नफ़रत, ११३. दुर्बल, ११४. दु:खी, ११५. निवेदन, ११६. दु:खी मां, ११७. सेवा में, ११८. निराश, ११९. दु:ख, १२०. आधिक्य ।

सदमा[१२१] शाक़[१२२] ग्रालमे - पीरी[१२३] में है ज़रूर
लेकिन न दिल से कीजिये सब्र - ग्रो - क़रार[१२४] दूर

शायद ख़िज़ां[१२५] से शक्ल[१२६] अयां[१२७] हो बहार[१२८] की
कुछ मस्लेहत[१२९] इसी में है परवर्दिगार[१३०] की

यह जाल यह फ़रेब[१३१] यह साजिश[१३२] यह शोर-ग्रो-शर[१३३]
होना जो है सब इसके बहाने में सर बसर[१३४]
ग्रस्बाबे - ज़ाहिरी[१३५] हैं न इन पर करो नज़र
क्या जाने क्या है पर्द: - ए - क़ुदरत[१३६] में जल्वागर[१३७]

ख़ास उसकी मस्लेहत[१३८] कोई पहचानता नहीं
मंज़ूर क्या उसे है कोई जानता नहीं

राहत[१३९] हो या कि रंज[१४०] खुशी हो कि इंतिशार[१४१]
वाजिब[१४२] हर एक रंग मे है शुक्रे[१४३] किर्दगार[१४४]
तुम ही नहीं हो कुश्त: - ए - नैरंगे - रोजगार[१४५]
मातमकदे[१४६] में दहर[१४७] के लाखों हैं सोगवार[१४८]

सख़्ती[१४९] सही नही कि उठाई कड़ी[१५०] नही
दुनिया मे क्या किसी पे मुसीबत[१५१] पड़ी नहीं

देखे हैं इससे बढ़के जमाने के इंक़िलाब[१५२]
जिनसे कि बेगुनाहों की उम्र[१५३] हुई ख़राब
सोज़े-दरू[१५४] से क़ल्ब - ग्रो - जिगर[१५५] हो गये कबाब[१५६]
पीरी[१५७] मिटी किसी की किसी का मिटा शबाब[१५८]

१२१. दु:ख, १२२. जानलेवा, कष्टप्रद, १२३. बुढापा, १२४ धीरज, १२५. पतझड़, १२६. सूरत, १२७. प्रकट, १२८. बसत, १२९. रहस्य, राज़, १३०. ख़ुदा, १३१. धोखा, १३२. षड्यंत्र, १३३. कोलाहल, १३४. बिल्कुल, सब, १३५. प्रकट उपकरण, १३६. प्रकृति के पर्दे में, १३७. प्रकट, ज़ाहिर, १३८. राज़, नेकी, १३९. सुख, १४०. दु:ख, १४१. ग्रस्त-व्यस्तता, १४२. उचित, १४३. धन्यवाद, १४४. ख़ुदा, १४५. जमाने के मायाजाल के शिकार, १४६. शोकगृह, १४७. दुनिया, १४८. शोकातुर, १४९. विपत्ति, मुसीबत, १५०. कठिनाई, १५१. विपत्ति, १५२. परिवर्तन, १५३. जीवन, ग्रायु, १५४. गुप्त जलन, १५५. हृदय, १५६. भुन गये, १५७. बुढ़ापा, १५८ जवानी ।

कुछ बन नहीं पड़ा जो नसीबे[१५९] बिगड़ गये
वो बिजलियां गिरीं कि भरे घर उजड़ गये

मां बाप मुंह देखते थे जिनका हर घड़ी
क़ायम[१६०] थीं जिनके दम से उमीदें बड़ी बड़ी
दामन पे जिनके गर्द[१६१] भी उड़कर नहीं पड़ी
मारी न जिनको ख़्वाब[१६२] में भी फूल की छड़ी

महरूम[१६३] जब वो गुल हुए रंगे-हयात[१६४] से
उनको जलाके ख़ाक किया अपने हाथ से

कहते थे लोग देख के मां बाप का मलाल[१६५]
इन बेकसों[१६६] की जान का बचना है अब मुहाल[१६७]
है किबरियाई[१६८] शान गुज़रते ही माह-ओ-साल[१६९]
ख़ुद दिल से दर्दे-हिज्र[१७०] का मिटता गया ख़याल

हां कुछ दिनों तो नौह-ओ-मातम[१७१] हुआ किया
आख़िर[१७२] को रोके बैठ गये और क्या किया

पड़ता है जिस ग़रीब पे रंज-ओ-मुहन[१७३] का बार
करता है उसको सब्र[१७४] अता[१७५] आप किर्दगार[१७६]
मायूस[१७७] होके होते हैं इंसा[१७८] गुनाहगार[१७९]
यह जानते नहीं वो है दाना-ए-रोज़गार[१८०]

इंसान उसकी राह में साबित[१८१] क़दम रहे
गर्दन वही है अम्रे-रज़ा[१८२] में जो ख़म[१८३] रहे

१५९. भाग्य, १६०. स्थिर, १६१. धूल, १६२. स्वप्न, १६३. वंचित, १६४. जीवन का रंग, १६५. दुःख, रंज, १६६ दुर्बल, १६७. कठिन, १६८. ख़ुदा की शान, १६९. महीने और वर्ष, १७०. विरह का दुःख, १७१. शोक-विलाप, १७२. अन्त में, १७३. शोक, १७४. धीरज, धैर्य, १७५. प्रदान, १७६. ख़ुदा, १७७. निराश, १७८. मनुष्य, १७९. पापी, १८०. ज्ञानी, १८१. दृढ़, १८२. स्वीकृति, १८३. झुकी।

और आपको तो कुछ भी नहीं रंज[184] का मुक़ाम[185]
बादे - सफ़र[186] वतन[187] में हम आयेंगे शादकाम[188]
होते हैं बात करते में चौदह बरस तमाम[189]
क़ायम उमीद ही से है दुनिया है जिसका नाम

और यूं कहीं भी रंज - ओ - बला[190] से मफ़र[191] नहीं
क्या होगा दो घड़ी में किसी को ख़बर नहीं

अक्सर रियाज़[192] करते हैं फूलों पे बाग़बां[193]
है दिन की धूप रात की शबनम[194] इन्हें गिरां[195]
लेकिन जो रंगे - बाग़[196] बदलता है नागहां[197]
वो गुल हज़ार पर्दों में जाते हैं रायेगां[198]

रखते हैं जो अज़ीज़[199] इन्हें अपनी जां की तरह
मलते हैं दस्ते-यास[200] वो बर्गे - ख़िज़ां[201] की तरह

लेकिन जो फूल खिलते हैं सहरा[202] में बेशुमार[203]
मौक़ूफ़[204] कुछ रियाज़[205] पे उनकी नहीं बहार
देखो यह क़ुदरते - चमन - आरा-ए - रोज़गार[206]
वो अब्र-ओ - बाद[207]- ओ - बर्फ़[208] में रहते हैं बेक़रार[209]

होता है उनपे फ़ज़्ल[210] जो रब्बे - करीम[211] का
मौजे - समूम[212] बनती है झोंका नसीम[213] का

अपनी निगाह[214] है करमे[215] - कारसाज़[216] पर
सहरा[217] चमन बनेगा वो है मेहरबां[218] अगर

१८४. दुःख, १८५. स्थान, १८६. यात्रा के बाद, १८७. देश, १८८. ख़ुश, १८९. खत्म, समाप्त, १९०. शोक और विपत्ति, १९१. बचाव, छुटकारा, १९२. मेहनत, परिश्रम, १९३. माली, १९४. ओस, १९५. महंगी, भारी, १९६. बाग़ का रंग, १९७. अचानक, १९८. व्यर्थ, १९९. प्रिय, २००. निराशा के हाथ, २०१. पतझड़ के पत्ते, २०२ जंगल, २०३. अनगिनत, २०४. निर्भर, २०५. परिश्रम, तपस्या, २०६. प्रकृति का चमन को सजाने का काम, २०७. बादल और हवा, २०८. हिम, २०९. बेचैन, २१०. दया, कृपा, २११. दयालु भगवान्, २१२. लू की मौज, २१३. प्रातः-समीर, २१४. दृष्टि, २१५. दया, २१६. भगवान्, २१७. जंगल, २१८. दयालु, मेहरबान ।

जंगल हो या पहाड़, सफ़र[२१९] हो कि हो हज़र[२२०]
रहता नहीं वो हाल से बन्दे के बेख़बर[२२१]
उसका करम[२२२] शरीक[२२३] अगर है तो ग़म[२२४] नहीं
दामाने - दश्त[२२५] दामने - मादर[२२६] से कम नहीं

सीता हरण

मुंशी बनवारी लाल 'शोला'

इतने में एक आहू - ए - ज़र्री[१] पड़ा नज़र
ख़ुश रंग रूप[२] जिस्म[३] तिलाकार[४] सीमबर[५]
मर्जां[६] की शाख़ें सींग थे ख़ुर सूरते - गुहर[७]
आँखें तिलस्म-जा[८] थीं छलावा था फ़ितनागर[९]
तिनके थे सब्ज़[१०] दूब के मुंह में ग़ज़ाल[११] के
दुम्बाले[१२] जैसे चश्म[१३] बुते - ख़ुशजमाल[१४] के

•

दिलकश[१५] मिसाले-हल्क़:-ए-गेसू[१६] ख़मीदा[१७] दुम
दिलहा- ए-पुरशिगाफ़[१८] की मानिन्द[१९] चारों सुम
गर्दन में घूंघरू थे कमर थी शिकम[२०] में गुम
रफ़्तार[२१] की सदा[२२] थी छमा छूम छूम छम

२१९. यात्रा, २२०. देश में निवास, २२१. उदासीन, २२२. दया, २२३. सम्मिलित, २२४. दुःख, २२५. जंगल का दामन, २२६. मां का आंचल।

सीता हरण

१. सुनहरी हिरन, स्वर्ण-मृग, २. सुन्दर रूप, ३. शरीर, ४. सुनहरी, ५. चांदी का, ६. मूंगा, प्रवाल, ७. मोती, ८. जादूगरी, ९. उपद्रवी, १०. हरी, ११. हिरन, १२. आंख का कोया, १३. आंखें, १४. सुन्दर मूर्ति, १५. मोहक, १६. लटाओं की गोलाई की तरह, १७. मुड़ी हुई, १८. कट, दरार, १९. तरह, प्रकार, २०. पेट, २१. गति, २२. आवाज़।

जिस्मे - जवाहरीं[२३] पे खिले · सब्ज़[२४] बाग़ थे
नीलम की तख्ती पुश्त[२५] थी अल्मास[२६] दाग़[२७] थे

जंगल में सामने से गुज़र कर! निकल चला
करता हुआ किलोल! उभर कर! निकल चला
मौजे - हवा[२८] से बिगड़ा! संवर कर निकल चला
चौंका ज़रा! तो चौकड़ी भर कर निकल चला

देखा श्री सिया ने तो कुछ जी लुभा गया
आहू[२९] का मृगनयनी को अन्दाज़ भा गया

रघुबर से बोलीं देख के आहा है क्या हिरन
क्या रंग मीनाकार[३०] है ? क्या ख़ुशनुमा[३१] बदन[३२]
सोसन[३३] के फूल का कोई ग़ुंचा[३४] है या दहन[३५]
साये से भागता है यह शोख़ी[३६] का है चलन

हे नाथ लाओ गर यह ग़ज़ाले - ख़ुतन[३७] मिले
क्या अच्छी मिरगछाला हो जो यह हिरन मिले

रघुराई सुनके इतनी उठे! मुस्कुरा चले
तीर-ओ - कमां[३८] को दोश[३९] के ऊपर सजा चले
सब राक्षसों के भेव कपट छल बता चले
भाई लखन को बहरे - हिफ़ाज़त[४०] बता चले

माया रची हुई थी कहां का शिकार था
सब जानते थे आप जो कुछ होनहार[४१] था

क़स्दे - शिकार[४२] आहु-ए[४३] शोख़ - ओ - शरीर[४४] है
अन्दाज़े - शस्त[४५] आप ही अपनी नज़ीर[४६] है

२३. रत्नजटित शरीर, २४. हरे, २५. पीठ, २६. हीरे, २७. धब्बे, २८. हवा का झोंका, २९. हिरन, ३०. जड़ाऊ काम, ३१. सुन्दर, ३२. शरीर, ३३. कुमुदनी, ३४. कली, ३५. मुंह, ३६. चंचलता, ३७. ख़ुतन का हिरन, ३८. धनुष और बाण, ३९. कंधा, ४०. सुरक्षा के लिए, ४१. होने वाला, ४२. शिकार का संकल्प, ४३. मृग, ४४. चंचल, चपल, ४५. निशाने का ढंग ४६. उदाहरण।

दिलदोज़[४७] है ख़दंग[४८] मगर दिलपज़ीर[४९] है
एक हाथ में कमान[५०] है चुटकी में तीर है

हल्का सा है पसीना रुख़े - ताबदार[५१] पर
आँखें लड़ी हुई हैं हिरन के शिकार पर

नावक की इक सदा[५२] थी जो सन से निकल पड़ी
आँखों की पुतली ! रूह[५३] बदन से निकल पड़ी
इक जलती शम्अ थी ! जो लगन से निकल पड़ी
घबरा गया ! ज़बान[५४] दहन[५५] से निकल पड़ी

एक देने मोक्ष ! दूसरा लेने को जां गिरा
तीरे - नज़र[५६] के साथ ही ! तीरे - कमा[५७] गिरा

चौकन्ना ईस्तादा[५८] था ! आहू[५९] रवां[६०] कभी
पिन्हा[६१] कभी नजर से ! नज़र में अयां[६२] कभी
फुर्ती से मिस्ले-बर्क़े-जहिन्दा[६३] तपां[६४] कभी
तड़पा जमी[६५] पे ! उछला सू-ए-आस्मां[६६] कभी

खाते ही तीर ! दर्शनों को मेहरा फिर गया
भाई लखन चलो ! यह सदा[६७] देके गिर गया

आवाज़ सुनके जानकी व्याकुल हुई इधर
बोलीं लखन से देखो हे तात ! लो ख़बर
तुमको पुकारते हैं ! कोई बात है [illegible]र
आवाज़ उधर से आई है स्वामी गये जिधर

संकट कोई ज़रूर है ! जो पेच-ओ-ताब[६८] है
आवाज़ में है दर्द सा ! कुछ इज़्तराब[६९] है

४७. दिल में घुस जाने वाला, ४८. तीर, ४९ मोहक, ५०. धनुष, ५१. तेजपूर्ण, ५२. आवाज़, ५३. आत्मा, प्राण, ५४. जीभ, ५५. मुंह, ५६. नजर का तीर, ५७. धनुष का तीर, ५८. खड़ा हुआ, ५९. हिरन, ६०. गतिशील, ६१. छुपा हुआ, ६२. प्रकट, ६३. तड़पती हुई बिजली की तरह, ६४. जलती हुई, ६५. धरती, ६६. गगन की ओर, ६७. आवाज़, ६८. अकड़, ६९. बेचैनी, व्याकुलता।

बोले लखन सिया से यह चरणों में धर के सर
इक सहल[७०] सा शिकार था ! माता नहीं ख़तर[७१]
हैं रामचन्द्र मालिके-कौनैने-बहर-ओ-बर[७२]
सबकी ख़बर जो लेते है ! कौन उनकी ले ख़बर

दुख उनको नाम मात्र भी मिल सकता ही नही
बे हुक्म[७३] जिनके पत्ता तो हिल सकता ही नही

माना श्री सिया ने लखन का न इक बचन
ताना[७४] भरे जवाब दिये क्या ही दिलशिकन[७५]
इक दम कलेजा बैठ गया काप उठा बदन
बढ़ता था और दर्द जो समझाते थे लखन

रिक़्क़त[७६] के जोश, रंज-ओ-अलम[७७] से उबल पडे
जल मात्र नेत्र हो गये आँसू निकल पडे

आखिर लखन उठे ही धनुष बान को संवार
हल्का[७८] श्री सिया का किया खीचकर हिसार[७९]
बाहर चरण न रखना ! यह समझा के बार बार
अंगडाई लेके शेर बढा जानिबे-शिकार[८०]

पडता कही भी फ़र्क है ! बधना[८१] की बात मे
रावण लगा हुआ था यहाँ ! अपनी घात मे

जाना पडा लखन को कुटी छोड़कर ज़रूर
मौके[८२] की ताक में था वह चालाक पुर गुरूर[८३]
भर ब्राह्मन का रूप गया सीता के हुज़ूर[८४]
हे माई भिक्षा दीजियो ! आया हूँ चलके दूर

दाता समझके घर से चला ! नाम सुन तेरा
भूका बिराहमन हूँ ! बड़ा होगा पुन तेरा

७०. सरल, आसान, ७१. भय, ७२. धरती और सागर की दुनिया, ७३. बिना आज्ञा, ७४. व्यंग, ७५. दिल तोड़ने वाला, ७६. रुदन, ७७. दुःख और शोक, ७८. चक्र, ७९. परिधि, ८०. शिकार की ओर, ८१. विधिना, ८२. अवसर, ८३. घमण्डी, ८४. सेवा में ।

वो कंदमूल फल जो लगीं देने दिलपिज़ीर[८५]
बोला श्री सिया से भिकारी सियह-ज़मीर[८६]
देनी अगर है भीक तो दो छोड़कर लकीर
भिक्षा बंधी हुई! नहीं लेते कभी फ़क़ीर
बाहर जो कुंडली से चलीं धोका खा गईं
रावण के छल[८७] में! हाय महारानी आ गईं

आलमे-फ़िराक़[१] में

(एक राज़दार सखी का राधा की कैफ़ियत कृष्ण के सामने बयान करना)

'मुनव्वर' लखनवी

जज़्ब:-ए-शौक़[२] से बेताब[३] हैं क्या क्या राधे
आपके वस्ल[४] की रखती हैं तमन्ना[५] राधे

दम बदम[६] आपकी क़ुर्बत[७] का गुमां होता है
यही राधा की अदाओं[८] से अयां[९] होता है

हो गया आपसे मस[१०] पैकरे-सीमीं[११] उनका
हो गया वक़्फ़े-मसर्रत[१२] दिले-ग़मगीं[१३] उनका

इसी आलम[१४] में यह मासूम[१५] को महसूस[१६] हुआ
इस तसव्वुर[१७] से बहुत खुश दिले-मायूस[१८] हुआ

८५. मनमोहक, ८६. काले दिल वाला, ८७. जाल।

आलमे-फ़िराक़

१. विरह की हालत, २. प्रेम भावना, ३. व्याकुल, ४. मिलन, ५. आकांक्षा, ६. हर क्षण, ७. निकटता, ८. हावभाव, ९. प्रकट, १०. स्पर्श, ११. चांदी का आकार, १२. ख़ुशी पर समर्पित, १३. दुखी दिल, शोकातुर हृदय, १४. हालत, दशा, १५. निष्पाप, निस्पृह, १६. अनुभव, १७. कल्पना, १८. निराश दिल।

लब[१९] श्रीकृष्ण के रक्खे हैं लबों परं उनके
छीनने के लिए दिल ग्राये हैं दिलबर[२०] उनके

इनके उभरे हुए सीने की ग्रदा[२१] है कुछ ग्रौर
उनके नाखुन की खराशों[२२] का मजा[२३] है कुछ ग्रौर

सनसनाहट से फिर ग्राजा[२४] की हिरासां[२५] होना
लब[२६] से ताकीद[२७] के पहलू का नुमायां[२८] होना

चश्मे-महबूब[२९] की शोखी[३०] का नज़ारा[३१] करके
रोकना पासे-हया[३२] से वो इशारा करके

कहके 'यह क्या है' ज़रा खुद को संभालें सरकार
जो तक़ाज़े[३३] भी हों दिल के उन्हें टालें सरकार

यूं ही ग्राता है ज़बां[३४] पर जो कहा करती है
ग्रापके ध्यान मे ग़र्क़ाब[३५] रहा करती है

(२)

एक पत्ता भी ग्रगर बन मे खड़क जाता है
यही मायूसे-मुहब्बत[३६] को खयाल[३७] ग्राता है

किसी जानिब[३८] से हुज़ूर ग्राप चले ग्राते हैं
माइले-बारिशे-नूर[३९] ग्राप चले ग्राते है

ज़ेवरों से तने-ज़ेबा[४०] को सजा लेती है
खुद को महबूब[४१] की महबूब बना लेती है

१९. होंठ, २०. मनमोहक, २१. हावभाव, २२. रगड़, २३. ग्रानन्द, २४. ग्रंग-प्रत्यंग, २५. निराशा, २६. होंठ, २७. चेतावनी, २८. प्रकट, २९. प्रियतम की ग्राख, ३०. चंचलता, ३१. दर्शन, ३२. लज्जा से, ३३. मांगें, ३४. जबान, ३५. डूबी हुई, ३६. प्रेम में निराश, ३७. ध्यान, ३८. ग्रोर, ३९. प्रकाश की वर्षा, ४०. सुन्दर शरीर, ४१. प्रेमिका ।

सेज[४२] फूलों की सजाने में लगी रहती हैं
घर को गुल्ज़ार[४३] बनाने में लगी रहती हैं

कुछ न कुछ सोचती रहती हैं मुसलसल[४४] राधे
हैं ग़म-ओ-फ़िक्र[४५] की तस्वीर[४६] मुकम्मल[४७] राधे

दिल में उठते हैं बहर शक्ल[४८] ख़यालात[४९] हज़ार
लबे-खामोश[५०] पे आते हैं सवालात[५१] हज़ार

आपके ध्यान से रहती नहीं ग़ाफ़िल[५२] दम भर
क्या करें राह[५३] पर आता ही नही दिल दम भर[५४]

जो न आप आये तो है रात का कटना मुश्किल[५५]
है बहुत चादरे-हिर्मां[५६] का सिमटना मुश्किल

सुब्ह होते रुखे-अय्याम[५७] जो मुड़ जायेगा
ताइरे-जां[५८] क़फ़से-हुस्न[५९] से उड़ जायेगा

(जयदेवकृत 'गीत गोविन्द' का उर्दू अनुवाद)

४२. बिस्तर, बिछौना, ४३. उपवन, ४४. लगातार, ४५. चिंता और शोक, ४६. चित्र, ४७. पूर्ण, ४८. हर हालत में, ४९. विचार, ५०. मौन होंठ, ५१. प्रश्न (ब०व०), ५२. बेख़बर, ५३. मार्ग, ५४. क्षण-भर, ५५. कठिन, ५६. निराशा की चादर, ५७. ज़माने का रुख़, ५८. आत्मा, ५९. सौंदर्य का पिंजरा।

कृष्ण और राधा की मुलाक़ात[1]

'मुनव्वर' लखनवी

(१)

जिस तरह रात की आमद[2] पे समन्दर उमड़े
देखकर चर्ख़[3] पे शक्ले-महे-अनवर[4] उमड़े

वो समन्दर जो हो बेताब[5] उमंगों वाला
वो समन्दर जो हो पुरशोर[6] तरंगों[7] वाला

एक मुद्दत[8] से वो ख़ूं करदः-ए-अरमाने-विसाल[9]
तालिबे-क़ुर्बते-महबूब[10] वो ख़्वाहाने-विसाल[11]

बहरे-इशरत[12] में वो ग़र्क़ाब[13] निहायत[14] हर वक़्त
आतिशे-शौक़[15] से बेताब[16] निहायत हर वक़्त

कृष्ण की दिल के तक़ाज़ों[17] से अजब[18] हालत[19] थी
जिससे आईना भी शशदर[20] था यह वो सूरत थी

दीदनी[21] थी सिफ़ते-शम्अ[22] तजल्ली[23] उनकी
राधिका की तरफ़ अब आँख उठी थी उनकी

१. भेंट, मिलन, २. आगमन, ३. गगन, ४. प्रकाशमान चन्द्र के रूप में, ५. बेचैन, ६. कोलाहलपूर्ण, ७. मौज, लहर, ८. अरसा, लम्बा समय, ९. मिलन की अभिलाषा, १०. प्रियतम की निकटता का इच्छुक, ११. मिलन का इच्छुक, १२. ऐश का समुद्र, १३. डूबा हुआ, १४. बहुत, १५. प्रेम-अग्नि, १६. व्याकुल, १७. मांग, १८. विचित्र, १९. दशा, २०. अचम्भित, २१. देखने योग्य, २२. चिराग़ की विशेषता, २३. दर्शन ।

(२)

राधिका ने भी श्रीकृष्ण की जानिब[२४] देखा
जो था मग़लूबे-मुहब्बत[२५] उसे गालिब[२६] देखा

उनकी गर्दन के थे जो हार कमर तक पहुँचे
सिलसिले शौक़[२७] के पायाने-नज़र[२८] तक पहुँचे

उनमें जमना की तरंगों का कफ़-आईना[२९] था
कहकशां[30] हुस्न[31] में हर बार सरे-सीना[३२] था

(३)

मनहरन कृष्ण की थी कितनी सलोनी मूरत
ज़र्द ज़ीरे[33] से भरी नील कंवल की सूरत

उनको राधा ने मुहब्बत की नज़र से देखा
दिलरुबाई[34] का सरापा[35] थे जिधर से देखा

(४)

बिजलियां थीं कि यह कानों में तिलाई[3६] कुंडल
था हसी[3७] चेहरः-ए-नाज़ुक[3८] कि शिगुफ़्ता[3९] था कंवल

दीद[४०] रुख[४१] की जो तमन्ना[४२] में यह हिल जाते थे
कुंडल आपस में बड़े शौक़[४3] से मिल जाते थे

मुस्कुराहट लबे-लाली[४४] की थी मौजे-गुलनार[४५]
जिनसे पैदा था हसीनों[४६] की तबीअत का उभार

२४. ओर, २५. प्रेम-पराजित, २५. विशेषता, २६. छाया हुआ, विजयी, २७. प्रेम के सिल-सिले, २८. दृष्टि की सीमा, २९. दर्पण, ३०. आकाश-गंगा, ३१. सौंदर्य, ३२. सीने का उभार, ३३. पराग, ३४. आकर्षण, ३५. सर से पैर तक, साक्षात्, ३६. सोने के, ३७. सुन्दर, ३८. कोमल चेहरा, ३९. ताज़ा, खिला हुआ, ४०. दर्शन, देखना, ४१. चेहरा, ४२. आकांक्षा, ४३. प्रेम, ४४. सुर्ख़ होंठ, ४५. सुर्ख़ फुलवार, अनार जैसी ४६. सुन्दरियां ।

(५)

जिस तरह अब्र[४७] मे हो नूरफ़िशां[४८] माहे-मुबी[४९]
फूल बालों में कुसुम के थे बला के रंगी[५०]

जीनते-ज़ुल्मते-शब[५१] चाँद का हाला[५२] जैसे
और फैला हो अन्धेरे मे उजाला जैसे

मलयागिरि[५३] का है यह चन्दन सरे-पेशानि[५४]-ए-नूर[५५]
इस हसी[५६] लौह[५७] पे क्या खूब है क़शके[५८] का ज़हूर[५९]

मर्कज़े-हुस्ने-नज़र[६०] जाने-तमन्ना[६१] के थे
कृष्ण इस शान से अब सामने राधा के थे

(६)

शिद्दते-शौक[६२] से इस्तादा[६३] थे जिनके रोये[६४]
दिल की ताईद[६५] पे आमादा[६६] थे जिनके रोये

लुत्फे-सोहबत[६७] के लिए हौसले[६८] उकसाते थे
जब्त[६९] दुश्वार[७०] था बेताब[७१] हुए जाते थे

इस क़दर[७२] गौहर-ओ-अलमास[७३] मे ताबानी[७४] थी
ज़ेवरो की तने-नीली[७५] पे दरख्शानी[७६] थी

४७. बादल, ४८. प्रकाश फैलानेवाला, ४९ पूर्णचन्द्र, ५०. खूबसूरत, ५१ रात के अंधेरे की शोभा, ५२. परिधि, ५३. एक पर्वत का नाम, ५४. ललाट पर, ५५. प्रकाश, ५६. सुन्दर, ५७. ललाट, ५८. तिलक, ५९. दर्शन, ६०. नजर के सौंदर्य का केन्द्र, ६१. अभिलाषा की जान, ६२. प्रेम की अधिकता, ६३ खड़ा, ६४. रोम, ६५. अनुमोदन, ६६. तैयार, ६७. संगत का आनन्द, ६८. साहस, हिम्मत, ६९. नियंत्रण, ७०. कठिन, ७१. बेचैन, ७२. इतना, ७३. हीरे, ७४. चमक, ७५. सांवला शरीर, ७६. चमक ।

गुम थीं इस कसरते-अनवार[७७] में राधे क्या क्या
महव[७८] थीं कृष्ण के दीदार[७९] में राधे क्या क्या

(७)

राधिका पर हुई इक तुरफ़ा[८०] मुसर्रत[८१] तारी[८२]
कृष्ण को देख के ऐसी हुई रिक़्क़त[८३] तारी

चंचल आँखों में मचलती हुई रानाई[८४] से
दिल के उमड़े हुए जज़्बात[८५] की गहराई से

कान तक अश्क[८६] गये बहके पसीने की तरह
चमक उट्ठे रुखे-रंगीं[८७] पे नगीने की तरह

(८)

राधिका देख के पहले तो उन्हें शर्माईं
दूर ही उनसे रहीं पास न उनके आईं

हौसले[८८] खुल गये सखियों के चले जाने से
काम बनता था न कुछ दिल का हिजाब[८९] आने से

शर्म अब दिल से थी मादूम[९०] हया[९१] रुख़सत[९२] थी
अब वो पलकों के झपकने की अदा[९३] रुख़सत थी

(९)

जा पहुंचीं जब कुंज भवन के बाहर सखियां जल्द से जल्द
हो गये ख़ुद ही फ़राहम[९४] क्या क्या ऐश[९५] के सामां[९६] जल्द से जल्द

७७. प्रकाश की अधिकता, ७८. तल्लीन, ७९. दर्शन, ८०. विचित्र, ८१. प्रसन्नता, ८२. छायी हुई, ८३. रुदन, ८४. शुभ दर्शन, ८५. भावनाएं, ८६. आँसू, ८७. सुन्दर चेहरा, ८८. साहस, ८९, लज्जा ,९०. लुप्त, ९१. लज्जा, ९२. ग़ायब, ९३. हाव-भाव, ९४. उपलब्ध, ९५. विलास, ९६. सामान, उपकरण ।

काम[९७] के तीरों से बेबस[९८] थीं राधे का था हाल अजीब[९९]
उनके सहने-दिल[१००] में बिछा था इस ज़ालिम[१०१] का जाल अजीब

फिर भी लब[१०२] थे महवे-तबस्सुम[१०३] ग़ुंच:-ए-नौरस[१०४] की सूरत
बन गई ख़ुद पूजा के क़ाबिल[१०५] कृष्ण के प्रेम की यह मूरत

ताज़ा ताज़ा फूलों पत्तों से थी सेज[१०६] सजी क्या क्या
राधा ने इस सेज की जानिब[१०७] ख़ास[१०८] अदाओं[१०९] से देखा

देखा अपनी आँखों से जब यह राधा का अल्हड़पन
अपनी जाने-तमन्ना[११०] से यूँ कृष्ण हुए मसरूफ़े-सुख़न[१११]

राधे तुम हो कितनी राना[११२] ख़त्म[११३] है तुम पर हुस्न ओ-जमाल[११४]
बस में तुम्हारे अब तो मैं हूँ दम भर को हो मेरा ख़याल[११५]

(१०)

चाँद से रौशन[११६] मुखड़े वाली अब हो मुझसे महवे-कलाम[११७]
दिलदारी[११८] की बातें कुछ हों अय दिलदारे-शोरी कलाम[११९]

मैं भी तुम्हारे सीने का यह आँचल राधे दूर करूँ
सैरे - जहाने-महरम[१२०] .खों को मसरूर[१२१] करूँ

(११)

हुस्न[१२२] का तुम मख़ज़न[१२३] हो राधे मुझ पर हो बेकार ही गरम
दिल क्यों सख़्त[१२४] बना रक्खा है अब तो तुम बन जाओ नरम

९७. कामदेव, ९८. विवश, ९९. विचित्र, १००. दिल का आँगन, १०१. अत्याचारी, १०२. होंठ, १०३. मुस्कुराहट में तल्लीन, १०४. नयी कली, १०५. योग्य, १०६. बिस्तर, १०७. ओर, १०८. विशेष, १०९. हाव-भाव, ११०. प्रेमिका, १११. बातचीत में व्यस्त, ११२. ख़ूबसूरत, ११३. समाप्त, ११४. सौंदर्य, ११५. ध्यान, ११६. प्रकाशमान, ११७. वार्तालाप में लीन, ११८. दिलों की, ११९. मीठी-मीठी बातें करनेवाला प्रियतम, १२०. जानी-बूझी दुनिया, १२१. मदमस्त, १२२. सौंदर्य, १२३. ख़ज़ाना, १२४. कठोर।

उस पर गलबा[125] शर्म-ओ-हया का[126] कर देता है आँखें बन्द
वो भी अदा मरगूब[127] थी मुझको है यह भी अन्दाज़[128] पसन्द

अच्छा गुस्सा खत्म करो अब गम[129] से फरागत[130] हासिल[131] हो
हम तुम दोनो हमपहलू[132] हो लुत्फे-सुहबत[133] हासिल हो

(जयदेवकृत 'गीत गोविन्द' का उर्दू अनुवाद)

१२५ आधिपत्य, १२६. लज्जा, १२७ पसद, १२८. अदाए, हाव-भाव, १२९ शोक, १३०. छुटकारा, १३१ प्राप्त, १३२. बगलगीर, १३३ सभोग का आनन्द।

हमारी हिकायात

(कथा-माला)

दूसरा भाग

शिवजी और पार्वती

(कामदेव का शिवजी को अपने तीर का निशाना बनाना)

'मुनव्वर' लखनवी

काम[1] तैयार हुआ इन्द्र से रुख़सत[2] के लिए
सरे-तस्लीम[3] ख़मीदा[4] था इताअत[5] के लिए

पांव जब काम ने चलने को उठाया अपना
इन्द्र ने हाथ मुहब्बत से बढ़ाया अपना

सख़्त[6] था हाथ यह सहलाने से इरावत[7] के
इससे आसार[8] नुमायां[9] थे मगर शफ़क़त[10] के

काम का दोस्त बसन्त उसकी रफ़ाक़त[11] में चला
सर के बल जादा-ए-इख़्लास-ओ-मुरव्वत[12] में चला

शोबदे[13] अपने दिखाने को रती साथ गई
हाथ शौहर[14] का बटाने को रती साथ गई

इसी आलम[15] में सरे-बामे-हिमाला[16] पहुँचे
आश्रम शिव का जहाँ था यह वहीं जा पहुँचे

कुछ अजब शान से था ज़ीनते-गुलज़ार[17] अशोक[18]
बन गया और भी ग़ैरतदहे-अशजार[19] अशोक

१. कामदेव, २. बिदा, ३. विनम्र मस्तक, ४. झुका हुआ, ५. आज्ञापालन, ६. कड़ा, ७. इन्द्र का हाथी, ८. लक्षण, ९. प्रकट, १०. कृपा, दया, ११. मैत्री, दोस्ती, १२. निष्ठा और मुरव्वत की राह, १३. चमत्कार, १४. पति, १५. दशा, १६. हिमालय की चोटी पर, १७. उपवन की शोभा, १८. अशोक वृक्ष, १९. वृक्षों की लाज रखने वाला।

टहनी टहनी में सितमकोश[२०] थी भूलों की बहार
हामिले-नग़मः-ए-ख़ामोश[२१] थी फूलों की बहार

यह, किसी शोख़[२२]-सितमगार[२३] के मुहताज[२४] न थे
यानी पाज़ेब[२५] की झनकार के मोहताज न थे

आम के बौर नये आलः-ए-तसख़ीर[२६] बने
काम की फ़ितनातराज़ी[२७] के लिए तीर बने

पत्तियां उनकी परे-तीर नज़र आती थीं
हुस्ने-मक़बूल[२८] की तस्वीर नज़र आती थीं

हो गई बौर की जब नश्व-ओ-नुमा-ए-कामिल[२९]
दिलरुबाई के हुए और भी जौहर[३०] शामिल

मस्त भौरों को बसन्त उस पे बिठा देता था
आम के बौर का दीवाना बना देता था

नाज़नीं[३१] फ़र्ते-नज़ाकत[३२] से थे गुलहा-ए-कनेर[३३]
आतिशी[३४] हुस्ने-लताफ़त[३५] से थे गुलहा-ए-कनेर

नाशिगुफ़्ता[३६] से वो टेसू के दहकते हुए फूल
शोला-सां[३७] आतिशे-पिन्हां[३८] से भड़कते हुए फूल

थी चकाचौंद निगाहों में चमक से उनकी
नूर[३९] था दश्त[४०] की राहों में दमक से उनकी

२०. सितम ढाने वाली, २१. मौन संगीत का रखने वाला, २२. चंचल, २३. अत्याचार करने वाली, प्रेमिका, २४. ज़रूरतमंद, २५. एक गहना, २६. वशीकरण का साधन, २७. उपद्रव खड़ा करना, २८. लोकप्रिय सौंदर्य, २९. बढ़वार, ३०. रत्न, ३१. कोमलांगिनी, ३२. नज़ाकत की अधिकता, ३३. कनेर के फूल, ३४. आग जैसा, ३५. पवित्रता का सौंदर्य, ३६. बिन खिले, ३७. शोले जैसा, ३८. छुपी हुई आग, ३९. प्रकाश, ४०. जंगल ।

गर्द[४१] हो काहकशां[४२] जिनसे ये वो राहें थीं
शाहिदे-फ़सले-बहारी[४३] की गुज़रगाहें[४४] थीं

दिले-मुज़तर[४५] की तरंगों से हिरन मतवाले
उसकी बेताब उमंगों से हिरन मतवाले

ज़ीरः-ए-गुल[४६] से चिरौंजी[४७] के नज़र उलझी थी
कुछ उलझने की न थी बात मगर उलझी थी

दश्ते-पुरकैफ़[४८] में जिस रुख़ से हवा आती थी
और पतझाड़ से मर-मर की सदा[४९] आती थी

दिल लुटाते थे उसी सम्त[५०] परेशां होकर
दौड़ जाते थे उस आवाज़ पे हैरां[५१] होकर

ख़त्म शोख़ी[५२] जो हसीनाने-गुलअन्दाम[५३] की थी
इस परिन्दे की सदा[५४] थी कि सदा काम की थी

क़ौसे-गुल[५५] तान के उस बन की तरफ़ काम चला
शान से रुद्र के मस्कन[५६] की तरफ़ काम चला

साथ ही उसके गई उसकी गुलअंदाम[५७] रती
सिफ़ते[५८]-बादे-बहारी[५९] थी सुबुकगाम[६०] रती

उसकी आमद[६१] से माअ़न[६२] रंग फ़ज़ा[६३] का बदला
देखते-देखते ही रुख़ वो हवा का बदला

४१. धूल, ४२. आकाश-गंगा, ४३. बसंत की फसल, ४४. मार्ग, ४५. बचैन दिल, ४६. फूल का पराग, ४७. एक सूखा मेवा, ४८. मादक जंगल, ४९. आवाज, ५०. ओर, दिशा, ५१. व्याकुल, ५२. चंचलता, ५३. फूल जैसे शरीर वाली सुन्दरियां, ५४. आवाज, ५५. फूल का धनुष, ५६. निवास-स्थान, ५७. सुन्दर, कोमलांगिनी, ५८. गुण, ५९. बसंत की हवा, ६०. मंदगति, ६१. आगमन, ६२. सहसा, ६३. वातावरण।

दिल के जज्बात[६४] की तक़दीर चमक उट्ठी थी
हर तरफ़ आग मुहब्बत की भड़क उट्ठी थी

मुज़तरिब[६५] सूरते-सीमाब[६६] था जोड़ा जोड़ा
ख्वाहिशे-वस्ल[६७] से बेताब[६८] था जोड़ा जोड़ा

मस्त भौंरे का दिल अंजाम[६९] से बेगाना था
अपने जज्बात[७०] से मजबूर था दीवाना था

काले काले वो हिरन मस्त नज़र आते थे
हिरनी हिरनी का बदन सींग से खुजलाते थे

हिरनियां और भी दिल उनका बढ़ा देती थी
बन्द आँखो से मुहब्बत का मजा लेती थी

दुल्हनें शर्म से महजूब[७१] थीं बेले ये न थी
हुस्न[७२] में शाहिदे-महबूब[७३] थी बेलें ये न थी

इन हसीनों को दिल आराम[७४] बनाने के लिए
अपने पहलू-ए-मुअम्बर[७५] मे बिठाने के लिए

अपनी शाखों से दरख्तों ने पकड़ रक्खा था
बाज़ु-ए-शौक़े-मुसलसल[७६] से जकड रक्खा था

था लताकुज पे नन्दी का मुकर्रर[७७] पहरा
रोज होते थे शरफ़याब[७८] यह देकर पहरा

काम नन्दी की मगर आँख बचाकर आया
खुद को पर्दे में लताफ़त[७९] के छुपाकर आया

६४. भावना, ६५. बेचैन, ६६. पारा, ६७. मिलन की इच्छा, ६८. आतुर, ६९. नतीजा, फल, ७०. भावनाएं, ७१. लज्जित, शर्मिन्दा, ७२. सौंदर्य, ७३. चहीती, प्रेमिका, ७४. दिल का चैन, ७५. सुगंधित पहलू, ७६. लगातार प्रेमपाश, ७७. नियुक्त, ७८. प्रतिष्ठित, ७९. कोमलता।

अब कमींगाह[८०] में बेवहम-ओ-गुमां[८१] जा पहुँचा
महव[८२] शिवजी थे रियाज़त[८३] में जहां जा पहुंचा

राजकन्या जो हिमांचल की इधर आ निकली
जज़्ब:-ए-शौक़[८४] की देने को खबर आ निकली

मौसमे-गुल[८५] में थी कुछ और ही आराइशे-तन[८६]
आज हर रंग के फूलों से थी ज़ेबाइशे-तन[८७]

ओज[८८] पर क़िस्मते-अन्दाज़-ओ-अदा[८९] थी इससे
और भी हुस्न[९०] की तौक़ीर[९१] सिवा[९२] थी इससे

ज़र्दि-ए-रंग[९३] से था मिहरे-ज़ियाबार[९४] कनेर
जिस्मे-पुरनूर[९५] पे था मतल:-ए-अनवार[९६] कनेर

सिंधवार[९७] अपनी जगह खास असर रखना था
इसका हलका[९८] शरफे-सिलके-गुहर[९९] रखता था

इक तरफ थी यह सजावट यह दिलआवेज़[१००] सिंगार
दूसरी सिम्त बलाखेज़[१०१] था सीने का उभार

झुक के चलने पे जो मजबूर किए देता था
सर्वअंदाम[१०२] को माज़ूर[१०३] किए देता था

रंग खुर्शीदे-सहर[१०४] पैरहने-नूर[१०५] में था
एक शोला[१०६] था जो लिपटा हुआ काफ़ूर[१०७] में था

८०. घात लगाने का स्थान, ८१. जिसकी शका न थी, ८२. तल्लीन, ८३. तपस्या, ८४. प्रेम-भावना, ८५. बसन्त, ८६. शरीर की सजावट, ८७. शरीर की शोभा, ८८. उन्नति, ८९. हाव-भाव की क़िस्मत, ९०. सौदर्य, ९१. प्रतिष्ठा, ९ अधिक, ९३. रंग का पीलापन, ९४. प्रकाशमान चन्द्रमा, ९५. प्रकाशमान शरीर, ९६. प्रकाश का क्षितिज, ९७. एक जंतु विशेष, ९८. परिधि, ९९. मोतियों की लडी, १००. मनमोहक, १०१. ज़ुल्म ढाने वाला एक जतु विशेष, १०२. सुडौल और लम्बे शरीर वाला, १०३. असमर्थ, १०४. प्रातःकाल के सूर्य का रंग, १०५. प्रकाश के वस्त्र, १०६. लपट, ज्वाला, १०७. कपूर।

झूमती नाज़[१०८] से अन्दाज़ से बल खाती थी
चलती फिरती-सी कोई बेल नज़र आती थी

सहर अंगेज़[१०९] बकुल की वो निगारीं[११०] ज़ंजीर
मोजज़ाखेज़[१११] वो फूलों की बहारीं ज़ंजीर

दमे-रफ़तार[११२] कमर से जो खिसक जाती थी
और भी आग जवानी की भड़क जाती थी

फ़ितनः-ए-महशरे-जज़्बात[११३] की बानी थी यह
काम की क़ौस[११४] का इक चिल्लः-ए-सानी[११५] थी यह

बिम्ब फल की लबे-लालीं[११६] से थी रंगत पैदा
बढ़के अंगूर से भी कुछ थी हलावत[११७] पैदा

भौंरे आ आ के मज़ा इसका लिया करते थे
तंग मासूम[११८] को हद दर्जा[११९] किया करते थे

हाथ में था जो कंवल उससे हटाती थीं उन्हें
पास आते थे वो जब दूर भगाती थीं उन्हें

उसकी हर मौजे-नफ़स[१२०] इत्र लुटा जाती थी
प्यास उड़ते हुए भौरों की बढ़ा जाती थी

कुछ नज़र काम की इस तरह दमे-दीद[१२१] बंधी
अब उसे कार[१२२] बरारी[१२३] की फिर उमीद बंधी

दूसरी सिम्त थे शिव आलमे-अनवार[१२४] में गुम
हमातन-चश्म[१२५] थे उस ज़ात के दीदार[१२६] में गुम

१०८. अदा, १०९. जादू जगाने वाली, ११०. सचित्र, सुंदर, १११. चमत्कार दिखाने वाली, ११२. चलते समय, ११३. भावनाओं की क़यामत की विपत्ति, ११४. कामदेव का धनुष, ११५. दूसरा चिल्ला, ११६. सुर्ख़ होंठ, ११७. मिठास, ११८. निष्पाप, ११९. बेहद, १२०. सांस की मौज, १२१. दर्शन के समय, १२२. काम, १२३. बन आना, १२४. नूर की दुनिया, प्रकाश का संसार, १२५. साक्षात आंखें, १२६. दर्शन ।

मालिके-कुल[127] जिसे · मुख़्तारे-जहां[128] कहते हैं
बानी[129]-ए-सिलसिला:-ए-कौन-ग्रो-मकां[130] कहते हैं

जो था मदहोश[131] उसे होश ग्रब ग्राया कुछ कुछ
ग्रापने दिल को समाधि से हटाया कुछ कुछ

जिस्म में सांस का इजरा[132] हुग्रा रफ़्ता रफ़्ता[133]
बीर ग्रासन जो था ढीला हुग्रा रफ़्ता रफ़्ता

पेशवाई[134] के लिए शौक़ से नन्दी उट्ठा
जब्बासाई के लिए शौक़ से नन्दी उट्ठा

ग्रर्ज़[135] की ग्रापसे मिलने को उमा ग्राई है
जो है गिरिराज की बेटी वो यहां ग्राई है

कर लिया ग्रामदे-मेहमां[136] को गवारा शिव ने
कर दिया जुम्बिशे-ग्रबरू[137] से इशारा शिव ने

सर झुकाये हुए थीं साथ की सखियां दोनो
शोख़-फ़ामी[138] से थीं हमशक्ले-गुलिस्तां[139] दोनों

लेके गिरिराजकुमारी को यहां ग्राई थीं
फूल पत्ती वो चढाने के लिए लाई थीं

ज्यों ही महबूब[140] के क़दमों पे झुका सर उसका
ग्रौर भी कुछ चमक उट्ठा रुख़े-ग्रनवर[141] उसका

कसरते-शौक़[142] का शिव ने जो यह ग्रालम[143] देखा
ग्रपने क़दमों पे जो यूं पा-ए-उमा[144] ख़म[145] देखा

१२७. कुल का मालिक, ख़ुदा, १२८. संसार का स्वामी, १२९. बुनियाद रखने वाला, १३०. संसार, दुनिया, १३१. मदमस्त, मदोन्मत्त, १३२. प्रवेश, १३३. धीरे-धीरे, १३४. स्वागत, १३५. प्रार्थना, निवेदन, १३६. ग्रतिथि का ग्रागमन, १३७. भृकुटी का इशारा, १३८. रंग की शोख़ी, १३९. उपवन की सूरत, १४०. प्रियतम, १४१. प्रकाश का चेहरा, १४२. प्रेम की ग्रधिकता, १४३. दशा, १४४. उमा का पांव, १४५. झुका हुग्रा ।

लबे-खामोश[१४६] पे फ़ौरन यह दुआ आ ही गई
सहर[१४७] यह कर ही दिया मोजिज़ा[१४८] फ़रमा ही गई

जिससे क़िस्मत तेरी ताबां[१४९] हो वो गौहर[१५०] मिल जाये
जिस पे जीजान से क़ुर्बां[१५१] है वो शौहर[१५२] मिल जाये

बख़्त[१५३] होने को था बेदार[१५४] कंवल गट्टों का
दस्ते-गुलगूं[१५५] में था इक हार कंवल गट्टों का

दे दिया शिव को उमा ने वही नज़राने[१५६] में
हुस्न[१५७] ने रंग भरा इश्क़[१५८] के अफ़साने[१५९] में

कर लिया शौक़[१६०] से मंज़ूर[१६१] उमा का तोहफ़ा[१६२]
पेशकश[१६३] हार की थी या दिल-ओ-जां[१६४] का तोहफ़ा

आप इस सिम्त[१६५] से इज़हारे-करम[१६६] पर माइल[१६७]
काम उस सिम्त हुआ जौर-ओ-सितम[१६८] पर माइल

वार करने के लिए पांव बढ़ाया उसने
क़ौस[१६९] पर नावके-रंगीं[१७०] को चढ़ाया उसने

शाम के वक़्त तुलू-ए-महे-नूरानी[१७१] से
जैसे हैजान[१७२] समन्दर में हो तुग़यानी[१७३] से

आ गया फ़र्क़[१७४] सदाशिव के सुकूं[१७५] में कुछ कुछ
फंस गये काम के नैरंगे-फ़ुसूं[१७६] में कुछ कुछ

१४६. बन्द होंठ, १४७. जादू, १४८. चमत्कार, १४९. चमक उठे, १५०. हीरा, १५१. न्योछावर, १५२. पति, १५३. भाग्य, १५४. जाग्रत्. १५५. फूल-सा सुंदर, १५६. भेंट, १५७. सौंदर्य, १५८. प्रेम, १५९. कहानी, १६०. प्रेम, स्वेच्छा, १६१. स्वीकार, १६२. भेंट, १६३. उपहार, प्रस्ताव, १६४. दिल और जान, १६५. ओर, १६६. दया का प्रदर्शन, १६७. प्रवृत्त, १६८. ज़ुल्म और अत्याचार, १६९. धनुष, १७०. रंगीन तीर, १७१. प्रकाशमान चन्द्रोदय, १७२. प्रचण्डता, १७३. तूफ़ान, १७४. अन्तर, १७५. शांति, १७६. माया का जादू ।

दिले-साकित[१७७] में हुवैदा[१७८] हुई बेताबी[१७६] सी
कैफियत[१८०] अब थी इस आईने में सीमाबी[१८१] सी

बेक़रारी थी तबीअत में परेशानी थी
दिल से जो मौज भी उठती थी वो तूफ़ानी थी

कसरते-शौक[१८२] से चेहरे पे उमा के जमकर
रह गई थीं लबे-लाली[१८३] पे निगाहें थमकर

सोचते थे सबबे-नुक़्से-तबीअत[१८४] क्या है
किसने ढाई है कयामत[१८५] यह मुसीबत क्या है

दिल के अन्दर कभी देखा कभी बाहर देखा
आपने चार तरफ आँख उठाकर देखा

आँख उठी तो अजब[१८६] शोब्दाबाजी[१८७] देखी
हर तरफ काम की हगामा[१८८] तराजी[१८६] देखी

कौसे-गुलरैज[१६०] के चिल्ले[१६१] पे थी चुटकी उसकी
दाहिनी आँख के गोशे[१६२] पे थी मुट्ठी उसकी

एक मरकज[१६३] पे थमे से वो रुके से शाने[१६४]
थे कुछ आगे की तरफ उसके रुके से शाने

काबिले-दीद[१६५] था यह कारे-नु ,यां[१६६] उनका
और आगे की तरफ पाव था बाया उनका

१७७. ठहरा हुआ दिल, १७८. प्रकट, १७६. व्याकुलता, १८०. हाल, दशा, १८१. पारे जैसी, १८२. प्रेम की अधिकता, १८३. सु होंठ, १८४. तबीअत खराब होने का कारण, १८५. प्रलय, १८६. विचित्र, १८७ इन्द्रजाल, १८८. उपद्रव, दगा-फसाद, १८६. मचाना, १६०. फूलझड़ी का धनुष, १६१. धनुष की तात, १६२. कोने, १६३. केन्द्र, १६४. कधे, १६५. देखने योग्य, १६६. विशेष काम ।

क़ौस[१९७] को हलक़ा[१९८] बनाये हुए इस्तादा[१९९] था
वार करने को महादेव पे ग्रामादा[२००] था

जब यह हंगामा[२०१] यह तूफ़ान यह फ़ितना[२०२] उट्ठा
तीसरी ग्रांख से इक ग्राग का शोला[२०३] उट्ठा

काम को ग्रापने महरूमे-बक़ा[२०४] कर ही दिया
तीसरी ग्रांख के शोले से फ़ना[२०५] कर ही दिया

उस लई[२०६] को ख़बरे-रोज़े-क़यामत[२०७] देकर
ग्रोझल ग्रांखों से हुए साथ गणो को लेकर

मुज़तरिब[२०८] शोमि:-ए-क़िस्मत[२०९] से थी ग्रब पार्वती
मुफ़इल[२१०] फ़र्ते-नदामत[२११] से थी ग्रब पार्वती

दिल पे वह चोट लगी थी कि बुझा जाता था
पै[२१२] ब पै साथ की सखियों से हिजाब[२१३] ग्राता था

होके तक़दीर से मायूस[२१४] उमा घर को चली
ख़स्ता-दिल[२१५] ग्राह-बलब[२१६] महवे-फ़ुगां[२१७] घर को चली

दिल था बरबाद किसी ख़ान:-ए-वीरां[२१८] की तरह
कपकपी जिस्म[२१९] में थी शोला:-ए-लरज़ां[२२०] की तरह

बाइसे-रंज[२२१] थी नाकामि-ए-ग्ररमां[२२२] ऐसी
रुद्र के क़हर-ग्रो-ग़ज़ब[२२३] से थी हिरासां[२२४] ऐसी

१९७. धनुष, १९८. परिधि, १९९. खड़ा था, २००. तैयार, २०१. उपद्रव, २०२. उपद्रव, २०३. ज्वाला, २०४. ग्रस्तित्व से वंचित, २०५. नष्ट, २०६. शैतान, धिक्कृत, २०७. क़यामत के दिन की ख़बर, २०८. बेचैन, २०९. दुर्भाग्य, २१०. लज्जित, २११. पश्चात्ताप की ग्रधिकता, २१२. बार-बार, २१३. शर्म, लज्जा, २१४. निराश, २१५. जर्जर दिल, २१६. होंठों पर ग्रार्तनाद, २१७. ग्राहें में गुम, २१८. वीरान घर, २१९. शरीर, २२०. कांपती हुई ज्वाला, २२१. शोक का कारण, २२२. ग्ररमान की ग्रसफलता, २२३. प्रकोप, ग्राफ़त, २२४. निराश ।

नज़र आती थी भलाई की न कोई सूरत
बन्द आँखें हुई जाती थीं कली की सूरत

जैसे गजराज बहुत जिस्म को फैलाके चले
दाँत में शाख़ कंवल की कोई लिपटाके चले

दोनों हाथों से बहर तौर[२२५] संभाला उसको
चल दिया गोद में ख़ुद लेके हिमाला उसको

(कालिदासकृत 'कुमारसंभव' का अनुवाद)

आश्रम से शकुन्तला की रुख़सत का समां[१]

'मुनव्वर' लखनवी

(कण्व ऋषि तपोबन के दरख़्तों[२] से मुख़ातिब[३] हैं)

तुमसे उसकी लगन लगी थी
पहले तुमको यह सींचती थी
पीती थी फिर उसके बाद पानी
था उसका यह दर्द जाविदानी[४]
शृंगार की गर्चे[५] आरज़ू[६] थी
रंगीं फूलों की जुस्तुजू[७] थी
थी तुमसे उसे मुहब्बत इतनी
तुमसे मानूस[८] थी यह कितनी
तुमको न यह हाथ भी लगाती
छूती भी अगर तो कांप जाती

२२५. हर तरह ।

आश्रम से शकुन्तला की रुख़सत का समां

१. आश्रम में शकुन्तला की बिदाई का दृश्य, २. वृक्षों, ३. सम्बोधित, ४. शाश्वत, ५. यद्यपि, ६. तमन्ना, आकांक्षा, ७. खोज, ८. हिली हुई ।

थी उंस-ओ-वफ़ा[९] का इक नमूना।
इक बर्ग[१०] को था मुहाल[११] छूना
फूली न बरंगे-गुल[१२] समाती
होकर सरमस्त[१३] झूम जाती
नौरस[१४] जो देखती थी कलियां
करती थी खुशी से रगरलियां
तुम भी देकर जवाबे-उल्फ़त[१५]
कर दो इसको बखैर[१६] रुख़सत[१७]

बन में है पेड सारे साथी शकुन्तला के
उनमें है उंस[१८] बेहद[१९] पुतले है ये वफ़ा[२०] के
कोयल की कूक से वो यह काम ले रहे हैं
मासूम[२१] को इजाजत[२२] जाने की दे रहे है

(आसमा[२३] को देखकर कहते है)

यात्रा हो शकुन्तला की सफल
आज जंगल में भी मने मंगल
हों भलाई के हर तरफ़ सामान
हर तरह इससे उसका हो कल्यान
हर क़दम पर हों राह में तालाब
बार पायें निगाह में तालाब
ता ब लब[२४] जो मिलें भरे ही भरे
नौ शिगुफ़्ता[२५] कंवल के फूलों से
हर क़दम पर हों सायादार दरख़्त[२६]
सायादार और बेशुमार[२७] दरख़्त

९. लगाव और निर्वाह, १० पत्ता, ११. कठिन, १२. फूल की तरह, १३. उन्मत्त, १४. नव-पक्व, नयी खिली हुई, १५. प्रेम का उत्तर, १६. कुशलपूर्वक, १७. बिदा, १८. लगाव, १९. असीम, २०. प्रेम-निर्वाह, २१. निस्पृह, निष्पाप, २२. अनुज्ञा, २३. आकाश, २४. ऊपर तक, २५. नये खिले हुए, २६. वृक्ष, २७. अनगिनत।

छाओ मे जिनकी धूप से हो अमां[२८]
हो समा[२९] इनका दिलनवाज[३०] समा
उड रही हो अजीब ढग मे धूल
जिस पे जरपाश[३१] हो कंवल के फूल
चार जानिब[३२] फजा[३३] हो नुज्हतबख्श[३४]
रास्ते की हवा हो फर्हतबख्श[३५]

उगले देती है चबाई सी कुशा[३६] को हिरनिया
झुड मे मोरो के अब वो रक्स[३७] का आलम कहा
पत्ते बेलो के झड जाते है अश्को[३८] की तरह
नर्म-ओ-नाजुक[३९] दिल को बरमाते[४०] है अश्को की तरह

(कण्व ऋषि शकुन्तला से मुखातिब होते है)

थी तमन्ना[४१] जैसे शौहर[४२] की तुम्हारे वास्ते
ढूडता था जैसा मै साथी तुम्हारे वास्ते
मुद्दतो[४३] जिसका तसव्वुर[४४] जिह्न[४५] मे करता रहा
रग सौ सौ जिसके नक्शे-नाज[४६] मे भरता रहा

तुमको वैसा ही पति हुस्ने-अजल[४७] से मिल गया
जाग उठी तकदीरे-अरमा[४८], गुन्चा-ए-दिल[४९] खिल गया
वैसे ही बन ज्योत्सना इस बन पे है आराम से
उसको जीने का सहारा है मुयस्सर[५०] आम से

मुझको इन दोनो के बारे मे कोई उलझन नही
चाक[५१] खाके-फिक्र[५२] से अब नाम को दामन नही
काटे से कुशा के जख्मी मुह तुम जिसका अच्छा करती थी
हगोट के तेल की मालिश से तुम जिसका मदावा[५३] करती थी

२८ सुरक्षा, हिफाजत, २९ वातावरण, ३० मोहक, ३१ सोना बिखेरे, ३२ चारो ओर, ३३ वातावरण, ३४ ताजगी देनेवाला, ३५ हर्षप्रद, ३६ घास, ३७ नृत्य, ३८ आसू, ३९. कोमल, ४० छेद करना, ४१. इच्छा, ४२ पति, ४३ लम्बा समय, ४४. कल्पना, ४५. मन, ४६. चित्र, ४७ सौभाग्य, ४८ अरमानो का भाग्य, ४९. दिल का फूल, ५०. प्राप्त, ५१. फटा हुआ, ५२ चिंता की धूल, ५३ इलाज।

मुट्ठी भर भर कर चावल हर रोज खिलाती थी जिसको
आँखो के तारे की सूरत सीने से लगाती थी जिसको

खुश मंजर[५४] वो महबूब[५५] हिरन रस्ता रोके इस्तादा[५६] है,
शोखी से दामन पकडे है, तर्रारी[५७] पर आमादा[५८] है

सब्र[५९] करो पोछो अश्को[६०] को मेरी बेटी भोलीभाली
इनके अन्दर छुपकर आँखे उमरे उमरे अबरू[६१] वाली

ताकत[६२] दीद[६३] की खो बैठी है देख नही सकती है कुछ भी
पाव नही सीधे पडते है, राह बहुत है ऊची नीची

बनना शौहर[६४] के घर की जीनत[६५] जब तुम
होना आगाहे-राजे-खिल्वत[६६] जब तुम

हो जितने बुजुर्ग[६७] उनकी इज्जत करना
इज्जत के साथ साथ खिदमत[६८] करना

सौतो से हो मेहर[६९] का मुहब्बत का सुलूक[७०]
बरताओ खुलूस[७१] का, मुरव्वत[७२] का सुलूक

शौहर की तरफ से कुछ जो बेकदरी[७३] हो
परवा न जरा भूल के भी उसकी हो

अच्छा नही तुमको उस पे गुस्सा आना
झगडे का न जिक्र भी जबा पर लाना

हर ऐब[७४] को, हुस्न[७५] को परखना होगा
दिल अपने मुलाजिमो[७६] का रखना होगा

५४ सुन्दर, ५५ प्रिय, ५६ खडे, ५७ तेजी, ५८ तैयार, ५९ धीरज, ६० आसू, ६१ भौ, ६२, शक्ति, ६३ देखना, ६४ पति, ६५ शोभा, ६६ एकात के रहस्य से परिचित, ६७ वयोवृद्ध, ६८ सेवा, ६९ दया, ७०. व्यवहार, ७१. निष्ठा, ७२ शील, ७३ अनादर ७४. अवगुण, ७५. सौदर्य, ७६. नौकर-चाकर ।

करना न ग़ुरूर[७७] खुशनसीबी[७८] पे कभी
हर्गिज हर्गिज़[७९] नहीं रविश[८०] यह अच्छी

जिस घर में चलन यह औरतों का होगा
उसका दुनिया में नाम ऊँचा होगा

और इसके खिलाफ़[८१] होगा शेवा[८२] जिनका
अखरेगा ज़माने को वतीरा[८३] उनका

डसने वाली वो सबको कहलायेंगी
वो नागिनी कुल के हक़ में बन जायेंगी

मेरी बेटी ! यह नादानी है कैसी
यह हैरानी परेशानी है कैसी
कहां तक यह मुसलसल अश्कबारी[८४]
यह इतनी किसलिए है बेक़रारी
तुम ऊँचे खानदान में जा रही हो
यह इज़्ज़त, मंज़िलत[८५] यह, पा रही हो
तुम्हारे जिस्म-ओ-जां[८६] हैं माल जिनका
है पूरे औज[८७] पर इक़बाल[८८] जिनका
तुम उसके घर में पटरानी बनोगी
दुर्रे-सिल्के-जहांबानी[८९] बनोगी
पहुँच जाओगी जब शौहर के घर में
चढ़ोगी अपने मालिक की नज़र में
मिलेगी कब वहां कामों से फ़ुर्सत
न होगी खानादारी[९०] से फ़राग़त[९१]
रहोगी रोज़-ओ-शब[९२] कामों में उलझी
न पल भर भी तुम्हें छुट्टी मिलेगी

७७. घमण्ड, ७८. सौभाग्य, ७९ बिल्कुल, ८०. चलन, ८१. विपरीत, ८२. व्यवहार, ८३. आचरण, ८४. आंसू बहाना, ८५. सम्मान, प्रतिष्ठा, ८६. शरीर और प्राण, ८७. ऊँचाई, ८८. प्रताप, ८९. शासन के हार का चकता मोती, ९०. घर का कामकाज, ९१. अवकाश ९२. दिन-रात ।

बरंगे-मेहरे-खावर[९३] होगी औलाद
तुम्हारी गोद हो जायेगी आबाद
तुम्हारा वतन[९४] जब जौबार[९५] होगा
तुम्हे फरजन्द[९६] का दीदार[९७] होगा
खुशी इस तरह जब होगी फराहम[९८]
सताएगा न फिर तुमको मिरा गम
रहेगा गम[९९] न यह जासोज[१००] बेटी
भुला दोगी मुझे इक रोज बेटी

सौतिया डाह से धरती के परेशा रहकर
ता ब मुद्दत[१०१] सिफते-आईना हैरा[१०२] रहकर

राज बेमिस्ल[१०३] मिरे लख्ते-जिगर[१०४] को देकर
कार-ओ-बार अपनी हुकूमत का पिसर[१०५] को देकर

अपने कुनबे का निगहबान[१०६] बनाकर उसको
शान से तख्ने-हुकूमत[१०७] पे बिठाकर उसको

आओगी लौट के जब शौहरे-मुख्तार[१०८] के साथ
नाज[१०९] हो जायेगा वाबस्ता[११०] जब अन्दाज[१११] के साथ

हमको तस्कीन[११२] यह बख्शेगा[११३], मुसर्रत[११४] देगा
आश्रम राहत-ओ-आराम[११५] निहायत[११६] देगा

(कालिदासकृत 'अभिज्ञान शाकुन्तल' का उर्दू अनुवाद)

९३. पूर्व के सूरज के समान, ९४ उदर, ९५. चमकेगा, ९६. पुत्र, ९७ दर्शन, ९८. सचित, ९९. दुख, १००. जान लेनेवाला, १०१ लम्बें समय तक, १०२ परेशान आइने की तरह, १०३. जिसकी मिसाल न मिले, १०४. जिगर का टुकड़ा, १०५. पुत्र, १०६. सरक्षक, १०७. राज-सिंहासन १०८. पति परमेश्वर, १०९. गर्व, ११०. सलग्न, नत्थी, १११. हावभाव, ११२. शाति, ११३. प्रदान करेगा, ११४ खुशी, आनन्द, ११५ सुख-चैन, ११६. अत्यधिक।

मेघदूत

हाफ़िज़ ख़लील हसन 'ख़लील'

हां मिरे दोस्त मिहरबा बादल
मेरे फ़ैयाज़[1] दरख़्शां[2] बादल
तू ज़माने में सब का प्यारा है
ग़म के मारों का तू सहारा है
मुझ पे सख़्ती कबीर ने की है
बेख़ता[3] मुझको बददुआ[4] दी है
रंज[5] में जब से मुब्तिला[6] हूँ मैं
राम गिरि पर पड़ा हुआ हूँ मैं
तुझसे उम्मीद है मुझे बादल
होगा • मेरा क़लक़[7] तुझे बादल
मेरी हालत पे रहम खायेगा
मेरे घर तू ज़रूर जायेगा
रहती वो मेरी दिलरुबा[8] है जहां
यक्ष ही हर जगह बसे हैं जहां
होगी मुज़तर[9] बहुत ही वो कमसिन[10]
गिनती होगी मुफ़ारक़त[11] के दिन
होगा उसका बहुत रद्दी अहवाल[12]
एक इक रात होगी इक इक साल
काली काली घटा घिहरी पाकर
घन गरज की सदा[13] पे ललचाकर
राजहंसों का होगा पैदा शौक़[14]
मानसरोवर का ले उड़ेगा शौक़

१. उदार, २. प्रकाशमान, ३, निर्दोष, ४. श्राप, ५. दुःख ६. ग्रस्त, ७. क्षोभ, दुःख, ८. प्रेमिका, ९. बेक़करार, १०. कम उम्र, ११. विरह १२. दुर्दशा, १३. आवाज, १४. इच्छा ।

फिर कंवल नाल मुंह में ले लेकर
लेके मादा[१५] को सब करेंगे सफ़र
साथ उन सबका और तिरा होगा
तय बहुत जल्द रास्ता होगा
तुझको अब कुछ पता मैं घर का दूं
राह अल्कापुरी की बतला दूं
राह में हो थकन अगर मालूम
और सफ़र का हो कुछ असर मालूम
तो पहाड़ों पे तू ठहर जाना
बैठकर चोटियो पे सुस्ताना
जाना उस सिम्त[१६] पहले अय बादल
है जहां बेद का बडा जंगल
इज्ज़[१७] गो वो दिखाते रहते हैं
और सब थरथराते रहते हैं
पर हवा से कभी नहीं डरते
उस से सब हैं मुक़ाबला[१८] करते
जाना उत्तर की सिम्त[१९] फिर बादल
हाथियों के वहां मिलेंगे दल
तू गुरूर[२०] उनका तोड़ता जाना
नीचा उन सरकशों[२१] को दिखलाना
होके दूर उनकी फिर निगाहों से
और निकलकर पहाड़ी राहों से
गांव के रास्ते से तू जाना
और शक्ल[२२] अपनी सबको दिखलाना
औरतें सीधी उन किसानों की
मेहनती और जांफ़िशानो[२३] की
बार बार अपना वो उठाकर सर
तुझको देखेंगे ललचा ललचाकर

१५. स्त्री प्राणी, १६. दिशा, १७. नम्रता, १८. सामना, १९. ओर, २०. घमण्ड, २१. बागी, २२. सूरत, २३. परिश्रमी।

कि मुरब्बी[२४] यही हमारा है
यही खेती का इक सहारा है
इससे कुछ दूर आगे फिर चलकर
तुझको आयेगा मालदेस नज़र
खेत सारे कुसुम के ख़ुशबूदार
तुझको कर लेंगे अपना आशिक़ज़ार[२५]
उनकी बू ही न तुझको भायेगी
दिल को रंगीनी भी लुभायेगी
तू तवज्जुह[२६] न पर उधर करना
मेरी बेताबी[२७] पर नज़र करना
साफ़ अमरकोट देगा दिखलाई
होगी इक उस पे ताज़गी छाई
है यह आमों के पेड़ से छाया
ख़ूब हर सिम्त[२८] है घना साया[२९]
पके आमों से ज़र्द[३०] वो होगा
लुत्फ़[३१] में अपने फ़र्द[३२] वो होगा
तू जो छायेगी उसकी चोटी पर
आयेगा इस तरह पहाड़ नज़र
जैसे कोई हसीन हो पहने
सोने के सर से पांव तक गहने
और खोले हो अपने सर के बाल
काले काले वह लम्बे लम्बे बाल
आगे उसके है फिर रवा नद्दी
है अजब यह भी दिलकुशा नद्दी
विंधियाचल में यूं यह बहती है
और यूं लुत्फ़ देती रहती है
काले हाथी के जैसे माथे पर
खरिया मिट्टी को फ़ीलबान[३३] लेकर

२४. पोषक, २५. प्रेमी, २६. ध्यान, २७. व्याकुलता, २८. चारों ओर, २९. छांव, ३०. पीला, ३१. आनन्द, ३२. अकेला ३३. महावत ।

खूब उसका सिंगार करता है
साफ उसमे सफेदी भरता है
तू जो बरसेगा हर तरफ बादल
लुत्फ[३४] दिखलायेगा बडा जगल
फूल दिखलायेगे कदम के बहार
काले पीले महीन[३५] रोएदार
फूलकर गुडली खारजारो[३६] मे
लुत्फ दिखलायेगी कछारो मे
सूघ कर मोर फूलो की खुशबू
और कूकेगे जोश मे हर सू[३७]
नाचकर तुझको वो रिझायेगे
राह उड उडके सब बतायेगे
जी पपीहे भी तुझ पे देते हुए
मुँह मे बूदो का रस वो लेते हुए
दूर तक साथ उडते जायेगे
लुत्फ तेरा बहुत बढायेगे
और बगले तो साथ ही देगे
वो कही राह मे न दम लेगे
गर्चे[३८] उम्मीद है यह अब्र[३९] मुझे
दिल से मेरा बहुत कलक[४०] है तुझे
यह भी लेकिन है इसके साथ खयाल
कि कही केतकी और अर्जुन साल
दिल न फूलो से ले लुभा तेरा
और न पहुँचे पयाम वो मेरा
और यह भी खयाल आता है
नही यह शक[४१] भी दिल से जाता है
कि पपीहे की पुरअसर[४२] आवाज
दिल मे वो करने वाली घर आवाज

३४. आनन्द, मजा, ३५ बारीक, ३६. काटो का जगल, ३७. हर तरफ, ३८ यद्यपि, ३९..बादल, ४०. क्षोभ, दु.ख, ४१. शका, ४२ प्रभावशाली ।

खैर आगे जो इसके तू चलकर
तीन मंज़िल का तै करेगा सफ़र
तो मिलेगा तुझे विशारन देस
सबसे इस देस का नया है भेस
होगी पानी की वां पुकार बहुत
और तिरा होगा इन्तिज़ार बहुत
दुख में बगले भी सब पड़े होंगे
जाके झीलों में अब पड़े होंगे
देखते ही तुझे वो खोलके पर
पास पहुँचेंगे तेरे उड़ उड़ कर
चाहेंगे जोश अपना दिखलायें
जाके तेरे गले वो लग जायें
और मिलेंगे जो सब वो उड़ उड़कर
आयेंगे यूँ वो तेरे साथ नज़र
जैसे पैवन्द[४३] उजले कपड़े का
काले कम्मल में हो किसा के लगा
वां के बाग़ों में कोहसारों[४४] में
जंगलों और सब्ज़ाज़ारों[४५] में
केतकी फूलती है यूँ हर सू
जाती उसकी है दूर तक खुशबू
इन्हीं फूलों से हर तरफ़ बादल
ज़ाफ़रानज़ार[४६] होगा कुल जंगल
खुश सिवा[४७] हद से दिल तिरा होगा
तुझको धाका बसन्त का होगा
आगे अब इसके राजधानी है
उसी रजहट की हुक्मरानी[४८] है
यां है नद्दी बतीरती बहती
और तेरी है मुन्तज़िर[४९] रहती

४३. जोड़, ४४. पर्वतीय प्रदेश, ४५. हरे-भरे मैदान, ४६. केसर का बाग़, ४७. अत्यधिक, ४८. राज, शासन, ४९. प्रतीक्षा में।

है बहुत धीमी धीमी वो बहती
पड़ी माथे पे है शिकन[५०] रहती
तू जो यकबारगी[५१] वहां जाकर
देखकर उसको जोश में आकर
झुक पड़ेगा गले लगाने को
अपने आग़ोश[५२] में उठाने को
तो सकत[५३] वो न इतनी पायेगी
नातवानी[५४] बहुत दिखायेगी
काम लेना कहीं न उज्लत[५५] से
चूसना लब[५६] तो इस सहूलत[५७] से
जैसे कोई किसी के माथे से
पोंछे उसका पसीना हलके से
सीधे फिर पंचगिरि को जाना तू
जाके चोटी पे उसके छाना तू
हद से बढ़कर है यह जगह दिलकश[५८]
इसपे हैं ऐश[५९] करने वाले ग़श
दिल वो अपना दिये हुए हैं जिन्हें
दिल का मालिक किये हुए है जिन्हें
दूर से उनको लेके आते है
रंगरलियां यहीं मनाते हैं
अब करेगा जो चलने में जल्दी
तो मिलेगी तुझे नगद नद्दी
उसके नज़दीक आगे कुछ चलकर
आयेंगे अच्छे अच्छे बाग़ नज़र
दिल चंबेली तिरा लुमायेगी
उसकी खुशबू बहुत ही भायेगी
उनमें कुछ होंगी मुँहबन्द ही कलियां
और कुछ खिलके होंगी इत्रफ़िशां[६०]

५०. बल, ५१. सहसा, ५२. गोद, ५३. शक्ति, ५४. दुर्बलता, ५५. शीघ्रता, जल्दी, ५६. होंठ, ५७. सुगमता, ५८. सुन्दर, मोहक, ५९. भोग-विलास, ६० सुगंध फैलाने वाली।

अपने साये मे उनको ले लेना
नन्ही बूंदो से सीच भी देना
मालिने फूल चुन रही होगी
गीत चिडियो के सुन रही होगी
वक़्त यह धूप का अगर होगा
मालिनो पर पडा असर होगा
उनके फूलो के सारे वो गहने
होगी कानो मे अपने जो पहने
सब वो पजमुंदा[61] हो चले होगे
ताजगी अपनी खो चले होगे
तेरी छीटो मे ताजा हो होकर
फिर वो झूमेगे उनके गालो पर
हा है जाना तुझे यहा से जिधर
इस जगह से वो शहर है उत्तर
चाहिए फेर से न घबराना
होते उज्जैन लुत्फ से जाना
तुझको उज्जैन देखना है जरूर
शहर यह कुल जहा[62] मे है मशहूर[63]
औरते शहर की हसी सब है
नाजुक-अन्दाम[64] नाजनी[65] सब है
खूबिया सब इन्ही मे आई है
आंखे हिरनो की सबने [illegible] है
तेरी बिजली के वा चमकने से
उनकी आंखे माग्रन[66] झपकने से
होगी उस वक्त जो अदा पैदा
और तू होगा जिस तरह शैदा[67]
इसको तुझसे बता नही सकता
और वो नक्शा दिखा नही सकता

६१. मुर्झाए हुए, मलिन, ६२ ससार, ६३ प्रसिद्ध, ६४. कोमल शरीर वाली, ६५. सुन्दरी, ६६. तुरन्त, ६७. मोहित ।

फिर चलेगा जो करके तू जल्दी
तो मिलेगी नरबिघ्यां नही
आयेगी उसके इन किनारों पर
टुकड़ी हंसो की ऐसी बैठी नज़र
जैसे कोई हसीं[६८] हो शोख़-ओ-शरीर[६९]
और कमर में हो चादी की ज़ंजीर
जब हटाती हवा है चल चलकर
उसके सीने से पानी की चादर
नाफ़ उसकी है यूं नजर आती
कि तबीयत बहुत है ललचाती
इस भंवर का फंसा हुआ लेकिन
कभी उभरे नही है यह मुम्किन
कही फसना न तू उधर जाकर
नैन खायेगा उम्र भर चक्कर
सन्द नही मिलेगी बाद इसके
तू है आगाह[७०] हाल से जिसके
जेठ बैसाख के वो जलते दिन
काटना जिनका यूं न था मुम्किन[७१]
काटे उसने है जैसे मुश्किल से
पूछे उसके कोई जरा दिल से
होगी इस तरह सूखकर पतली
जैसी जानां[७२] की हो कमर पतली
उसके नज़दीक[७३] के पहाड़ों पर
महल आयेगे ऊँचे-ऊँचे नज़र
इनमें रहती हैं औरतें वो हसी[७४]
मिस्ल[७५] जिनका कही जहा[७६] में नही
जब निखरती हैं सब यह जी भर के
तो धुएं से अगर के केसर के

६८. सुन्दरी, ६९. चंचल, ७०. परिचित, ७१. सम्भव, ७२. प्रेमिका, ७३. निकट, ७४. सुन्दर, ७५. मिसाल, उदाहरण, ७६. संसार।

करती बालों को सब हैं खुशबूदार
रहते हर वक़्त हैं वो अंबरबार
रानियों के वहां के पालू मोर
देखकर तुझको कर उठेंगे शोर
उससे हो जायेगा अयां[७७] तुझ पर
है महाकाल का यहीं मन्दिर
गंदवती उसके नीचे बहती है
हर घड़ी पाक साफ़ रहती है
जितनी यां औरतें हैं ग़ुंचादहन[७८]
ज़ाफ़रानी[७९] लगाती है उबटन
और उसमें वो सब नहाती हैं
आबरू[८०] इसकी वो बढ़ाती हैं
शाम पहुँचेगी आके फिर जिस दम
उसका भी होगा इक नया आलम
रंग इसमें तिरा करेगा असर
आयेगी और वो सियाह नज़र[८१]
पर जो उस वक़्त कोई माहजबीं[८२]
ग़ैरते-हूर[८३] रश्के-लावते-चीं[८४]
कहीं जाने को बैठी हो तैयार
कर चुकी वो किसी से हो इक़रार[८५]
तो तुझे चाहिए ठहर जाना
नहीं वाजिब[८६] है पानी बरसाना
नद्दी बाद इसके अब घनेरा है
साफ़ पानी बहुत ही इसका है
वो सफ़ाई है पानी को हासिल[८७]
क्वारी लड़की का साफ़ जैसे दिल
उसके नज़दीक[८८] एक है मन्दिर
पूजा होती वहां है शाम-ओ-सहर[८९]

७७. प्रकट, ७८. कली जैसे मुंह वाली, ७९. केसरी, ८०. इज्जत, मान, ८१. काली नज़र, ८२. चन्द्रमुखी, ८३. अप्सरा का आत्मसम्मान, ८४. चीन की सुन्दरी से अधिक सुन्दर, ८५. वादा, ८६. उचित, ८७. प्राप्त, ८८. निकट, ८९. सुबह-शाम।

नद्दी बाद इसके चरमवती है
    लुत्फ[९०] देती सफाई इसकी है
शहर विशपूर उस पे है आबाद[९१]
    रहते बाशिन्दे[९२] है यहा के शाद[९३]
औरते हद से बढके है बेबाक[९४]
    शोख[९५], तर्रार, फितनागर[९६], चालाक
इनकी चरबाक्रिया[९७] गजब की है
    फितनाअंगेज[९८] आखे सबकी है
तेरे टुकडे जो छायेगे सर पर
    आयेगी यह बहार सबको नजर
भौरे फूलो पे है ये मडलाते
    उन पे कुर्बान[९९] है हुए जाते
या से तू ब्रह्मावर्त[१००] होते हुए
    दिल का अपने गबार[१०१] धोते हुए
कुरुक्षेत्र अपने तू निकल जाना
    वा से गगा पे जाके तू छाना
इस जमी पर बरसती है इब्रत[१०२]
    कि हुई थी यही महाभारत
अब जो तू या से रास्ता लेगा
    रास्ता यह बडा मजा[१०३] देगा
जाके गगा पे अब रुकेगा तू
    पानी पोने को जो झुकेगा तू
तो तिरा अक्स पानी मे पडकर
    आयेगा इस तरह हर इक को नजर
जिस तरह से प्रयाग मे बाहम[१०४]
    गगा जमुना का है हुआ सगम
किस्मत अच्छी हिमालिया की है
    जिसको दौलत खुदा ने यह दी है

९०. आनन्द, ९१ बसा हुआ, ९२. वासी, ९३. प्रसन्न, ९४ निस्संकोच, ९५. चचल, ९६. शरारती, ९७ वाक्‌शक्ति, ९८. उपद्रवकारी, ९९. न्योछावर, १००. एक स्थान, १०१. मैल, १०२ शिक्षा, नसीहत, १०३ आनन्द, १०४ आपस मे, परस्पर।

तू उसी अपनी राह से जाना
सीधे पच्छिम के रुख चले जाना
जिसमें तू जल्द वां पहुँच जाये
और चक्कर न राह में खाये
वही घाटी करो चरन्धर है
सख्त[१०५] घाटी यह सबसे बढकर है
तू पहुँच कर और उस जगह छाकर
लम्बा पतला धुआ सा बल खाकर
जल्द इस राह से गुजर जाना
सख्तियों[१०६] से न इसके घबराना
तू धुआ सा वहा जो छायेगा
और कुछ वा नजर न आयेगा
हंस हो जायेंगे बहुत मुज्तर[१०७]
तुझसे टकरायेंगे सब उड उड़कर
और हिरनो से कुछ न हो सकना
तुझको घबराई आंखो से तकना
दिल को हद से सिवा[१०८] मजा देगा
हुस्न[१०९] तेरा बहुत बढा देगा
सीधे आना मगर वहा से चले
और आना हिमालिया के तले
वही राहत[११०] से रात को रहना
काला कम्बल बिछाके सो रहना
है बडा यह पहाड रुतबे[१११] मे
खूबिया है इसी के हिस्से में
अब मिलेगा तुझे यहीं कैलास
उसके नजदीक और उसके पास
बर्फ ही से ढका यह रहता है
और रुतबे मे सबसे ऊँचा है

१०५. कठिन, १०६. कठिनाइयों, १०७ बेकरार, १०८ अत्यधिक, १०९. सौंदर्य, ११०. आराम, १११. दर्जा, प्रतिष्ठा ।

अब जो अपनी अखीर कोशिश पर
गौर[११२] के साथ तू करेगा नज़र
तो ख़ुशी दिल तिरा बढ़ायेगी
कामयाबी[११३] झलक दिखायेगी
इसी गंगा के फिर किनारे पर
बस्ती आयेगी एक ऐसी नजर
जिस तरह कोई नाजनी[११४] गुलफाम[११५]
गुच लब[११६] गुलअजार[११७] गुलअदाम[११८]
जेबतन[११९] हो किये बहुत गहने
और सारी[१२०] सफेद हो पहने
और करके सिगार जी भर के
बैठी आगोश[१२१] मे हो शौहर[१२२] के
यही अलकापुरी[१२३] है अय बादल
शहर मेरा यही है अय बादल
औरते अपने सहन मे आकर
तुझको देखेगी घबरा घबराकर
उनके कानो मे कुंद की कलिया
होगी सब झूम झमकर खन्दा[१२४]
सुब्ह को जब ये सब नहाती है
माथे पर जाफरा[१२५] लगाती है
गोल टीका है वो मजा देता
और हुस्न[१२६] उनका है बढा देता
झुमके कानो मे झमते होगे
उनके गालो को चमते होगे
फूल चोटी मे भी गुधे होगे
लुत्फ वो और दे रहे होगे
माग के पिछले हिस्से वाले फूल
हुस्न को और देते होगे तूल[१२७]

११२ ध्यानपूर्वक, ११३ सफलता, ११४ सुन्दरी, ११५ फूल जैसे रगवाली, ११६. कली जैसे होठ, ११७. जिसके कपोल फूल जैसे हो, ११८. फूलो जैसे शरीरवाली, ११९. पहने हुए, १२०. साड़ी, १२१. गोद, १२२. पति, १२३. स्वर्ग, १२४. प्रफुल्ल, १२५. केसर, १२६. सौंदर्य, १२७. विस्तार, लम्बाई।

ऐसे अय्याम[१२८] में मिरी प्यारी
मेरी फ़ुर्क़त[१२९] के सदमों[१३०] की मारी
आयेगा यह भी रास्ते में नज़र
जाती हैं कुछ हसीनें[१३१] छुप छुपकर
तो जिधर से वो जायेंगी होकर
सुब्ह को राह देगी उनकी ख़बर
फूल चोटी के ढीले हो होकर
गिर पड़े होंगे राह में अक्सर[१३२]
पायेंगी जो किसी की वो आहट
शर्म से दिल में जायेगी सब कट
सर को अपने माअन[१३३] झुका लेंगी
अपने हाथों से मुह छुपा लेंगी
इसी हालत में हाथ से इक बार
टूट जायेगा वो गले का हार
मोती सब गिर के फैल जायेंगे
चमक अपनी बहुत दिखायेंगे
मुत्तसिल[१३४] घर के इक मेरा है बाग़
और बहुत ही हरा-भरा है बाग़
है वहीं इक चबूतरा ऊँचा
ख़ुशनुमा[१३५] और बहुत ही रूहअफ़ज़ा[१३६]
उस पे चौकोर ख़ूबसूरत ो
चौकी बिल्लूर[१३७] की है एक बिछी
उसी चौकी पे शाम को हर रोज़
बैठती आके है वो दिलअफ़रोज़[१३८]
आती है अपने मोर को लेकर
जिसको पाले हुए है वो गुले-तर[१३९]
बीन फिर तान से बजाती है
और उस मोर को नचाती है

१२८ दिन (ब० व०), १२९. विरह, १३०. रंज, ग़म, १३१. सुन्दरियां, १३२. अधिकांश, १३३. फ़ौरन, तुरन्त, १३४. निकट, लगा हुआ, १३५. सुन्दर, १३६. आत्मा को शांति प्रदान करने वाला, १३७ स्फटिक, मणि, १३८. मनमोहिनी, १३९. फूल जैसी।

यहा बादल हैं मेरे घर के निशान
पायेगा तू इन्हीं पतों से मकान
तू जो मेरे मकान पर जाना
जल्द घिरकर न हर तरफ़ छाना
वरना डर जायेगी वो ग़ुंच:दहन[१४०]
थरथराने लगेगा उसका बदन
बैठी होगी वहीं मिरी प्यारी
मेरी दर्दे-फ़िराक़[१४१] की मारी
वहीं अब होगी ग़म से यूँ रहती
यूँ जुदाई का होगी ग़म सहती
जैसे बे नर[१४२] के माद:-ए-सुर्खाब[१४३]
मछली बाजू में जिस तरह बेताब[१४४]
होगी अफ़सुर्दा[१४५] यूँ वो होके मलूल[१४६]
पाले से जिस तरह कंवल का फूल
रोते रोते वो सुर्मगीं[१४७] आँखें
ख़ुशनुमा[१४८] सहरआफरी[१४९] आँखें
सूजकर वार हो गई होंगी
और बीमार हो गई होंगी
हो गई होगी गालों से रुख़्सत[१५०]
सुर्ख़ी-माइल[१५१] वो चम्पई रंगत[१५२]
टेके इक हाथ पर वो होगी गाल
तुझको गुजरेगा देखकर यह ख़याल
कि यह शायद गहन[१५३] लगा है चाँद
कुछ गहन में है कुछ खुला है चाँद
और यह भी अजब[१५४] नहीं अय अब्र[१५५]
मेरी फ़ुर्कत[१५६] में होके वो बेसब्र[१५७]।

१४०. कली जैसे मुंहवाली, १४१. विरह का दुःख, १४२. बिना नर के, १४३. चकवी, १४४. व्याकुल, १४५. दुखी, १४६. दुखी, १४७. सुरमा लगी हुई, १४८. सुन्दर, १४९. जादू-भरी, १५०. बिदा, १५१. लाली लिये हुए, १५२. चम्पा के रंग की, १५३. ग्रहण, १५४. आश्चर्यजनक, १५५. बादल, १५६. विरह, १५७. अधीर।

मेरी तस्वीरं वो बनाती हो
उसको अपने गले लगाती हो
आँखें खोलेगी जब वो रश्के - कमर[१५८]
और पडेगी माअन[१५९] नज़र तुझ पर
तो झिझक कर वो और घबराकर
फेर लेगी तिरी तरफ़ से नजर
तब तू आहिस्तगी[१६०] से शफ्कत[१६१] मे
उससे कहना बडी मुहब्बत से
तेरे शौहर[१६२] का गमगुमार[१६३] हूँ मैं
उसका कासिद[१६४] हूँ राजदार[१६५] हूँ मैं
मुझको आजिम[१६६] किया सफर के लिए
और भेजा तिरी खबर के लिए
बातें तेरी ये प्यार की सुनकर
अपना तकिये से वो उठाकर सर
तुझको देखेगी इक मुहब्बत से
सच्ची उल्फत[१६७] से सच्ची चाहत से
दिल में अपने तुझे दुआ देगी
कान तेरी तरफ लगा देगी
तू यह कहना कि अय हसी[१६८] प्यारी
अपने शौहर की हिज्र[१६९] की मारी
जिन्दा तेरा गरीब शौहर है
खैरियत[१७०] से वो रामगिरि पर है
रंज-ओ-गम[१७१] का तिरे वो करके खयाल
है बहुत ही वो खस्तादिल[१७२] बेहाल
करके किस्मत ने दफ्अतन[१७३] बेदाद[१७४]
कर दिया उस गरीब को बरबाद

१५८. चांद को शरमाने वाली, १५९. सहसा, १६० धीरे से, १६१ दया, कृपा, १६२. पति, १६३. दु.ख बटाने वाला, १६४. सन्देशवाहक, १६५. राज जानने वाला, दोस्त, १६६. तैयार, १६७. प्यार, १६८. सुन्दर, १६९. विरह, १७०. कुशलपूर्वक, १७१. दुखी, १७२. दुखी हृदय १७३. सहसा, १७४. अत्याचार, अन्याय ।

श्रौर ऐसा किया है ख्वार[१७५] तबाह[१७६]
रोक रक्खी है वापसी की राह
पर है उम्मीद श्रब ये दिन जायें
वही फिर पहले वाले दिन श्रायें
हाय वो तिरी श्राँखें मोतीचूर
श्रौर उनकी वो चितवनें[१७७] मग़रूर[१७८]
सामने मेरे फिरती रहती है
दिल पे इक बिजली गिरती रहती है
तिरे इक एक श्रज़्ब[१७९] का नक़्शा
मेरे दिल पर है श्रब तलक लिक्खा
श्रब तो ढाने लगा है श्रौर सितम[१८०]
श्राके वारिश का ज़िन्दादिल[१८१] मौसम
श्राती उत्तर से है हवायें श्रगर
पेड को देवदार के छूकर
तो मैं सीने पे उसको लेता हूँ
दिल को तस्कीन[१८२] श्रपने देता हूँ
यही होता खयाल है मुझ को
छू के श्राती है यह हवा तुझ को
चाँद चौदस का देखता हूँ श्रगर
होता क़ायम[१८३] खयाल है इस पर
तू भी वां इसको देखती होगी
तेरी भी श्रांख पड़ रही होगी
कट गये श्रब तो गम के दिन हैं सब
बाक़ी है चार हा महीने श्रब
इसका कटना नहीं बहुत दुश्वार[१८४]
सब्र[१८५] है इसके वास्ते दरकार[१८६]
राज़ी क़िस्मत पे चाहिये रहना
होगा बेहतर यह दिल पे ग़म सहना

१७५. ज़लील, श्रपमानित, १७६. बरबाद, १७७. नज़र, दृष्टि, १७८. घमंडी, १७९. श्रंग, १८०. ज़ुल्म, १८१. खुश मिज़ाज, विनोदी, १८२. शांति, १८३. स्थिर, १८४. कठिन, १८५. धीरज, १८६. ज़रूरी।

ख़ुशी सच्ची उसी को है हासिल[१८७]
ग़म के जो इम्तिहां[१८८] में हैं कामिल[१८९]
यही ईमान और यही इस्मत[१९०]
सब से बढ़कर जहां में है दौलत
एक दिन हम बहम[१९१] मिलेंगे ज़रूर
ग़म यह हो जायेगा दिलों से दूर

(कालिदासकृत 'मेघदूत' का उर्दू अनुवाद)

१८७. प्राप्त, १८८. परीक्षा, १८९. कुशल, निपुण, १९०. सतीत्व, १९१. परस्पर ।

ग्यारहवां अध्याय

हमारा अन्दाज़े-इश्क़

महब्बत ने जुल्मत से काढा है नूर
न होती. महब्बत न होता जुहूर

—मीर तकी 'मीर'

मुहब्बत

डाक्टर मुहम्मद इक़बाल

उरूसे-शब[1] की जुल्फ़ें थी अभी नाश्राशना[2] खम[3] से
सितारे आमां के बेखबर थे, लज्जते-रम[4] से

क़मर[5] अपने लिबासे-नौ[6] मे बेगाना सा लगता था
न था वाक़िफ अभी गर्दिश[7] के आईने-मुसल्लम[8] से

अभी इमकां[9] के ज़ुल्मतखाने[10] से उभरी ही थी दुनिया
मज़ाक़े-जिन्दगी पोशीदा था पहना-ए-आलम[11] से

कमाले-नज़्मे-हस्ती[12] की अभी थी इब्तिदा गोया
हुवैदा[13] थी नगीने की तमन्ना चश्मे-खातम[14] से

सुना है आलमे-बाला[15] मे कोई कीमियागर[16] था
सफ़ा[17] थी जिसकी खाके-पा मे बढ़कर सागरे-जम[18] से

लिखा था अर्श[19] के पाए पे इक इकसीर[20] का नुस्खा
छुपाते थे फ़रिश्ते जिसको चश्मे-रूहे-आदम[21] से

निगाहें ताक में रहती थीं लेकिन कीमियागर की
वो इस नुस्खे को बढ़कर जानता था इस्मे-आज़म[22] से

१. रात की दुल्हन, २. अपरिचित, बेख़बर, ३. मोड़, ४. पलायन का स्वाद, ५. चन्द्रमा, ६. आधुनिक वस्त्र, ७. चक्कर, ८. प्रमाणित-विधान, ९. संभावना, १०. अँधेरा घर, अंधकार, ११. संसार का विस्तार, १२. जीवन-व्यवस्था, १३. प्रकट, १४. अँगूठी की आंख, १५. परलोक, १६ रसायनशास्त्र-विशेषज्ञ, १७. पवित्रता, १८ एक विख्यात प्याला जिसमें संसार का हाल दिखाई देता था, १९. आकाश, २०. रामबाण रसायन, २१. आदम की आत्मा की आंख २२. ख़ुदा।

बढ़ा-तस्बीह्-ख्वानी[23] के बहाने अर्श की जानिब
तमन्ना-ए-दिली आखिर बर आई सइ-ए-पैहम[24] से

फिराया फ़िक्रे-अज्ज़ा[25] ने इसे मैदाने-इम्कां[26] में
छुपेगी क्या कोई शै बारगाहे-हक़[27] के महरम[28] से

चमक तारे से मांगी, चाँद से दाग़े-जिगर मांगा
उड़ाई तीरगी[29] थोड़ी सी शब की ज़ुल्फ़े-बरहम[30] से

तड़प बिजली की पाई, हूर से पाकीज़गी[31] पाई
हरारत[32] ली नफ़सहा-ए-मसीहे-इब्ने-मरियम[33] से

ज़रा सी फ़िर रबूबियत[34] से शाने-बेनियाज़ी[35] ली
मलक[36] से आजिज़ी,[37] उफ़्तादगी[38] तक़दीरे-शबनम[39] से

फिर इन अज्ज़ा[40] को घोला चश्मः-ए-हैवां[41] के पानी में
मुरक्कब[42] ने मुहब्बत नाम पाया अर्शे-आज़म[43] से

मुहव्विम[44] ने यह पानी हस्ति-ए-नौख़ेज़[45] पर छिड़का
गिरह खोली हुनर ने इसके गोया कारे-आलम[46] से

हुई जुम्बिश[47] अयां,[48] ज़र्रों ने लुत्फ़े-ख्वाब[49] को छोड़ा
गले मिलने लगे उठ उठ के अपने अपने हमदम से

ख़िरामे-नाज़[50] पाया आफ़तावों[51] ने सितारों ने
चटक गुंचों[52] ने पाई दाग़ पाये लालाज़ारों[53] ने

२३. माला जपना, २४. लगातार प्रयत्न, २५. प्रत्युपकार, २६. संसार, २७ खुदा का दरबार, २८ जानकार, मर्मज्ञ, राज़दां, २९. अंधकार, ३०. बिखरी हुई अलकें, ३१. पवित्रता, ३२. गरमी, ३३. हज़रत ईसा (जो मुर्दों को जीवित कर देते थे) की श्वास, ३४. पालनहार, ३५. निस्पृहता का गर्व, ३६. फ़रिश्ता, ३७ नम्रता, ३८. नीचे गिरना, ३९ ओस का भाग्य, ४०. भाग, तत्व, ४१. अमृत-कुंड, ४२. मिश्रण, ४३. आखिरी आसमान, सबसे ऊँचा आकाश, ४४. रसायनविद, कीमियागर, ४५. किशोर, नवयुवा, ४६. संसार का कारोबार, ४७. कम्पन, थरथराहट, ४८. प्रकट, ज़ाहिर, ४९. स्वप्न का आनन्द, ५०. इठलाती हुई चाल, ५१. सूरज, ५२. कली, ५३. अहि पुष्प (पोस्ते के फूल) का खेत।

इश्क़-ओ-महब्बत

(मुख़्तलिफ़ मसनवी निगार)

महब्बत ने ज़ुल्मत[१] से काढ़ा है नूर[२]
न होती महब्बत न होता ज़ुहूर[३]

महब्बत ही इस कारख़ाने में है
महब्बत से सब कुछ ज़माने में है

महब्बत लगाती है पानी में आग
महब्बत से है तेग़[४]-ओ-गर्दन में लाग

महब्बत की आतिश[५] से अख़गर[६] है दिल
महब्बत न होवे तो पत्थर है दिल

—मीर तक़ी 'मीर'

बहुत इश्क़ में लोग रोगी हुए
बहुत ख़ाक मल मुंह पे जोगी हुए

किया इश्क़ मे तर्क[७] सोम-ओ-सलात[८]
गये अहले मस्जिद सू-ए-सोमनात[९]

न सुब्ह[१०] न ज़ुन्नार[११] ने कुफ़्र-ओ-दीं[१२]
जहां सब है इश्क़ और कुछ भी नहीं

—मीर तक़ी 'मीर'
(मसनवी इश्क़िया)

१. अंधकार, २. प्रकाश, ३. प्रकटन, प्रकट होना, ४. तलवार, ५. आग, ६ चिंगारी, ७. त्याग, ८. रोजा और नमाज, ९. सोमनाथ की ओर, १०. जयमाला, ११. जनेऊ, १२. अधर्म और धर्म ।

कुछ हक़ीक़त न पूछो क्या है इश्क़
हक़[13] अगर समझो तो ख़ुदा है इश्क़

इश्क़ आली जनाब रखता है
जिबरईल[14]-ओ-किताब रखता है

इश्क़ ने छातियां जलाई हैं
आगें किस किस जगह लगाई हैं

ख़स्तः-ए-इश्क़[15] कुछ न मीर हुए
बादशाह इश्क़ में फ़क़ीर हुए

—मीर तक़ 'मीर'
(मसनवी 'मुआमलाते-इश्क़')

इश्क़ है जौहरे-मुहीते-जहाँ[16]
इश्क़ है जिस्मे-आदमी में जां

इश्क़ है कायनात[17] का मफ़हूम[18]
गर न हो इश्क़ तो है सब मादूम[19]

—ग़ुलाम हमदानी 'मुसहफ़ी'
(मसनवी जज़्बः-ए-इश्क़)

इश्क़ आफ़ाते-आसमानी[20] है
बरसों लोगों ने ख़ाक छानी है

शम्अ होके कहीं पिघलता है
कहीं पर्वाना हो के जलता है

कहीं ख़ंजर है दस्ते-क़ातिल[21] का
कहीं मरहम जराहते-दिल[22] का

१३. सत्य, उचित, ईश्वर, १४. एक फ़रिश्ता, १५. प्रेम में जर्जर, १६. संसार रूपी समुद्र का जवाहर, १७. ब्रह्मांड, १८. अर्थ, उद्देश्य, १९. लुप्त, अनस्तित्व, २०. आकाश से आने वाली विपत्तियां, २१. क़ातिल का हाथ, २२. दिल का ज़ख़्म (घाव)।

सैकड़ों जी से खो दिये इस ने
लाख बेड़े डुबो दिये इसने

ये करिश्मे इसी के सारे हैं
कैसे कैसे जवान मारे हैं

जिगर-ओ-दिल का ख़ून होता है
रफ़्ता रफ़्ता[२३] जुनून[२४] होता है

—'शौक़' लखनवी
('बहारे-इश्क़')

इश्क़ से कौन है बशर[२५] ख़ाली
कर दिये इसने घर के घर ख़ाली

मार डाला तमाशबीनों[२६] को
ज़हर खिलवा दिया हसीनों को

बस में डाले न किब्रिया[२७] इसके
रहम[२८] दिल में नहीं जरा इसके

—'शौक़' लखनवी
('ज़हरे-इश्क़')

अज़ल[२९] से इश्क़ काफ़िर माजरा है
बला-ए-जाने - सुल्तान-ओ-गदा[३०] है

हज़ारों के जिगर पानी किये हैं
बहुत दिल इसने तूफ़ानी किये हैं

हर इक के लब पे शोरे-अल्लअमां है
जमाना इससे लबरेज़े-फ़ुग़ां[३१] है

—अमीरुल्ला 'तस्लीम'
('शामे-ग़रीबां')

२३. धीरे-धीरे, २४. उन्माद, पागलपन, २५. इन्सान, मनुष्य, २६. तमाशा देखने वाला, २७. खुदा, ईश्वर, २८. दया, २९. अनादिकाल, ३०. राजा और रंक की जान के लिए विपत्ति, ३१. आर्तनाद से भरा हुआ।

दिल बना है इसी मजे के लिए
मैने ये लुत्फ जान देके लिए

दिल इसी से जवान रहता है
मरमिटो का निशान रहता है

इश्क क्या क्या बहार देता है
यह दिलो को उभार देता है

इश्क से आदमीयत आती है
आदमी को मुरव्वत आती है

—'दाग' देहलवी
('फरियादे-दाग')

ग़ज़लें

'वली' दकनी

किया तुझ इश्क ने जालिम खराब आहिस्ता आहिस्ता
कि आतिश[1] गुल[2] कू करती है गुलाब आहिस्ता आहिस्ता

वफादारी ने दिलवर की बुझाया आतिशे-गम[3] कू
कि गरमी दफ़अ[4] करना है गुलाब आहिस्ता आहिस्ता

अजब कुछ लुत्फ रखता है शबे-खिल्वत[5] मे गुलरू[6] सू
सवाल आहिस्ता आहिस्ता, जवाब आहिस्ता आहिस्ता

मिरे दिल कू किया बेखुद तिरी अखिया ने अय जालिम
कि ज्यो बेहोश करती है शराब आहिस्ता आहिस्ता

१. आग, २ फूल को, ३ दुख की आग, ४ हटाना, निवारण, ५. तन्हाई (एकात) की रात, ६. फूल सा चेहरा।

अदा-ओ-नाज़[७] सूं आता है वो रौशन जबी[८] घर सूं
कि ज्यों मश्रिक़ से निकले आफ़ताब आहिस्ता आहिस्ता

'वली' मुझ दिल में आता है ख़याले-यारे बे परवा
कि ज्यों अंखियां मनें आता है ख्वाब आहिस्ता आहिस्ता

मरोदे-ऐश[९] गावें हम, अगर वो इश्वासाज़[१०] आवे
बजावें तब्ल शादी[११] के, अगर वह दिलनवाज़ आवे

ख़ुमारे - हिज्र[१२] ने जिसके दिया है दर्दे-सर मुजकूं
रखूं नश्शा नमन अंखिया मे गर वो मस्ते-नाज आवे

जुनूने-इश्क[१३] में मुजकूं नहीं जंजीर की हाजत[१४]
अगर मेरी खबर लेने कूं वो जुल्फ़े-दराज[१५] आवे

'वली' उस गौहरे-काने-हया[१६] की क्या कहूं ख़ूबी
मिरे घर इस तरह आता है ज्यूं सीने में राज[१७] आवे

मीर तकी 'मीर'

आलम आलम[१] इश्क-ओ-जुनूं[२] है दुनिया दुनिया तुहमत[३] है
दरिया दरिया रोता हूं मैं सहरा[४] सहरा वह्शत[५] है

हम तो इश्क में नाक़िस[६] ठहरे कोई न ईधर देखेगा
आँख उठाकर वो देखे तो यह भी उसकी मुरव्वत है

७. हाव-भाव और गर्व, ८. प्रकाशित मुख, ९. खुशी का गीत, १० हाव-भाव और गर्व दिखाने वाला (माशूक), ११. खुशी की दुदुभि (नक्कारा), १२. विरह का नशा, १३. प्रेम-उन्माद, १४. इच्छा, आवश्यकता, १५. लम्बी अलकों वाला, १६. लज्जा (शर्म) की खान का हीरा, १७. भेद, मर्म।

मीर तक़ी 'मीर'

१. संसार, २. प्रेम और उन्माद, ३. आरोप, ४. मरुस्थल, ५. उपेक्षा, घबराहट, ६. अपूर्ण, निकम्मा।

हाय ग़यूरी[७] जिसको देखे जी ही निकलता है अपना
देखे उसकी ओर नहीं फिर इश्क़ की यह भी गैरत[८] है

सुब्ह से आँसू नौमीदाना[९] जैसे विदाई आता था
आज किसू ख्वाहिश की शायद दिल से हमारे रुख्सत[१०] है

पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग तो सारा जाने है

आशिक सा तो सादा कोई और न होगा दुनिया में
जी के जियां[११] को इश्क मे उसके अपना वारा जाने है

चारागरी[१२] बीमारि-ए-दिल की रस्मे-शहरे-हुस्न[१३] नहीं
वर्ना दिलबर नादां भी इस दर्द का चारा[१४] जाने है

मेहर[१५]-ओ-वफा[१६]-ओ-लुत्फ[१७]-ओ-इनायत[१८] एक से वाकिफ इनमें नहीं
और तो सब कुछ तंज-ओ-किनाया[१९] रम्ज[२०]-ओ-इशारा जाने है

हाथ से तेरे अगर मै नातवां[२१] मारा गया
सब कहेगे यह कि क्या इक नीमजां[२२] मारा गया

इक निगह से बेश[२३] कुछ नुकसां न आया उस तईं[२४]
और मै बेचारा तो अय मेहरबां मारा गया

वस्ल-ओ-हिज्रां[२५] भी जो दो मंजिल[२६] है राहे-इश्क[२७] मे
दिल गरीब इनमे खुदा जाने कहां मारा गया

दिल ने सर खींचा[२८] दयारे-इश्क[२९] मे अय बुल्हवस[३०]
वो सरापा आरजू[३१] आखिर जवां मारा गया

७ आत्मसम्मान, ८. आत्मसम्मान, ९ निराशापूर्ण, १०. विदा, ११. नुकसान, १२. इलाज, चिकित्सा, १३. सौंदर्य-नगर की रीत, १४ इलाज, १५. प्रेम, १६ प्रेम-निर्वाह, १७. शिष्टाचार, १८. दया, १९ व्यंग और इशारा, २०. रहस्य, २१ दुर्बल, २२ अधमुआ, २३. अधिक, २४. उसके भाग मे, २५. मिलन और विरह, २६ पड़ाव, २७. प्रेम-मार्ग, २८ सर उठाया, २९. प्रेम-नगर, ३०. अत्यन्त लोभी, ३१. साकार अभिलाषा।

कब नियाज़े-इश्क़[32] नाज़े-हुस्न[33] से खींचे है हाथ
आख़िर आख़िर 'मीर' सरबर आस्तां[34] मारा गया

मुतफ़र्रिक़ अशआर

हमारे आगे तिरा जब किसू ने नाम लिया
दिले-सितमज़दा[1] को हमने थाम थाम लिया।

जब नाम तिरा लीजिये तब चश्म[2] भर आवे
इस ज़िन्दगी करने को कहां से जिगर[3] आवे

दिले-पुरख़ूं[4] की इक गुलाबी[5] से
हम रहे उम्र भर शराबी से

मैं तौरे-इश्क़[6] से तो वाक़िफ़[7] नहीं हूँ लेकिन
सीने में कोई जैसे दिल को मला करे है

याद उसकी इतनी ख़ूब नहीं 'मीर' बाज[8] आ
कमबख़्त फिर वो दिल से भुलाया न जायेगा

आवारगाने-इश्क़[9] का पूछा जो मैं निशां
मुश्ते-गुबार[10] लेके सबा[11] से उड़ा दिया

पासे-आदाबे-इश्क़[12] था वर्ना
कितने आँसू पलक तक आए थे

---

३२. प्रेम-श्रद्धा, ३३ सौंदर्याभिमान, ३४. चौखट पर सर रखे हुए।

मुतफ़र्रिक़ अशआर

१. दुखी हृदय, २. आंख, ३. साहस, ४. ख़ूनभरा दिल, ५. शराब, ६. प्रेम की रीत, ७. परिचित, ८. मान जा, ९. प्रेम की राह में भटकनेवाले, १०. मुट्ठी-भर धूल, ११. हवा, प्रातः-समीर, १२. प्रेम के शिष्टाचार का लिहाज़।

दूर बैठा गुबारे-मीर[13] उससे
इश्क बिन यह अदब नही आता

हिज्र[14] मे क्या क्या समय देखे है इन आखो से मैं
जर्द रुख[15] पर लालगू[16] आसू बहा करता था रात

अबके जुनू[17] मे फासला शायद न कुछ रहे
दामन के चाक और गरीबा[18] के चाक मे

लुत्फ[19] पर उसके हमनशी[20] मत जा
कभू हम पर भी मेहरबानी थी

दीदनी[21] है शिकस्तगी[22] दिल की
क्या इमारत गमो ने ढाई है

मसाइब[23] और थे पर दिल का जाना
अजब इक सानिहा[24] सा हो गया है

ग़ज़ल

मिर्जा गालिब

मुद्दत[1] हुई है यार को मेहमा किये हुए
जोशे-कदह[2] से बज्म[3] चरागा[4] किये हुए

१३. 'मीर' की राख, १४ विरह, १५ पीला मुख, १६ लाल रग का, १७ उन्माद, १८. वस्त्र का गला, १९. मेहरबानी, २० दोस्त, मित्र, २१. देखने योग्य, २२. जर्जरता, २३. विपत्तिया, २४ दुर्घटना ।

ग़ज़ल

१. अधिक समय, २. मदिरा का उबाल, प्यालो का उत्सव, ३. गोष्ठी, ४. दीपोत्सव (शराब को पिघली हुई आग कहते है) ।

करता हूँ जमा फिर जिगरे-लख़्त लख़्त[५] को
अर्सा[६] हुआ है दावते-मिज़गां[७] किये हुए

फिर वज़्-ए-एहतियात[८] से रुकने लगा है दम[९]
बरसों हुए हैं चाक[१०] गरीबां किये हुए

फिर गर्मे नालाहा-ए-शररबार[११] है नफ़स[१२]
मुद्दत हुई है सैरे-चराग़ां[13] किये हुए

फिर पुर्सिशे-जराहते-दिल[१४] को चला है इश्क़
सामाने - सद हज़ार नमकदां[१५] किये हुए

फिर भर रहा है ख़ाम:-ए-मिज़गां[१६] बख़ूने-दिल[१७]
साज़े-चमन तराज़ि-ए-दामां[१८] किये हुए

बाहम दिगर[१९] हुए है दिल-ओ-दीदा[२०] फिर रक़ीब[२१]
नज़्ज़ारा-ओ-ख़याल[२२] का सामां किये हुए

दिल फिर तवाफ़े - कू-ए - मलामत[२३] को जाये है
पिन्दार[२४] का सनमकदा[२५] वीरां[२६] किये हुए

फिर शौक़[२७] कर रहा है ख़रीदार की तलब[२८]
अर्ज़े - मता-ए-अक़्ल - ओ - दिल-ओ-जां[२९] किये हुए

दौड़े है फिर हर एक गुल-ओ-लाला[30] पर ख़याल
सद गुलसितां निगाह[31] का सामा किये हुए

५. टुकड़े-टुकड़े जिगर, ६. लम्बा समय, ७. माशूक की पलकों की दावत, ८. सावधानी की रीति, ९. सांस, १०. विदीर्ण, ११. आग बरसाने वाले आर्तनाद में लीन, १२. सांस, १३. दीपोत्सव की सैर, १४. दिल के जख़्म का हाल पूछना, १५. लाखों नमकदान लिये हुए, १६. पलकों की लेखनी, १७. दिल के ख़ून से १८. दामन से फूलों के चमन खिलाने का सामान, १९. आपस में, २०. हृदय और आंख, २१. प्रतिद्वन्द्वी, दुश्मन, २२. अवलोकन और कल्पना, २३. धिक्कार की गली की परिक्रमा, २४. अहं, २५. प्रतिमाशाला, २६. उजाड़, २७. चाव, २८. मांग, २९. बुद्धि, मन और प्राण की सम्पत्ति का समर्पण, ३०. गुलाब और लाला, ३१. ऐसी दृष्टि जिसमें सैकड़ों फुलवारियों का रंग बसा हुआ हो।

फिर चाहता हूं नामः-ए-दिलदार[३२] खोलना
जां नज्रे-दिलफ़रेबि-ए-उन्वां[३३] किये हुए

मांगे है फिर किसी को लबे-बाम[३४] पर हवस[३५]
ज़ुल्फ़े-सियाह[३६] रुख़[३७] पे परेशां[३८] किये हुए

चाहे है फिर किसी को मुक़ाबिल[३९] में आरज़ू[४०]
सुरमे से तेज़ दशनः-ए-मिज़गां[४१] किये हुए

इक नौबहारे-नाज़[४२] को ताके है फिर निगाह
चेहरा फ़रोग़े-मै[४३] से गुलिस्तां[४४] किये हुए

फिर जी में है कि दर पे किसी के पड़े रहें
सर ज़ेरे-बारे-मिन्नते-दरबां[४५] किये हुए

जी ढूंडता है फिर वही फ़ुर्सत[४६] कि रात दिन
बैठे रहें तसव्वुरे-जानां[४७] किये हुए

'ग़ालिब' हमें न छेड़ कि फिर जोशे-अश्क[४८] से
बैठे हैं हम तिहैयः-ए-तूफ़ां[४९] किये हुए

३२. प्रेमिका का पत्र, ३३. शीर्षक की सुन्दरता को भेंट, ३४. छत के किनारे, ३५. तीव्र लालसा, ३६. काली अलकें, ३७. मुख, कपोल, गाल, ३८. बिखराये हुए, ३९. सम्मुख, ४०. कामना, ४१. पलकों के नश्तर, ४२. सौंदर्याभिमान की नयी बहार में डूबा हुआ आकार, ४३. शराब की चमक, ४४. फूल ही फूल, ४५. दरबान के आभार के बोझ से दबा हुआ, ४६. अवकाश, ४७. प्रेमिका की कल्पना, ४८. आंसुओं की उबाल, ४९. तूफ़ान का दृढ़ निश्चय।

'मोमिन' खां मोमिन

आंखों से हया[1] टपके है अन्दाज़ तो देखो
है बुलहवसों[2] पर भी सितम, नाज़ तो देखो

इस बुत के लिए मैं हवसे-हूर[3] से गुज़रा
इस इश्क़े-खुशअंजाम[4] का आग़ाज[5] तो देखो

चशमक[6] मिरी वहशत[7] पे है क्या हज़रते-नासेह[8]
तर्ज़े - निगहे - चश्मे - फ़ुसूसाज़[9] तो देखो

मज्लिस में मिरे ज़िक्र के आते ही उठे वह
बदनामि-ए-उश्शाक़[10] का एजाज[11] तो देखो

उस ग़ैरते-नाहीद[12] की हर तान है दीपक
शोला सा लपक जाये है आवाज तो देखो

दें पाकि - ए - दामन[13] की गवाही मिरे आंसू
उस यूसुफ़े-बेदर्द का एजाज तो देखो

'दाग़' देहलवी

(१)

लुत्फ़[1] वो इश्क में पाये है कि जी जानता है
रंज भी ऐसे उठाये है कि जी जानता है

१. लज्जा, २. अत्यन्त लोभी, ३ हूर, (अप्सरा) की लालसा, ४. प्रेम का सुखान्त, ५. आरम्भ, ६. मनमुटाव, ७. उपेक्षा, घबराहट, ८. उपदेशक महोदय, ९. जादूगर की आंख का देखने का ढंग, १०. आशिक़ की बदनामी, ११. विचित्रता, चमत्कार, १२. शुक्र ग्रह का आत्मसम्मान, १३. दामन की पवित्रता ।

'दाग़' देहलवी

१. आनन्द ।

जो ज़माने के[1] सितम[2] हैं वो ज़माना जाने
तूने दिल इतने सताये है कि जी जानता है

सादगी, बाकपन, इग़माज़,[3] शरारत शोख़ी[4]
तूने अन्दाज़ वो पाये हैं कि जी जानता है

इन्ही क़दमों ने तुम्हारे इन्हीं क़दमों की क़सम
ख़ाक मे इतने मिलाये है कि जी जानता है

'दाग़' - वारफ़्ता[5] को हम आज तिरे कूचे[6] से
इस तरह खीच के लाये है कि जी जानता है

(२)

ख़ातिर[7] से या लिहाज़[8] से मै मान तो गया
झूठी क़सम से आपका ईमान तो गया

दिल लेके मुफ़्त कहते है कुछ काम का नही
उल्टी शिकायतें हुई एहसान तो गया

अफ़शा-ए - राज़े - इश्क़[9] मे गर ज़िल्लतें[10] हुई
लेकिन उसे जता तो दिया जान तो गया

होश-ओ-हवास[11]-ओ-ताब-ओ-तवा[12] 'दाग़' जा चुके
अब हम भी जाने वाले है सामान तो गया

२. अत्याचार, ३ कटाक्ष, ४. चुलबुलापन, ५. बसुध, अचेत, ६. गली, ७. शील, ८. मुरव्वत, ९. प्रेम के रहस्य का प्रकटन, १०. अपमान, ११. चेतना, विवेक, १२. सामर्थ्य ।

'हसरत' मोहानी

तासीरे - बर्क़े - हुस्न[1] जो उनके सुखन[2] मे थी
इक लरज़िशे - ख़फ़ी[3] मिरे सारे बदन मे थी

वां से निकल के फिर न फ़राग़त[4] हुई नसीब
आसूदगी[5] की जान तिरी अंजुमन[6] में थी

इक रंगे - इल्तिफ़ात[7] भी इस बेरुखी मे था
इक सादगी भी उस निगहे - सहरफन[8] में थी

मोहताजे - बू-ए - इत्र[9] न था जिस्मे-बू-ए-यार[10]
ख़ुशबूए - दिलबरी[11] थी जो उस पैरहन[12] मे थी

मुख़्तलिफ़ अशआर

इश्क़ की कुछ हवा लगी जब उन्हे
कुछ उड़ा रंग कुछ निखर भी गये

हुस्न[13] पर भी कुछ आ गये इलजाम[14]
गो बहुत अहले - दिल[15] के सर भी गये

आज उन्हें मेहरबान सा पाकर
खुश हुए और जी में डर भी गये

चुपके चुपके रात दिन आसू बहाना याद है
हमको अब तक आशिक़ी का वो जमाना याद है

१. सौंदर्य की बिजली का प्रभाव, २. बातचीत, ३. हल्का-सा कम्पन, ४. अवकाश, ५. सम्पन्नता, इत्मीनान, ६ महफ़िल, ७. आकर्षण का रग, ८. जादूगर आँखें, ९. इत्र की सुगध का जरूरतमंद, १०. प्रेमिका के शरीर की गंध, ११. आकर्षक गध, १२. वस्त्र, कपड़ा, १३. सौंदर्य, १४. आरोप, १५. दिलवाले (प्रेमी)।

वा हज़ारां इज़्तिरांब[16]-ओ-सद हज़ारां इश्तियाक़[17]
तुझ से वो पहले पहल दिल का लगाना याद है

बार बार उठना उसी जानिब निगाहे-शौक़[18] का
और तिरा ग़ुर्फ़े[19] से वो आंखें लड़ाना याद है

तुझ से कुछ मिलते ही वो बेबाक हो जाना मिरा
और तिरा दांतों में वो उंगली दबाना याद है

खेंच लेना वो मिरा पर्दे का कोना दफ़अतन[20]
और दुपट्टे से वो तेरा मुंह छुपाना याद है

जानकर सोता तुझे वो क़स्दे-पाबोसी[21] मिरा
और तिरा ठुकरा के सर वो मुस्कुराना याद है

ग़ैर की नज़रों से बचकर सबकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़
वो तेरा चोरी छुपे रातों को आना याद है

दोपहर की धूप में मेरे बुलाने के लिए
वो तिरा कोठे पे नंगे पांव आना याद है

आज तक नज़रों में है वो सोहबते-राज़-ओ-नियाज़[22]
अपना जाना याद है तेरा बुलाना याद है

देखना मुझको जो बर्गश्ता[23] तो सौ सौ नाज़[24] से
जब मना लेना तो फिर ख़ुद रूठ जाना याद है

बावुजूदे-इद्दिया-ए-इत्तिक़ा[25] 'हसरत' मुझे
आज तक अहदे-हवस[26] का वो फ़साना याद है

१६. हज़ारों व्याकुलताएं १७. हज़ारों उन्मुकताएं, १८. प्यार-भरी दृष्टि, १९. झरोखा, २० अचानक, २१. पाँव चूमने का इरादा, २२. एकांत मिलन, २३. विमुख, २४. हाव-भाव, २५. संयम के दावे के बावजूद, २६. लालसा का ज़माना।

अह्दे-अव्वलीने-आरज़ू

'जोश' मलीहाबादी

ख़ुशा[1] वो दिन कि शादाबी[2] थी दिल में जब लड़कपन की
बहारें लूटती थी जब वो मेरे साथ गुलशन[3] की

कली रूहों की खिलती थी ख़ुनुक[4] जाड़ों की रातों में
अंगीठी के किनारे नींद उड़ जाती थी बातों में

जब औजे-चर्ख़[5] पर सावन के बादल घिर के आते थे
हवा-ए-नर्म[6] में क्या क्या न हम धूमें मचाते थे

मैं पहरों नीम के नीचे उसे झूला झुलाता था
वो गाती थी, मगर उसको न कुछ आता न जाता था

ख़फ़ा होते थे तो इक दूसरे का मुंह चिढ़ाते थे
घरौंदे सहन में बन बन के अक्सर टूट जाते थे

न दिन को दिल धड़कता था न शब को आंख रोती थी
महब्बत इतनी नाज़ुक थी कि मुतलक़[7] हिस[8] न होती थी

किसे मालूम था इक रोज़ होगी सरगरानी[9] भी
दबे पाओं चली आती है तेज़ी से जवानी भी

जवानी सीनः-ए-तिफ़्ली[10] में इठलाती रही बरसों
कोई मुब्हम तमन्ना[11] दिल को गरमाती रही बरसों

१. अहो, बहुत अच्छा, २. सुसिक्ति, ३. पुष्पवन, ४. ठण्डी, ५. आकाश की ऊँचाई, ६. कोमल वायु, ७. तनिक, बिल्कुल, ८. इंद्रियों द्वारा किसी चीज़ का ज्ञान, ९. नाराज़गी, १०. बचपन, ११. संदिग्ध कामना ।

ज़मीने - बर्फ़[१२]. में तुख़्मे - शरर[13] बोती रही बिजली
तने-नाज़ुक[१४] में रफ़्ता रफ़्ता[१५] हल[१६] होती रही बिजली

नज़र अब जो उठाई तो यकायक देखता क्या हूँ
कि मैं तन्हा हज़ारों बिजलियों की ज़द[१७] पे बैठा हूँ

नज़र पहले तो आई इक चमक आँसू के महमिल[१८] में
यकायक खुल गया फिर एक दरिया सा मिरे दिल में

सदायें[१९] गूज उठीं दिल में हजारों आबशारों[२०] की
हवा चलने लगी सीने में लाफ़ानी बहारों[२१] की

मग्रन[२२] इक आग मी सोज़े - दरूं[२३] ने दिल में भडकाई
तमन्ना[२४] कुन्मुनाई, ग़म ने ली सीने में अंगड़ाई

मिरे पहलू[२५] में पहली मरतबा इक फास सी खटकी
घटा सी छा गई दिल पर कली-सी रूह मे चटकी

निराला ख़ौफ,[२६] अनोखी कशमकश,[२७] नाआशना हलचल[२८]
गरजते हो कहीं कुछ दूर जैसे ख़्वाब मे बादल

दिखाई इक नयी दुनिया ने कुछ यूँ बज्मआराई[२९]
यकायक आये चश्मे - कोर[30] मे जिस तरह बीनाई[३१]

जहां का जर्रा ज़र्रा[३२] दीद:-ए-हैरां[33] नजर आया
मैं खुद अपने को इक बदला हुआ इंसा नजर आया

वो भडकी आग सीने में, रग - ओ - पै[3४] को तपा डाला
ज़बां से यह मिरी बेसाख़्ता[3५] निकला, 'जला डाला'

१२. बर्फ की धरती, १३. आग का बीज, १४. कोमल शरीर, १५. धीरे-धीरे, १६. विलयन, १७. निशाना, लक्ष्य, १८. परदा, १९. आवाजें, २०. जल प्रपात, २१. अमर बहारें, २२. सहसा, २३. अंतःकरण की तपन, २४. कामना, २५. पार्श्व, २६ अनोखा भय, २७. संघर्ष, २८. अपरिचित हलचल, २९ महफ़िल सजाना, ३०. अंधी आँख, ३१. ज्योति, ३२. कण-कण, ३३. चकित आँखें, ३४. धमनी और मांस, ३५. सहसा, अचानक !

यह सुनते ही जबीने-हुस्न[३६] पर पहली शिकन[३७] आई
जिलौ[३८] में सैकड़ों जल्वे[३९] लिए ताज़ा दुल्हन[४०] आई

ग़ुरूरे - हुस्न[४१] ने बिगड़े हुए अन्दाज़ से देखा
नियाज़े - इश्क़[४२] सदक़े[४३] हो गया इस नाज़ से देखा

कहा कुछ ज़ेरे - लब[४४], ज़ुल्फ़ें हटाकर रू-ए - ताबां[४५] से
महक दोशीज़गी[४६] की आई लाले - इत्र अफ़शां[४७] से

नज़र में आ गया रंगे - तमन्ना[४८] खिंच के सीने से
गुलाबी हो गया कुछ और भी चेहरा पसीने से

हया[४९] की शम्अ[५०] जल उट्ठी हरीमे - दिलरुबाई[५१] में
झुकाकर सर घुमाया देर तक कंगन कलाई में

बचाकर आंख परखा उसने मेरे दिल की हालत को
अदा से फेर कर आंखों पर अंगुश्ते - शहादत[५२] को

सितम ही ढा दिया भूले से उरियां[५३] होके बाहों ने
बक़द्रे - इक नज़र[५४] तक़रीर[५५] की नीची निगाहों ने

गले पर हमदमे - तिफ़्ली[५६] के तेग़े - ख़ूंफ़िशां[५७] फेरी
ज़रा सा मुस्कुराकर सुर्ख़ होंटों पर ज़बां फेरी

मिटा डाला है जिस ज़ालिम ने मेरी शादमानी[५८] को
इलाही[५९]! ख़ैर[६०] की तौफ़ीक़[६१] दे उसकी जवानी को

३६. सौंदर्य का ललाट, ३७. बल, ३८. दामन, ३९. कांति, छवि, ४०. नयी दुल्हन, ४१. सौंदर्याभिमान, ४२. प्रेम की आकांक्षा, ४३. वारी, ४४. होंठों ही होंठों में, ४५. प्रकाशमान चेहरा, ४६. कौमार्य, ४७. महकते हुए होंठ, ४८. कामना का रंग, ४९. लज्जा, ५०. मोमबत्ती, ५१. मोहकता का अन्तःपुर, ५२. हाथ के अंगूठे के पास की उंगली, ५३. नग्न, नंगी, ५४. एक नज़र के बराबर, ५५. भाषण, ५६. बचपन का मित्र, ५७. ख़ून में डूबी हुई तलवार ५८. ख़ुशी, ५९. ईश्वर, ६०. कल्याण, ६१. सामर्थ्य ।

हनोज़

'जोश' मलीहाबादी

नक्शे - खयाल[1] दिल से मिटाया नही हनोज[2]
बेदर्द मैने तुझको भुलाया नही हनोज

यादश बखैर[3] जिस पे कभी थी तिरी नजर
वो दिल किसी से मैने लगाया नही हनोज

मेहराबे - जा[4] मे तूने जलाया था खुद जिसे
सीने का वो चराग बुझाया नही हनोज

बेहोश होके जल्द तुझे होश आ गया
मै बदनसीब होश मे आया नही हनोज

दुनिया ने तुझको ख्वाबे - गरा[5] से जगा दिया
लेकिन मुझे किसी ने जगाया नही हनोज

तू कार - ओ - बारे शौक मे तन्हा नही रहा
मेरा किसी ने हाथ बटाया नही ह ज

गर्दन को आज भी तिरी बाहो की याद है
यह मिन्नतो का तौक[6] बढ़ाया नही हनोज

मरकर भी आयेगी यह सदा कब्रे - 'जोश' से
बेदर्द मैने तुझ को भुलाया नही हनोज

१. यादो का चिह्न, २ अभी तक, ३. उसकी याद की खैर हो, ४ शरीर की मेहराब,
५. बहुमूल्य सपना, ६ हार ।

ग़ज़लें और अशआर

'फिराक' गोरखपुरी

(१)

सर मे सौदा[1] भी नही दिल मे तमन्ना[2] भी नही
लेकिन इस तर्के-महब्बत[3] का भरोसा भी नही

दिल की गिनती न यगानो[4] न बेगानो[5] मे
लेकिन उस जल्वागहे-नाज[6] से उठना भी नही

मेहरबानी को महब्बत नही कहते अय दोस्त
आह अब मुझसे तिरी रंजिशे-बेजा[7] भी नही

एक मुद्दत[8] से तिरी याद भी आई न हमे
और हम भूल गये हो तुझे ऐसा भी नही

(२)

नर्म फ़जाओ[9] की करवटे दिल को दुखा के रह गई
ठंडी हवाए भी तिरी याद दिलाके रह गई

शाम भी थी धुआ धुआ हुस्न भी था उदास उदास
दिल को कई कहानिया याद सी आके रह गई

मुझको खराब कर गई नीम निगाहिया[10] तिरी
मुझसे हयात-ओ-मौत[11] भी आखे चुराके रह गई

१. उन्माद, पागलपन, २ इच्छा, अभिलाषा, ३. प्रेम का त्याग, ४ अपना, रिश्तेदार, ५. अपरिचित, गैर, ६ प्रेमिका की महफिल, ७ अनुचित वैमनस्य, ८. लम्बा समय, ९. कोमल वातावरण, १० आख बचाकर देखना, ११. जीवन-मृत्यु ।

साज़े-नशाते-ज़िन्दगी[12] आज लरज़ लरज़[13] उठा
किसकी निगाहें इश्क़ का दर्द सुना के रह गईं

कौन सुकून दे सका ग़मज़दगाने-इश्क़[14] को
भीगती रातें भी 'फ़िराक़' आग लगाके रह गईं

(३)

शामे-ग़म[15] कुछ उस निगाहे-नाज़[16] की बातें करो
बेख़ुदी[17] बढ़ती चली है राज़ की बातें करो

निकहते-ज़ुल्फ़े-परीशां[18], दास्ताने शामे-ग़म[19]
सुब्ह होने तक इसी अन्दाज़ की बातें करो

हर रगे-दिल[20] वज्द[21] में आती रहे दुखती रहे
यूंही उसके जा-ओ-बेजा नाज़[22] की बातें करो

जो अदम[23] की जान है जो है पयामे-ज़िन्दगी[24]
उस सुकूते-राज़[25] उस आवाज़ की बातें करो

नाम भी लेना है जिसका इक जहाने-रंग-ओ-बू[26]
दोस्तो उस नौबहारे-नाज़[27] की बातें करो

कुछ क़फ़स[28] की तीलियों से छन रहा है नूर[29] सा
कुछ फ़ज़ा[30] कुछ हसरते-परवाज़[31] की बातें करो

जिसकी फ़ुर्क़त[32] ने पलट दी इश्क़ की काया 'फ़िराक़'
आज उस ईसा नफ़स[33] दमसाज़[34] की बातें करो

१२. जीवन के आनन्द का साज़, १३. कांपना, १४. प्रेम के मारे हुए, १५. दुख की शाम, १६. गर्व-भरी दृष्टि, १७. बेहोशी, १८. बिखरी हुई लटों की सुगंध, १९ दुख की शाम की कहानी, २०. हृदय की रग, २१. झूमना, २२. उचित-अनुचित गर्व, २३. अनस्तित्व, २४. जीवन-संदेश, २५. रहस्यमय नीरवता, २६. रंग और सुगंध का संसार, २७. नवयौवन के रंगों से लहलहाता रूप, २८. पिंजरा, २९. प्रकाश, ३०. वातावरण, ३१. उड़ान की अपूर्ण कामना, ३२. जुदाई, विरह, ३३. जिसकी सांस से जीवन मिले, ३४. दोस्त, मित्र।

तू याद आए तिरे जौर-ओ-सितम[३५] लेकिन न याद आयें
तसव्वुर[३६] मे यह मासूमी बडी मुश्किल से आती है

मासूम है महब्बत लेकिन इसी के हाथों
यह भी हुआ कि मैने तेरा बुरा भी चाहा

कहा हर एक से बारे-नशात[३७] उठता है
बलाए[३८] यह भी महब्बत के सर गई होगी

दिल दुखे रोये है शायद इस जगह अय कू-ए-दोस्त[३९]
खाक का इतना चमक जाना जरा दुशवार[४०] था

तुझे तो हाथ लगाया है बारहा लेकिन
तिरे खयाल को छूते हुए मै डरता हूँ

गरज कि काट दिये जिन्दगी के दिन अय दोस्त
वो तेरी याद मे हो या तुझे भुलाने मे

किया है सैरगहे-जिन्दगी[४१] मे रुख[४२] जिस सिम्त[४३]
तिरे खयाल से टकरा के रह गया हूँ मै

रफ्ता-रफ्ता इश्क मानूसे-जहा[४४] होता गया
खुद को तेरे इश्क मे तन्हा[४५] समझ बैठे थे हम

कोई समझे तो एक बात कहू
इश्क तौफीक[४६] है गुनाह[४७] नही

हुस्न सरतापा[४८] तमन्ना[४९], इश्क सरतापा गुरूर[५०]
इसका अन्दाजा नियाज-ओ-नाज[५१] से होता नही

३५. अत्याचार, ३६ कल्पना, ३७ सुख का बोझ, ३८ आपत्तिया, ३९. दोस्त की गली, ४०. कठिन, ४१ जीवन का क्रीडास्थल, ४२ मुख, ४३ ओर, ४४ ससार से परिचित, ४५ अकेला, ४६ साहस, ४७. पाप, ४८ सर से पैर तक, ४९ कामना, ५० गर्व, ५१. गर्व और आकाक्षा ।

न रहा हयात[५२] की मंजिलो मे वो फर्के-नाज-ओ-नियाज[५३] भी
कि जहा है इश्क बरहनापा[५४] वही हुस्ने खाक बसर[५५] भी है

बहुत दिनो मे महब्बत को यह हुआ मालूम
जो तेरे हिज्र[५६] मे गुजरी वो रात रात हुई

कडे है कोस बहुत मजिले-महब्बत[५७] के
मिले न छाव मगर धूप ढल तो सकती है

हासिले-हुस्न-ओ-इश्क[५८] बस है यही
आदमी आदमी को पहचाने

हुस्न को इश्क हुस्न ही समझे नही और अय 'फिराक'
मेहरबा ना मेहरबा क्या-क्या समझ बैठे थे हम

एतराफ़-महब्बत

'अख्तर' शीरानी

लो आओ कि राजे-पिन्हा[१] को रुसवा-ए-हिकायत[२] करता हूँ
दामाने-जबाने खमोशी[३] को लबरेजे-शिकायत[४] करता हूँ
घबराके हुजूमे-गम[५] से आज अफशाए-हकीकत[६] करता हूँ
इजहार[७] की जुरअत[८] करता हूँ, मै तुम से महब्बत करता हूँ

५२ जीवन, ५३ गर्व और आकाक्षा का अन्तर, ५४ नगे पाव ५५ मिट्टी मे रहने वाला, ५६. विरह, ५७ प्रेम की मजिल, ५८ सौन्दर्य और प्रेम का निष्कर्ष

एतराफ़े महब्बत

१. छुपा हुआ रहस्य, २ कहानी सुनाकर बदनाम करना, ३ खामोशी की जबान का दामन, ४. शिकायत से भरपूर, ५ दुखो का समूह, ६ वास्तविकता प्रकट करना, ७ प्रकट करना, ८ साहस ।

फ़िक्र आबादे-दुनिया[९] मे मिरी इक मसजूदे-अफ़कार[१०] हो तुम
शेरिस्ताने-हस्ती[११] मे मिरी इक माबूदे-अशआर[१२] हो तुम
और मेरे परस्तिशज़ारे-दिल[१३] मे इक बुते-शीरीकार[१४] हो तुम
मैं जिस की इबादत[१५] करता हूं, मै तुम से महब्बत करता हूं

रातों को मिरे रोने का समा[१६] बेदार[१७] सितारे देखते है
और मिरे जुनू[१८] के आलम[१९] को आलम के नजारे[२०] देखते है
बागो के मनाजिर[२१] देखते है नहरो के किनारे देखते है
यूं शरहे-महब्बत[२२] करता हूं, मै तुम से महब्बत करता हूं

तुम चाद से बढकर रौशन[२३] हो, जुहरा[२४] की कसम, तारो की कसम
तुम फूल से बढकर रगी हो, दुनिया के चमनजारो[२५] की कसम
तुम सबसे हसी हो दुनिया की, दुनिया के नज्जारो की कसम
दुनिया से भी नफरत करता हूं, मै तुमसे महब्बत करता हूं

इस मक्र[२६] की दुनिया मे कि जहाँ मेयारे-सदाकत[२७] कुछ भी नही
दो अश्को[२८] से बढकर सच्चा और इजहारे-महब्बत[२९] कुछ भी नही
रोता हूं तुम्हारी याद मे गो रोने की शहादत[३०] कुछ भी नही
पेश[३१] इतनी शहादत करता हूं, मै तुमसे महब्बत करता हूं

गर हुक्म दो रौशन तारो को, मै ला के झुका द कदमो पर
जन्नत के शिगुफ़्ता[३२] फूलो की जन्नत सी बसा दू कदमो पर
सज्दागहे-महर-ओ-माह[३३] को भी सज्दे मे गिरा दूं कदमो पर
नाचीज[३४] हूं, हिम्मत करता हूं, मै तुमसे महब्बत करता हूं

९. चिंतन का ससार, १० विचारो का आराध्य, ११ शायरी की दुनिया, १२ शेरो का खुदा, १३ दिल का आराधना-गृह, १४ मधुर मूर्ति, १५ आराधना, १६ दृश्य, १७ जाग्रत, १८. उन्माद, १९ हालत, २० ससार के दृश्य, २१. दृश्य, २२. प्रेम की व्याख्या. २३. प्रकाशित, २४. शुक्र ग्रह, २५ उपवन, २६. फरेब, २७. सच्चाई, २८. आंसुओ, २९. प्रेम का इजहार, ३०. गवाही, ३१ सम्मुख, ३२ ताजा-खिले हुए, ३३ चांद सितारे ३४ तुच्छ।

एतराफ़

असरारुलहक 'मजाज़'

अब मिरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो

मैंने माना कि तुम इक पैकरे-रानाई[1] हो
चमने-दहर[2] में रूहे-चमन आराई[3] हो
तलअते-मेहर[4] हो फ़िर्दौस की बरनाई[5] हो
बिन्ते-महताब[6] हो गर्दूं[7] से उतर आई हो

मुझसे मिलने में अब अन्देश-ए-रुसवाई[8] है
मैंने खुद अपने किये की यह सजा पाई है

खाक में आह मिलाई है जवानी मैंने
शोलाजारों[9] में जलाई है जवानी मैंने
शहरे-खूबां[10] में गवाई है जवानी मैंने
ख्वाबगाहों[11] में जगाई है जवानी मैंने

हुस्न ने जब भी इनायत[12] की नजर डाली है
मेरे पैमाने-महब्बत[13] ने सिपर[14] डाली है

उन दिनों मुझपे कयामत[15] का जुनूं[16] तारी[17] था
सर पे सरशारि ए-इशरत[18] का जुनूं तारी था
माहपारों[19] से महब्बत का जुनूं तारी था
शहरयारों[20] से रकाबत[21] का जुनूं तारी था

१. साकार सौदर्य, २ दुनिया का बाग, ३ उद्यान की आत्मा, ४ दया का रूप, ५. स्वर्ग की जवानी, ६. चन्द्रमा की बेटी, ७. आकाश, ८. बदनामी का डर, ९. आग का बाग, १०. सुन्दरियों का नगर, ११. शयनागार, १२. दया, कृपा, १३ प्रेम का वादा, १४. ढाल, १५. प्रलय, १६ उन्माद, पागलपन, १७ छाया हुआ, १८. ऐश्वर्य की तृप्ति, १९. चाँद का टुकड़ा, सुन्दरियां, २० बादशाह, २१ दुश्मनी प्रतिद्वन्द्विता।

बिस्तरे-मख़मल-ओ-संजाब[२२] थी दुनिया मेरी
एक रंगीन-ओ-हसी ख़्वाब[२३] थी दुनिया मेरी

जन्नते-शौक़[२४] थी बेगानः-ए-आफ़ाते-समूम[२५]
दर्द जब दर्द न हो काविशे-दरमा[२६] मालूम
ख़ाक[२७] थे दीदः-ए-बेबाक[२८] मे गर्दू के नजूम[२९]
बज़्मे-परवीं[३०] था निगाहों में कनीज़ो का हुजूम[३१]

लैलः-ए-नाज़[३२] बरअफ़गन्दा निक़ाब[३३] आती थी
अपनी आखों मे लिये दावते-ख़्वाब[३४] आती थी

संग[३५] को गौहरे-नायाब-ओ-गरा[३६] जाना था
दश्ते-पुरख़ार[३७] को फिरदौस-जवा[३८] जाना था
रेग[३९] को सिलसिलः-ए-आबे-रवां[४०] जाना था
आह यह राज[४१] अभी मैने कहां जाना था

मेरी हर फ़त्ह[४२] में है एक हज़ीमत[४३] पिन्हा[४४]
हर मसर्रत[४५] में है राज़े-ग़म-ओ-हसरत[४६] पिन्हा

क्या सुनोगी मिरी मजरूह जवानी[४७] की पुकार
मेरी फ़रियाद[४८]-जिगरदोज[४९], मिरा नालः-ए-जार[५०]
शिद्दते-कर्ब[५१] मे डूबी हुई मेरी गुफ़्तार[५२]
मैं कि ख़ुद अपने मज़ाक़े-तरबआगी[५३] का शिकार[५४]

२२. मख़मल और संजाब का बिस्तर, २३. रगीन और सुन्दर सपना, २४ आकाक्षाओं का स्वर्ग, २५. विपत्तियो की जहरीली हवा से बेख़बर, २६. इलाज की कोशिश, २७. मिट्टी, २८. निर्भय आख, २९. आकाश के सितारे. ३०. सितारो की महफ़िल, ३१. दासियो का समूह, ३२. गर्व की देवी, ३३. निकाव उलटकर, ३४. स्वप्न का निमत्रण, ३५ पत्थर, ३६. अप्राप्य और बहुमूल्य मोती, ३७. काटो से भरा जगल, ३८. जवान स्वर्ग, ३९. रेत, ४०. बहते हुए पानी का सिलसिला, ४१ रहस्य, ४२. विजय, जीत, ४३. पराजय, ४४. छुपी हुई, ४५. ख़ुशी, आनन्द, ४६. अपूर्ण कामनाओ और दुखों का रहस्य, ४७. घायल जवानी, ४८. आर्तनाद, ४९. हृदय-विदारक, ५०. आर्तनाद, ५१. दुख की अधिकता, ५२. बातचीत, ५३. हंसने-खेलने की आदत, ५४. आखेट ।

वो गुदाज़े[५५]-दिले-मरहूम[५६] कहा से लाऊं
अब मैं वो जज्ब:-ए-मासूम[५७] कहां से लाऊ

मेरे साये से डरो तुम मिरी कुर्बत[५८] से डरो
अपनी जुरअत[५९]की क़सम अब मिरी जुरअत से डरो
तुम लताफ़त[६०] हो अगर मेरी लताफ़त से डरो
मेरे वादों से डरो मेरी महब्बत से डरो

अब मैं अलताफ़-ओ-इनायत[६१] का सजावार[६२] नही
मैं वफ़ादार नहीं हा मै वफादार नही

अब मिरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो

तुम्हारे हुस्न के नाम

फ़ैज़ अहमद 'फैज़'

सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्न के नाम

बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन[१] सरे-शाम[२]
निखर गई है कभी सुब्ह, दो पहर, कभी शाम
कही जो क़ामते-ज़ेबा पे[३] सज गई है क़बा[४]
चमन में सर्व-ओ-सनोबर[५] संवर गए है तमाम
बनी बिसाते-गज़ल[६] जब डुबो लिये दिल ने
तुम्हारे-साय:-ए-रुखसार-ओ-लब[७] मे साग़र-ओ-जाम[८]

५५. कोमलता, ५६. स्वर्गीय दिल, ५७ निष्पाप भावना, ५८. सामीप्य, ५९. साहस, ६०. कोमलता, ६१. दया और कृपा, ६२. योग्य, पात्र।

तुम्हारे हुस्न के नाम

१. वस्त्रों का रंग, २. सायंकाल से, ३. सुशोभित आकार, ४. वस्त्र, ५. चीड़ और सरो, ६. ग़ज़ल की बिसात, ७. होंठ और कपोल की छाया, ८. प्याला।

सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्न के नाम

तुम्हारे हाथ पे है ताबिशे-हिना[९] जब तक
जहा मे बाकी है दिलदारि-ए-उरूसे-सुखन[१०]
तुम्हारा हुस्ने-जवा[११] है तो मेहरबा है फलक[१२]
तुम्हारा दम है तो दमसाज[१३] है हवा-ए-वतन[१४]
अगरचे तग[१५] है औकात[१६] सख्त है आलाम[१७]
तुम्हारी याद से शीरी[१८] है तलखि-ए-अय्याम[१९]

सलाम लिखता है शाइर तुम्हारे हुस्न के नाम

तुम नहीं आये थे जब

अली सरदार जाफरी

तुम नही आये थे जब, तब भी तो मौजूद थे तुम
आख मे नूर[१] की और दिल मे लहू[२] की सूरत
दर्द की लौ[३] की तरह, प्यार की खुशबू की तरह
बेवफा वादो की दिलदारी का अन्दाज लिये

तुम नही आये थे जब तब भी तो तुम आये थे
रात के सीने मे महताब[४] के खजर[५] की तरह
सुब्ह के हाथो मे खुर्शीद[६] के सागर[७] की तरह
शाखे-खू-रंगे-तमन्ना[८] मे गुले-तर[९] की तरह
तुम नही आओगे जब, तब भी तो तुम आओगे
याद की तरह धडकते हुए दिल की सूरत

९. मेहदी की गरमी, १० काव्य की प्रेमिका की दिलदारी, ११ जवान सौंदर्य, १२ आकाश, १३. मित्र, १४ देश की हवा, १५ थोडा, १६ समय (वक्त का बहुवचन), १७. वेदना, १८ मधुर. १९ जमाने की कटुता।

तुम नहीं आये थे जब

१. प्रकाश, २ खून, ३ ज्योति, ४ चाद, ५ कटार, ६ सूर्य, ७. मधुपात्र, ८ आकांक्षा की खून जैसी लाल डाली, ९ ताजा फूल।

ग़म के पैमानः-ए-सरशार[१०] को छलकाते हुए
बर्गहा-ए-लब-ओ-रुख़सार[११] को महकाते हुए
दिल के बुझते हुए अंगारे को दहकाते हुए
ज़ुल्फ़ दर ज़ुल्फ़[१२] बिखर जायेगा फिर रात का रंग
शबे-तन्हाई[13] में भी लुत्फ़े-मुलाक़ात[१४] का रंग
रोज़ लायेगी सबा[१५] कू-ए-सबाहत[१६] से पयाम[१७]
रोज़ गायेगी सहर[१८] तहनियते-जश्ने-फ़िराक़[१९]

आओ आने की करें बात कि तुम आये हो
अब तुम आये हो तो मैं कौनसी शै[२०] नज्र[२१] करूं
कि मेरे पास वजुज[२२] मेहर-ओ-वफ़ा[२३] कुछ भी नहीं
एक ख़ूं गश्ता तमन्ना[२४] के सिवा कुछ भी नहीं

महकती हुई रात

जां निसार 'अख़्तर'

यह तिरे प्यार की ख़ुशबू से महकती हुई रात
अपने सीने में छुपाये तिरे दिल की धड़कन
आज फिर तेरी अदा से मिरे पास आई है

अपनी आँखों में तिरी ज़ुल्फ़ का डाले काजल
अपनी पलकों पे सजाये हुए अरमानों के ख़्वाब
अपने आँचल पे तमन्ना के सितारे टांके

१०. परिपूर्ण मधुपात्र, ११. होंठ और कपोल रूपी पत्ते, १२. अलकें, १३. एकांत की रात, १४. मिलन का आनन्द, १५. हवा, १६. सौंदर्य की गली, १७. संदेश, १८. सुबह, १९. विरह उत्सव की स्तुति, २०. चीज, २१. भेंट, २२. अतिरिक्त, २३. प्रेम और निर्वाह, २४. ख़ून में डूबी हुई कामना ।

गुनगुनाती हुई यादो की लवे जाग उठी
कितने गुजरे हुए लम्हो[1] के चमकते जुगनू
दिल को हाले[2] मे लिये काप रहे है कब से

कितने लम्हे जो तिरी जुल्फ के साये के तले
गर्क[3] होकर तिरी आँखो के हसी सागर[4] मे
गमे-दौरा[5] से बहुत दूर गुजारे मैने

कितने लम्हे कि तिरी प्यार भरी नजरो ने
किस सलीके[6] से सजाई मिरे दिल की महफिल
किस करीने[7] से सिखाया मुझे जीने का शऊर[8]

कितने लम्हे कि हसी नर्म सुबुक[9] आचल से
तूने बढकर मिरे माथे का पसीना पोछा
चॉदनी बन गई राहो की कडी धूप मुझे

कितने लम्हे कि गमे-जीस्त[10] के तूफानो मे
जिन्दगानी की जलाये हुए बागी मशअल[11]
तू मिरा अज्मे-जवा[12] बन के मिरे साथ रही

कितने लम्हे कि गमे-दिल[13] से उभर कर हमने
इक नयी सुब्हे-महब्बत[14] की लगन अपनाई
सारी दुनिया के लिये, सारे जमाने के लिये

इन्ही लम्हो के गुलआवेज[15] शरारो[16] का तुझे
गूँधकर आज कोई हार पहना दू आ जा
चूमकर माग तिरी तुझ को सजा दू आ जा

महकती हुई रात

१. क्षणों, २. घेरे, ३. डूबकर, ४ प्याला, ५. जमाने का गम, ६. ढग, ७. ढग, ८. तमीज, ज्ञान, ९. कोमल, १० जीवन का गम, ११ बागी मशाल, १२. जवान प्रतिज्ञा, १३. हृदय का दुख, १४. प्रेम की सुबह, १५ फूलो से लदे, १६ चिंगारिया ।

चारागर

'मख़दूम' मोहीउद्दीन

इक चंबेली के मंडवे तले
मैकदे[1] से जरा दूर उस मोड पर

दो बदन
प्यार की आग मे जल गये
प्यार हर्फ़े-वफ़ा[2]
प्यार उनका ख़ुदा
प्यार उनकी चिता

दो बदन
ओस मे भीगते, चादनी मे नहाते हुए
जैसे दो ताजा रू[3] ताजा दम फूल पिछले पहर
ठडी ठडी सुबुक रौ[4] चमन की हवा
सर्फ़े-मातम[5] हुई
काली काली लटो से लिपट गर्म रुख़सार[6] पर
एक पल के लिए रुक गई

दिन मे और रात मे
नूर-ओ-ज़ुल्मात[7] मे
मस्जिदो के मिनारो ने देखा उन्हे
मन्दिरो के किवाडो ने देखा उन्हे
मैकदे की दराड़ो ने देखा उन्हे

यह बता चारागर[8]
तेरी जंबील[9] मे

१. शराबखाना, २. प्रेम-निर्वाह का शब्द, ३. चेहरा, ४. मदगति से बहने वाली, ५. विलाप में व्यय, ६. कपोल, ७. प्रकाश और अधकार, ८. उपचारक, ९. झोली ।

नुस्ख़ः-ए-कीमिया-ए-मह्ब्बत[१०] भी है ?
कुछ इलाज-ओ-मदावा-ए-उल्फ़त[११] भी है ?

इक चंबेली के मंडवे तले
मैकदे से ज़रा दूर उस मोड़ पर
दो बदन
चारागर !

ग़ज़ल

'मजरूह' सुल्तानपुरी

मुझे सहल[१] हो गई मंज़िले वो हवा के रुख़[२] भी बदल गये
तिरा हाथ, हाथ में आ गया कि चराग़ राह में जल गये
वो लजाये मेरे सवाल पर कि उठा सके न झुका के सर
उडी ज़ुल्फ़ चेहरे पे इस तरह कि शबों के राज़[३] मचल गये

वही बात जो न वो कह सके मिरे शेर-ओ-नग़मे[४] में आ गई
वही लब न मैं जिन्हे छू सका, क़दहे-शराब[५] मे ढल गये
वही आस्तां[६] है वही जबीं[७] वही अश्क[८] है वही आस्तीं
दिले-ज़ार[९] तू भी बदल कहीं कि जहां के तौर[१०] बदल गये

१०. प्रेम का रासायनिक नुस्ख़ा, ११. प्रेम का इलाज।

ग़ज़ल

१. आसान, २. दिशा, ३. रातों के रहस्य, ४. शेर और गीत, ५. शराब का प्याला, ६. चौखट, ७. माथा, ८. आंसू, ९. रोता हुआ दिल, १०. ढंग।

तुझे चश्मे-मस्त[11] पता भी है कि शबाब[12] गर्मि-ए-बज़्म[13] है
तुझे चश्मे-मस्त ख़बर भी है कि सब आबगीने[14] पिघल गये
मिरे काम आ गईं आख़िरश[15] यही काविशें[16] यही गर्दिशें[17]
बढ़ीं इस क़दर मेरी मंज़िलें कि क़दम[18] के ख़ार[19] निकल गये

अंदेशे

'कैफ़ी' आज़मी

रूह[1] बेचैन है इक दिल की अज़ीयत[2] क्या है
दिल ही शोला[3] है तो यह सोज़े-महब्बत[4] क्या है
वो मुझे भूल गई इसकी शिकायत क्या है
रंज तो यह है कि रो रो के भुलाया होगा

वो कहां और कहा काविशे-ग़म[5] सोज़िशे-जां[6]
उसकी रंगीन नज़र और नुकूशे-हिर्मां[7]
उसका एहसासे-लतीफ़[8] और शिकस्ते-अर्मां[9]
तानाज़न[10] एक ज़माना नज़र आया होगा

दिल ने ऐसे भी कुछ अफ़साने सुनाये होंगे
अश्क[11] आंखों ने पिये और न बहाये होंगे
बन्द कमरे मे मिरे ख़त जो जलाये होंगे
एक इक हर्फ़[12] जबीं[13] पर उभर आया होगा

११. मस्त आंखें, १२. यौवन, जवानी, १३. महफ़िल की गरमी, १४. शीशे, १५. अंततः, १६. परिश्रम, १७ चक्कर, घूमना, १८. पैर, १९. कांटा।

अंदेशे

१. आत्मा, २. कष्ट, तकलीफ़, ३. अंगारा, ४. प्रेम की जलन (तपन), ५. ग़म की तलाश, ६. शरीर की जलन, ७. निराशा के चिह्न, ८. कोमल भावना, ९. अरमानों की पराजय, १०. व्यंग करता हुआ, ११. आंसू, १२. शब्द, १३. माथा।

उसने घबराके नज़र लाख बचाई होगी
मिट के इक नक़्श[१४] ने सौ शक्ल दिखाई होगी
मेज़ से जब मिरी तस्वीर हटाई होगी
हर तरफ़ मुझको तड़पता हुआ पाया होगा

बेमहल[१५] छेड़ पे जज़्बात[१६] उबल आये होंगे
ग़म पशेमान तबस्सुम[१७] में ढल आये होंगे
नाम पर मेरे जब आंसू निकल आये होंगे
सर न कांधे से सहेली के उठाया होगा

परछाइयां

'साहिर' लुधियानवी

तसव्वुरात[१] की परछाइयां उभरती हैं
तुम आ रही हो ज़माने की आंख से बचकर
नज़र झुकाये हुए और बदन चुराये हुए
ख़ुद अपने क़दमों की आहट से झेंपती डरती
ख़ुद अपने साये की जुम्बिश[२] से ख़ौफ़[३] खाये हुए
तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

रवां[४] है छोटी सी किश्ती हवाओं के रुख़ पर
नदी के साज़ पे मल्लाह गीत गाता है
तुम्हारा जिस्म हर इक लहर के झकोले से
मिरी खुली हुई बाहों में झूम जाता है
तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

१४. चिन्ह, १५. अनुचित, १६. भावनाएं १७. शर्मिन्दा मुस्कराहट।

परछाइयां

१. कल्पनाओं, २. कम्पन, ३. भय, डर, ४. गतिशील।

मैं फूल टांक रहा हूं तुम्हारे जूड़े में
तुम्हारी आंख मसर्रत[५] से झुकती जाती है
न जाने आज मैं क्या बात कहने वाला हूं
ज़बान खुश्क[६] है आवाज़ रुकती जाती है
तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

मिरे गले मे तुम्हारी गुदाज[७] बाहें हैं
तुम्हारे होंठों पे मेरे लबों[८] के साये हैं
मुझे यक़ीन कि हम अब कभी न बिछड़ेंगे
तुम्हें गुमान[९] कि हम मिल के भी पराये हैं
तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं

मिरे पलंग पे बिखरी हुई किताबों को
अदा-ए-इज्ज़-ओ-करम[१०] से उठा रही हो तुम
सुहाग रात जो ढोलक पे गाये जाते है
दबे सुरों मे वही गीत गा रही हो तुम
• तसव्वुरात की परछाइया उभरती हैं

(इक़्तिबास)

५. प्रसन्नता, ख़ुशी, ६. सूखी हुई, ७. भरी हुई, पिघलाने वाली, ८. होंठ, ९. शका, १०. विनय और दया की अदा ।

[रुबाइयाँ]

रूप

'फ़िराक़' गोरखपुरी

(१)

हर जल्वे[1] से इक दरसे-नुमू[2] लेता हूं
छलकते हुए सद जाम-ओ-सुबू[3] लेता हू
अय जाने-बहार[4] तुझ पे पडती है जब नजर
सगीत की सरहदो को छू लेता हूं

(२)

कामत[5] है कि अगडाइया लेती सरगम
हो रक्स[6] मे जैसे रग-ओ-बू का आलम[7]
जगमग जगमग है शबिस्ताने-इरम[8]
या कौसे-कुजह[9] लचक रही हैं पैहम[10]

(३)

रगत है कि घुघरुओ की मद्धम झकार
जोबन है कि पिछली रात बजता है सितार
सरशार[11] फजाओ[12] की रगे टूटती है
चटकाता है उगलिया जवानी का खुमार[13]

(४)

वो मस्त नजर कि मौजे-सहबा[14] थर्राये
वो हंसती जबी[15] कि सुब्हे-मादिक[16] शरमाये
इक मौजे-हयात[17] नर्मगामी[18] तेरी
बेहिस[19] राहो मे जान जैसे पड जाये

१. दर्शन, २. विकास का पाठ (सबक), ३ सैकडो प्याले और सुराहिया, ४ बहार की जान, ५. आकार, क़द, ६. नृत्य, ७ रग और सुगध का ससार, ८ स्वर्ग मे सोने का कमरा, ९. इन्द्रधनुष, १० लगातार, ११. परिपूर्ण, १२. वातावरण, १३. मदिरालस, १४. शराब की लहर, १५. ललाट, १६. ऊषाकाल, १७ जीवन की लहर, १८ मदगति, १९. निर्जीव।

(५)

मोती की कान, रस का सागर है बदन
दर्पन आकाश का सरासर[20] है बदन
अंगड़ाई में राजहंस तोले हुए पर
या दूध भरा मानसरोवर है बदन

(६)

यह रंग-नशात[21] लहलहाता हुआ गात
जागी जागी सी काली जुल्फों की यह रात
अय प्रेम की देवी यह बता दे मुझको
यह रूप है या धड़कती तस्वीरे-हयात[22]

(७)

संगीन की पखड़ी को शबनम धो जाये
जैसे शोलों की जगमगाहट खो जाये
पिछले पहर को जिस्मे-खुमारे-रंगीं[23] जैसे
कलियों के लबों पर मुस्कुराहट सो जाये

(८)

अय रूप की लक्ष्मी यह जल्वों का राग
यह जादु-ए-कामरूप[24] यह हुस्न व आग
खैर-ओ बरकत[25] है जहां में तेरे दम से
तेरी कोमल हसी, महब्बत का सुहाग

(९)

हर सांस में गुलजार[26] से खिल जाते थे
हर लम्हे में जन्नत की हवा खाते थे
क्या तुझको महब्बत के वो अय्याम[27] है याद
जब परद-ए-शब[28] बजते थे दिन गाते थे

२०. नितान्त, २१. खुशी का रंग, २२. जीवन का चित्र. २३. नशे से टूटता हुआ सुन्दर शरीर, २४. कामरूप का जादू, २५. कल्याण और विभूति, २६. पुष्पवन, २७. समय, २८. रात के परदे ।

(१०)

रंगत तिरी कुछ और निकल आती है
यह आन तो हूरों[29] को भी शरमाती है
कटते ही शबे-विसाल[30] हर सुब्ह कुछ और
दोशीज़गी-ए-जमाल[31] बढ़ जाती है

(११)

जब तारों भरी रात ने ली अंगड़ाई
नमनाक मनाज़िर[32] ने पलक झपकाई
जब छा गई पुरकैफ़[33] उदासी हर सिम्त[34]
सरशार फ़ज़ाओं[35] को तिरी याद आई

घर आंगन

जां निसार 'अख़्तर'

(१)

यह तेरा सुभाव, यह सलीक़ा[1] यह सुरूप
लहजे[2] की यह छांव, गर्म जज़्बे[3] की यह धूप
सीता भी शकुन्तला भी, राधा भी तू ही
युग युग से बदलती चली आई है तू रूप

२९. अप्सरा (ब० व), ३०. मिलन की रात, ३१. सौंदर्य का कौमार्य, ३२. भीगे हुए दृश्य, ३३. नशे से ओत-प्रोत, ३४. दिशा, ३५. परिपूर्ण वातावरण ।

घर आंगन

१. सौम्यता, ढंग, २. उच्चारण-शैली, ३. जोश ।

(२)

हाथों में यह गाती हुई सिंगर की मशीन
क़तरों[४] से पसीने के शराबोर[५] जबीन[६]
मसरूफ़[७] किसी काम में देखूं जो तुझे
तू और भी मुझको नज़र आती है हसीन

(३)

नज़रों से मिरी खुद को बचा ले कैसे
खुलते हुए सीने को छुपा ले कैसे
आटे मे सने हुए है दोनों ही तो हाथ
आंचल को संभाले तो समाले कैसे

(४)

हर सुब्ह को गुंचे[८] में बदल जाती है
हर शाम को शम्अ बन के जल जाती है
और रात को जब बन्द हों कमरे के किवाड़
छिटकी हुई चांदनी में ढल जाती है

(५)

हर एक घड़ी शाक[९] गुजरती होगी
सौ तरह के वहम[१०] करके मरती होगी
घर जाने की जल्दी तो नहीं मुझको मगर
वो चाय पे इन्तज़ार करती होगी

(६)

कहती है कि वहशत[११] की भी हद होती है
कपड़ों का भी होश तुम भुला देते हो
जब देखूं गरीबान[१२] खुला रहता है
क्या जाने बटन कहां गिरा देते हो

४. बूंद (ब० व०), ५. भीगी हुई, ६. पेशानी, ललाट, ७. लीन, ८. कली, ९. कठिन, कष्टप्रद, १०. आशंका, ११. उमाद, पागलपन, १२. कुरते का गला।

(७)

दरवाज़े को खोलने उठी है ज़ंजीर
लौटा हूं कहीं से जब भी पीकर किसी रात
हर बार अंधेरे में लगा है ऐसा
जैसे कोई शम्अ जल रही हो मिरे सात

(८)

हर एक मुसीबत से बचाने को तुम्हें
हर तरह की बात खुद पे ले सकती हूँ
कहती है कभी कभी तो यूं लगता है
मैं मां का भी प्यार तुमको दे सकती हूँ

(उनकी ज़बानी)

(९)

मैं चाहे जहां भी जाऊं उनकी नज़रें
इस तरह से गिर्द[13] घूमती है मेरे
लगता है कि जैसे कोई लक्ष्मण रेखा
चलती है हर एक कदम[14] पे मुझको घेरे

(१०)

मैं वह ही करूं जो वो कहें वो चाहें
मुझको तो इसी बात मे चैन आता है
मनवा भी लू उनसे अपनी मरजी जो कभी
हफ़्तों को मिरा सुकून मर जाता है

(११)

खुद हिल के क्या मजाल वो पानी पी लें
हर रात बंधा हुआ है यह ही दस्तूर
सिरहाने पे चाहे भरके छागल रख दूं
सोते से मगर मुझको जगायेंगे ज़रूर

१३. आसपास, १४. पग ।

(१२)

वो जिद[१५] पे उतर आते हैं अक्सर औक़ात[१६]
हर चीज पे वो बहस करेंगे मिरे सात
हर्गिज भी न मानेंगे जो मैं चाहूंगी
लेकिन जो मैं चाहूंगी करेंगे वही बात

(१३)

बाहर वो जहां भी काम करते होंगे
रहते ही तो होंगे वां झुकाये हुए सर
घर में भी न सर उठा सकेंगे तो भला
रह जायेगा उनका दम न सचमुच घुट कर

(१४)

हर बार तपस्या से जीता है उन्हें
वो ही मेरे स्वामी है वही मेरे पती
उनका है मिरा जनम-जनम का नाता
ऊमा हूं कभी मैं तो कभी पार्वती

१५. हठ, १६. समय।